शांति की राहें

शिक्षकों के लिये रिसोर्स पुस्तक

– **दया पंत**
– **सुषमा गुलाटी**

शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग
राष्ट्रीय अनुसंधान शैक्षिक एवं प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली

संदर्भ

शान्ति, शिक्षा के कार्य को सरल बनाती है, परन्तु क्या शिक्षा शान्ति को बढ़ावा देती है? विश्व आज जिन कठिन समस्याओं के दौर से गुजर रहा है उनमें से कुछ समस्याओं का किसी न किसी रूप में शिक्षा से नाता है। शान्ति के संदर्भ में अन्तर-वैयक्तिक और अन्तरराष्ट्रीय संबंधों के स्तर पर संस्थागत शिक्षा की भूमिका (विवादास्पद) है। दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि शिक्षा में सफलता बच्चों के मध्य, विद्यालयों के मध्य और यहाँ तक कि राष्ट्रों के बीच प्रतियोगिता से सम्बद्ध हो चुकी है। संभवत: प्रतियोगिता कुछ हद तक प्रोत्साहन को बढ़ा सकती है किन्तु प्रतियोगिता केवल संदेह और निरन्तर द्वन्द्व को ही तीव्र करती है। एक अत्यधिक प्रतियोगिता वाला वातावरण लोगों में तनाव का कारण भी बन जाता है। यह वह वातावरण है जिसे आजकल प्राय: ही विद्यालयों में देखा जा सकता है। बच्चे निरन्तर एक आवेश से भरे दिखते हैं, जहाँ प्रत्येक बच्चा दूसरे को पीछे छोड़ने के दबाब में जी रहा है। इस प्रकार की सफलता प्राथमिक कक्षाओं से ही बच्चों का समाजीकरण इस तरह से कर देती हे कि वे कठिन परिश्रम का एक मात्र लक्ष्य 'अपना भला' देखना समझने लगते हैं। सबकी भलाई का विचार फीका पड़ने के कारण बड़ी मात्रा में प्रतियोगिता के लाभ खोजे जाने लगे हैं जो अन्तत: एक ऐसे वैश्विक परिदृश्य का सृजन कर रहे हैं जिसमें प्रत्येक राष्ट्र निरन्तर दूसरे से पीछे छूट जाने या आक्रमण और नष्ट कर दिए जाने की निरन्तर असुरक्षा महसूस कर रहा है।

शिक्षा में सुधार लाने के लिए शान्ति स्थापना आवश्यक स्थिति है। अत: हमें शिक्षा के लक्ष्यों पर विचार करने की आवश्यकता है। यदि हमारा उद्देश्य दिमाग को चिंतन करने के लिए प्रशिक्षित करना है तो इस उद्देश्य को प्राप्त करना अत्यन्त कठिन हो जाएगा यदि हमारी कक्षा संस्कृति में एवं विद्यार्थी शिक्षक संबंधों में तनाव है। तनाव, जरूरी नहीं कि दिखाई दे रहे हों। आज बहुत से बच्चे और युवा सनसनी/उत्तेजना के वातावरण में रह रहे हैं। शिक्षक उन्हें शान्त रखने में असमर्थ हो रहे हैं और कई बार तो शिक्षक स्वयं भी आवेश युक्त व्यवहार करना प्रारम्भ कर देते हैं।

बहुत से प्रतिष्ठित दार्शनिक इन समस्याओं का कारण घटिया शिक्षा व्यवस्था में देखते हैं। जे. कृष्णामूर्ति इसे नाटकीय रूप में प्रस्तुत करते हैं, जब वे कहते हैं कि आधुनिक शिक्षा विश्व शान्ति के लिए सबसे बड़ा खतरा है। वह यह भी कहते हैं कि स्पष्ट रूप से शैक्षिक संस्थानों की उच्च प्रतियोगिता वाली संस्कृति ही संवेदनाओं में कमी, और सबका भला चाहने की भावना के प्रति जागरूकता की कमी का कारण हैं और दुर्भावनाओं को सुदृढ़ता प्रदान करती हैं। आधुनिक समाज में प्रगति की प्रतीक जीवन शैली के बहुत सारे व्यवहार और विशिष्टताएं दिखावे के उन मूल्यों को प्रस्तुत करते हैं जो शान्ति के संदर्भ में गंभीर चुनौती हैं। संसाधनों का असीमित उपभोग ऐसे व्यवहारों की एक श्रेणी है। उपभोक्तावाद पर

आधारित संस्कृति दूसरों के प्रति उदासनीता को बढ़ावा देती है क्योंकि उपभोग अन्ततः एक वैयक्तिक गतिविधि है। उपभोग का चक्र केवल वस्तुओं और पदार्थों (जिन्सों) तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि यह मानव संबंधों और संस्थाओं में भी फैल जाता है। शिक्षा भी इस चक्र का एक भाग बन गई हे और हम पदार्थो के समान ही इसकी खरीद-फरोख्त के गवाह भी (बन सकते) हैं/ शिक्षा में आर्थिक मूल्य इसके सभी अन्य मूल्यों,जो होने ही चाहिए, पर हावी हो गए हैं। शिक्षा में जिस प्रचंड प्रतियोगिता की भावना को हम देख रहे हैं उसकी उत्पत्ति शिक्षा के संकीर्ण दृष्टिकोण से ही होती है। शिक्षण, निश्चय ही, संबंध स्थापित करने की एक ऐसी गतिविधि हैं जिसमें बच्चों के साथ काम करते हुए, वयस्क अनिवार्यत: उनके परिप्रेक्ष्य को देखने का प्रयत्न करते हैं। शिक्षक प्रतियोगिता और उपभोग के प्रभावी वातावरण मे स्वाभाविक रूप से असुरक्षित हैं और कई बार वे स्वयं भी इन प्रवृत्तियों के कर्ता बन जाते हैं। शिक्षकों में अन्तरदर्शन की क्षमता उनमें विकास का साधन उपलब्ध करा सकती है। हमारे जीवन को समृद्ध बनाती है और हममें आस-पास की दुनिया के बारे में चिंतन करने और इसमें निहित संबंधों का विश्लेषण करने के लिए आवश्यक स्थान उपलब्ध कराती है। दैनिक जीवन की आपा-धापी में प्राय: हम उन संरचनात्मक संबंधों से वंचित रह जाते है जो उन संस्थानों की संस्कृति को परिभाषित करते हैं, जिनमें हम काम करते हैं। नकारात्मक शक्तियॉ और विवाद और हिंसा के तत्व अदृश्य संरचनाओं में छिपे रहते हैं। जैसे ही जागरूकता में कमी आती है वे एक क्षण में प्रहार कर देते हैं। एक बार यदि शान्ति भंग हो जाए, विवादों/द्वन्दों का चक्र प्रारम्भ हो जाता है और हिंसा की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं।

बच्चों के जीवन और विद्यालय की संस्कृति में जहाँ भी हो, इस चक्र को तोड़ने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। ऐसा करने के लिए उन्हें बहुत से कौशलों और मूल्यों की आवश्यकता है जो उन्हें हस्तक्षेप करने के लिए सक्षम और प्रोत्साहित करें और वे सकारात्मक भूमिका निभा पाएं। शान्ति में ऐसे मूल्य और कौशल समाहित हैं, साथ ही ऐसी मनोवृत्तियाँ जिनमें आक्रामकता और हिंसा की शाक्ति को स्वाभाविक रूप से खंडित करने की क्षमता है। इस संदर्भ में शान्ति एक समग्र परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है जिससे जब कभी हमारा आक्रामक व्यवहार और उन्हें प्रोत्साहित करने वले मूल्यों से सामना होता है तो हम उसे संभालने की स्थिति में आ सकें। यह एक ऐसा परिप्रेक्ष्य है जो हमें जीवन की निरन्तरता पर ध्यान देने और घटनाओं को अतिशय भावुकतापूर्ण महत्व देने से बचाता है। ऐसे परिप्रेक्ष्य से (मार्गदर्शित) निदेशित होने के कारण, एक शिक्षक बच्चों के मस्तिष्क में शान्ति के बीजों का पोषण कर सकता है।

पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक जिसका उद्‌भव राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा सृजित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के आधार पर हुआ, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण सरोकारों में से एक 'शान्ति के लिए शिक्षा' पर बल देती है। शान्ति शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने वाले समूह द्वारा लाए गए एन.सी.एफ. के एक आधार पत्रक में विद्यालय स्तर पर शान्ति के प्रोत्साहन हेतु अध्यापक प्रशिक्षण के महत्व को निरूपित किया गया है। आधार पत्रक में सन्निहित अनुशंसाओं के अनुरूप ही शिक्षक प्रशिक्षण के लिए शान्ति शिक्षा की पाठ्यचर्या और तदनुसार छः सप्ताह का प्रशिक्षण का कोर्स अभिकल्पित किया गया। इसके आधार पर ही वर्ष 2005 से एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा शिक्षकों के लिए 'शान्ति शिक्षा पर प्रशिक्षण आयोजित किए गए।

एन.सी.एफ. दृढ़तापूर्वक कहता है कि शिक्षा अवश्य ही इस योग्य होनी चाहिए कि वह उन मूल्यों को प्रोत्साहित कर सके जो एक बहु-सांस्कृतिक समाज में शान्ति, मानवीयता और सहनशीलता के मूल्यों का पोषण करते हों। एन.सी.एफ. में निरूपित शिक्षा के उद्देश्यों में लोकतांत्रिक मूल्यों लोकतंत्र व समानता के प्रति वचनबद्वता, न्याय, स्वतंत्रता और पंथनिरपेक्षता तथा सबके कल्याण के सरोंकारों का विकास समाहित है। बच्चों का शान्ति के मूल्यों के प्रति अभिमुखीरण 'यह करो' 'यह न करो' के द्वारा नहीं किया जा सकता है बल्कि सबके कल्याण के लिए क्या सही है क्या गलत के संबंध में चयन कर पाने व निर्णय ले पाने में बच्चों को सक्षम बनाने, और संबंधित नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने से किया जा सकता है जो उनमें मूल्य आधारित निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करें। शान्ति में निहित इन सरोकारों का समावेश शिक्षा की प्रक्रिया में गुणवत्ता का निर्माण करता है।

प्रमुख भारतीय दार्शनिकों यथा महात्मा गॉधी, श्री अरविन्द, विवेकानन्द, रवीन्द्र नाथ टैगोर और कई अन्यों ने बचपन से ही शान्ति व सदभाव की स्थापना में शिक्षा की भूमिका को अधिमूल्य प्रदान किया। सांस्कृतिक परम्पराओं में प्रचलित विचारधारा के अनुरूप भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार दिए गए, जहाँ अनुच्छेद 51 (क) के अर्न्तगत हिंसा से विमुख रहते हुए सदभाव, सांस्कृतिक विरासत एवं प्रकृति के प्रोत्साहन का निर्देश दिया गया है। यूनेस्को ने भी अपने लक्ष्य में वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में साझा मूल्यों पर आधारित शान्ति के संरक्षण और विश्वव्यापी सिद्वान्तों एवं मानकों को विकसित किया है। संयुक्त राष्ट्र ने सन् 2001 से 2010 को विश्व के बच्चों के लिए शान्ति की संस्कृति एवं अंहिसा का अन्तर्राष्ट्रीय दशक घोषित किया है और यूनेस्को को शान्ति के प्रोत्साहन के अभिमुखीकरण के लिए प्रमुख संस्था के रूप में मनोनीत किया। इन सुझावों का अनुसरण करते हुए भारत तथा दूसरे देशों में बहुत सी पहल की और विद्यालयी स्तर पर शान्ति

शिक्षा को प्रोत्साहित किया। यूनिसेफ और यूनेस्को जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने सहनशीलता, शान्ति, मानवाधिकार और लोकतंत्र से संबंधित सरोकारों का शिक्षा में समावेश करने के लिए बहुत सारे विषय वस्तु और आलेख विकसित किए। यूनेस्को के संबंधित विद्यालयों नामक परियोजना के अन्तर्गत विभिन्न देशों में कई तरह की संदर्भ सामग्री विकसित की गई। भारत में भी पठन सामग्री का कोई अभाव नहीं है विभिन्न प्रकार की संदर्भ सामग्री उपलब्ध है। इन्टरनेट पर कई तरह की पुस्तक, पठन सामग्री और शान्ति संबंधी कहानियाँ उपलब्ध हैं जिसे कोई भी ऐसा व्यक्ति खोज सकता है जो शान्ति शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में सीखने की ललक रखता हो।किन्तु इस पुस्तक में शिक्षकों के लिए विशेष रूप से अभिकल्पित विषय वस्तु, जो शान्ति को समग्र और समावेशित परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है दी गई है।

इस पुस्तक की विषयवस्तु छः थीम में व्यवस्थित की गई है, शान्ति की अवधारणा व सरोकार, विवादों की समझ व समाधान, स्व-बोध और स्व-सामर्थ्य, शान्ति का शिक्षण शास्त्र, शिक्षण अधिगम में शान्ति परिप्रेक्ष्य व शान्ति का उर्ध्ववीकरण।

पहला अध्याय शान्ति के अन्तर्निहित निर्णायक मुददों और इसकी बहुरूप प्रकृति पर चर्चा करता है। इसमें प्रकृति सहित समस्त प्राणियों की पारस्परिक निर्भरता की गतिशील और समग्र समझ का वर्णन किया गया हे जिसमें हमारे दिन प्रतिदिन के कार्यों व व्यवहारों के माध्यम से शान्ति को समृद्ध करने अथवा नष्ट करने के हमारे चयन भी सम्मिलित है। दूसरा अध्याय विवाद समाधान के लिए आवश्यक ज्ञान, मनोवृत्तियों, मूल्यों और कौशलों से परिचय कराता है, विवाद में अन्तर्निहित मुददों के प्रति जागरूकता और विवाद समाधान के लिए आवश्यक कौशल जो विवादों का रूपान्तरण करें और सामर्थ्यवान बनने से परिचय कराता है। तीसरा अध्याय स्व-बोध/पहचान से संबंधित है जिसका लक्ष्य अपनी सामर्थ्य का विकास करना और उन कौशलों एवं रणनीतियों को स्व में शमिल करना है जो आत्म निरीक्षण को प्रवृत्ति के विकास हेतु पूर्व-तत्पर बनाए और शान्ति के अनुकूल मूल्यों ओर मनोवृत्तियों को अर्जित करने में सक्षम बनाए। चौथे अध्याय की विषय वस्तु शिक्षण शास्त्र के पुनराभिमुखीकरण के महत्व/सार्थकता की व्याख्या करता है। इसमें शान्ति के मार्ग की बाधाओं तथा इसकी चुनौतियों का सामना करने के मार्गो की पहचान और स्वस्थ संबंधों के विकास और कक्षा की परिपाटियों को दर्शाया गया है। अपेक्षित व्यवहारों को शिक्षकों द्वारा आदर्शरूप में व प्रस्तुत किए जाने पर जोर दिया गया है। पाँचवां अध्याय शान्ति को विद्यालय में, पाठ्यचर्या में और कक्षा के भीतर व बाहर शिक्षण अधिगम गतिविधियों में समाविष्ट करने के मार्ग तलाशने में समर्थ बनाने के लक्ष्य से रखा गया है। छठा अध्याय शान्ति शिक्षक को प्रोत्साहित करने के लिए दायरे से परे विस्तार और विद्यालय में अभिभावक व समुदाय की भूमिका को संपूरक के रूप में स्वीकारने और मीडिया के नकारात्मक प्रभावों पर सचेत होकर सामना करने से संबंधित है।

यह पुस्तक शान्ति के अभ्यास और प्रोत्साहन में शिक्षकों की सहायता करने की दृष्टि से विकसित की गई है।किन्तु शिक्षक-प्रशिक्षकों के द्वारा सेवा-पूर्व शिक्षक-शिक्षा प्रशिक्षण के लिए भी इसका उपयोग किया जा सकता है। शिक्षकों के अतिरिक्त, अन्य प्रोफेशनल भी जो शान्ति की शिक्षा के क्षेत्र में रूचि रखते हो, इस पुस्तक को उपयोगी पाएंगे, यह पुस्तक किसी स्तर विशेष तथा प्राथमिक या माध्यमिक के शिक्षकों के लिए ही नही हैं बल्कि यह सामान्य सिद्धान्तों और रणनीतियों का एक भंडार हे, जिसे सभी स्तरों पर कार्यरत शिक्षकों के द्वारा अपनी स्थानीय परिस्थितियों और समस्याओं के अनुकूल प्रयोग किया जा सकता है।

पुस्तक सरल भाषा में यथासंभव स्पष्ट शैली में प्रस्तुत की गई है। विद्यालय के दिन-प्रतिदिन की पारस्परिक क्रियाऐं और गतिविधियों से संबंधित उदाहरण, स्थितियाँ और उपाख्यानों (एनडोट) इसे अर्थपूर्ण और शिक्षकों के वास्तविक जीवन के अनुभवों से सम्बद्ध करते हैं, विद्वानों और शोधकर्ताओं की बहस और परिचर्चा से प्राप्त अर्न्तदृष्टि ने पुस्तक की विषय वस्तु के विकास के लिए आधार प्रदान किया, तथापि पुस्तक को बोधगम्य और पठनयोग्य बनाने की दृष्टि से ढ़ेर सारे सिद्धान्तों को प्रस्तुत करने से बचा गया है। विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण स्व-व्याख्यात्मक शैली में किया गया है और उदाहरण कक्षा की वास्तविक स्थितियों से लिए गए हैं।

पुस्तक के अन्त में प्रस्तुत सुझाव व गतिविधियाँ शिक्षकों को अवधारणाओं के संबंध में अपने ज्ञान व समझ और उनके उपयोग में और अधिक सक्षम बनाने की दृष्टि से सक्षम बनाने हेतु दिए गए है।

चेतावनी

इस पुस्तक का उपयोग करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को याद रखना आवश्यक है -

- शान्ति शिक्षा एक जटिल बहु-आयामी अवधारणा है। इसमें समाहित विषय-वस्तु के सरोकारों के मुद्दों पर निरंतर चिंतन करते हुए पढ़ा जाना आवश्यक है। न कि जल्दबाजी में इसे, इस आधार पर नकारने कि वह हमारी अवधारणात्मक व व्यवहारात्मक पटल के अनुरूप ठीक नहीं है।
- बहुत बार आप पाएंगे कि दी गई रणनीतियाँ वर्णित तरीके से उपयुक्त काम नहीं कर रही है या प्रत्याशित परिणामों से विरोधी परिणाम प्राप्त हुए है।हम कौशलों व रणनीतियों का सीमित और क्रमश: परीक्षण करें क्योंकि कई बार उपयुक्त अर्न्तदृष्टि और समझ के बिना किए जाने वाले परीक्षण के परिणाम अपेक्षा से भिन्न प्राप्त हो सकते है।
- किसी रणनीति के प्रयोग से कम सफलता प्राप्त होना इस बात का संकेतक है कि कार्यान्वयन के दौरान विभिन्न चरणों पर पुनरावलोकन, चिंतन और समीक्षा की आवश्यकता है।
- पुस्तक में बार-बार शान्ति शिक्षक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि शान्ति शिक्षक अन्य शिक्षकों से अलग होगा।शिक्षा के समग्र उपागम के अनुपालन में प्रत्येक शिक्षक शान्ति शिक्षक है।
- इस पुस्तक में 'रिफलैक्टिव जरनल' या 'चिंतन जरनल' में आन्तरिक व बाह्य शान्ति निर्माण के प्रयासों को दर्ज करने व पुनर्विचार करने की एक रणनीति के बतौर चर्चा की गई है। इसी तकनीक को शान्ति की ओर यात्रा में सफलता प्राप्त करने के लिए अपनाने की प्रबल अनुशंसा की जाती है।

पुस्तक विकास दल

दया पंत, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान एवं आधार शिक्षा विभाग, नई दिल्ली
सुषमा गुलाटी, प्राध्यापक, शैक्षिक मनोविज्ञान एवं आधार शिक्षा विभाग, नई दिल्ली

एसोसिएटेड टीम

अमीता मुल्ला वाट्टल, प्राधानाचार्या, स्प्रिंगडेल्स स्कूल, नई दिल्ली
कौशिकी, प्रवक्ता, नेल्सन मंडेला शांति और संघर्ष समाधान केन्द्र, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
कृष्ण कुमार, प्राध्यापक एवं पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय अनुसंधान शैक्षिक एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
नीलम सुखरमानी, रीडर, गॉधी अध्ययन केन्द्र, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
प्रभजोत कुलकर्णी, प्राधानाचार्या, एम.वी.कॉलेज, नई दिल्ली
श्रेया जानी, शांत सलाहाकार, नई दिल्ली
वॉलसन थंपु, प्राधानाचार्या, सैंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

आभार

हम उन समस्त लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते है जिनके सहयोग से इस पुस्तक का विकास संभव हो पाया - सहयोगी, कार्यशाला के प्रतिभागी और विभिन्न क्षमताओं से युक्त वे लोग जो इस संदर्भ पुस्तक की तैयारी के दौरान जुड़े रहे।

इस पुस्तक की पहल की प्रेरणा प्रोफेसर कृष्ण कुमार, डारेक्टर रा.शै.अनु.प्र.परि. द्वारा दी गई, उनकी निरन्तर रूचि, मार्गदर्शन और सहयोग के लिए हम हृदय से उनके आभारी हैं।

डॉ. वाल्सन थम्पू, अध्यक्ष, फोकस समूह, शान्ति शिक्षा व अल्पसंख्यक आयोग (2004-07) ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2004-05 शान्ति की शिक्षा के आधार पत्रक को तैयार करने के लिए नेतृत्व प्रदान किया, वे इस पुस्तक को तैयार करने में रीढ़ का काम किया।

डॉ. मधु पन्त, पूर्व निदेशक, बाल भवन, नई दिल्ली को कार्यशाला के दौरान दिए गए सहयोग के लिए, डॉ.कल्पना वेनुगोपाल, लैक्चरर, आर.आई.ई. मैसूर और श्रीमती जेन साही, प्रधानाचार्य, एस.आई.टी.ए.; स्कूल बैंगलूर को उनके द्वारा कुछ भागों पर की गई सम्पादकीय टिप्पणियों के लिए, सुश्री स्वाति साहनी, लेडी श्री राम कॉलेज से जो एक शान्ति प्रशिक्षु, सारे विभाग इन्टर्न थी अपने अनुभव साझा करने के लिए विशेष धन्यवाद की पात्र है।

इनके अतिरिक्त बड़ी संख्या में शोधकर्ताओं, सिद्धान्त निर्माताओं और विचारकों के द्वारा दिए गए अकादिमक सहयोग के लिए जो विषयवस्तु के विकास के लिए आधार बना उसके लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

साथ ही डॉ श्वेता उप्पल, मुख्य सम्पादक, एन.सी.ई.आर.टी. और सुश्री संगीता मलहन, कल्सटैंट संपादक, पब्लिकेशन विभाग को पांडुलिपि के पठन व संबंद्व परिवर्तनों के सुझाव देने के लिए विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित करते है। साथ ही मैथ्यू जॉन, रीडर और सुरेन्द्र कुमार, डी.टी.पी. आपरेटर को पुस्तक को अन्तिम प्रारूप देने के लिए धन्यवाद देते हैं। सुश्री पूनम, स्टेनोग्राफर, डी.ई;पी.एफ.ई. पुस्तक के अनेक ड्राफ्ट टाइप करने के लिए विशेष धन्यवाद की पात्र है।

प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पुस्तक के प्रकाशन हेतु किए गए कार्य भी भूरि-भूरि प्रशंसा के योग्य हैं। हम हृदय से आभार व्यक्त करते है।

विषय-सूची

संदर्भ

पुस्तक के विषय में

परिचय

1. शांति की अवधारणा एवं सरोकार
   - शान्ति की जानकारी
   - शान्ति का चुनाव/चयन
   - शान्ति के कुछ तथ्य
   - शान्ति के आधार स्तम्भ
   - विभिन्न स्तरों पर शान्ति
   - प्रकृति के साथ सामंजस्य

2. विवादों की समस्त और संभावना
   - विवाद स्वाभाविक और अपरिहार्य हैं
   - विवाद क्या है?
   - विवाद के स्त्रोत
   - हिंसात्मक विवाद की अभिव्यक्ति
   - विवाद विश्लेषण
   - विवादों को संरचनात्मक रूप से संभालना/नियंत्रण
   - कुछ कौशल एवं रणनीतियाँ

3. स्व बोध एवं सशक्तता की ओर
   - स्व एवं अन्य
   - पूर्वाग्रह, पक्षपात, रूढ़िबद्व धारणाएँ और इनकी उत्पत्ति
   - शांति के अनुकूल मनोवृति एवं नैतिक मूल्य
   - आत्म – चिन्तन एवं अन्तरात्मा की आवाज को सुनना

4. शान्ति के लिये शिक्षण विधि
   - प्रतिमानों में परिवर्तन की आवश्यकता
   - शान्ति को चुनौतियाँ
   - शान्ति के लिये कक्षा की परिकल्पना

- शान्ति शिक्षक बनने की प्रक्रिया
- कक्षा में आचरण में सुधार

5. शिक्षणअधिगम में शांति परिप्रेक्षय
- समग्र अभिगम/उपागम
- विशिष्ट स्थिति के सरोकर
- शांति शिक्षण के अवसर
- विभिन्‍न विषयों के शिक्षण द्‍वारा शांति
- पाठय पुस्तकों मे शाति –संदर्भ
- शांति शिक्षण हेतु रणनीतियों
- कुछ उदाहरण योग्य विचार
- परीक्षा एवं आकलन संमंधी मुद्दे

6. शांति शिक्षा का ऊर्ध्ववीकरण
- विद्‍यालय का पर्यावरण
- विद्‍यालय में संभावित हस्तक्षेप
- घर–विद्‍यालय अन्तर्रापृष्ठ
- समुदाय का आवेष्टन
- मीडिया
- शांति–प्रक्रिया का मूल्यांकन

उपसंहार

परिचय

कृपया **"शांति का दूत बढ़ई"** नामक इस कहानी को पढ़िए

पिता की मृत्यु के पश्चात पैतृक सम्पत्ति के बँटवारे को लेकर दो भाईयों में विवाद हो गया। दोनों अलग-अलग रहने लगे। वे एक दूसरे से बात तक नहीं करते थे। कहीं गलती से भी अपने भाई की शक्ल न दिख जाए; यह सोचकर बडे भाई ने अपने पारिवारिक बढ़ई को बुलाया। और दोनों भाइयों की जमीन के बीच गुजरने वाली नहर पर लकड़ी की दीवार खड़ी करने को कहा। वह बढ़ई उनके पिता का विश्वसनीय मित्र था। उसने अपना काम शुरू कर दिया। किन्तु बड़े भाई के आदेश के विपरीत दीवार के बदले नहर पर पुल बनाना शुरू कर दिया। छोटे भाई ने पुल बनते हुए देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि उसका बड़ा भाई तो उसे इतना प्यार करता है कि दोनों के बीच पुल बनाना चाहता है। वह दौड़कर अपने बड़े भाई के पास पहुँचा और अश्रुपूरित नेत्रों से उससे लिपट गया। दोनों भाईयों के बीच पुन: मधुर संबंध स्थापित हो गए।

इस कहानी में बढ़ई वह व्यक्ति है जिसने शान्ति स्थापना का काम किया।

शान्ति के संदर्भ में निम्न बिन्दु महत्वपूर्ण हैं -

- शान्ति स्थापना के लिए दक्ष शान्ति वार्ताकार की आवश्यकता नहीं है।
- किसी भी स्थिति में शान्ति स्थापना के लिए काम करने के पर्याप्त अवसर मौजूद रहते हैं।
- शान्ति की दिशा में काम करने के लिए विवाद की स्थिति के दायरे से बाहर तर्कपूर्ण चिंतन की आवश्यकता होती है।
- शान्ति के प्रसार के लिए हमें बहुत प्रभावशाली या असाधारण काम नहीं करने हैं सिर्फ कुछ निर्भीक शुरूआत करने की आवश्यकता है।
- यदि हम शान्ति की स्थापना के लिए अभिप्रेरित हैं तो इस हेतु पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं और हम उनका उपयोग कर सकते हैं।

यदि एक बढ़ई शान्ति स्थापना का कार्य कर सकता है तो हम शिक्षक तो निश्चित ही इस कार्य को कर सकते हैं।

तुलनात्मक रूप से देखें तो शान्ति स्थापना के प्रति कार्य करने के लिए हम बेहतर स्थिति में हैं। बढ़ई तो निर्जीव वस्तु के साथ काम करता है जबकि हम इन्सानों के साथ काम करते हैं और वह भी उस उम्र में जो उनके जीवन का निर्माणकाल होता है। शान्ति तो शिक्षा के उद्देश्य में ही समाहित है शिक्षा का उद्देश्य ही शान्ति की स्थापना है जबकि बढ़ईगिरी का

मूल उद्देश्य यह नहीं है। शान्ति का आधार/सार पारस्परिक संबंध है या कहें कि संदर्भ विशेष में ध्यानपूर्वक व उदारतापूर्वक मानवोचित व्यवहार से ही शान्ति का फल पाया जा सकता है। शिक्षित करने का अर्थ है -"पोषित करना और उजागर करना"। यह व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवनकाल में होता रहता है। और यह केवल तब होता है जब जब हम अपनी दुनिया से सकारात्मक, सृजनात्मक व रचनात्मक ढंग से जुड़ते हैं। किसी भी संबंध - वैयक्तिक, संस्थागत, समूह या समुदाय - का उद्देश्य एक दूसरे में निहित सर्वोत्तम को अभिव्यक्ति देना है। इसके लिए व्यक्तियों के दृष्टिकोण व्यवहार व लक्ष्यों की चिन्ता करना व उन्हें दिशा देना ही वास्तव में 'शिक्षित' करना है। इस कहानी का बढ़ई वास्तव में शिक्षित था क्योंकि वह जानता था कि उस परिस्थिति में पुल बनाना दीवार बनाने से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

शान्ति के आधार स्थापित करने में शिक्षक एक निर्णायक स्थिति में हैं। दुर्भाग्य से, इसे अब तक पहचाना नहीं गया है। फलस्वरूप, शिक्षा के माध्यम से शान्ति स्थापना के बहुत सारे संसाधन, अन्त:शक्ति और अवसर व्यर्थ चले जाते हैं। जिस समाज में शान्ति की संस्कृति नष्ट होने लगती है वहाँ इसे शिक्षा की असफलता के रूप में देखा जाना चाहिए। इसे शिक्षा में एक खो गए अवसर के रूप में देखा जा सकता है। इसे निम्नलिखित कहानी के माध्यम से समझने का प्रयास करें -

हमारी समस्या नहीं है

एक राजा और उसका सलाहकार बातें कर रहे थे और शहद मिलाकर मुरमुरा खा रहे थे। वे महल की खिड़की पर झुककर बाहर सड़क की हलचल को भी देखते जा रहे थे। राजा का ध्यान भोजन की ओर कम था इसलिए शहद की कुछ बूँदें खिड़की की चौखट पर गिर पडीं। यह देखकर सलाहकार बोला - 'महाराज, मुझे इन बूँदों को साफ करने दीजिए।' राजा ने कहा -"यह हमारा काम नहीं है। इसे बाद में नौकर साफ कर लेंगे। आप भोजन कीजिए।"

दोनों अपना भोजन लेते रहे। शहद की बूँदे धीरे- धीरे खिड़की की चौखट से नीचे सड़क पर भी गिर पड़ीं। जल्दी ही उस शहद पर एक मक्खी आ बैठी। तत्काल एक छिपकली प्रकट हो गई। उसने अपनी लम्बी जीभ निकाली और मक्खी को निगल गई। एक बिल्ली की नजर छिपकली पर पड़ गई और वह उस पर टूट पड़ी। तभी कहीं से एक कुत्ता आया और उसने बिल्ली पर आक्रमण कर दिया।

इसे देखकर सलाहाकर ने राजा से कहा -"महाराज। देखिए, सड़क पर कुत्ते और बिल्ली लड़ रहे हैं। हमें इस लड़ाई को रोकने के लिए किसी को भेजना चाहिए।"

राजा बोला -"परवाह मत करो। ये हमारी समस्या नहीं है।" और वे दोनों पुन: अपनी बातों में व्यस्त हो गए।

उसी समय बिल्ली का मालिक वहाँ आ पहुँचा। और कुत्ते को पीटने लगा। यह देखकर कुत्ते का मालिक भी आ गया और वह बिल्ली को पीटने लगा। जल्दी ही वे दोनों जानवरों को छोड़कर एक दूसरे को पीटने लगे।

"महाराज। अब सड़क पर दो व्यक्ति लड़ने लगे हैं। उन्हें रोकने के लिए किसी को भेजना उचित न रहेगा?" - सलाहकार बोला।

राजा ने बड़े आलसी भाव से उन्हें देखा और कहा - 'रहने भी दो। ये हमारी समस्या नहीं है।'

अब बिल्ली के मालिक के मित्र एकत्र हो गए और उसका उत्साह बढ़ाने लगे। कुत्ते के मालिक के मित्रगण भी आ पहुँचे और वे अपने मित्र का उत्साहवर्धन करने लगे। जल्दी ही दोनों समूह आपस में भिड़ गए और एक दूसरे पर आक्रमण करने लगे।

"महाराज। सड़क पर बहुत सारे लोग लड़ने लगे हैं। शायद हमें उन्हें रोकने के लिए किसी को भेजना चाहिए" - सलाहकार ने फिर कहा।

राजा और भी अधिक आलस्य से बोला - "कोई बात नहीं, ये हमारी समस्या नहीं है।"

अब कुछ सिपाही घटनास्थल पर आ पहुँचे। पहले तो उन्होंने दोनों पक्षों को अलग करने व लड़ाई रोकने का प्रयास किया। किन्तु, जब उन्होंने लड़ाई का कारण सुना तो उनमें से भी कुछ लोग बिल्ली के मालिक और कुछ कुत्ते के मालिक का पक्ष लेने लगे। जल्दी ही सिपाही भी उस लड़ाई में भागीदारी करने लगे। सिपाहियों के सम्मिलित हो जाने के कारण यह लड़ाई एक गृहयुद्ध में बदल गई। कितने ही घर जल गए। बहुत जनहानि हुई। यहाँ तक कि महल भी जलाकर खाक कर दिया गया। राजा और सलाहकार इस विध्वंस को देखते ही रह गए।

राजा बोला -"शायद मैं गलत था। शायद शहद की वह बूँद हमारी ही समस्या थी।"

इस कहानी में हमारे लिए तीन अन्तरदृष्टियाँ समाहित हैं -

- छोटी से छोटी समस्या को भी यदि उपेक्षित कर दिया जाता है तो समय के साथ यह एक बड़ी समस्या बन सकती है।
- यदि हम समय पर कार्यवाही कर लें / कदम उठा लें तो हममें से प्रत्येक के पास विवादों, द्वन्द्वों, झंझटों व बरबादी को रोकने की शक्ति है। यदि हम थोड़ा सा भी ध्यान दें तो हम बेहतरी की दिशा में कदम उठा सकते हैं।
- यदि समय रहते हम वह नहीं करते, जो हम कर सकते हैं, तो स्थिति धीरे-धीरे विकराल होकर हमारे नियंत्रण से बाहर हो जाती है और हम स्वतः ही परिस्थितियों के शिकार हो जाते हैं।

इस कहानी में शहद की एक बूँद ने बहुत बड़ा संकट उत्पन्न कर दिया। कहानी के शीर्षक पर ध्यान दीजिए -"ये हमारी समस्या नहीं है"। देखा जाए तो राजा भी अपने दृष्टिकोण से सही था। वास्तव में शहद की एक बूँद कोई समस्या नहीं थी। समस्या तो- "ये हमारी समस्या नहीं है", वाले व्यवहार में निहित है। दु:ख की बात तो यह है कि यह मान्यता - यह हमारी समस्या नहीं है - व्यापक रूप में स्वीकृत है और यही सबसे बड़ी समस्या है।

इस कहानी की तुलना हेमिंगबर्ड (एक प्रकार की चिड़िया) की कहानी से कीजिए।

एक दिन हाथी ने एक हेमिंगबर्ड को भूमि पर उलटा लेटे हुए देखा। उसके पैर आकाश की ओर थे।

हाथी : हेमिंगबर्ड, आप भूमि पर उलटा लेटकर क्या कर रही हैं?

हेमिंगबर्ड : मैंने सुना है कि आज आकाश गिरने वाला है। यदि ऐसा होता है तो मैं उसे रोकने के लिए (अपनी ओर से) पूरी तैयार हूँ।

हाथी (हँसते हुए) : क्या आप सोचती हैं कि आपके ये छोटे से पैर आकाश को गिरने से रोक सकते हैं?

हेमिंगबर्ड : नहीं, मैं अकेली तो यह नहीं कर सकती पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्यानुसार प्रयास तो करना ही चाहिए। मैं भी वही कर रही हूँ।

हेमिंगबर्ड की तरह ही हम सब लोगों को भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना चाहिए।

हम शिक्षकों को शान्ति की संस्कृति को बढ़ावा क्यों देना चाहिए? इसका उत्तर हमें तीन स्तरों पर देखना होगा –

i. व्यक्ति का जीवन
ii. पारिवारिक स्वास्थ्य
iii. समाज की जीवनशक्ति

(i) वैयक्तिक जीवन – हम ज्ञान के क्षेत्र में अनेक विशिष्टताएँ, उपलब्धियाँ प्राप्त कर लें किन्तु यदि दूसरों के साथ शान्तिपूर्ण जीवन जीना न सीख पाएँ तो हम अपने जीवन में सफल नहीं हो सकते हैं। चाहे हम अपने लिए बहुत बड़ा महल बना लें किन्तु यदि हम विवादोन्मुख जीवन जीने के अभ्यस्त हैं तो इस महल में भी हमारा जीवन अशान्तिपूर्ण ही होगा।

शान्ति जीवन की गुणवत्ता को सुनिश्चित करती है। अशान्ति हमारी स्वतंत्रता को संकुचित कर देती है। यदि किसी व्यक्ति से हमारे संबंध बातचीत बन्द की स्थिति में है तो इससे हमारी अपनी ही स्वतंत्रता बाधिंत होती है। क्योंकि इस स्थिति में हम अपने श्रेष्ठ गुणों को भी अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। न ही अपने उन साथियों के श्रेष्ठ गुणों या बुराइयों को जान पाते हैं। यदि हमारा व्यवहार शान्ति की ओर उन्मुख नहीं है तो हम स्वयं को हर

स्थान पर अप्रसन्न स्थिति व तनावपूर्ण संबंधों में पाते हैं। ऐसी स्थिति में हम अपने जीवन के आनन्द तथा अन्त:शक्ति को भी खो देते हैं। मनुष्यता के पूर्ण विकास के लिए शान्ति एक मूलभूत गुण है। शान्ति की ओर उन्मुख व्यक्ति की विशेषता यह है कि वह तनावपूर्ण स्थितियों में भी सकारात्मकता सृजनात्मकता की ओर केन्द्रित रहता है और प्राप्त स्थितियों में अपना सर्वोतम देने/करने का प्रयास करता है। ऐसा करके वह सुधार के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। पूर्वोक्त बढ़ई की कहानी के बढ़ई के समान वह प्रत्यके स्थिति में परिवर्तन के अवसर ढूँढने में सक्षम रहता है।

(ii) **परिवार** – वर्तमान समय में परिवारों का विघटन एक बड़ी और चिन्ताजनक समस्या है। भावनात्मक सुरक्षा और परिपूर्णता, साथ रहने के आनन्द के भाव का लोप होता जा रहा है। सम्बन्ध अस्थिर होते जा रहे हैं। यहाँ तक कि माता-पिता और बच्चों के बीच के रिश्ते भी आनन्द रहित होते जा रहे हैं। घरेलू हिंसा बढ़ती जा रही है। भौतिकवादी सुविधाओं में वृद्वि हो रही है किन्तु, जीवन की गुणवत्ता विकृत होती जा रही है। घर जो शान्ति और सुरक्षा का उपवन हो सकता है वह आज विवाद और चिन्ताओं का गढ़ बन गया है। आज जिस प्रकार की शिक्षा का प्रसार हुआ है वह इस स्थिति को सुधारने में सक्षम नहीं हो पा रही है। वस्तुत: शिक्षा में किसी भी विषयवस्तु को प्रतियोगिता के भाव से और सफलता की प्रशंसा की दृष्टि से दिया जाता है तो ऐसे व्यक्तियों के पास मधुर सबंध बनाने, ध्यान देने आदि के अवसर सीमित हो जाते हैं।

(iii) **समाज** – समाज के सदस्य सिर्फ शान्ति की स्थिति में ही पूर्ण रूप से ही विकसित हो सकते हैं। सामाजिक, शान्ति तीन स्त्रोतों के परिणाम स्वरूप प्राप्त होती है।

- समुदाय में व्यक्तियों की शान्ति की ओर उन्मुखता स्वस्थ अंत:वैयक्तिक संबंधों द्वारा प्रकट होती है।
- न्याय के संकल्प द्वारा, जिसे व्यावहारिक रूप से समुदाय के समस्त सदस्यों के पूर्ण विकास के लिए, अवसरों की समान उपलब्धता के रूप में देखा जाता है।
- समस्त प्रकार के विभेद, पक्षपात, भ्रष्टाचार और हिंसा से मुक्त सामाजिक व्यवस्थाएँ व संरचनाएं, जिनका आधार न्याय व समानता हो।

ये समस्त बिदुं मिलकर ही शान्ति की संस्कृति की संरचना करते हैं। कहा जाता है कि हम दूसरों के साथ वही व्यवहार करें जो हम स्वयं के लिए अपेक्षा करते हैं। जीवन अनुगूँज के सिद्वान्त पर चलता है। जीवन में हम जो कुछ देते हैं वही प्रयुत्तर में पाते हैं। यदि हम शांति के बीज बोएँगे तो हम इसके लाभ की फसल काटेंगे। जीवन लेन-देन के इसी सिद्वान्त पर चलता है (बोए बीज बबूल के तो आम कहाँ से पाए) यदि हम दूसरों को शान्तिपूर्ण जीवन नहीं जीने देंगे तो हमें भी शान्ति नही मिलेगी। एक सुशिक्षित व्यक्ति होने का प्रमाण है कि

वह स्वस्थ व सम्पूर्ण समाज के निर्माण के लिए शांति की स्थापना के प्रति उत्सुकता रखता है और स्वस्थ समाज की स्थापना का संकल्प रखता है।

वर्तमान समाजिक स्थिति यह प्रकट करती है कि शिक्षा आधारभूत उद्देश्य से भटक गई है। शिक्षक के रूप में हम शिक्षा के मूल उददेश्य को उपेक्षित/नजरअंदाज कर रहे हैं। साथ ही शिक्षण व्यवसाय की आत्मा और गरिमा भी नष्ट हो रही है। विद्यालय ज्ञान भंडारण के कारखाने नहीं है। बल्कि, ये वे स्थान है जहाँ शांति के संवर्धन के लिए शान्ति की नींव डाली जाती है। माता-पिता के समान ही, शिक्षक भी समाज में शान्ति को पोषित व प्रोत्साहित करने वाले होते हैं।

अत: हमारे पास विकल्प है कि या तो हम एक सच्चे शिक्षक बनें या केवल जीविकोपार्जन का साधन मानकर पढाएं। प्रथम स्थिति में, शिक्षण सौभाग्य और स्व-विकास, सतत उन्नतिशील साधन, तारतम्यता और परिपूर्णता देने वाला हो जाता है। यह शिक्षण को सृजनात्मक बनाता है और शिक्षक और विद्यार्थी के संबंधों को मधुर, दूरदर्शी महान बनाए रखता है। वेतन इस कार्य की योग्यता का मापक नहीं हो सकता है कोई भी समाज इस प्रकार के शिक्षकों के प्रति कृतज्ञ होगा। इस प्रकार के कार्यो का क्षेत्र कक्षा-कक्ष से बाहर बहुत दूर तक फैल जाता है। एक प्रेरित और स्वप्नदृष्टा शिक्षक राष्ट्र की सम्पति है। प्रत्येक शिक्षक के पास यह अवसर उपलब्ध है। यह पुस्तक इस मार्ग को दिखाती है।

अब यह समय आ चुका है कि शान्ति के लिए सामंजस्यपूर्ण व सृजनात्मक कार्य प्रारंभ कर दिए जाए। भारत के शिक्षक इस संकल्प के प्रति प्रतिबद्व हैं।

हेमिंगबर्ड के शब्द याद रखें

‘प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करते रहना चाहिए’।

1|शांति की अवधारणा एवं सरोकार

1. शान्ति की जानकारी
2. शान्ति का चुनाव/चयन
3. शान्ति के कुछ तथ्य
   - कार्य आधारित शान्ति
   - समग्र और गतिशील
   - विशिष्ट संदर्भों में शान्ति
4. शान्ति के आधार स्तम्भ
5. विभिन्न स्तरों पर शान्ति
   - वैयक्तिक
   - अन्तरवैयक्तिक
   - समुदायिक
   - राष्ट्रीय
   - वैश्विक

   प्रकृति के साथ सामंजस्य

यह अध्याय शान्ति की धारण के विस्तारीकरण और शान्ति की शिक्षा को समझने और शान्ति को एक गतिशील और व्यापक विचार के रूप में समझने की दृष्टि से दिया गया है। हमें शान्ति में समाहित मुख्य समस्याओं और इसके सरोकारों को समझना होगा। शान्ति से संबंधित समस्याओं के प्रति जागरूकता और समझ का विकास होने पर ही प्रभावी कदम उठाए जा सकते हैं। शान्ति का मुददा दूरस्थ और सतही प्रतीत होता है अत: इसे अन्य किसी की जिम्मेदारी के रूप में देखा जाता है। शान्ति के संदर्भ में अपने उत्तरदायित्व की समझ अपनी पहुँच में दिखाई देने वाले समाधान स्वत: प्रस्तुत कर देती है। शान्ति की ओर उन्मुख कामों का चुनाव स्वयं के तथा दूसरों के जीवन में सामंजस्य को बढ़ावा देता है। इस अध्याय में शान्ति के लिए पूर्वापेक्षाएँ और सिद्वान्तों को भी प्रस्तुत किया गया है तथा विभिन्न स्तरों पर शान्ति का महत्व और इनकी पारस्परिक निर्भरता पर भी चर्चा की गई है।

> प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर की शान्ति को पाना है और वास्तविक शान्ति बाहरी घटनाक्रमों से अप्रभावित रहता है। महात्मा गांधी

प्रत्येक व्यक्ति शान्ति से जीना चाहता है किन्तु, प्रत्येक व्यक्ति शान्ति से जीना कैसे हो यह नहीं जानता। वास्तव में, दैनिक जीवन में जाने-अनजाने ऐसी बहुत सी बातें कही या कर

दी जाती हैं, जिनसे हमारी शान्ति नष्ट हो जाती है। ऐसा इसीलिए होता है क्योंकि हम शान्ति को स्वत: प्राप्त अनुदान के रूप में लेते हैं या फिर शान्ति की प्रतीक्षा करते हैं और साथ ही हम यह भी नहीं जानते कि वास्तव में शान्ति है क्या? एक शिक्षक के रूप में हमें शान्ति की सैद्वान्तिक ही नहीं बल्कि व्यावहारिक समझ होनी चाहिए। शिक्षक बतौर काम करते हुए हमें दो स्तरों पर काम करना होगा - शान्ति को समझना और शान्ति स्थापित करना।

शान्ति की समझ

शान्ति के संदर्भ और सरोकारों का व्यापक क्षेत्र है। शान्ति मानव अस्तित्व के प्रत्येक पक्ष में समाहित है। इसलिए शान्ति को बहुविध परिप्रेक्ष्य में देखा जाना महत्वपूर्ण है। इसे समझने का कोई एक मार्ग नहीं है। शान्ति बहुआयामी है और इसकी विविध दिशाएँ/पक्ष हैं।

सामान्यत: यह माना जाता है कि यदि युद्व नहीं हो रहा है तो शान्ति की स्थिति है। शान्ति युद्व न होने या शारीरिक हिंसा से कहीं अधिक है। यदि कोई व्यक्ति युद्व की स्थिति में नहीं हे तो यह नहीं कहा जा सकता है कि वह शान्ति की स्थिति में है। युद्व के बिना भी घृणा, भूख व महामारी से मृत्यु व विनाश हो सकता है। अपमान करना और ठेस पहुँचाना भी शारीरिक हिंसा से कम नहीं है। यदि उपरोक्त स्थितियाँ प्रबल हो जाती है तो शान्ति का अस्तितत्व नहीं हो सकता है।

शान्ति के विषय में एक आम राय आस-पास की शान्ति की उपेक्षा कर मात्र अपनी मानसिक शान्ति बनाए रखने से है। यह बहुत सामान्यीकरण है और यह शान्ति की संकुचित समझ है। शान्ति का अर्थ है स्वयं के, अन्य लोगों और प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहना। वास्तव में शान्ति किसी अन्य तरीके से नहीं हो सकती है। यह सत्य हे कि शान्ति ऐसे व्यक्तियों से ही प्रारंभ होती है। जो अन्दर से शान्त हैं।

अत: शान्ति को 'स्वयं के भीतर शान्ति' से समझना प्रारम्भ किया जा सकता है। यूनेस्कों के संविधान की उद्देश्यिका में कहा गया है -

"युद्व मनुष्य के विचारों से प्रारंभ होता है, अत:मनुष्य के विचारों में ही शान्ति के बीज बोए जाने चाहिए।"

शान्ति को समझने का पहला मार्ग 'आत्म शान्ति' के परिप्रेक्ष्य से निकलती है। इसे व्यक्ति की आन्तरिक शान्ति तथा संतुष्टि के भाव के रूप में देखा जा सकता है। आन्तरिक शान्ति मस्तिष्क की वह स्थिति है जिसमे किसी भी प्रकार के दबाव की अनुपस्थिति तथा मानसिक शान्ति शामिल है। शान्ति कोई निष्क्रिय एवं स्थिर वस्तु नहीं है बल्कि एक गतिशील व शाक्तिशाली स्थिति है जिसे प्राप्त करना और निरन्तर बनाए रखना आवश्यक है। स्वयं में शान्ति के साथ रहने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि अन्त:शक्ति को शान्ति बनाए रखने की दिशा में विकसित किया जाए। शान्ति की ओर उन्मुख व्यक्ति संघर्ष, विवाद, (तनाव),

विरोध व अभाव की स्थिति में भी शान्त व संतुलित रहने की क्षमता रखता है। आन्तरिक शान्ति का स्त्रोत विवादों और समस्याओं के समय पर सकारात्मक दृष्टिकोण मान्यताओं और कौशलों के साथ काम करने में निहित है, जो हमारे विश्वास को जीवित रखता है। आगामी अध्यायों में हम इन पर चर्चा करेंगे।

शान्ति का दूसरा संदर्भ 'दूसरों के साथ शान्ति है' है। सभी के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीना सभी व्यक्तियों की मौलिक आवश्यकता है। जब यह सामंजस्य नष्ट होता हे तो तनाव व विवाद उत्पन्न होते जाते हैं और शान्ति नष्ट हो जाती है। परिवार, कार्यस्थल के सहयोगियों व सामाजिक दायरे में शान्ति के बिना आन्तरिक शान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आन्तरिक शान्ति बाहय शान्ति पर ही निर्भर है। यह शान्ति हमारे निकट परिवेश में, समाज में या देश से बाहर की शान्ति हो सकती है, जो हमारी आन्तरिक शान्ति को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए मान लें कि कहीं आतंकवादी हमला होता है और बहुत से लोग मारे जाते हैं तो यह हमें व्यथित कर देता है। यदि पानी की कमी हो जाती है, मंहगाई बढ़ती है या हिंसक घटनाएं घटती हैं तो हमें परेशानी होने लगती है। केवल निकट परिवेश में ही नहीं बल्कि देश- दुनिया के दूसरे भागों के तनाव और विध्न भी अनेक तरीके से प्रभाव डालते हैं। जब तेल उत्पादक देशों में युद्व छिड़ता है तो हम सब चिन्तित हो जाते हैं क्योंकि इससे तेल की कीमतों में और प्रकारान्तर से अन्य पदार्थों के दाम प्रभावित होते हैं। वही दूसरी ओर जब व्यक्ति उत्पादक होते हैं और अन्तरवैयक्तिक संबंध सामंजस्यपूर्ण (सहयोगी)होते हैं, तो समाज में आर्थिक, सामाजिक व समग्र प्रगति दृष्टिगत होती है। विभिन्न क्षेत्रों (सत्ताओं) की पारस्परिक निर्भरता को विश्वयुद्व के उदाहरण से भी समझा जा सकता है जिसने दीर्घकाल तक विभिन्न देशों को अलग अलग खेमों में विभाजित रखा और पूँजी को शिक्षा, स्वास्थय, अन्य ढॉचागत विकास व कल्याणकारी कार्यों पर लगाने के बदले सैन्य उपकरणों व मुद्वों पर लगा दिया। समाज में व्याप्त परिस्थितियों आर्थिक उन्नति तथा सम्पन्नता को प्रभावित करती हैं। हम व्यापक स्तर पर व्याप्त समस्याओं को अपने स्तर से सुलझाने में तो सक्षम नहीं हैं किन्तु इन बड़ी समस्याओं के संदर्भो में अपनी भागीदारी व योगदान को समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार आत्मशान्ति या व्यक्ति के अंदर की शान्ति दूसरों के साथ शान्तिपूर्ण सहजीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। किन्तु इसे 'स्व-केन्द्रित' उदासीनता के रूप में या अन्य लोगों के प्रति अंधभक्ति के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। शान्ति को समझने का मूल आधार है कि शान्ति के लिए हमें वैयक्तिक रूप से व सामूहिक रूप से सहयोग करना चाहिए। इसलिए न केवल स्वयं की भलाई का, बल्कि परिवार में, पड़ोस में और कार्यस्थल में स्वस्थ संबंध बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण हैं। शान्ति, एक ओर तो आन्तरिक शान्ति बनाए रखना है तो दूसरी ओर स्वस्थ संबंध बनाए व बनाए रखने (संभालने) की कला है। इसका एक अच्छा उदाहरण इस किसान व देवदूत कहानी में है -

एक उदार, खुशमिजाज और सज्जन किसान था। वह बहुत परिश्रमी था। उसकी सज्जनता के कारण एक देवदूत उसके पास आया। उसने किसान से एक वरदान माँगने को कहा, किसान अपने लिए एश-ओ-आराम की जिन्दगी माँग सकता था। किन्तु, उसने कहा - 'मुझे संसार में जितना मुक्तहस्त आहार और प्यार मिला, उससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। किन्तु, अपनी मृत्यु से पूर्व मैं एक बार स्वर्ग और नरक को देखना चाहता हूँ।'

देवदूत ने उसे अपना लबादा पकड़ाया और एक क्षण में वे दोनों नरक के दरवाजे पर पहुँच गए। वे दोनों दरवाजे के अन्दर गए।उस सज्जन किसान ने अपने आप को एक सुन्दर मार्ग पर पाया जिके दोनों ओर हो- भरे, सुन्दर वृक्ष लगे थे। बहुत सारे व्यक्ति एक लम्बी सी मेज के चारों ओर बैठे थे और उनके सम्मुख संसार के स्वादिष्टतम विविध प्रकार के भोजन सजे थे। जब वह उनके समीप पहुँचा तो उसने देखा कि वे सभी बहुत दुबले- पतले और बीमार से थे, ऐसा लगता था जैसे उन्हें बहुत दिनों से भोजन ही न मिला हो। तब उसने ध्यान से उन्हें देखा कि उनके हाथ एकदम सीधे थे और वे उन्हें मोड़ नहीं सकते थे। इन लोगों के लिए स्वयं भोजन ग्रहण कर पाना असंभव था। किसान ने सोचा - आह ! यह तो सचमुच नरक है।

इसके बाद वे दोनों स्वर्ग के दरवाजे पर पहुँचे। यहाँ भी किसान ने स्वयं को एक सुन्दर मार्ग पर पाया।मार्ग के दोनों ओर सुन्दर और हरे- भरे वृक्ष थे। यहाँ भी सुन्दर, स्वादिष्ट खाद्य- पदार्थो से भरी मेज सजी थी। लोगों के हाथ सीधे थे और वे मुड़ नहीं सकते थे। इसलिए वे स्वयं अपने हाथों से भोजन नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद ये लोग प्रसन्नचित थे। उनकी आँखें चमक रही थीं और ऐसा लग रहा था कि उन्हें भरपेट भोजन मिला है। पर यह कैसे संभव हो सकता है? वह किसान उनके और निकट चला गया और उसने देखा कि स्वर्ग बैठे वे व्यक्ति एक- दूसरे को भोजन करा रहे थे। उस सज्जन किसान ने सिर हिलाते हुए कहा - हाँ, यह सच्चा स्वर्ग है।

यहाँ एक व्यावहारिक प्रश्न उठता है कि क्या हम शान्ति में इसलिए नहीं रह पाते कि समाज और व्यवस्था हमें शान्ति में नहीं रहने देती। क्या इसका अर्थ यह है कि हम पूर्णत: दूसरों की इच्छा पर निर्भर है? क्या इसका अर्थ यह है कि यदि दूसरे शान्ति से रहना पसंद नहीं कर रहे हैं तो हम भी अशान्ति में जिएँ? यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शान्ति की और उन्मुख व्यक्ति बड़े से बड़े तूफान में भी शान्तिपूर्ण रह सकता है। यद्यपि, इसका अर्थ यह भी नहीं है कि तूफान उसे हानि नहीं पहुँचाता है। इसलिए जरूरी है कि हम अपने आस-पास की ऐसी हलचलों पर नजर रखें और इन विवादों को दूर करने का प्रयास करें और यदि संभव हो तो अपनी आन्तरिक शाक्ति को शान्त रहने की ओर विकसित करते रहें। मुद्दा यह है कि यदि हमारे आस- पास में अशान्ति है, झगड़े, विवाद और संघर्ष हैं तो क्या हम सब

अशान्त जीवन जिएंगें? बहुत से लोग इस बात से सहमत होंगे कि हमें अपनी ओर से कुछ न कुछ प्रयास तो करने ही चाहिए। हमें उन समस्याओं पर काम करना चाहिए जो शान्ति भंग करती हैं। चाहे वे समस्याएँ अध्ययन, काम, घर - परिवार, दाम्पत्य या बच्चों से संबंधित हों। किन्तु, यदि एक समस्या का समाधान कर भी लिया तो इसके बाद क्या होगा? क्या हम शान्ति से रह पाएँगे? या शान्ति को सुरक्षित रख पाएँगे? शायद और कोई तनाव उत्पन्न हो जाएँ तब क्या इसका अर्थ यह है तक हम कभी शान्ति से नहीं रह पाएँगे?

यह समझना बहुत आवश्यक है कि शान्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो दूसरे हमें प्रदान करेंगे। यह तो एक ऐसी वस्तु है जिसका हम चयन करते हैं।

शान्ति का चयन

शान्ति का चयन हमारी अभिप्रेरणा और हमारी इस आशा पर निर्भर है कि शान्ति हमारी आन्तरिक अशान्ति को दूर करके हमें बेहतर महसूस करने में सहायक है। साधारण भाषा में कहें तो, हमारा आन्तरिक लक्ष्य होता है कि हम अपने दैनिक जीवन के कार्यों में मानसिक प्रसन्नता प्राप्त कर सकें। हम भोजन इसलिए करते है कि हमें भूखा रहना पसन्द नहीं है। तरक्की पाने के लिए हम कठोर परिश्रम करते है क्येंकि हमें लगता है कि उन्नति पाकर हमें प्रसन्नता मिलेगी। आत्मसंतुष्टि पाने के लिए हम किसी भी काम को अच्छे से अच्छे ढंग से करते हैं। शान्ति पाने के लिए कोई संगीत सुनता है तो कोई एकांत में समय व्यतीत करता है। क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे उन्हें मानसिक शान्ति मिलती है। लोगों को परस्पर सहायता करने से आत्मसंतुष्टि प्राप्त होती है। हम जो कुछ भी करते हैं अपनी आत्मसंतुष्टि व प्रसन्नता के लिए करते हैं। यद्यपि, हम यह भी जानते हैं कि इनमें से कुछ भी हमें स्थाई शान्ति प्रदान नहीं कर सकता हैं।

हम सब जानते हैं कि जिन व्यक्तियों के पास सब प्रकार की सुरक्षा उपलब्ध है, उन्हें भी शान्ति नहीं मिलती (पाती) है। या ऐसे व्यक्ति जो विश्व प्रसिद्व हैं, जिनकी सम्पूर्ण विश्व में पहचान है उन्हें भी आन्तरिक शान्ति नहीं मिलती। या फिर वे लोग जिनकी स्वीकृति भी है, पहचान और शाक्ति दोनों हैं, फिर भी वे प्रसन्न नहीं हैं। हम यह भूल जाते हैं कि वास्तव में हमें न सुरक्षा की, न पहचान/स्वीकृति की और न ही शक्ति की, बल्कि मात्र आन्तरिक शान्ति की आवश्यकता है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यदि हमें वह सब प्राप्त हो जाए जो हम चाहते हैं तो क्या हमें शान्ति मिल जाएगी? इन प्रश्नों के उत्तर पाने केलिए हमें अपने अन्तरमंन में गम्भीर चिंतन व समझ की आवश्यकता है।

किसी परिस्थिति की समझ और उसको अनुभव करना तथा उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना हमारे चयन पर आधारित होता है। यदि हम किसी परिस्थिति को आतंक के रूप में लेते हैं तो हम शान्तिपूर्वक जी नहीं सकते। इसके विपरीत उसी परिस्थिति को एक अवसर के

रूप में भी समझ सकते हैं। दिन के प्रत्येक क्षण, चयन की समझ हमारे सम्मुख उपस्थित होती है। इस चयन का जितना ही अधिक हम अभ्यास करेंगे उतना ही हम स्वयं के व्यवहार, विचारों व भावनाओं के मालिक बनते जाएगें। इस स्थिति में हम परिस्थितियों पर अधिक स्वतंत्र रूप से प्रतिक्रिया कर पाएँगे और आन्तरिक शान्ति व स्थायित्व को बनाए रख पाएँगे, जो कि शान्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

परिस्थितियाँ स्वयं में तटस्थ हो सकती हैं, किन्तु जब हम उन्हें अपनी अपेक्षाओं और विचारों के अनुरूप, जैसा हम उन्हें देखना चाहते हैं, मिलान करने लगते हैं तो वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती हैं। इस प्रकार ये केवल बाह्य परिस्थितियाँ ही नहीं है जो दबाव उत्पन्न करती हैं बल्कि परिस्थितियों व उनके बारे में हमारी अवधारणा के मध्य का द्वन्द्व हैं जो तनाव पैदा करता है। अपने लिये नकारात्मक तनावपूर्ण प्रतिक्रियाओं को हम स्वयं सृजित करते हैं। समस्या का मुख्य कारण बाह्य घटित घटनाएँ नहीं, बल्कि इनके प्रति हमारी समझ/बोध ही है। हम समझते हैं कि हम परिस्थितियों या घटनाओंके शिकार हैं, जबकि वास्तव में हम स्वयं ही इनके प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं के लिये उत्तरदायी हैं। परिस्थितियों एवं घटनाओं को खुले दिमाग से देखना निश्चित रूप से शान्ति लाता है। अत: अपने आन्तरिक आयाम- दृष्टिकोण, समझ/बोध एवं मूल्यों की समझ और सार- संभाल करना ही वह मार्ग है, जो हमें सही प्रतिक्रियाओं की ओर ले जाता है, जो हमें शाक्ति देती हैं । आन्तरिक स्थिरता द्वारा ही लहरों से विचलित होने के स्थान पर इन लहरों पर सवार होना सीखा जा सकता है। यह स्थिरता हमें हमारे जीवन में होने वाले परिवर्तनों को समझने व स्वीकारने में सक्षम बनाती है। यदि हम आन्तरिक रूप से स्थिर हों, तथा स्वयं के प्रति अधिक उदार हो सकें, तो हम अधिक स्पष्टता व रचनात्मकता के साथ सोचने व कार्य करने में सक्षम हो पाएँगे और अधिक मानवीय भी हो सकेंगे।

जब तक हम इस भ्रम में रहते हैं कि हम अपने आस- पास के संसार को अपने अनुसार बदल सकते हैं, अपने अनुकूल कर सकते हैं तब तक हम शान्ति नहीं प्राप्त कर सकते। बल्कि, हम अग्रलिखित कहानी के नसरूद्दीन की तरह बुद्विमान मूर्ख ही हो सकते हैं।

एक बार नसरूद्दीन के पड़ोसी ने उसे भूमि पर कुछ ढूँढते हुए देखा। 'क्या खो गया?' उसने पूछा। 'मेरी चाबियाँ नसरूद्दीन ने कहा।

पड़ोसी भी चाबियाँ खोजने में उसकी मदद करने लग गया। थोड़ी देर बाद उसने पूछा -

'आपने चाबियाँ कहाँ रखी थीं?' 'घर में'

'ओ खुदा ! तब आप उन्हें यहाँ बाहर क्यों खोज रहे हो?'

'क्योंकि, यहाँ पर ज्यादा रोशनी (उजाला) है।'

यह एक मनोरंजक कहानी मात्र नहीं है। शान्ति की कुंजी (चाबी) भी हमारे भीतर ही है, जोकि हममें से बहुतों के लिए, धुँघला और अनजाना क्षेत्र है। इसे हम अधिक रोशनी वाले क्षेत्र अर्थात् बाहर तलाश करते रह जाते हैं।

शान्ति के चयन की प्रवृत्ति हमारे आन्तरिक मूल्यों पर भी निर्भर करती है। यदि हमें विवाद और द्वन्द्व में ही आनन्दानुभूति होती है या हम दूसरों के विवादों में उदासीन रहना पसंद करते हैं तो निश्चित ही हम अच्छे संबंध, सुरक्षा व स्थिरता के महत्व को अस्वीकार कर रहे होते हैं। जो भी हो, यदि हम यह पाते हैं कि आस-पास विवाद या द्वन्द्व की स्थिति न केवल संबंधित व्यक्ति को बल्कि आस-पास के वातावरण को भी खराब करती है तो हम मघ्यस्थता करने के मार्ग खोजते हैं और विवाद का हल निकालने का प्रयास करते हैं। इस तरीके से हम समन्वयन और पारस्परिकता के मूल्यों को स्थापित करते हैं।

शान्ति के चयन की हमारी प्राथमिकता हमारे मूल्यों और दुनिया व व्यक्तियों की हमारी समझ में दिखाई देगी। अपने मूल्यों के प्रति जागरूकता हमारी स्व-परिवर्तन की प्रक्रिया के अनुश्रवण व आकलन में सहायता करेगी।

जब हम सब शान्ति को स्वीकृति देते हैं तो हमें विचारपूर्ण चयन करने की आवश्यकता होती है ताकि हम स्वयं के भीतर और आस-पास के वातावरण में शान्ति स्थापित कर सकें। शान्ति के चयन का अर्थ है जीवन के समस्त क्षेत्रों में उपलब्ध चयन के अवसरों को जानना और उनके लिए किए जानेवाले प्रयासों की पहचान करना तथा सचेतन होकर उन चयनित कार्यों (पर कार्य) को करते रहना जो शान्ति के लिए जरूरी हैं। ऐसे शान्ति के लिए पूर्व-तत्पर चयन न केवल अपने बल्कि दूसरों की भलाई व रूचियों को महत्व देता हैं। इसे हम 'रूचियों का संतुलन' कहते हैं। शान्ति का अर्थ ही "अपने और दूसरों के बीच संतुलन" या "मैं और आप" का संतुलन है। इसका अर्थ लेने व देने के बीच सामंजस्य से है। यदि हमारी रूचि मात्र पाने/लेने ही में है और हम देने के आनंद से वंचित हैं तो हमारा शान्ति की ओर अभिमुखीकरण संशयात्मक है। अत: वैयक्तिक रूप से शान्ति की ओर उन्मुख होना स्वयं के विषय में सोचने के स्थान पर दूसरे के प्रति सोचने की ओर बढ़ता है।

पारस्परिकता का सिद्वान्त-

शान्ति के लिए स्वस्थ संबंधों को बनाने व उन्हें बनाए रखने/संभाले रखने की कला महत्वपूर्ण है। संबंधों में ही जीवन का सार समाहित है। संबंध जीवन के जिस सिद्वान्त को प्रकट करते हैं वह है : पारस्परिकता। एक पक्षीयता पारस्परिकता की विरोधी है। श्वसन, जो जीवन का आधार है, पारस्परिकता का ही प्रयोग है। हम सॉस लेते हें और छोड़ते हैं। इसकी पारस्परिकता टूटने का परिणाम मृत्यु है। शान्ति के लिए दृढ़ और प्रमाणिक पारस्परिकता को अपनाना महत्वपूर्ण रणनीति हैं। आज की 'गला-काट प्रतियोगिता' के कारण बच्चों में कटुता व्याप्त हो रही है। इसे देखते हुए 'पारस्परिकता' को अधिक केन्द्रीय और अत्यावश्यक रणनीति के रूप में अपनाए जाने की आवश्यकता है। यदि हम शिक्षा के माध्यम से/ द्वारा बच्चों को न्यायपूर्ण और आनन्ददायी

रूप में परस्पर जुड़ने और अपने संसार से जुड़ने की क्षमता में अपंग/अक्षम कर देते है तो यह अत्यन्त कारूणिक है। शिक्षा को शान्ति की संस्कृति को मजबूत करना चाहिए, न कि उसकी जड़ों को काटना। एक शान्ति उन्मुख शिक्षक को अपने बच्चों के बीच शान्ति का पोषण करने के लिए पारस्परिक की विद्या को अनेक तरीके से बताना चाहिए।वर्तमान परिदृश्य में हमें पारस्परिकता के शिक्षाशास्त्र को विकसित करने की आवश्यकता हैं।

एक स्व-केन्द्रित व्यक्ति अपनी जागरूकता एवं उत्तरदायित्वों के प्रति रूढ़िवादी/ परम्परागत व संकुचित होता है दूसरी ओर, एक शान्ति अभिमुख व्यक्ति एक नगण्य से मुददे को एक बड़े परिपेक्ष्य में देख सकता है और विवाद की स्थितियों को भी अनूकुल बनाता प्रतीत होता हैं। ऐसा व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर अपने वैयक्तिक लाभों को बेहतर लाभ के लिए छोड़ देने में कोई संकोच नहीं करता।

शान्ति के चयन में समस्या का सृजनात्मक हल, सावधानीपूर्वक समस्या और उसके विभिन्न आयामों को समझना, चिंतन के नए तरीके अपनाना, स्थितियों को अनुभव करना और उन्हें सँभालना शामिल हैं। समस्याओं को अपनी राह से हटाने की इच्छा रखना एक सामान्य प्रवृत्ति है। प्राय: हम समस्या की गहराई से छानबीन करने के लिए पर्याप्त समय नहीं देते/लगाते और सबसे पहले सोचे गए संभव हल को ही पकड़ लेतेहैं। इसमें जल्दबाजी और छोटे-मार्ग का आश्रय लेने की प्रवृत्ति अन्तर्निहित है। बाद में हम समस्या को जस का तक पाते हैं। यह सोचे गए हल पर पुनर्विचार करने, चयनित हल के पूर्व व पश्चात परिणामों पर अनुशीलन करने, परिणामों की पूर्व कल्पना कर पुन: विश्लेषण की आवश्यकता की माँग करती है। इस प्रक्रिया में पूर्व धारणाओं को चुनौती देना, दिमाग मे स्थित पूर्व निर्धारित ढ़ॉचे को समझने, अपने बोध तथा पूर्व विचारों पर पुन: सोचने की इच्छा सम्मिलित है। जैसा कि अल्बर्ट आइन्स्टीन ने कहा है -"किसी भी समस्या को उसी चेतनता व समझ के साथ हल नहीं किया जा सकता, जिसने समस्या उत्पन्न की है। हमें नए सिरे से देखना सीखना होगा।" किसी मुददे या समस्या के सृजनात्मक समाधान के लिए शँकाओं को स्पष्ट करना, संवाद स्थापित करना, आवश्यकताओं और समस्याओं पर दूसरों के परिपेक्ष्य को दृढ़ता से स्वीकारना और उस दिशा में संगतपूर्ण कदम उठाना आवश्यक है। अपने व्यवहार का सतत अनुश्रवण, समझ बोध में आ रहे परिवर्तनों के प्रति जागरूकता और सोचने के तरीके हमें विभिन्न मुददों, समस्याओं और विवादों पर सृजनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने में सहायता करते हैं।

अन्त में, शान्ति का चयन हमारी जीवन शैली से संबंधित है। वैयक्तिक स्तर पर इसमें उपभोक्तावाद को नकार कर सरल जीवन शैली की ओर कदम बढ़ना शामिल है, जो शान्ति का आधार है। जीवन में सरलता/ सरल जीवन शैली का रहस्य है - प्राथमिकताओं की सही समझ। जीवन शैली से अधिक महत्वपूर्ण जीवन है। हम क्या हैं, का बोध- हम क्या पहनते

हैं या हम क्या खाते हैं, से अधिक महत्वपूर्ण है। एक बहुमूल्य और शाहखर्च (खर्चीली) जीवन शैली धीरे-धीरे हमारी शान्ति को नष्ट कर सकती है। स्व-केन्द्रित अपने आप में मगन रहने वाली जीवन शैली हमारे वैयक्तिक विकास व उत्तरदायित्व की भावना को हानि पहुँचा सकती है। मात्र वही व्यक्ति जो अनुशासित जीवनशैली बनाए रखते हैं और व्यावसायिक रूप में विकसित होते रहते हैं, दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं। अत: शान्ति की ओर उन्मुखीकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष अपनी जीवन शैली के प्रति सर्तक रहना और यह विश्लेषण करते रहना है कि यह शान्ति उत्पन्न करती है अथवा नहीं।

शान्ति के चयन में किसी व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले दिन- प्रतिदिन के कार्यों में शान्ति की संस्कृति को बढ़ाने के अवसरों के प्रति सतर्कता सम्मिलित है। इसके अन्तर्गत कार्यस्थल पर समग्र रूप में शान्ति का समर्थक बनना सम्मिलित है। शान्ति समर्थक होने का अर्थ मात्र शान्ति का उपदेश देना नहीं है बल्कि कार्यस्थल पर सब लोगों के साथ शान्तिपूर्ण और आनन्दपूर्ण संबंध बनाना, स्नेहपूर्ण संस्कृति का अभ्यास और शान्ति के मूल्यों को बनाए रखना शामिल है। संक्षेप में कहा जाए तो शान्ति समर्थक जीवन जीना है।

शान्ति संबंधी कुछ तथ्य :

शान्ति कार्यो का आधार है -

हमें इस मान्यता को स्वीकारने की आवश्यकता है कि शान्ति हमारे कार्यों का आधार है। कोई भी काम कार्य नहीं है यदि वह शान्ति की दिशा में सहयोग नहीं करता है। यदि काम विवाद, तनाव या अप्रसन्नता का माध्यम बन रहा हे तो यह सामाजिक स्वास्थ्य के लिए संकट का संकेत है। शान्ति और कार्य एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। एक नाई तब तक बाल नहीं काट सकता, जब तक कि दूसरा स्थिर होकर न बैठ जाए, एक संगीतज्ञ गा नहीं सकता और एक वक्ता भाषण नहीं दे सकता, यदि उसके श्रोता बेचैन हों इस प्रकार कार्य का आधार शान्ति है यही एक शिक्षक के नाते हमें स्थापित करना है।

शान्ति गतिशील और समग्र है -

शान्ति सचेतन मस्तिष्क से किए गए कार्य और उनका स्वयं पर और दूसरों पर पड़ने वाले प्रभावों का परिणाम है। हमारे जीवन का प्रत्येक क्षेत्र शान्ति से प्रभावित होता है और इसके विपरीत भी होता है। शान्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए हमारी विभिन्न मूलभूत आवश्यकताओं का पूरा होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ: शारीरिक स्वास्थ्य के बिना अच्छे जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। सकारात्मक दृष्टिकोण और वांछनीय आदतों के समावेश से स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखा जा सकता है। प्रारम्भ में, स्वास्थ्य को बीमारी से मुक्त रहने के रूप में समझा जाता था, किन्तु अब इसे अधिक व्यापक अर्थ में लिया जाता है क्योंकि शारीरिक स्वास्थ्य व इसके अन्य आयाम जैसे - मानसिक,

सामाजिक व भावनात्मक स्वास्थ्य- का समागम ही सही मायने में स्वास्थ्य है, जो समग्र स्वास्थ्य कहलाता हे।

शान्ति बाहय परिवेश पर भी निर्भर करती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर व बाहर, प्रत्येक समय व स्थान पर ऐसी परिपूर्ण शान्ति की स्थिति को बनाए नहीं रख सकता है। तो भी, यदि हम शान्ति प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा रखते हैं तो हमें वैयक्तिक और सामाजिक स्तर पर, स्वेच्छा से और निरन्तर शान्ति बनाए रखने का प्रयास करना होगा। हमारी प्रवाहमान और परिवर्तनशील आवश्यकताओं के कारण हम स्वयं के साथ व अन्य व्यक्तियों के साथ सदैव शान्ति की स्थिति में नहीं रह सकते। हमारी इच्छाएँ, आवश्यकताएँ और हमारे चयन हमारी माँग को बढ़ाते रहते हैं, इनमें से कुछ की ही प्रतिपूर्ति हो पाती हे। हमारी वास्तविक आवश्यकता क्या है और किस आवश्यकता को पूरा किया अथवा छोड़ा जा सकता है, के संबंध में जागरूकता शान्ति प्रक्रिया की पूर्व आवश्यकता है। इस प्रकार शान्ति में अपनी इच्छाओं पर प्रतिबंध के साथ ही साथ दूसरों के दृष्टिकोणों व आकांक्षाओं का संज्ञान लेना तथा समायोजन करना सम्मिलित है। शान्तिजीवन में कुछ निश्चित दृष्टिकोणों व मूल्यों को अपनाने से आती है जो स्वयं को नियंत्रित करने व आतंरिक शाक्ति तथा दूसरों के साथ स्वस्थ संबंधों के व्यवहार से आती है। सकारात्मक व्यवहार और अपनी अन्त:शक्ति के विकास पर केन्द्रित रहना और सर्व- स्वीकृत अच्छाई के लिए काम करना ही शान्ति का हॉलमार्क प्रतीक है।

शान्ति संदर्भ विशिष्ट है -

शान्ति के सरोकार विभिन्न संदर्भों और स्थितियों में बदल जाते हैं। जो व्यक्ति इराक या कश्मीर जैसे स्थान पर निवास करते हैं, उनके लिए युद्व का न होना ही शान्ति है। जो लोग साम्प्रदायिक दंगों से प्रभावित क्षेत्रों में निवास करते हैं, उनके लिए शान्ति का अर्थ हिंसा का न होना या सामंजस्य के साथ रहना से होता है। भारत के बुंदेलखंड या अफ्रीका के सोमालिया के निवासियों के लिए जीवन जीने लायक भोजन पा लेना ही शान्ति है। कुछ अन्य व्यक्ति जो संसाधनों से रहित/कमी वाले क्षेत्रों में रहते हैं, के लिए स्वच्छ पेय जल और बिजली या दो जून के भोजन के लिए रोजगार की उपलब्धता या शोषण का शिकार न होना ही शान्ति है। एक शिक्षक के लिए मुख्यत: भीड़-भरी कक्षाओं को व्यवस्थित करने, अनुशासन बनाए रखने, पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करने, अच्छे अकादमिक परिणाम देने, आक्रमकता को संभालने, सहयोगियों व अन्य शिक्षकों के साथ मधुर संबंध स्थापि करने आदि- आदि विषय शान्ति के संदर्भ प्रस्तुत करते हैं। सचमुच ही, एक शिक्षक के लिए शान्तिपूर्ण कार्य संस्कृति का विकास करना एक बड़ी चुनौती है। विवाद/द्वन्द्व और हिंसासे मुक्ति और अपने भीतर व चारों ओर सामंजय बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। आगामी भाग में शान्ति निर्माण के सूक्ष्म अर्थो को शिक्षण के मूल आधार के रूप में समझने के लिए नवीन द्वार खोले जाएंगे। यदि वे यह समझ पाए तो ही वे शिक्षा के मूल लक्ष्य को पूर्ण कर

पाएंगे तथा हमारे बच्चों को स्वयं में तथा अपने परिवेश के दूसरे लोगों के साथ शान्ति का निर्माण करने की क्षमता दे पाएगें।

यहाँ दिये गये विचार संपूर्ण न होकर केवल उदाहराणार्थ दिये गए है। एक शिक्षक, जो शिक्षा के माध्यम से शान्ति की संस्कृति के संवर्धन के प्रति जागरूक है और उसे अपनी संवृत्ति/व्यवसाय का मूल आधार मानता है, वह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष- प्रत्येक अवसर को अपनी पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने के प्रति सर्तक होता है। केवल एक शान्ति उन्मुख शिक्षक ही अनन्त नवाचारी तरीकों से अपने बच्चों में शान्ति उन्मुखता का पोषण कर सकता है।

शान्ति के मूल आधार -

शान्ति एक बीज के समान है। यह अंकुरित होती है, आकार ग्रहण करती है और एक वृक्ष के रूप में बढ़ती है और लोगों को शरण व छॉव प्रदान करने के लिए चारों ओर अपनी शाखाएँ फैलाती है। शान्ति व्यक्ति से प्रारंभ होती है, परिवार व समुदाय में विस्तृत होती हुई इसकी प्रणालियों, तंत्रों व संस्थाओं को पुनराभिमुख करती हुई सर्वत्र विस्तार पाती है और अन्ततः पूरी धरती पर सम्पूर्णता में छा जाती है।

शान्ति का निर्माण भवन निर्माण के समान ही ईंट पर ईंट रखकर किया जाता है। शान्ति के भवन की पहली आधारभूत ईंट ‘व्यक्ति’ है। एक व्यक्ति की शान्ति के लिए उसके जीवन की आवश्यकताओं - भोजन, वस्त्र और आवास का पूर्ण होना आवश्यक है। एक व्यक्ति की ‘आधारभूत’ आवश्यकता में जीने और विकसित होने के अवसर सम्मिलित हैं। इसी कारण विश्वभर में शिक्षा को मूल अधिकार माना गया है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा की आवश्यकता को शान्ति के निवेश के रूप में देखा जाना जरूरी है, बशर्ते यह सही शिक्षा हो।यह भी सत्य हे कि व्यक्ति की अन्य आवश्यकताओं जैसे-सुरक्षा, सम्मान, पहचान और भलाई का भी प्रबन्ध हो। समाज में शान्ति के लिए इसके सदस्यों को हिंसा, अन्याय, अपमान, दमन व भेदभाव से सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। एक मनुष्य केवल एक शरीर मात्र नहीं है बल्कि सम्पूर्ण हस्ती है। उसके सुव्यवस्थित विकास के लिए उसकी शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक आवश्यकताओं की संतुष्टि सुनिश्चित करनी होती है। केवल पूर्ण और समग्र रूप से विकसित व्यक्ति ही शान्ति का आधार स्तम्भ हो सकता है।

‘परिवार’ व्यक्ति के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाने वाला दूसरा महत्वपूर्ण आधार है। ऐसे बच्चे जो विवादपूर्ण घर में पोषित होते हैं, शान्ति की ओर उन्मुख नहीं होते। स्वस्थ संबंध स्थाई व शान्तिपूर्ण परिवार की रीढ़ हैं। ऐसे संबंध स्वस्थ मानवीय मूल्यों और आदर्शो से निर्मित होते हैं। ऐसे घरेलू वातावरण जहाँ हिंसा को समस्या समाधान की रणनीति के रूप में वरीयता दी जाती है, में पोषित बच्चों में शान्ति के मार्ग में विश्वास नहीं होता है

या कहें, उनमें विवाद समाधान की रणनीति अपनाने का धैर्य नहीं होता। घर हमारी मानवीयता का पोषण/संवर्धन करता है।

'समुदाय' जिसमें व्यक्ति रहता है, शान्ति का तीसरा महत्वपूर्ण आधार हे। यह किसी व्यक्ति की पहचान निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हे और सुरक्षा के स्तर निर्धारित करता है। व्यक्ति और समुदाय के मध्य घनिष्ठ संबंधों को सरलता से देखा जा सकता है। एक धिरा हुआ और असुरक्षित समुदाय अपने सदस्यों में हिंसा पसंद करने के लिए रूचि जागृत कर सकता है और इस ओर संक्रमित कर सकता है।

एक व्यक्ति को हिंसा की ओर प्रवृत्त करने के लिए असुरक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है। हमारे संविधान में निहित सामूहिक अधिकार- अल्पसंख्यकों के अधिकार ऐसे समुदायों मे असुरक्षा को न्यूनतम करने और एक साथ होने की अनुभूति को बढ़ाते हैं। यह राष्ट्र निर्माण और शान्ति निर्माण के लिए एक निवेश है। दूसरी ओर, समुदाय के व्यक्तियों का कर्तव्य अपने सदस्यों पर दृष्टि रखना तथा ऐसे स्व-केन्द्रित व्यक्तियों को जो समुदाय के सदस्यों को निहित स्वार्थो के लिए कृत्रिम असुरक्षा में रखने का प्रयत्न करते हैं, को अस्वीकार करना है। ऐसे व्यक्ति जो इन व्यक्तियों को मौन स्वीकृति देते हैं या सॉउ-गाँउ करते हैं, अनजाने में ही शान्ति को नष्ट कर देते हैं। समस्त समुदायों के नेताओं का राष्ट्र के प्रति कर्तव्य है कि वे स्वयं को तदनुरूप ही नियंत्रित करें।

'समाज' शान्ति स्थापना की दिशा में चौथा महत्वपूर्ण आधार है। समाज एक विस्तारित और रंग-बिरंगा परिवार है। विविधता समाज की निशानी है, क्योंकि समाज विविध व्यक्तियों, परिवारों, रूझानों और समुदायों से बनता है। इन सबके होते हुए भी प्रत्येक समाज की कुछ साझा विशिष्टतॉए और तौर -तरीके होते हैं जिन्हें समाज के सदस्य समर्थन देते, अपनाते और प्रयोग करते हैं। यही कारण है कि हम उग्र समाज, स्थिर समाज या उपभोक्तावादी समाज जैसे शब्द प्रयोग करते हैं/कहते हैं।एक उग्र समाज में कई शान्ति पसन्द लोग हो सकते हैं, किन्तु सम्पूर्णता में ऐसा समाज हिंसा की ओर अभिमुख होता है तथा इनके सामूहिक निर्णय भी इसी प्रकार के होते हैं। एक व्यक्ति और उसके समाज के बीच गहन पारस्परिक संबंध होते हैं। सामाजिक रीति-रिवाज, लोकाचार, समाज में पलने-बढ़ने की प्रक्रिया के साथ अनजाने में ही व्यक्तियों द्वारा बिना प्रश्न किए (अविवेकी तरीके) आत्मसात होते जाते हैं। उन्हें ये सब स्वाभाविक प्रतीत होता है। हम कहते हैं कि एक स्वस्थ शरीरमें ही एक स्वस्थ मस्तिष्क रहता है इसी प्रकार यह कथन भी सही है कि एक स्वस्थ समाज में ही एक स्वस्थ व्यक्ति रहता है। किसी समाज में समाविष्ट व्यक्तियों, परिवारों व समुदायों का कर्तव्य है कि वे शान्ति नष्ट करने वाले तत्वों के अनुसरण, समर्थन, विधियों और लक्ष्यों से दूर रहें तथा स्व- प्रेरित/रूचियों को पोषण करें। एक शान्तिपूर्ण समाज में ही व्यक्ति, परिवार और समुदाय सुरक्षा, सम्पत्ति, विकास और

परिपूर्णता का लाभ प्राप्त व उसको उपभोग कर सकता है। किसी भी समूह को समाज की समरसता को नष्ट करने की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

'देश' शान्ति का सबसे बड़ा आधार है। इसका मुख्य संदर्भ 'राजनीति' एवं 'धर्म'में निहित है। सर्वहित के साथ संबंध बना पाने की क्षमता ही 'धर्म का सार है 'धर्म' शब्द रिलीजन से लिया गया है ' रिलीजन' शब्द लेटिन भाषा का है जिसका अर्थ 'स्रबंध बनाना' है। इस अर्थ में धर्म शान्ति का स्त्रोत है। संकीर्ण धार्मिकता, जो किसी व्यक्ति की निष्ठा और उत्तरदायित्वों को सीमित करती है, शान्ति के लिए हानिकारक है। यह कई बार अपने समुदाय से बाहर के सदस्यों के प्रति नकारात्मकता और विपरीत व्यवहार को प्रोत्साहित भी करता है। 'पोलिटिक्स' (राजनीति) का शाब्दिक अर्थ - 'एक शहर में साथ रहने की कला' है। राजनीति में 'सर्वप्रथम राष्ट्र' 'राष्ट्र सबसे पहले' का नारा हो सकता है। 'साम्प्रदायिक राजनीति', जो विकृत धार्मिकता को बढ़ाती है, धर्म और राजनीति दोनों को हानि पहुँचाती है। एक राष्ट्र जो घृणा और नकारकात्मकता को बढ़ने का अवसर देता है, वह अपनी ऊर्जा को नष्ट कर देता है। प्रगति और भलाई के लिए शान्ति आवश्यक है। शान्तियुक्त राष्ट्र ही विश्व शान्ति के आधारभूत तत्व हैं।

विभिन्न स्तरों पर शान्ति -

यदि आपकी आत्मा प्रकाशित है तो आपके अन्तर **वैयक्तिक** संबंधों में प्यार होगा। यदि अन्तर **वैयक्तिक** संबंधों में प्यार हे तो घर में समरसता होगी। यदि घर में समरसता है तो समाज में कानून व्यवस्था होगी और यदि समाज में कानून व्यवस्था हे तो सम्पूर्ण विश्व में शान्ति होगी।

- एक चीनी कहावत

जैसा कि उपरोक्त चीनी कहावत में उल्लेख है - प्यार और समरसता एक व्यक्ति से उत्पन्न होती है, किन्तु यह बाहर विस्तार पाती है और अन्तर **वैयक्तिक**, समुदाय, राष्ट्र और यहाँ तक कि विश्वस्तर तक विस्तृत हो जाती है।

व्यक्ति-

एक महिला जो हृदय से अन्याय को बदलने को उत्सुक और आशावादी थी, एक साधु से मिली और उसने साधु से पूछा - जब आपकी दुनिया में भूख, गरीबी, और अन्याय का साम्राज्य हो तो आप शान्ति से कैसे रह सकते हैं? साधु मुस्कराया और बोला - वत्स, यदि दुनिया में सब कुछ सही हो, न कहीं भूख हो, न गरीबी, न अन्याय, तब क्या आप शान्ति में रह सकती हैं?

शान्ति का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसके अन्तर्गत एक व्यक्ति की भौतिक, मानसिक, भावात्मक और आत्मिक आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं। शान्ति के लिए किसी व्यक्ति की निजी आवश्यकताओं को सरलता से सूचीबद्व किया जा सकता है। ये वे मूलभूत भौतिक

आवश्यकताएँ है जिनके बिना व्यक्ति सम्मानपूर्ण जीवन नहीं जी सकता, इनमें शारीरिक सुरक्षा और शारीरिक हिंसा व शोषण से मुक्ति भी शामिल है। युद्व की अनुपस्थिति, साम्प्रदायिक मतभेद, घरेलू हिंसा, सड़क दुर्घटनाओं से मुक्ति भौतिक सुरक्षा के अन्तर्गत आती हैं। शारीरिक सुरक्षा के साथ ही हमारी अन्य भौतिक आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति भी आवश्यक हे, जैसे, भोजन, स्वच्छ पेयजल, स्वास्थ्य सुरक्षा, वस्त्र तथा आवास आदि। जीवन के लिए उपरोक्त भौतिक संसाधनों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अच्छी शिक्षा, रोजगार, व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा उचित स्वास्थ्य योजनाओं की आवश्यकता होती है।

यद्यपि एक व्यक्ति को जीवन जीने के लिए भोजन, वस्त्र और आवास जैसी जैविक आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण हैं, और इस तरह शान्ति के पोषण हेतु महत्वपूर्ण तत्व हैं। तथापि शान्ति की अनुभूति करने के लिए मनुष्य की अन्य आवश्यकताएँ भी हैं। इनमें अच्छा स्वास्थ्य, प्रेम, प्रतिष्ठा, असुरक्षाओं से मुक्ति, आनन्द की अनुभूति, स्वयं को बिना भय के अभिव्यक्त कर पाने की स्वतंत्रता आदि शामिल हैं। इनमें से कुछ आवश्यकताओं को राष्ट्रीय,अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा मान्यता प्राप्त है। भारत में ये मौलिक अधिकार और विश्व समुदाय में मानवाधिकार के रूप में मान्य हैं। जब ये इच्छाएं व आकांक्षाएं क्रियान्वित नहीं हो पाती हैं तो व्यक्ति स्वयं को शान्ति के अभाव में पाता है। यह शान्ति का अभाव हिंसक व्यवहारों, जैसे : उत्तेजना, कुंठा, चिन्ता, अवसाद और क्रोध को बढ़ावा देता है और आत्महत्या, चोरी और यहाँ तक कि हत्या का कारण भी बन जाता हे। ये समस्त प्रक्रियाएँ एकाकीपन या पराएपन या अपनेपन के अभाव की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप होती हैं। ऐसी स्थितियों के उपचार या ऐसी हिंसक प्रतिक्रियाओं, जहाँ एक व्यक्ति स्वयं को या दूसरों को हानि पहुँचाता है, से बचने के लिए परिवार, मित्रों या अन्य व्यक्तियों, जो समर्थन/सहारा दें सके, के मध्य मजबूत संबंध बनाए जाने जरूरी हैं। यह समर्थन देने की प्रणाली किसी व्यक्ति को भावात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थिरता प्रदान करती है तथा व्यक्ति को सुरक्षित महसूस कराने में सहायक होती है।

अन्तरवैयक्तिक :

अन्तरवैयक्तिक स्तर पर शान्ति समस्त सदस्यों में पारस्परिक प्रेम, विश्वास और सहयोग पर आधारित है जो एक दूसरे के प्रति सम्मान और विविधताओं की स्वीकृति प्रदर्शित करते है। पारस्परिक संबंध गर्मजोशी से भरे, मित्रवत होते हैं और किसी भी प्रकार के विचार-विभेद या वैमनस्य का समाधान संवाद के माध्यम से किया जाता हे।

किसी समस्या के समाधान के लिए विचार-विमर्श/विवेचना की प्रक्रिया को स्थापित करना और धैर्य व सावधानीपूर्वक सुनना वह मूल कौशल है जिसे सीखा जाने व बढ़ावा दिए जाने की आवश्यकता है। शान्ति निर्माण की तकनीकी भाषा में इस प्रकार के कौशल को - संवाद व सक्रिय सुनना कहते है।

संतरे के लिए झगड़ा

दो व्यक्तियों के पास केवल एक संतरा था। वे दोनों ही उस संतरे को किसी खास उद्देश्य से पाना चाहते थे। अत: वे परस्पर लड़ने लगे। उन्होंने एक दूसरे पर दोषारोपण करना, एक दूसरे के संस्कारों और सामाजिक स्थिति को कोसना शुरू कर दिया।

उसी समय उधर से एक बुद्विमान वृद्वा गुजर रही थी। उन दोनों को झगड़ता देखकर उसने उन्हें लड़ने से रोका और उनकी समस्या पूछी। उन्होंने बताया कि वे दोनों ही उस संतरे को अपने लिए प्राप्त करना चाहते हैं। वृद्धा ने उनसे पूछा कि आखिर उन्हें वह संतरा किसलिए चाहिए। पहले व्यक्ति ने कहा कि उसे संतरे का रस चाहिए। यह सुनकर दूसरा व्यक्ति हँसने लगा और बोला- 'तब हम क्यों झगड़ रहे हैं क्योंकि मुझे तो संतरे के छिलके चाहिए ताकि मेरी पत्नी उससे उबटन बना सके। दोनों ने परस्पर हाथ मिलाया और वृद्धा को धन्यवाद दिया। वह मुस्करा कर बोली - 'लेकिन मैंने तो बस आप लोगों की बातचीत सुनने और परस्पर संवाद कराने के अलावा तो कुछ किया ही नहीं।'

यह एक साधारण कहानी प्रतीत हो सकती है किन्तु यहीं रणनीति अन्तर- सामुदायिक विवादों के लिए भी प्रयोग की जा सकती है। वास्तव में, हम सब बातचीत के अवसरों को टालना चाहते है। पूर्वाग्रह, ना-समझी या समानुभूति का अभाव संभवत: लोगों को शंकालु व भयभीत बना देता है और हमें किसी के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करने की ओर प्रवृत्त करता है (धकेल देता है)। हमारी आकांक्षाओं और इच्छाओं का टकराव और इन आशंकाओं के कारण 'समावेशन' या 'बहिष्करण' का भयावह बोध होता है, और इसका सर्वोततम समाधान आत्मीय संवाद, वार्तालाप और सक्रिय श्रवण के माध्यम से ही पाया जा सकता है। (इन दोनों अवधारणाओं पर अगले अध्याय में विस्तृत चर्चा की जाएगी) जब व्यक्ति अन्तर वैयक्तिक स्तर पर पारस्परिक क्रिया कर रहा होता है, तो वह ऐसे रिश्ते विकसित करता है। जिनके माध्यम से अपनी कमियों को समझकर रिश्तों का पोषण कर पाता है। जब कोई व्यक्ति किसी समुदाय या संगठन प्रवेश करता है तो अनेक कारक, पूर्वधारणाएं व मान्यताओं को आत्मसात् करने के कारण स्थितियाँ और अधिक जटिल हो जाती हैं। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि वैयक्तिक स्तर पर वार्तालाप और मध्यस्थता की प्रक्रिया समाज और समूह के स्तर पर होने वाले वार्तालाप और प्रकिया से भिन्न है।

समुदाय :

समुदाय व्यक्तियों का ऐसा समूह होता है जो किसी समानता - वंश, ऐतिहासिकता, भू-खंड या विशिष्ट अभिप्राय से एक दूसरे से बँधे होते हैं। समुदाय के स्तर पर शान्ति का अभिप्राय न केवल हिंसा या अपराध की अनुपस्थिति से है बल्कि, विभिन्न समूहों का एक दूसरे से उचित व्यवहार, स्वस्थ पारिवारिक व अन्तर पारिवारिक संबंध और पास-पड़ोस में स्वच्छता

व व्यवस्था से भी है। पारिवारिक, परिवारों के मध्य, परस्पर पास-पड़ोस में और एक साथ रहने वाले विभिन्न समूहों के बीच अन्तर वैयक्तिक संबंधों की पहचान एक-दूसरे की आवश्यकताओं और सरोकारों के प्रति विश्वास, गर्माहट और स्नेहपूर्ण व्यवहार से होती है।

छोटे समुदाय जैसे परिवार या बड़े समुदाय जैसे गाँव, सभी के पास पारस्परिक क्रियाओं के संचालन के लिए कुछ नियत मानदंड और नियम होते हैं।ये नियम/कानून समुदाय के सदस्यों के बीच शाक्ति संबंधों के प्रभाव से आते हैं। समुदाय में इन शक्तियों का बढ़ना या इन्हें नियंत्रित करना प्राय: विवाद का कारण बन सकता है जो हिंसा को भी बढ़ा सकता है।

सभी समुदाय संसाधनों जैसे-भूमि, जल, विद्युत या भौतिक संसाधनों को प्राप्त करने तथा प्रगति व सफलता के अवसरों जैसे - शिक्षा, प्रशिक्षण व रोजगार को प्राप्त करने के लिए शाक्ति अर्जित करना चाहते हैं। संसाधनों के संबंध में असुरक्षा, विवाद और हिंसा की ओर प्रवृत करने का एक मुख्य कारक है, जिसका लक्ष्य अपनी आवश्यकता के संसाधनों को प्राप्त करने के लिए शक्ति जुटाना है ये आवश्यकताएं वास्तविक या अनुभूत/ काल्पनिक हो सकती हैं। प्रत्येक स्थिति में, चाहे ये आवश्यकताएँ तर्कसंगत हों या इनका उद्वेश्य सिर्फ निहित स्वार्थो के लिए शाक्ति प्राप्त करना हो, उनके कारण उत्पन्न विवादों का निपटारा करने की जरूरत है। प्रत्येक व्यक्ति को विवाद में निहित विस्तृत दृश्य को समझने के लिए विभिन्न समुदायों की न्यायपूर्ण आवश्यकताओं और निहित स्वार्थो के प्रति जागरूक होना महत्वपूर्ण है। समुदायों के मध्य शान्ति स्थापना के लिए न्यायपूर्ण ढंग से कार्य करना और विभिन्नताओं को समायोजित करना आवश्यक है। परिवारों व समुदायों के मध्य संबंध सहानुभूति व सामंजस्य पर आधारित होने चाहिए ताकि परिवारों, समुदायों या व्यक्तियों का नेतृत्व करने वाले लोग अपनी शाक्तियों का उपयोग उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से करें न कि भाषा, क्षेत्र या 'जातिगत पक्षपात व पूर्वाग्रहों के आधार पर।

विभिन्न समुदायों के मध्य संवाद इसी उद्देश्य के लिए स्थापित किए गए संस्थागत मार्गो से संभव है। उदाहरण के लिए, पड़ोस में हो रहे किसी भी विवाद को 'वेलफेयर सोसाइटी' के संज्ञान में लाया जाना चाहिए और उसके द्वारा ही सुलझाया जाना चाहिए। इसी प्रकार अन्य संस्थाओं को सृजित/स्थापित किया जाना चाहिए ताकि संवाद को सुलभ किया जा सके। संवाद के अभाव में अविश्वास और असुरक्षा उत्पन्न होती है। समुदायों के मध्य असुरक्षा का, प्राय: उग्र भाषण देने वाले व्यक्ति शोषण करने लगते हैं और मासूम व्यक्तियों के विश्वास को जीत कर नेता की तरह उभर आते हैं।

समुदायों की संरचना पारस्परिक, विश्वास, स्वीकृति और ईमानदार रिश्तों से होती है जहाँ व्यक्ति अपनी शाक्तियों और विशेषाधिकारों का दुरूपयोग नहीं करते। शान्ति की भाषा को 'विविधता को सहन करने' से आगे बढ़कर 'स्वीकृति व सह-अस्तित्व' तक पहुँचना चाहिए। यह अच्छा होगा कि आप अपनी शाक्तियों का दूसरों के प्रति सचेतन प्रयोग करें और अन्य भी ऐसा ही करें, क्योंकि शाक्तियों का दुरूपयोग हो सकता है, जो तानाशाही में बदल जाती

है और जल्दी ही हिंसक हो जाती है। ये शाक्ति निहित संबंध राष्ट्र की राजनीति को प्रभावित करते हैं जहाँ शाक्ति कुछ विशेष समूहों में संचित हो जाती है, जो दूसरों के प्रति शोषण, असमानता और अन्याय को बढ़ाते हैं।

राष्ट्र :

भारत विविधताओं की धरती है - भोजन, वस्त्र, धर्म, भाषा, क्षेत्र, सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ - प्रत्येक में विविधता है और प्रत्येक की अपनी विशिष्ट खुशबू है। प्राय: ये विविधताएं पारस्परिक सामंजस्य / समरसता में रहती हैं और कभी एक दूसरे के प्रति बहुत हिंसक व्यवहार करने लगती हैं। भारतीय संविधान की उद्देश्यिका ऐसे विविधता भरे समाज में शांति के अभिभावी होने के लिए अच्छे संकेतक प्रस्तुत करती है। इन संकेतकों में से कुछ पदचिह्नानों को हम व्यक्तिगत से सामुदायिक स्तर तक देख सकते हैं। ये हैं स्वाधीनता या स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बन्धुत्व। इन्हें हम विभिन्न नामों से पुकारते हैं जैसे: शारीरिक सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, रोजगार प्राप्त करने का अधिकार और करूणा एवं प्रेम। इस अध्याय के अन्तर्गत हम देखेंगे कि ये शब्द वृहत / राष्ट्रीय स्तर पर कितने महत्वपूर्ण हैं।

भारत के संविधान की उद्देश्यिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व - सम्पन्न्लाकतंत्रात्मक गणराज्य के लिये तथा उस के समस्त नागरिको :

सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति,विश्वास धैर्य

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिये, तथा उन सब में

व्यक्ति की गारिमा और राष्ट्र की,

एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिये

दृढ़ संकल्प हो कर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छ:विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अहूनिकृत अधिनियमित और आत्मार्षित करते हैं।

वैयक्तिक स्तर से सामुदायिक और राष्ट्रीय स्तर तक स्वंतत्रता या स्वाधीनता, दीर्घकाल तक, विश्व में अशान्ति का स्त्रोत रही है। जिस प्रकार परिवार के किसी सदस्य की स्वतंत्रता का हनन होने पर वह आक्रामक व्यवहार करने लगता है, उसी प्रकार समुदाय का

भी व्यवहार होता है। समुदाय जब यक महसूस करता है कि उसकी विशिष्ट संस्कृति, सामाजिक- आर्थिक अन्त:शाक्ति और उस समुदाय की भलाई के अवसरों को सीमित कर दिए जाने की संभावना है, तो वह भी आक्रामक व्यवहार करता है। भारत के समान विविधता से परिपूर्ण देश में प्रत्येक समुदाय की स्वतंत्रता को पर्याप्त स्थान देना और साथ ही साथ समाज के सांस्कृतिक स्वरूप को बनाए रखना, एक तनी हुई रस्सी पर चलने के समान हे। चाहे कानून से हो या किसी एक समूह द्वारा दूसरे अल्पसंख्यक समुदाय के प्रति उठाए गए कदम या फिर निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी न देकर, किसी भी वजह से इस स्वतंत्रता का हनन हो सकता हे। भारत के सम्मुख ऐसे कई अवसर आए हैं जब जनता को महसूस हुआ कि उनकी स्वतंत्रता को ललकारा गया है और वे टकराव की स्थिति में उठ खड़े हुए हैं। अत: ऐसे विविधतापूर्ण देश में स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए उत्तरदायित्व के साथ जॉच करते रहना व संतुलन बनाना अति आवश्यक है।

> वास्तविक शान्ति केवल तनाव की अनुपस्थिति मात्र नहीं है, बल्कि न्याय की उपस्थिति है। –मार्टिन लूथर किंग जूनि.

न्याय वह स्तंभ है जो यह निर्धारित करता हे कि किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता दूसरों के प्रति निरंकुशता न बन जाए। जैसा कि एन.सी.एफ. 2005 के आधारपत्रक 'शान्तिके लिए शिक्षा' में इंगित किया गया हे - 'एक ऐसे समाज में जहाँ स्थानीय अन्याय के अनेक विवरण हें, वहाँ शान्ति के विरोधाभासी होते हुए भी शान्ति से पूर्व न्याय की मांग को वरीयता दी जानी चाहिए। 'हमारी सक्रिय न्यायपालिका, संवैधानिक बाध्यताएँ और न्यायपालिका के संसाधन सिक्के के एक पहलू मात्र हैं। न्याय के अर्थ पूर्ण होने के लिए शाक्तियों के साझा करने, शोषित वर्ग के प्रति करूणा और प्रतिकूलताओं के प्रति समानुभूति का भाव रखने की आवश्यकता है। शोषण से मुक्ति नागरिकता, की शिक्षा का केन्द्र बिन्दु हैं। विद्यार्थियों को न्याय के लिए खड़े होने की शिक्षा देने के लिए अधिकारों और कर्त्तव्यों की शिक्षा देना आवश्यक हे।

समुदाय में शान्ति सुनिश्चित करने का तीसरा स्तम्भ समानता है। यदि समानता सुनिख्यित नहीं है तो स्वतंत्रता और न्याय खोखले शब्द मात्र रह जाते हैं। समानता का अर्थ सबके लिए समान व्यवहार मात्र नहीं है बल्कि इसका क्षेत्र व्यापक है। इसके अर्न्तगत जन्म, स्थान या जैंडर इत्यादि से निरपेक्ष व भेदभाव रहित होकर सब नागरिकों को समानस्तर पर लाने के लिए दीर्घावधि से चले आ रहे शोषण से मुक्ति और मानसिक, शारीरिक और आत्मिक विकास के अवसर उपलब्ध कराना अन्तर्निहित है।

यदि हम विश्व में अपने देश के चिंतन का प्रसार चाहते हैं, तो हम सब लोगों को इन तीनों सिद्धान्तों (स्वतंत्रता, न्याय और समानता) को आत्मसात् करना होगा। बन्धुत्व एवं एकता के महत्व और एक राष्ट्र व विश्व के भाग के रूप में एक बड़े समुदाय का अंग होने की

समझ के लिए हमें अपनी पारस्परिक निर्भरता को मान्यता देनी होगी और तब ही हम एक शान्तिपूर्ण राष्ट्र और एक शान्तिपूर्ण विश्व निर्माण के लिए सशक्त हो पाऐंगें।

वैश्विक -

विगत 200 वर्षो में दुनिया ने दो विश्वयुद्ध देखे है। कहा जाता है कि बीसवीं शताब्दी में 180 करोड़ लोग अन्तराष्ट्रीय युद्धों या गृह-युद्धों में मारे गए। वर्ष 2000 में 1.7 करोड़ बच्चे गरीबी के कारण, 790 करोड़ लोग कुपोषण के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गए। ये आँकडे विश्व में शान्ति की कमी के द्योतक हैं।

वर्तमान में, जब विश्व अशान्ति में है, अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति स्थापना के अनेक आन्दोलन भी गतिमान हैं और अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं, सरकारों, राज्यों और सिविल संस्थाओं पर शान्तिपूर्ण विश्व निर्माण की ओर कार्य करने के लिए दबाब बना रही हैं।

विश्व की व्यय प्राथमिकताओं की निम्न सूची को देखिए -

- यूरोप में पालतू पशु आहार
- यूरोप में सिगरेट
- आधार भूत स्वास्थ्य एवं पोषण
- यूरोप व संयुक्त राष्ट्र मे सुगन्धित पदार्थ
- महिलाओं का प्रजनन संबंधी स्वास्थ्य
- विश्व मे सैन्य व्यय
- विश्व में मादक द्रव्य
- जापान में मनोरंजन व्यवसाय
- यूरोप में मद्यपान/एल्कोहल
- यूरोप में आइसक्रीम
- सबके लिए पेयजल व स्वच्छता
- यूरोप में सौन्दर्य प्रसाधन (अंगराग)
- आधारभूत शिक्षा

जरा कल्पना कीजिए कि उपरोक्त मदों पर वैश्विक व्यय कितना होगा? आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि सबसे अधिक व्यय की मदें सैन्य अभियान, मादक द्रव्य, शराब/अल्काहल और सिगरेट हैं। वास्तविक प्राथमिकताओं के लिए नीचे देखिए -

- विश्व में सैन्य व्यय (956 अरब डालर, संयुक्त राष्ट्र अमरीका का भाग - 466 अरब डालर)
- यूरोप में मादक द्रव्य (400 अरब डालर)

- यूरोप में एल्कोहल (105 अरब डालर)
- यूरोप में सिगरेट (50 अरब डालर)
- जापान में मनोरंजन व्यवसाय (35 अरब डालर)
- यूरोप में पालतू पशु आहार (17 अरब डालर)
- आधारभूत स्वास्थ्य एवं पोषण (13 अरब डालर)
- यूरोप और सं. रा. में सुगन्धित पदार्थ (12 अरब डालर)
- महिलाओं का प्रजनन संबंधी स्वास्थ्य (12 अरब डालर)
- यूरोप में आईसक्रीम (11 अरब डालर)
- सबके लिए जल व स्वच्छता (9 अरब डालर)
- यूरोप में सौन्दर्य प्रसाधन (8 अरब डालर)
- आधारभूत शिक्षा/प्रारंभिक शिक्षा (6 अरब डालर)
- स्त्रोत: http:/www.globalissues.org/praderelated/facts

उपरोक्त अभ्यास क्या संदेश दे रहा है?

प्रत्येक व्यक्ति या समूह अपने धन को जिन मदों पर व्यय करता है, उस पर विश्व में रह रहे लोगों के स्वास्थ्य निर्भर करता है। विश्व व्यय का उपरोक्त परिदृश्य कतई सही नहीं है। सैन्य बलों और मादक द्रव्यों पर बहुत अधिक व्यय किया जा रहा है। इन प्राथमिकताओं के पुनर्निधारण के लिए हम क्या कर सकते हैं? हममें से कुछ लोगों में, इस मुद्दे पर, निस्सहाय होने का भाव उत्पन्न हो सकता है, जबकि अन्य कुछ निर्णायक भूमिका में आ सकते हैं। किन्तु, प्रत्येक व्यक्ति का निर्णय महत्वपूर्ण है और उसमें हमारा निर्णय भी शामिल है, इस दिशा में जागरूकता से ही सशक्तीकरण हो सकता है। इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति वैश्विक मुद्दे, जैसे - पर्यावरण, निर्धनता, युद्ध एवं घ्वंस के प्रति जागरूक हों। प्राय: विवादों का जन्म संसाधनों - तेल, गैस व अन्य जिंसों पर अधिकार करने की प्रवृत्ति से ही होता है। सबसे महत्वपूर्ण है कि सभी की संस्कृतियों और धरोहरों के प्रति प्रशंसा और सम्मान का भाव हो।

चिन्तन कीजिए -

किसी ऐसी घटना को याद कीजिए जिसने आपकी शान्ति को नष्ट किया हो। उसका (कौन सा) क्षेत्र आपसे संबंधित है उसकी पहचान कीजिए।

अपनी प्रथम प्राप्त प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्त कीजिए/लिखिए कि कब आपने सकारात्मक या नकारात्मक रूप से वैयक्तिक, पारिवारिक, सामुदायिक या राष्ट्रीय स्तर पर शांति को प्रभावित किया?

पारस्परिकता या पारस्परिक निर्भरता जीवन का मूल आधार है और यही शान्ति का भी आधार है। जब हम विभिन्न स्तरों पर शान्ति को देखते हैं, तो भी सरलता और सपष्टता के

लिए, हम शान्ति को उपखंडों या विभिन्न भागों में नहीं समझ सकते। शान्ति को जीवित रखने के लिए हम उसे किसी पर्त या स्तर तक सीमित नहीं कर सकते। शान्ति के ये सभी स्तर व आधार परस्पर निर्भर हैं। वैयक्तिक स्तर पर, प्रत्येक व्यक्ति शान्ति के लिए स्वतंत्र और अधिकतम समर्थ है। जब वह व्यक्ति से परिवार, परिवार से समुदाय, समुदाय से राष्ट्रीय स्तर तक बढ़ता है तो शान्ति के संबंध में चयन के अवसर सीमित होते जाते हैं क्योंकि हम व्यक्ति से, बीच के स्तरों को लॉघते हुए अन्ततः राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर तक पहुँचते हैं। ऐसी स्थिति में, एक शिक्षक होने के नाते, हमें शिक्षा से माध्यम से शान्ति के प्रसार के लिए दोहरे संदर्भों की आवश्यकता है, जहाँ तात्कालिक और प्राथमिक केन्द्र बिन्दु प्रत्येक विद्यार्थी को शान्ति की ओर अभिमुख करना है, वहीं हमें उनकी शान्ति के प्रति जागरूकता के स्तर को बढ़ाना और शान्ति के सरोकारों को उनके पारस्परिक निर्भरता और केन्द्रीय वृत में लाना होता है। शिक्षा का कार्य प्रत्येक विद्यार्थी को जागरूक और उनके उत्तरदायित्व के क्षेत्र को क्रमशः विस्तार देना होता है, स्वयं से प्रारंभ करके इसे सम्पूर्णता में राष्ट्र तथा विस्तृत विश्वग्राम और इससे भी परे ले जाना होता है। शांति के मार्ग को शांति संहिता के रूप में थोपने के स्थान पर स्वैच्छिक पसन्दगी के रूप में प्रोत्साहन देने पर जोर होना चाहिए। इसीलिए गाँधी जी ने कहा - "जो परिवर्तन आप दूसरों में देखना चाहते हैं वह पहले स्वयं में लाएँ। "

विश्व में जो परिवर्तन लाना चाहते हैं वह स्वयं में लाएँ

सूक्ष्म और वृहत व्यक्ति और विश्व के मध्य सम्बन्ध को समझ कर गाँधी जी ने ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया। उन्होंने समझा कि कैसे एक वैयक्तिक अवज्ञा का कार्य एक हिंसक प्रणाली के ढ़ॉचे, उपनिवेशवाद, की अवज्ञा का केन्द्र बन सकता था। हम देख सकते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए गाँधी जी के 'सत्याग्रह' के दौरान कैसे 'एक' की शक्ति 'साथ मिलकर' सामूहिक शक्ति में बदली जिसने अन्त में हिंसा के वैश्विक ढ़ाँचे को चुनौती दी।

नमक सत्याग्रह -

नमक भोजन का एक सामान्य अंश/अवयव है किंतु सभी के द्वारा उपयोग किया जाता है। यही नमक जाति, वंश, धर्म या अन्य वर्ग, जो मानव समाज को बॉटते हैं, से निरपेक्ष भारतीय समाज के विद्रोह का प्रतीक बन गया और ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया। 12 मार्च 1931 को गाँधी जी ने साबरमती से डॉडी तक 240 मील लम्बी पदयात्रा की, जहाँ उन्होंने और उनके समर्थकों ने नमक बनाया। नमक कानून को तोड़कर और कर अदा करने से मना करके ब्रिटिश साम्राज्य की अवज्ञा की। इस प्रकार प्रतिदिन की रसोई भारतीय जनमानस की स्वतंत्रता की पुकार बन गई। जेलें नमक कानून तोड़ने वाले लोगों से भर गई। अन्ततः ब्रिटिश साम्राज्य को भारतीयों की आवाज सुननी पड़ी।

खादी और चरखा

गाँधी जी के नेतृत्व में हजारों भारतीयों ने घर-घर चरखा काता और स्वयं अपने लिए वस्त्र बनाए जिससे ब्रिटेन की मैनचेस्टर की मिलों में आंशिक विराम आ गया। इस तरह गाँधी जी अर्थशास्त्र की 'Trickle down theory' या विकास अध्ययन में 'नीचे से ऊपर के सिद्धांत' को बहुत खूबसूरती से दुनिया के सम्मुख लाए। यही वह कार्य था जहाँ एक व्यक्ति की शक्ति सामूहिक शक्ति में बदली जिसने दुनिया का रूप बदल दिया।

प्रकृति के साथ सामंजस्य

प्रकृति की रक्षा करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। मनुष्य न केवल अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति, बल्कि उच्चकोटि के एकान्त, शान्ति और सौन्दर्य के लिए भी प्रकृति पर निर्भर है। जीवन के लिए वर्षा, धूप, नदियों की पवित्रता और अच्छी फसल जरूरी हैं। वनस्पति, हरीतिमा, ताजी हवा और साफ पानी भी आवश्यक हैं। प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन और पर्यावरण के संरक्षण में कमी मानव-अधिकारों के संरक्षण और मित्रवत् पर्यावरण संतुलन के लिए अपमानजनक है। पर्यावरण संतुलन को विनष्ट होने से बचाने और उसके अत्यधिक दुरूपयोग से रक्षा करने के लिए प्रति-पर्यावरण (पर्यावरण के अनुकूल) व्यवहार आवश्यक है।

मूल्यों की समझ शान्ति को समर्थन देती है। अत: इस ओर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। पर्यावरण के प्रति सरोकार व्यक्ति की चयनित जीवन शैली में समावेशित होनी चाहिए, जो दीर्घकालीन विकास में सहयोग करे। दीर्घकालीन मानवीय विकास का अर्थ है कि मनुष्य की आज की आवश्यकताएँ पूर्ण हों किंतु उन प्राकृतिक संसाधनों के खर्च पर नहीं जिन पर भावी पीढ़ी का भी अधिकार है। इसका अर्थ यह भी है कि हमारी जीवनशैली में विशिष्टता/ संसाधनों के प्रबंधन, पर्यावरण का संरक्षण और पृथ्वी तथा में प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा व संरक्षण भी शामिल हो। हमें पर्यावरण से अपनी आवश्यकता भर लेना चाहिए।

मूलभूत सिद्धांत यह है कि हम कहीं भी रहते हों, हम एक-दूसरे से जुड़े हैं क्योंकि हम एक ही **ब्रहमांड**/ग्रह के भाग हैं। ये सम्पर्क कहीं प्रत्यक्ष हैं तो कहीं अप्रत्यक्ष। उदाहरणार्थ: पर्यावरण प्रदूषण राष्ट्रीय सीमाओं से परे भी फैलता है। तेल उत्पादक देशों का स्थानीय विवाद दुनिया भर में तेल वितरण को प्रभावित कर सकता है। किसी व्यवस्था के सम्बन्धों की समझ, इस ताने-बाने के विभिन्न भागों के बीच संबंधों की स्वीकृति और अनुभव करना कि प्रणाली के किसी भाग में परिवर्तन का प्रभाव सम्पूर्ण पर पड़ना अवश्यंभावी है। शान्ति केवल वही है जहाँ सहयोगी कारकों एवं तत्वों की पारस्परिक निर्भरता है।

2| विवादों की समझ और संभालना

- विवाद स्वाभाविक और अपरिहार्य हैं
- विवाद क्या है ?
  - अन्तरवैयक्तिक विवाद
  - अन्त: वैयक्तिक विवाद
- विवाद के स्त्रोत
  - वैयक्तिक एवं सांस्कृतिक अन्तर/विभिन्नताएं
  - भौतिक संसाधन
  - सूचना या ज्ञान
  - रिश्ते/संबंध
  - संरचनाएं एवं संगठन
  - आवश्यकताएं एवं मूल्य
- हिंसा विवाद की एक अभिव्यक्ति
  - संरचनात्मक हिंसा
- विवादों का विश्लेषण
- विवादों को संरचनात्मक रूप से संभालना/नियंत्रण
  - विवादों के समाधान की शैलियाँ
- कुछ कौशल एवं रणनीतियाँ
  - संप्रेषण
  - सुनना
  - संवाद
  - बातचीत
  - मध्यस्थता
  - सरलीकरण

यह भाग स्पष्ट करता है कि विवाद या द्वन्द्व जीवन का एक स्वाभाविक भाग हैं। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि विवाद न केवल दूसरों के साथ बल्कि, स्वयं के साथ भी होते हैं। विवाद लोगों के मध्य, उनकी पृष्ठभूमि, क्षमताएं आवश्यकताएं, रूचियाँ, जेंडर, परिवार, आर्थिक स्तर और प्रोफेशन/व्यवसाय या संस्कृति आदि की भिन्नता के कारण उत्पन्न होते हैं। ये स्त्रोत कैसे छोटे-बड़े विवादों की श्रृंखला को जन्म देते और बढ़ाते हैं, यह समझा जाना आवश्यक है। विवाद कैसे हिंसा को जन्म देते हैं और व्यक्तियों, समूहों और सामाजिक संरचनाओं द्वारा हिंसा कैसे फैल जाती हैं, यह भी समझने की आवश्यकता है। द्वन्द्वों के साथ काम करने के तरीके और द्वन्द्व में संलग्न लोगों के व्यवहार, मनोवृत्तियाँ, और द्वन्द्व से संबंधित स्थिति जनक कारकों पर चर्चा परिचर्चा की गई है। इन द्वन्द्वों के समाधान की दिशा में सामान्य उपागम और प्राय: प्रयुक्त की जाने वाली शैलियाँ प्रस्तुत की गई है। द्वन्द्वों के समाधान के लिए आवश्यक विभिन्न कौशल और रणनीतियों पर चर्चा की जाती है।

द्वन्द्वों से घिरा मस्तिष्क एक विध्वंसक मस्तिष्क है, एक व्यर्थ मस्तिष्क है, और वे व्यक्ति जो विवाद की स्थिति में हैं, वे द्वन्द्व को नहीं समझ पाते हैं लेकिन विवाद किसी स्थिर आदेश, विश्वास या नियमावली से शांत नही किये जा सकते हैं विवादों को समझने की आवश्यकता हैं। - जे.कृष्णमूर्ति

विवाद स्वाभाविक और अपरिहार्य हैं -

विवाद जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है। हम सभी समय- समय पर विवाद/द्वन्द्व का अनुभव करते हैं। यहाँ तक कि यदि हम दुनिया में/ अपने ग्रह में रहने वाले अकेले व्यक्ति हों तब भी हम विवाद का अनुभव करते हैं क्योंकि विवाद न केवल बाहय व्यक्तियों के साथ बल्कि स्वयं के साथ भी होता है। अधिकांश व्यक्ति विवाद को नकारात्मक रूप में देखते हैं और बहुत कम ही व्यक्ति इसे सकारात्मक शब्द या रूप में देखते हैं। विवाद शब्द के साथ झगड़ा, कलह, संघर्ष, उपद्रव, हिंसा भय और घ्वंस आदि शब्द दिमाग में आते हैं परन्तु विवाद स्वयं में सकारात्मक या नकारात्मक नहीं होते। विवादों के परिणाम ही मात्र नाकारात्मक या सकारात्मक होते हैं। द्वन्द्वों का सामना यदि कुशलतापूर्वक किया जाए तो हम अधिक सकारात्मक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं, बजाए उस स्थिति के जबकि हम द्वन्द्वों का सामना करने के कौशल नहीं जानते हैं। कभी- कभी, विवाद को प्रभावहीन तरीके से संभाले जाने पर अपेक्षित परिणाम नहीं पाए जा सकते हैं बल्कि इससे तनाव और हानियाँ ही बढ़ती हैं। हमने प्राय: कई प्रकार के विवाद जैसे सड़क पर असंतोष, सामुदायिक झगड़े, घरेलू हिंसा,छात्र असंतोष आदि की घटनाओं के विषय में सुना है, जो द्वन्द्वों को संभालने के अप्रभावी तरीकों के कारण उत्पन्न होते हैं। जैसा कि अभी अभी कहा गया है कि विवाद को 'घटना के परिणाम के रूप में देखें जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि इसे घटना के

मध्य में हो रही/चल रही चीज के रूप में देखा जाना चाहिए। विवाद कोई ऐसी समस्या नहीं है, जिसे नकारा जाए बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो वैयक्तिक व सामाजिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। स्वस्थ दृष्टिकोण से देखा जाए तो विवाद विकास और समझ बढ़ाने का एक सुअवसर है। यदि इसे बुद्विमतापूर्ण तरीके से संभाला जाता है तो यह हमें एक-दूसरे के परिप्रेक्ष्य को समझने और अपनी गलतियों पर चिंतन करने, इस तरह भविष्य में होने वाले विवादों को बेहतर तरीके से संभालने की हमारी क्षमता को बढ़ाते हैं।

द्वन्द्वों को संभालने की क्षमता समाज में और व्यक्तियों में स्वयं में शान्ति निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि विवाद को पहले ही अवरोधित कर दिया जाए।तनावग्रस्त हुए बिना विवादों का सामना करने के लिए इसकी प्रकृति की समझ और इसके प्रति समुचित ज्ञान, मनोवृत्ति और कौशलों का विकास करें।

विवाद क्या है?

यह जानने के बाद कि विवाद हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन का ऐसा आयाम है जिसे टाला नहीं जा सकता/ जिससे बचा नहीं जा सकता है, हमें यह जानना चाहिए कि वास्तव में द्वन्द्व /विवाद किसे कहते हैं यह है क्या? साधारण शब्दों में इसे आवश्यकताओं, इच्छाओं, लक्ष्य, अपेक्षाओं, स्वभावों, मनोवृत्तियों तथा मूल्यों की असंगतता से अभिव्यक्त किया जा सकता है जिसका अर्थ है कि विभिन्न व्यक्तियों या समूहों की दो मौजूदा आवश्यकताएँ, लक्ष्य या इच्छाऐं एक साथ पूरी नहीं की जा सकती हैं। जब भी हमारी धन, शक्ति या संसाधनों की आवश्यकताएं दूसरों की आवश्यकताओं से टकराएंगी, विवाद उत्पन्न होंगे। दूसरे शब्दों में, जब एक व्यक्ति के कार्यकलाप दूसरे व्यक्ति की क्षमता, इच्छित इच्छाओं को पूर्ण करने के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करते, रोकते या दखल-अन्दाजी करते हैं, तब विवाद होता है। कई बार, लोग सोचते हैं या महसूस करते हैं कि उनके उद्देश्य अलग हैं। परन्तु, वास्तव में यह सही नहीं है, बल्कि यह केवल एक समझ है,

उदाहरणार्थ :

प्रधानाध्यापक श्री गुप्ता जी को परीक्षा-प्रभार देना चाह रहे थे किन्तु श्री गुप्ता जी को यह स्वीकार्य नहीं था। वे दोनों बुरी तरह झगड़ने लगे बाद में, यह पता चला कि श्री गुप्ता अपने बीमार माता-पिता को देखने जाना चाहते थे अत: वे छुट्टी लेना चाहते थे और उन्हें लग रहा था कि यह प्रधानाचार्य का उन्हें छुट्टी न देने का तरीका है, जबकि प्रधानाचार्य सोच रहे थे कि यदि वे श्री गुप्ता के इंकार को स्वीकार लेते हैं तो वे एक कमजोर प्रधानाचार्य समझे जाएंगें। जब स्थिति सपष्ट हुई तो दोनों ही एक दूसरे के साथ सुविधाजनक स्थिति में आ गए।

कभी-कभी यह केवल उद्देश्यों के विरोध/असंगतता में प्रतीत भर होता है।

एक द्वन्द्व दृश्य हो सकता है और क्रियाकलापों द्वारा या शब्दों द्वारा (प्रत्यय) व्यक्त किया जाता है, या अदृश्य हो सकता है और अव्यक्त रह जाता है (गुप्त/अप्रत्यक्ष)। जब विवाद अभिव्यक्त नहीं होते तो इसका तात्पर्य यह नहीं है कि विवाद का अस्तित्व नहीं है। कभी-कभी ये समय के साथ स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं और कभी ये और अधिक तीव्र भी हो सकते हैं। अव्यक्त द्वन्द्व औपचारिक और पदानुक्रम संबंधों में जहाँ अधिकार का प्रश्न निहित होता है, में हो सकतेहैं। यह परिवार, संस्था या कार्यालय के मुखिया से संबंधित होता है, जहाँ अधीनस्थ यह महसूस करने लगते हैं कि अधिकाश: निर्णय स्वीकृत किए जाने के आवश्यक हैं। इस प्रकार के असम्बोधित विवाद लम्बे समय तक अप्रत्यक्ष पनपते रहते हैं। यद्यपि, व्यक्तियों के बीच अनौपचारिक संबंधों के मध्य विवाद या समान स्तर के अधिकार संबंधों जैसे मित्रों, भाई बहिनों या सहकर्मियों के साथ के विवाद भी कई बार अदृश्य रह जाते हैं। इस प्रकार विवाद की धारणा प्रत्येक व्यक्ति, स्थिति या संदर्भ में बदल जाती हैं।

अन्त:वैयक्तिक विवाद :

विवाद/द्वन्द्व व्यक्ति के अन्दर भी होते हैं। दैनिक जीवन में भी कई बार जब हम स्वयं को दो उद्देश्यों या दो स्थितियों के मध्य पाते हैं और हमारे मन में मैं क्या करूँ या न करूँ? जैसे प्रश्न पैदा हो जाते हैं। कई बार विवाद तब उत्पन्न होते हैं जब हमें दो आकर्षक उद्देश्य या स्थितियों के बीच चयन करना होता है और हम दोनों को एक साथ नहीं पा सकते हैं। उदाहरण के लिए - मैं एक ऐसे विद्यालय में कार्य करने की स्वीकृति देना चाहती हूँ जो मुझे कार्य करने की स्वतंत्रता और अधिक धन दे रहा है किन्तु मुझे बच्चों के विद्यालय के लिए निकलने से पहले ही घर छोड़ना पडेगा। मैं या तो बच्चों को विद्यालय के लिए छोड़ सकती हूँ या यह नया काम स्वीकार कर सकती हूँ। यह एक ‘एप्रोच-एप्रोच द्वन्द्व (विवाद) की स्थिति हैं, जहाँ किसी एक विकल्प का चयन कर लेना कम तनावपूर्ण होता है। विवाद की एक दूसरी स्थिति भी है जहाँ दो अनचाहे विकल्पों के मध्य चयन करना होता है। यह एक ‘अबोइडेन्स- अवोइडेन्स (अपेक्षा-उपेक्षा) विवाद है जहाँ व्यक्ति को दो समान रूप से अनचाहे विकल्पों के मध्य चुनाव करना होता है, जो अधिक तनावपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए - आपकी प्रधानाचार्य आपको परीक्षा आयोजक समूह का सदस्य बनाना चाहती है किन्तु आप इस उत्तरदायित्व को स्वीकार करना नहीं चाहती। किन्तु यदि आप इस कर्तव्य को नहीं निभाना चाहती तो आपको विद्यार्थियों के दल के साथ भ्रमण पर बाहर जाना होगा। एक अन्य प्रकार का विवाद भी होता है जब आपको ऐसी स्थितियों में से चयन करना होता है जिसके आकर्षक व अनाकर्षक दोनों आयाम होते हैं। इसे एप्रोच-अवोइडेन्स (पहुँच व उपेक्षा) विवाद कहते हैं जो बहुत अधिक तनावपूर्ण होता है। द्वन्द्व व्यक्ति को निर्णय लेने में आगा-पीछा करने की ओर ले जाता है। चयन करने या निर्णय लेने की यह अनिर्णित स्थिति अत्यधिक गंभीर आन्तरिक द्वन्द्व उत्पन्न कर देती है। यह असमंजस दुविधाजनक स्थिति दिन-प्रतिदिन की जिन्दगी का अंग है।

आन्तरिक विवाद, जो व्यक्ति के अन्तरमन में होते हैं, बहुत अधिक शारीरिक व मानसिक कष्ट उत्पन्न करते हैं। हम प्राय: इच्छाओं और उद्देश्यों के विवाद सुलझाने के झगड़े मे फँसे रहते हैं जो हमें अशान्त और क्रोधित कर देते हैं। हमारे अन्दर की परेशानी और हमारे द्वारा चयनित विकल्पों के सही या गलत होने में हमारे दिमाग की तत्मयता हमें बाहा दुनिया/वातावरण के प्रति बेपरवाह कर देती है। परिणाम स्वरूप हम अपने कार्यों को ठीक से करने और संबंधों को बनाने में कम प्रभावशील हो जाते हैं। हमारे भीतर निरन्तर चलने वाला द्वन्द्व हमें व्यक्तियों व स्थितियों के प्रति आक्रामक प्रतिक्रिया करने वाला बना देता है, द्वन्द्व के अभाव में यह आक्रमकता नहीं होगी। इस प्रकार, आन्तरिक द्वन्द्व हमारे अपने मनोवैज्ञानिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते है, साथ ही साथ हमारी कार्यक्षमता और संबंधों को भी प्रभावित करते हैं। अत: विवादों को उपयुक्त ढंग से समझना है और उनका सामना करना जरूरी है।

अन्तरवैयक्तिक विवाद

दूसरे प्रकार के विवाद जो मानवीय पारस्परिक व्यवहारों का अभिन्न अंग हैं, अन्तरवैयक्तिक विवाद हैं, जिन्हें शान्ति निर्माण के लिए समझा जाना आवश्यक है। ऐसे विवाद उद्देश्यों, आवश्यकताओं, मूल्यों, विश्वासों और महत्वाकांक्षाओं के पूर्ण न होने के कारण भी अस्तित्व में आते हैं।

आइए, शान्ति के प्रशिक्षण कोर्स के दौरान एक शिक्षक द्वारा कार्यस्थल पर विवाद के विषय में प्रस्तुत किए गए वर्णन को पढ़ते हैं :

यह एक विद्यालय की घटना है। यह घटना में एक वरिष्ठ शिक्षक और एक नए प्रवेशी के मध्य घटी। सुधा, योग्य व अनुभवी उच्च वर्ग की वरिष्ठ शिक्षक थी। वह घमंडी थी और अपने को कुशल मानती थी। नई प्रवेशी, राधा भी योग्य थी किन्तु उसमें आत्म-विश्वास की कमी थी। वह एक ऐसे समुदाय से थी जिसे समाज में उच्च स्तर प्राप्त नहीं था। वह सीधी किन्तु संवेदनशील थी। वरिष्ठ शिक्षक और कनिष्ठ शिक्षक के मध्य हुए कुछ प्रांरभिक अन्तरक्रियाओं में कनिष्ठ शिक्षक वरिष्ठ के शाब्दिक व अशाब्दिक संप्रेषणों से आहत हो गई। धीरे-धीरे दोनों के मध्य अविश्वास बढ़ गया। दोनों के मध्य संप्रेषण लगभग समाप्त हो गया और दोनों एक दूसरें पर व्यंग्यात्मक और अपमानजनक ताने कसने लगे। दोनों ही हठी हो गई। उच्चाधिकारियों ने इस सबको देखते हुए भी अनदेखा किया। यहाँ तक कि विद्यार्थी भी इस सब पर ध्यान देने लगे। किसी शिक्षक ने यह बात अनुसूचित/जन जाति सेल से मध्यस्थता की प्रार्थना की और मीडिया के माध्यम से यह सूचना फैल गई। इस स्थिति में शान्ति स्थापित करने के लिए अधिकारियों द्वारा बहुत प्रयत्न किए गए। किन्तु, दुर्भाग्य से यह स्थिति निरन्तर बनी रही।

इस केस/घटना में दोनों ही शिक्षिकाओं का स्वभाव असंगत था। यह असंगतता उनकी अपनी मनोवृत्तियों, मूल्यों और महत्वाकांक्षाओं में निहित थी। वरिष्ठ शिक्षक चाहती थी कि कनिष्ठ शिक्षक उसकी उच्च आर्थिक स्थिति और काम में वरिष्ठ होने के कारण उसे आदर दे, जबकि कनिष्ठा अपनी भिन्नता, अनादर पर अपमान और असुरक्षा महसूस कर रही थी और इनके प्रति संवेदनशील थी। लेकिन, क्या इस विवाद के द्वारा दोनों में से किसी की भी आवश्यकताएं या महत्वाकांक्षाएं संतुष्ट हो पाई? क्या एक दूसरे के सम्मान की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए यह प्रभावशाली तरीका था, कौन वैध था?

अन्य तरह के अन्तवैयक्तित विवाद भी हैं जो स्वयं के प्रति अन्याय, अपमान या असमानता से या दूसरे व्यक्तियों या समूहों, धर्म, भाषा या जाति से संबंधित होने से होते हैं। उदाहरण के लिए कुछ समूह या समुदाय, सही या गलत जैसा भी हो, महसूस करती हैं कि समाज सरकार या कोई अन्य संगठन उनके प्रति न्याय नहीं करते हैं। वे आन्दोलनरत हो जाते हैं, घंटों सड़कों पर जगह-जगह जाम लगा देते हैं जो उन लोगों को जो उसमें फंस जाते हैं, खिन्न कर देता है। विवादों की इस तरह की अभिव्यक्ति से तंत्र में कोई परिवर्तन नहीं आता, और इस तरह की घटनाएं पुन: होती रहेंगी, और यहाँ तक कि तब शायद कोई विरोध भी न हो।

इस प्रकार के द्वन्द्व समस्त समाजों में प्रचलित हैं। इस प्रकार के विवादों में दूरगामी परिणाम सम्मिलित होते हैं और ये लम्बे समय (दीर्घाबोध) तक भी चल सकते हैं। ये बार-बार लौटते हैं और इनका बार-बार सामना करना पड़ता है। ऐसे मुद्दों पर जहाँ एक पक्ष यह महसूस करने लगे कि उन्हें गलत समझा गया है, यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि समस्याओं को गम्भीरता से लिया जाए, अन्यथा, अन्दर-अन्दर फैलता जा रहा असंतोष बड़ा विध्वंस उत्पन्न कर देगा। इन विवादों की आवृत्ति होते रहने से न केवल किसी के संसाधनों और आत्म सम्मान की परीक्षा होगी बल्कि गम्भीर व गहन संघर्ष फूट सकता है जो बहुत बड़े विध्वंस में बदल सकता है। अत: इन विवादों को समझने की आवश्यकता है। ये इस बात के संकेतक हैं कि सब कुछ ठीक-ठाक नहीं है और कि कुछ न कुछ परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। इन विवादों के क्या कारण हैं इन कारणों की पहचान, खोजबीन और इन्हें स्वीकार करना हैं ताकि गम्भीर प्रतिक्रियाओं व दुष्परिणामों से बचा जा सके। आइस, देखें कि ये विवाद क्यों उत्पन्न होते हैं ?

विवाद के स्त्रोत

विवाद के स्त्रोतों को समझना जटिल है। विवाद की गतिशीलता की व्याख्या करने के लिए विविध परिप्रेक्ष्यों का प्रयोग किया जा सकता है। पक्षपात अर्थात दूसरों पर दोष मढ़ने की प्रवृत्ति विवाद को समझने का एक परिप्रेक्ष्य हो सकता है। विवाद को समझने का दूसरा दृष्टिकोण समानता व न्याय का परिप्रेक्ष्य है। कुछ लोग तब तनावग्रस्त, कुंठित और क्रोधित हो जाते हैं जब वे लोग महसूस करते हैं किसी आवश्यकता की वस्तु के बंटवारे के

समय उन्हें समान भाग या मूल्य नहीं दिया जा रहा है। एक अन्य परिप्रेक्ष्य है कि विवाद उन संदर्भों या स्थितियों के उत्पाद होते हैं जहाँ विभिन्न तरह की आवश्यकताएं तनाव को आमंत्रित करती हैं। एक अन्य दृष्टिकोण इस परिप्रेक्ष्य पर आधारित है कि व्यक्ति स्थितियों को जैसा महसूस करते हैं वैसी ही स्थिति बन जाती हैं। इसके अतिरिक्त, आन्तरिक तनावों के कारण भी दबाव बनता है और विवाद हो जाता है। फिर भी, इन विभिन्न प्ररिप्रेक्ष्यों में निहित कुछ स्त्रोतों को सरलता से पहचाना जा सकता है जो विवाद को उत्पन्न करते हैं जैसे :-

वैयक्तिक और सांस्कृतिक विभिन्नताएं :-

प्राय: अलग-अलग पृष्ठभूमियों के कारण विवाद के विषय में हमारे परिप्रेक्ष्य में अन्तर आ जाता है और हम एक आम समझ बनाने में असमर्थ रहते हैं। अत: विवादों के कारणों और स्त्रोतों को समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

द्वन्द्व/विवाद अपरिहार्य हैं क्योंकि जिस तरह से हम चीजों को देखते हैं, अभिमत रखते हैं और अपने वातावरण को समझते है उनमें भिन्नता होती है। हमारे परिवार, साथियों, पड़ोसियों, सहकर्मियों, समाज और अपने आस-पास की दुनिया के प्रति रूझानों में एक दूसरे से महत्वपूर्ण अन्तर होता है। उदाहरण के लिए हममें से कुछ लोग उग्रवाद, पर्यावरणीय असंतुलन, सामाजिक अपराधों, सड़कों पर उन्माद, आदि से विशेष रूप इतने अधिक प्रभावित होते हैं हम जुलूस निकालते हैं, विरोध प्रदर्शनों मे शामिल होते हैं या अन्य प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हो जाते हैं। किन्तु, अन्य कई लोग ऐसी किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेते हैं, पर इसका मतलब यह नहीं हैं कि वे लोग इन मुद्दों पर विचारन हीं रखते /करते। हममें से कुछ लोग स्वयं को बेहतर समाज की रचना के लिए शिक्षित करने जैसे बड़े मुददों के लिए समर्पित कर देते हैं, कुछ अन्य सार्वजनिक व सामाजिक जीवन में बड़ी ईमानदारी प्रस्तुत करते है या सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कार्य करते हैं।

अलग-अलग व्यक्तियों का चीजों को देखने और उन स्थितियों का अर्थ निकालने का अलग-अलग नजरिया होता है। हमारे परिप्रेक्ष्य हमारे अन्य पारिवारिक सदस्यों, साथियों, पड़ोस व समाज के लोगों के साथ हमारे पारस्परिक व्यवहार से निर्देशित होते हैं। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति जिसका लालन-पालन विभिन्न समुदायों के मध्य धार्मिक विरोध वाले पास-पड़ोस में हुआ हो वह एक खास प्रकार के विचार और रूझान रख सकता है।

इसी प्रकार, उन परिवारों में, जहाँ महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा स्वीकृत मानक हैं, में पल रहे बच्चे या शारीरिक दंड के द्वारा अनुशासित बच्चों का विकास ऐसे व्यस्कों के रूप में होता है जिनका विश्वास बच्चों को अनुशासित करने के लिए हिंसा या शारीरिक दंड के प्रयोग पर होता है।

दूसरी ओर, ऐसे व्यक्ति जो पारिवारिक और सांस्कृतिक समरसता और विश्वास के वातावरण में पलते हैं वे बजाय हिंसा का सहारा लेने के विवाद के समय संवाद और परिचर्चा को प्रारंभ करते हैं। फिर भी, प्रत्येक परिवार के विभिन्न सदस्य भी अलग-अलग तरीके से विकसित होते हैं। कुछ परिवार स्वयं ही विवादों में संलग्न रहते हैं। ये विवाद स्वभावों, आवश्यकताओं, मॉगों और उपलब्ध संसाधनों की असंगति के परिणामस्वरूप होते हैं। इन विवादों के परिणाम प्राय: उनके पक्ष में होते हैं जिनके पास अधिक शक्ति, धन और राजनैतिक या सामाजिक संसाधन अधिक होते हैं। वे लोग जिनके पास शक्ति नहीं है वे स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं। कभी-कभी इस असुरक्षा भावना के कारण वे सुरक्षा पाने की दृष्टि से समूह बना लेते हैं और एक-दूसरे में भावात्मक और सामाजिक मजबूती और सहारे खोजते हैं। ऐसा आमतौर पर परिवार व राजनीति दोनों जगह देखा गया है। परिवार में बच्चे प्राय: ऐसे शक्तिशाली वयस्क के विरूद्ध एक जुट हो जाते हैं, जो हिंसा में लिप्त हों। राजनैतिक और सामाजिक स्तर पर, कमजोर समूह सामाजिक-राजनैतिक दबाब समूहों के निर्माण कर लेते हैं जो लाभ उठाने में सक्षम हैं, जो दुग्राह्य या सुधारों और परिवर्तनों को बलपूर्वक क्रियान्वित कराते हैं। धर्म, जाति, वर्ग और भाषा की विभिन्नताएं प्राय: विवाद में बदल जाती हैं।

द्वन्द्वों के अन्य स्त्रोत भौतिक संसाधन, सूचना या ज्ञान, संबंधों, सामाजिक और संगठनात्मक संरचनाओं, आवश्यकताओं और मूल्यों में निहित हैं।

आइए, देखें कि ये विवाद इन स्त्रोतों से कैसे निर्णीत होते हैं।

भौतिक संसाधन -

भौतिक संसाधन कैसे विवादों को जन्म देते हैं, यह समझना बहुत सरल है क्योंकि ये पहचाने जाने योग्य व दृश्य होते हैं। भौतिक संसाधनों जैसे भूमि, मकान, धन, सम्पत्ति या अन्य संसाधनों पर स्वामित्व, व्यक्तियों, या समूहों और यहाँ तक कि विभिन्न राज्यों के मध्य गंभीर विवाद उत्पन्न कर देता है। परिवारों के मध्य सम्पत्ति का बंटवारा, आवासीय परिसरों और राज्यों के मध्य पानी और बिजली जैसे संसाधनों और जल, तेल और प्राकृतिक गैस, मूल्यवान धातुओं की खुदाई जैसे मुद्दे विभिन्न देशों के मध्य विवाद उत्पन्न करते हैं।

सूचना या ज्ञान

सूचना या ज्ञान किस प्रकार विवाद के स्त्रोत हो सकते हैं, इसका प्रमाण आसान नहीं हैं। कई स्थितियों में सूचना या ज्ञान और जानकारी या तथ्यों की जानकारी रखना काफी फायदा पहुँचाता है और इन स्त्रोतों को अपने तक सीमित रखना या अपने समूहों तक सीमित रखना दूसरों में प्रतिकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकता है। उदाहरण के लिए , एक व्यापारी भूमि का एक टुकड़ा खरीदना चाहता है क्योंकि उसके किसी मित्र ने उसे सस्ती दर पर उपलब्ध भूमि के विषय में बताया, किन्तु उसने यह सूचना को अपने तीसरे मित्र को नहीं दी, जिसे

वह अपना प्रतिद्वन्द्वी की तरह देखता था। यह मित्रों के मध्य विवाद का स्त्रोत बन गया। प्राय:परिवारों और समाज में यदि अध्ययन के पाठ्यक्रम परस्पर साझा नहीं किए जाते तो ये भी विवाद के स्त्रोत बन जाते हैं। सूचनाओं का कुछ व्यक्तियों के साथ साझा करना व अन्य व्यक्तियों को इनसे वंचित रखना भी व्यक्तियों और समूहों के परस्पर झगड़ों को बढ़ाता है।

सूचनाओं या आंकड़ों का होना, तथ्यों की जानकारी या अन्य तकनीकी जानकारी रखना या कुछ भाषायी कौशलों का होना कुछ लोगों को स्थितियों को बेहतर ढंग से समझने और लाभ उठाने में मदद करता है। जो व्यक्ति उन व्यक्तियों के साथ विवाद की स्थिति में आ जाते हैं, जिनके पास ऐसी सूचनाएं या तथ्य नहीं है और तथ्यों व स्थितियों की गलत व्याख्या करते हैं। ये समूह अपनी जानकारियों की अपर्याप्तता को देखने के बजाए दूसरों को दोष देते हैं। कभी- कभी, तथ्य उपलब्ध न होने पर मुकदमें और गम्भीर विवाद भी उत्पन्न हो जाते हैं। संस्थाएं एवं संगठन अपने कर्मचारियों के मध्य विवादों से बचने के लिए सूचना और आँकड़ों के साझा करने में पारदर्शिता रखते हैं।

सम्बन्ध/रिश्ते -

यह कल्पना करना अत्यन्त कठिन है कि संबंधों के मध्य, विशेष रूप से निकट संबंधों में, जिन्हें भावानात्मक और सामाजिक सहारे का साधन माना जाता है, में विवाद क्यों उत्पन्न हो जाते हैं। परिवारों, समुदायों और व्यवसायों में कई प्रकार के संबंध समान रूचियों व आवश्यकताओं के प्रति एक समझ बनने से विकसित होते हैं और पारस्परिक सहारे की अभिव्यक्ति होते हैं। जब ये संबंध अपने शुरूआती दौर में बन रहे होते हैं तो सामान्यत: कोई भी मत विभिन्नताओं पर ध्यान नहीं देता क्योंकि तब व्यक्ति आम आवश्यकताओं और परिप्रेक्ष्यों के लिए दूसरे को महत्व देता और प्रशंसा करता है। जैसे जैसे पारस्परिक अन्तरांगता प्रगाढ़ होने लगती है विभ्रिन्नतायें और रूचियों की भिन्नता सतह पर आने लगती है। समय के साथ आवश्यकताओं और रूचियों की विभिन्नताएं संग्रहीत होने लगती हैं क्योंकि लोग या तो इन विभिन्नताओं का सामना नहीं करते या फिर अप्रभावी तरीके से इनका सामना करते हैं। धीरे-धीरे दूसरे का प्रत्येक कार्य हमारे फायदे पर एक भय की तरह प्रतीत होने लगता है। ये विभिन्नताएं या असहमतियाँ एक दूसरे के प्रति भावनात्मक नकार के रूप में महसूस होने लगती हैं, और तब दूसरे से अपनी बात मनवाने या अपने दृष्टिकोण को दूसरे के दृष्टिकोण पर जीतने की ओर प्रयास होने लगते है। इससे संबंधों में जटिलता आ जाती है, क्योंकि संबंधों के मूल आधार- एक दूसरे के आम रूचियों और आवश्यकताओं का ध्यान रखने- पर ही प्रश्न चिहन लग जाता है। परिवारों में अन्तर्निहित विवाद के मुददे संबंधों और भावनात्मक उष्मा के लिए निर्णायक होते हैं। दूसरे के दृष्टिकोण को नकारना व्यक्तियों को ही नकारने के समान महसूस होता है। संबंध जितने अधिक प्रगाढ़ होते हैं

उतने ही अधिक दूसरे को मनाने के लिए तर्क देने के प्रयास किए जाते हैं, उतने ही वे विपरीत दिशा में कार्य करते हैं।

संरचनाएं एवं संगठन -

सामाजिक या संगठनात्मक संरचनाओं में विवाद के कारण मौजूद रहते हैं। सामाजिक संगठनों और व्यवसायिक संगठनों की संरचना में स्पष्ट अधिकारात्मक संरचनाएं होती है, जो उसे इसके सदस्यों से संबंधित विभिन्न मुददों पर निर्णय लेने की शक्ति देती है। परिवार में भी धन का व्यय या अधिकार और प्रत्येक सदस्य के उत्तरदायित्व और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य परिवार के मुखिया द्वारा तय किए जाते हैं - ज्यादातर पुरूष या माता-पिता द्वारा। यह व्यवस्था आजकल विवाद का स्त्रोत बन गई है, क्योंकि आजकल युवाओं के पास अधिक जानकारियाँ एवं ज्ञान रहता है। इसलिए उनका अपने बड़ों के साथ विवाद हो जाता है। इसी प्रकार संगठनों में भी, विशेष तौर पर यदि बड़े संगठन हों जिनमें विभिन्न तरह के व्यवसाय, क्षेत्र, वर्ग और भाषा के लोग एक साथ काम करते हैं, केन्द्रीय तौर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया विवाद का कारण बन जाती है क्योंकि एक समूह का हित, कल्याण और अधिकार, दूसरे समूह के हितों के साथ द्वन्द्व में प्रतीत होते हैं। इस प्रकार विवाद अपरिहार्य हो जाता है। यद्यपि इन विवादों को शक्तियों का साझा, सूचनाओं के आदान-प्रदान और निर्णय लेने में भागीदारी के माध्यम से समाधान या व्यवस्थित किया जा सकता है।

आवश्यकताएं एवं मूल्य :

व्यक्ति की आवश्यकताएं विवाद का सबसे आधारभूत कारण हैं। वास्तव में, इन समस्त कारकों में वैयक्तिक आवश्यकताओं की संतुष्टि निहित हैं। ये आवश्यकताएं व्यक्तियों या समूहों द्वारा महसूस की जाती हैं, सभी बारम्बार, प्रचंड़ और पूरी तरह आवृत किए रहती हैं। ये व्यक्ति को निरन्तर आवेश में रखती हैं और उसके व्यवहार को आवश्यकताओं की संतुष्टि और पूर्णता की दिशा में निर्देशित करते हैं। आवश्यकताएं विभिन्न प्रकार की होती हैं। जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधारभूत आवश्यकताएं जैसे पानी, स्वास्थ्यप्रद स्थितियाँ, सुरक्षा व बचाव हैं। दूसरे वर्ग की आवश्यकताएं पहचान, आदर और समावेशन की हैं। ये भी समान रूप से आवश्यक हैं और कभी-कभी तो आधारभूत आवश्यकताओं से भी ज्यादा जरूरी हैं। जब भी इन आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति में किसी प्रकार की क्षति होती है, विवाद अवश्य उत्पन्न हो जाता है उदाहरण के लिए प्राय: मजदूरी, बोनस, जंगल और हरित क्षेत्र पर अपने अधिकारों और लाभों को अपने वश में रखने के लिए प्राय: अशांति होती रहती है। ये सब हमारी आवश्यकताओं की संतुष्टि के आड़े आते हैं। सामाजिक संरचनाएं एवं संगठन वैयक्तिक सम्मान, सुरक्षा व सहयोग की स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से अवहेलना करते हैं। उदाहरण के लिए परिवार में सम्पत्ति की खरीद-फरोख्त के संबंध में बढ़ते हुए बच्चों से

कोई राय नहीं ली जाती है। लाभों या सम्पत्ति के बंटवारे के संबंध में बराबरी का आभाव हो सकता है। सामाजिक संगठनों और समुदायों में जो बहुसंख्यक हें वे रीति रिवाजों, प्रतीकों और अन्य सामाजिक आवश्यकताओं के संदर्भ में अल्पसंख्यकों को उपेक्षित कर देते हैं। यह पहचान और समावेशन की कमी उन्हें आहत और अपमानित करती हैं। दूसरे वर्ग के संज्ञान और पहचान की समझ में कमी संबंधित समूहों को गम्भीर विवादों की ओर ले जाती हैं, यद्यपि ये विवाद अदृश्य भी रह सकते हैं।

विभिन्न वैयक्तिक मूल्य भी विवाद को बढ़ा सकते हैं। मूल्य व्यक्ति में निहित वे विश्वास हैं जो उन्हें जीवन के विभिन्न आयामों और मुददों - धार्मिक, राजनैतिक ओर अन्य वयैक्तिक और सामाजिक मुद्दों- को जाँचने में सहायता करते हैं। कुछ मूल्य दूसरों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। मूल्याधारित द्वन्द्व, विशेष रूप से संबंधों में, अधिक समस्याग्रस्त होते हैं। यदि व्यक्ति मूल्याधारित विवादों को समझने लगें तो वे ये भी समझ पाएंगे कि कोई विशेष मुद्दा किसी व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है और इस पर वह यूँ ही हठी नहीं हो रहा है। यह समझ संबंधों को निरन्तर बनाए रखने में मदद करता है। इस समझ की कमी रिश्तों की दुर्गति कर देती है और रिश्ते टूट जाते हैं।

अहं आधारित विवादों को समझना और सामना करना सबसे कठिन होता है, जहाँ एक या दोनों पक्ष प्रतिस्पर्धा में आते हुए परिणामों को केवल स्व के मूल्यांकों के अनुकूल देखते हैं, जैसे कोई कितना प्रतिस्पर्धा में है, कौन कितना अधिक जानकार है, किसके पास कितनी शक्ति हैं आदि-आदि। इन अहं आधारित विवादों में जीतना ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है बजाए इसके कि समस्या का अच्छा समाधान ढूँढना। यहाँ तक कि एक छोटी सी असहमति भी आक्रामक मुकाबले के रूप में फूट सकती है।

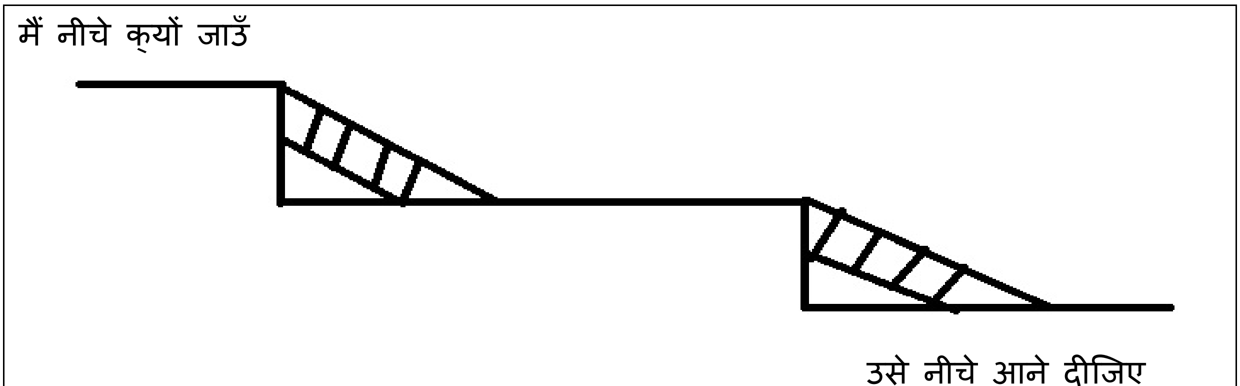

अहं आधार

रूझानों एवं मूल्यों पर आधारित विवाद घरों, संगठनों एवं समाज में निरन्तर होते रहते हैं। न्याय, पथनिरपेक्षता, नागरिकता, दूसरे की देख-भाल तथा स्वच्छता, नियमितता, ईमानदारी, सत्य आदि वैयक्तिक मूल्य विभिन्न स्तरों पर विवाद के स्त्रोत हैं। चाहे विवाद का कोई

भी स्त्रोत या कारण कुछ भी हो, यदि यह लम्बी अवधि तक चलें तो यह बहुत विकृत हो जाते हैं। विवादों से उत्पन्न तनाव हिंसा के रूप में प्रकट (फूट सकता हैं) हो सकता है।

हिंसा : विवाद की एक अभिव्यक्ति -

विवाद अपरिहार्य है किन्तु हिंसा नहीं। कभी-कभी हम विवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप हिंसा का आश्रय लेते हैं। विवाद स्वयं में बुरे नहीं होते, यह तो इसकी प्रतिक्रिया में व्यक्त हिंसा है जो समस्यात्मक होती है। जब हम हिंसा का उल्लेख करते हैं तो हमारे मन में किसी के द्वारा दूसरों को पीटे जाने, प्रहार करने और घायल करने या मारने की कल्पना आती है। लेकिन, हिंसा केवल शारीरिक ही नहीं होती। हिंसा व्यवहारों शब्दों, मनोवृत्तियों, संरचनाओं या प्रणालियों में भी विद्यमान होती हैं जो शरीर, मस्तिष्क और आत्मा को आहत करती या हानि पहुँचाती है - भौतिक, मनोवैज्ञानिक और वातावरण को हानि पहुँचाती है।

हिंसक शारीरिक कर्म जैसे- पिटाई, प्रहार करना, यातना देना या हानि पहुँचाना हिंसा के सर्वाधिक भयावह प्रकार हैं क्योंकि यहाँ इसका इरादा दूसरे को शारीरिक हानि पहुँचाने का होता है।यह प्रत्यक्ष या स्पष्ट हिंसा है, और इसमें दूसरे के प्रति शाब्दिक और अशाब्दिक सीधे प्रहार शामिल होते हैं। शब्द भी मन को आहत करते, दर्द देते और घायल कर देते हैं और यहाँ तक कि मार डालते हैं। पति पत्नी के अपमानजनक/अनुचित शब्दों द्वारा पहुँची ठेस या दर्द और असफलता पर माता-पिता या शिक्षकों द्वारा किया गया अपमान प्राय: बच्चों को आत्महत्या तक पहुँचा देता है। दूसरों को नीचा दिखाने के लिए, विशेष तौर पर उन लोगों को जिनके पास अधिकार या शक्ति नहीं है, उनके लिए बेकार हो, बेवकूफ, मूर्ख, जड़बुद्धि या अन्य गालियाँ, जो कि दूसरों की क्षमता, जेण्डर, परिवार, जाति, धर्म या राष्ट्रीयता पर प्रहार करते हैं, नियमित रूप से प्रयोग किए जाते हैं। परिवारों में प्राय: महिलाएं और बच्चे हिंसा का शिकार होते हैं जहाँ उनके साथ शाब्दिक दुर्व्यवहार होता है या स्वस्थ जीवन की आवश्यकताओं पर भी रोक लगा दी जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति दूसरे को वास्तव मे मारता तो नहीं है लेकिन उसकी आवश्यकताओं के लिए मनाही या अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करता है तो यह उसे मानसिक व शारीरिक हानि पहुँचाने या बीमार कर देने का महत्वपूर्ण कारक है जो कभी-कभी जीवन को खत्म करने तक भी पहुँच जाता है। क्या यह हिंसा नहीं है? हम विवाद से तो नहीं बच सकते लेकिन हिंसा को निश्चित ही टाला जा सकता। हिंसा के उन प्रत्यक्ष प्रकारों के अतिरिक्त भी कई प्रकार हैं।

रूझान (मनोवृत्तियों) और संरचनाएं भी हिंसक हो सकती हैं जब वे ऐसे व्यवहार या शब्दों को प्रेरित करते है जो कि दिखने में तो अहानिकारक प्रतीत होते हैं क्योंकि ये किसी समुदाय या व्यक्ति के जीवन जीने के तरीके हो सकते हैं किन्तु ये दूसरे समुदाय या व्यक्ति के

लिए हानिकारक हो सकते हैं या उन्हें आहत कर सकते हैं। ये स्पष्ट रूप से तो हिंसक तो नहीं दिखते किन्तु ये बड़े स्तर पर हिंसा को आधार प्रदान करते हैं, क्योंकि इन मनोवृत्तियों के कारण लगी ठेस को सह पाना प्राय: बहुत कठिन होता है समाज में इन रूझानों/ मनोवृत्तियों के रूप व्याप्त यह व्यक्त हिंसा संरचनात्मक हिंसा कहलाती है।

संरचनात्मक हिंसा (ढाँचागत हिंसा) :

हिंसा सिर्फ शारीरिक हिंसा नहीं है बल्कि मन/आत्मा की सम्पूर्ण संरचना ही हिंसा पर आधारित है। किसी नियत प्रारूप से सामंजस्य का निरन्तर प्रयास और किसी सुख का अनुसरण इस कारण, किसी चीज की अवहेलना करना जो दर्द देती है, देखने की और उसके अवलोकन करने की सामर्थ्य को अलग करना है - ये सब हिंसा के भाग हैं। आक्रामकता, प्रतिद्वन्दिता, जो है, और जो होना चाहिए के मध्य निरन्तर तुलना करना और सीमाओं में बाँधना - ये सब निश्चित रूप से हिंसा के ही रूप हैं। – जे.कृष्णामूर्ती

प्रणालियाँ, प्रथायें और संस्थाएं भी हिंसक हो सकती हैं। कई बार संरचनाएं इस प्रकार से बनाई जाती हैं जो लोगों को उनके अधिकारों से और उन्हें आधारभूत मानवीय अधिकारों को संतुष्ट करने की क्षमता से वंचित कर देती हैं। ये संरचनाएं व्यक्तियों, समूहों, समुदायों और राष्ट्रों के बीच जीवन के भय और जीवनयापन के संदर्भो में विभेद करती हैं। उदाहरण के लिए : सामाजिक और संगठनात्मक संरचनाएं जैसे परिवार, बधुआ मजदूर, दहेज और स्वनिर्मित नैतिक संगठन हिंसा के स्त्रोत बन जाते हैं। इस प्रकार की हिंसा संरचनात्मक हिंसा कहलाती है। इसके अतिरिक्त, प्रत्यक्ष हिंसा, प्राय: संरचनात्मक हिंसा की प्रतिक्रिया से ही उत्पन्न होती है। ढाँचागत हिंसा के उर्ध्वाधर और समस्तर रूप को भी समझा जाता है। जब संरचनाओं, प्रणालियों और संस्थाओं द्वारा लोगों का राजनैतिक रूप से दमन, आर्थिक रूप से शोषण और सांस्कृतिक रूप से बहिष्कार किया जाता है, तो यह ऊर्ध्वाधर (सीधा) हिंसा हैं। इस स्थिति में जिन आवश्यकताओं का उल्लंघन (अतिक्रमण) किया जाता है वे हैं स्वतंत्रता, कल्याण और पहचान, दूसरी ओर समस्तर संरचनात्मक हिंसा, पहचान की आवश्यकता को नकार देती है। ये संरचनाएं उन लोगों को पृथक कर देती है जो मिलकर रहना चाहते हैं।

अदृश्य रहने वाली सांस्कृतिक हिंसा सबसे अधिकतर खतरनाक प्रकार की हिंसा है, क्योंकि यह हम सबके भीतर विद्यमान है।यह हमारे विश्वासों, भाषा, रीति-रिवाजों और प्रतीकों में अन्तर्निहित होती है, यहाँ तक कि वेश-भूषा और भोजन भी हिंसक हो सकते हैं क्योंकि ये विभेद, पक्षपात और पूर्वाग्रहों के स्त्रोत बन जाते हैं। इन व्यवहारों या विश्वासों से विचलन व्यक्तियों को अलगाव की ओर ले जाता है। संरचनाएं (ढाँचें) बाह्य होते हैं जबकि संस्कृतियाँ आन्तरिक होती हैं, ये हमारी पहचान निर्मित करती हैं तथा हमारे हृदय (मन) में धर्म, विचारधारा, भाषा आदि का पोषण करती हैं। यहाँ किसी को हानि पहुँचाने से मारने की नीयत

(इरादा) नहीं होती लेकिन शब्दों और प्रतीकों के माध्यम से सृजित विवाद प्राय: अप्रत्यक्ष रूप से हिसा का कारण बन जाते हैं। वास्तव में, संस्कृतियों के कुछ आयाम हिंसा या युद्ध को अच्छा, कुछ खास तरह की हत्याओं को सही ही नहीं बल्कि पवित्र व सुन्दर भी परिभाषित करती हैं, दूसरे शब्दों में, सांस्कृतिक हिंसा सीधी या सॉचागत हिंसा को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए उपयोग की जाती है। उदाहरण के लिए, हमारी संस्कृति में बालक और बालिकाओं का पालन-पोषण अलग-अलग तरीके से किया जाता है - बालकों को बहुत अधिक स्वत्रतंत्रता दी जाती है जबकि लड़कियों पर कई तरह की पाबन्दियाँ लगाई जाती हैं। वास्तव में यह सब संस्कृति के नाम पर किया जाता है जो हमारे मन में गहरे बैठा हुआ होता है।

उदाहरण के लिए, परिवारों में महिलाओं और बालिकाओं को विकास और उन्नति के अवसरों से वंचित कर दिया जाता है और किसी भी प्रकार का विद्रोह उनके प्रति शारीरिक हिंसा द्वारा दबा दिया जाता है। जाति और धर्म के आधार पर उन्हें विवाह के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है।

आइए, कुछ क्रियाकलापों, शब्दों और रूझानों पर दृष्टि डालते हैं। जो हिंसक हैं -

आहत करने और/या हानि पहुँचाने वाली मनोवृत्तियाँ :

- भोजन के प्रति अति आसक्ति [शारीरिक]
- कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का अभाव [मनोवैज्ञानिक]
- भिन्न जाति व धर्म के प्रति असम्मान [सामाजिक]
- ध्वनि, कूड़ा-बिखेरने या प्रदूषण के मानकों के प्रति असम्मान और अवज्ञाकारी होना [पर्यावरणीय]

आहत करने और/या हानि पहुँचाने वाले शब्द -

- दूसरों के प्रति बेवकूफ जैसे शब्दों का प्रयोग [मनोवैज्ञानिक]
- गन्दे या जाति सूचक शब्दों का प्रयोग [सामाजिक]

आहत करने और/या हानि पहुँचाने वाले क्रियाकलाप -

- बच्चे के कान उमेठना [शारीरिक]
- उसका उपहास करना [मनोवैज्ञानिक]
- परिवार की जाति या व्यवसाय पर टिप्पणी करना [सामाजिक]
- बिजली, पानी बरबाद करना या प्रदूषण फैलाना [पर्यावरणीय]

आहत करने और/ या हानि पहुँचाने वाले ढाँचे -

- अनुशासन के नाम पर शारीरिक दण्ड देना [शारीरिक]

- असफल छात्रों के नाम प्रदर्शन पटल पर अंकित करना या बच्चों की अनुशासनहीनता के लिए सार्वजनिक रूप से सभा में अपमानित करना [मनोवैज्ञानिक]
- बच्चों में संस्कृति, जाति, भाषा या क्षेत्र के आधार पर विभेद करना [सामाजिक]
- विद्यालय में पत्ते या कूड़ा जलाने जैसे व्यवहारों की अनुमति देना, सुरक्षा के नियमों की अवहेलना करना [पर्यावरणीय]

विवादों का विश्लेषण

विवाद पर वापस आते हैं। एक बार यह जानने के बाद कि कहीं पर विवाद है, हम इसके लिए क्या करें? पहला चरण विवाद का विश्लेषण करना है और तब रचनात्मक ढ़ंग से उसका सामना करना है।

एक महिला शिक्षक, अमन अम्बर ने एक विद्यालय में जनवरी 2004 से काम करना प्रारम्भ किया उसे अपने कार्य से और विशेष बच्चों को पढ़ाने से विशेष लगाव था। पिछले पन्द्रह दिनों से वह विद्यालय की सभा से गायब थी। प्रधानाचार्य को उसके विद्यालय में देर से आने के बारे में सातवें दिन पता चला उसने प्रथमदृष्टया इसे उपेक्षित कर दिया और सोचा कि यह एक नित्यकर्म नहीं बनेगा।

किन्तु यह निरन्तर चलता रहा। दसवें दिन प्रधानाचार्य ने स्थिति का स्वयं अनुश्रवण करने का निर्णय लिया क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि यह एक आम आदत बन जाए। उन्होंने कुछ कदम उठाने प्रारम्भ किए। अन्य शिक्षकों में भी उसके देर से आने और प्रधानाचार्य द्वारा कोई कार्यवाही न किए जाने के बारे में फुसफुसाहट होने लगी।

प्रधानाचार्य के सम्मुख गंभीर समस्या यह थी कि सुश्री अम्बर का पिछला रिकार्ड वास्तव में अच्छा था और वह सदैव अपने विद्यार्थियों की प्रिय थी। प्रधानाचार्य भी उसे बहुत पसन्द करते थे, क्योंकि वह अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित थीं और एक जिम्मेदार व्यक्ति थीं। परिणामत: अन्य शिक्षक सुश्री अम्बर से ईर्ष्या करने लगे। इसके अतिरिक्त, कुछ शिक्षक यह महसूस करने लगे कि सुश्री अम्बर को जानबूझकर उनकी तुलना में कम काम सौंपा जाता हैं।

सुश्री अम्बर की इस अनिश्चित स्थिति का लाभ उठाते हुए कुछ शिक्षक उनके विद्यार्थियों को उकसाने लगे। परिणामस्वरूप उनके विद्यार्थियों में अशान्ति फैंलने लगी और वे उनसे विमुख होने लगे।

सोलहवें दिन शिक्षक संघ के दबाव के कारण प्रधानाचार्य ने सुश्री अम्बर को कारण- बताओ नोटिस जारी कर दिया।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि समय के साथ विवाद क्रियाकलाप, तीव्रता और तनावों की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता हुआ बदलता है। इस अवस्थाओं को पहचाना बहुत मददगार सिद्ध होगा।

उपरोक्त विवाद की स्थिति में, जब तक सुश्री अम्बर विद्यालय में देर से आ रही थीं, तब तक उसे लेकर कोई विशेष मुददा नहीं था। उस समय तक, कहा जाए तो, कोई खुला विवाद नहीं था ; किन्तु अधिकांश शिक्षक उसे पसन्द नहीं कर रहे थे क्योंकि वह प्रधानाचार्य और बच्चों को प्रिय थी। इसके अतिरिक्त, वह सौंपे गए समस्त कार्यों को उत्तरदायित्व पूर्ण ढ़ंग से पूर्ण करती थी, यह विवाद पूर्व अवस्था है जहाँ दो समूहों के उद्देश्य परस्पर विरोधी हैं (एक ओर विद्यालय के अधिकांश शिक्षक हैं और दूसरी ओर, प्रधानाचार्य और सुश्री अम्बर हैं - यद्यपि चेतन रूप से ऐसे समूह बनाने की जरूरत नहीं है- संभवत: विपरीत पक्ष के लोग अपने को एक समूह के रूप में देखते हैं) जो खुले विवाद को बढ़ा सकते हैं। इस अवस्था में सामना करने की अन्त:शक्ति होती है क्योंकि यहाँ संबंधों में तनाव और/या एक-दूसरे के सम्पर्क से बचने की इच्छा होती है।

जब सुश्री अम्बर ने विद्यालय में देर से आना प्रारम्भ किया और लगातार पन्द्रह दिनों तक यह करती रहीं, विवाद खुलकर सम्मुख आ गया और शिक्षकों के मध्य फुसफुसाहट के रूप में प्रत्यक्ष भी हो गया और प्रधानाचार्य ने भी उसका संज्ञान लिया। दोनों पक्ष तनावग्रस्त होते जा रहे थे और ध्रुवीकरण (हिस्सों में बाँटना/भाग करना) बढ़ता जा रहा था। यह सामना करने की अवस्था है। इस अवस्था में समर्थक प्रदर्शन करने या अन्य मुकाबला करने वाले व्यवहारों जैसे कभी-कभी लड़ाई झगड़ा या साधारण स्तर की हिंसा में लिप्त हो जाते हैं। विरोधी खेमा भी यह सोच कर कि आगे मुकाबला और हिंसा बढ़ सकती हैं, अपने संसाधन और मित्रों को जुटाना शुरू कर देता है।

सामाजिक, राजनैतिक और सामुदायिक स्तर के विवादों में व्यक्ति अपनी वैध आवश्यकताओं और अधिकारो से वंचित करने के प्रति जागरूक हो जाते हैं और अपने अधिकारों का दावा करने लगते हैं। इस तरह विवाद दीर्घ अवधि तक छिपे नहीं रह पाते और जल्दी ही सतह पर आ जाते हैं। यहाँ लोगों के पास चयन का अवसर होता है कि वे कैसे अपने विवादों को अभिव्यक्त करें और कैसे अपने सरोकारों को सामने रखें। चयन हिंसक व अहिंसक तंत्रों के मध्य या दोनों के मिश्रण की ओर भी जा सकता है।

मौजूदा विवाद में, यह अपने चरम पर पहुँच गया जब प्रधानाचार्य ने शिक्षक-संघ के दबाव में आकर सुश्री अम्बर को कारण बताओ नोटिस थमा दिया। ये 'संकटकी अवस्था' होती है जब तनाव व हिंसा चरम पर पहुच जाता है। बड़े पॅमानेपर सामाजिक और राजनैतिक विवाद की स्थिति, युद्ध की स्थिति है, जहाँ दोनों ओर के व्यक्ति घायल, आहत होते हैं या मारे जाते हैं। दोनों पक्षों के बीच संप्रेषण बंद हो जाता है और लोग परस्पर सीधे- सीधे बातें कह देने के बदले दोषारोपण करने लगते हैं।

अब इस संकट के परिणाम आते हैं - सुश्री अम्बर कारण-बताओ नोटिस का जवाब देंगी; विद्यालय प्रशासन या तो उसके विरूद्ध सख्त कार्यवाही करेगा या बदली हुई परिस्थिति के कारण सुश्री अम्बर विद्यालय छोड़ने का निश्चय कर लें या फिर पूरा प्रकरण आपस में मिल बैछकर भी सुलझाया जा सकता है। अत: 'नतीजे की अवस्था' में एक पक्ष दूसरे को हरा सकता है या युद्ध विराम की घोषणा कर सकता है (यदि युद्ध की स्थिति हो तो) या एक पक्ष आत्मसमर्पण कर सकता है, या दूसरे पक्ष की मॉगें मान सकता है या दोनों पक्ष वार्तालाप के लिए राजी हो सकते हैं (मध्यस्थ की मॉजूदगी या गैर मौजूदगी में) या एक प्राधिकारी (इस स्थिति में प्रधानाचार्य) या एक शक्तिशाली तीसरा पक्ष इस झगड़े को एक अन्त प्रदान कर सकता है। इस अवस्था में परिणाम कुछ भी प्राप्त हो, तनाव, मुकाबले और हिंसा के स्तरों में समझोते की संभावनाओं को देखते हुए निश्चित रूप से गिरावट आ जाती है।

पाँचवी और अन्तिम अवस्था 'विवाद के पश्चात की 'पश्च विवाद' अवस्था है। इस अवस्था में स्थिति का समाधान इस प्रकार किया जाता है जो हिंसा को समाप्त करने, मुकाबले व तनाव की स्थिति में कमी लाने और दोनों पक्षों के मध्य सामान्य संबंधों की शुरूआत करने की ओर ले जाते हैं। किन्तु, यदि मुद्दे व समस्याएं (उपरोक्त केस में सुश्री अम्बर का विद्यालय में देर से आना) समुचित तरीके से (सम्बोधित) सुलझाई न गई तो ये आगामी पूर्व- विवाद की संभावित स्थिति को ला सकती हैं या विवाद के एक नए चक्र की शुरूआत भी हो सकती है।

तो अभी अभी हमने विवाद की पाँच अवस्थाओं के बारे में जाना- विवाद पूर्व अवस्था, मुकाबले की अवस्था, संकट की अवस्था, परिणाम की अवस्था और पश्च विवाद अवस्था। प्राय: ये अवस्थाएँ उपरोक्त वर्णित रेखीय क्रम में होती हैं किन्तु कुछ स्थितियों में इनमें परिवर्तन भी सकता है, क्योंकि हर विवाद अपने में बेजोड़ होता है और अपने ही तर्कों का अनुसरण करता है। इसके अतिरिक्त, कुछ विवाद कभी भी परिणाम स्तर तक नहीं पहूँच सकते, पश्च विवाद की स्थिति को भूल जाए, ऐसे विवाद वास्तव में चक्रीय हो जाते हैं और सामना करने की अवस्था और परिणाम की अवस्था के बीच आगे-पीछे घूमते रह जाते हैं (जहाँ बार-बार समझौते टूटते हैं और पुन: हिंसा शुरू हो जाती है) प्रत्यक्षत:शान्ति प्रेमियों और शान्ति निर्माताओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती समझौते को फिर से मुकाबले की अवस्था में आने से बचाना और शान्ति की प्रक्रिया को इस प्रकार समर्थन देना है कि यह किसी तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचे, जो कि शान्ति की अवस्था है।

पुन: सुश्री अम्बर के विवाद की स्थिति पर आते हैं, इसमें बहुत सारे मुददे हैं जिन्हें तीन वर्गों में बाँटा जा सकता हैं : केन्द्रीय समस्याएं, कारण और प्रभाव। हम वृक्ष के चित्र का उपयोग करते हुए उन्हें तीन श्रेणियों में छाटँकर रखने का प्रयास करेंगे। (अगले पृष्ठ का चित्र 5 देखें) वृक्ष की जड़े समस्या के मूल कारकों का प्रतीक हैं, वृक्ष का तना मूल समस्या

का प्रतिनिधि और शाखाएं उसके प्रभाव का प्रतीक हैं। विवाद की कुछ स्थितियों में कुछ मुद्दे विवाद का कारण और प्रभाव दोनों दिखाई पड़ते हैं। इनमें दोनों स्थानों में समान मुददे दिखाई दे सकते हैं।

सुश्री अम्बर के उदाहरण में केन्द्रीय समस्या उसका देर से विद्यालय आना और ऐसा पन्द्रह दिनों तक करना है। इसका परिणाम यह हुआ कि विद्यालय के अन्य शिक्षक उसके विरूद्ध फुसफुसाहट करने लगे, प्रधानाचार्य ने उसकी अनुपस्थिति का संज्ञान लिया, विद्यार्थी उससे नाराज हुए और अन्ततः उसे कारण बताओं नोटिस दे दिया गया। अब, समस्या के मूल कारण जानने के लिए हमें कुछ और सूचनाएं चाहिए। सबसे मुख्य तो यह जानना है कि सुश्री अम्बर का विद्यालय में देर से पहुँचने के क्या कारण थे? यह जानने के लिए हमें सुश्री अम्बर के पक्ष को समझना होगा।

"मेरा पिछले माह विवाह हुआ और मैं अपनी ससुराल में रहने लगी जो मेरे कार्यस्थल में लगभग 20 किमी. पड़ता है। मुझे घर के काम करने होते हैं (मेरी सास की मुझ से इन कामों को करने की अपेक्षा रखती है और नौकरानी रखने की हमारी हैसियत नहीं है) फिर बस पकड़नी होती है जो यातायात के भीड़ भरे समय में खचाखच भरी होती है और कई बार जाम में भी फँस जाती है। इस तरह प्रतिदिन विद्यालय पहुँचने में देर हो जाती है। विवाह से पूर्व ऐसा कोई मुददा नहीं था; क्योंकि मेरा घर विद्यालय से 5 मिनट की पैदल दूरी पर था। मैं इस विद्यालय को छोड़ना नहीं चाहती, न ही मैं काम छोड़ सकती हूँ (घर चलाने के लिए मेरी आय जरूरी है)। इसके अतिरिक्त, मैं स्वयं भी विद्यालय में देर से आना पसन्द नहीं करती। अब अन्य शिक्षक मेरे विषय में कई प्रकार की अफवाहें फैला रहे हैं। परिणामस्वरूप, मैं हर समय तनावग्रस्त रहती हूँ। वास्तव में, दो दिन पहले तो मैंने अपने एक विद्यार्थी को बहुत बुरी तरह डॉट दिया था। मैं, जिसे अपने विद्यार्थियों के प्रति ध्यान व सहानुभूति रखनी चाहिए, वास्तव में बिना तुक या कारण के उन पर चिल्लाने लगी हूँ।"

अब हम सुश्री अम्बर का विद्यालय में देर से आने का मूल कारण जानते हैं - वह विवाह के उपरान्त अपनी ससुराल में रहने लगी हे जो विद्यालय से 20 किमी. दूर है - और उसकी सास की उससे यह अपेक्षा हे कि वह विद्यालय जाने से पहले घर के सब काम खत्म करके जाए।

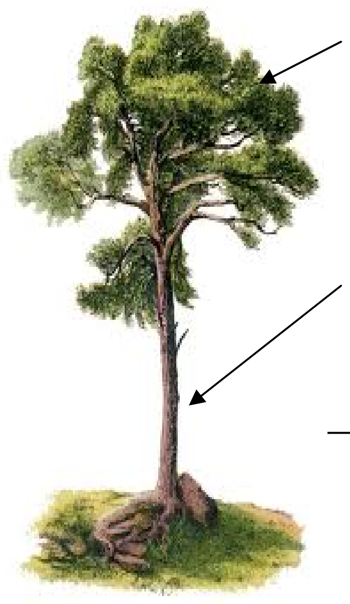

प्रभाव

विद्यालय के अन्य शिक्षक सुश्री अम्बर पर भुनभुना रहे हैं।
प्रधानचार्य ने उसकी अनुपस्थिति का संज्ञान लिया।
उसे कारण- बताओ नोटिस थमाया गया।

मूलभूत समस्या

सुश्री अम्बर पिछले पन्द्रह दिनों से देर से विद्यालय आ रही हैं।

कारण

सुश्री अम्बर अब ससुराल में रहती हैं जो विद्यालय से 20 किमी.दूर है। उसे विद्यालय के लिए निकलने से पूर्व घर के समस्त काम निपटाने होते है।

सत्रोत चित्र 5 साइमन फिशर ईटी.एरल.वर्किग विद कॉपिलिस्ट: स्किल एण्ड स्टोरीजीज फॉर एक्शन, न्यूयॉर्क: जेडबुकल एण्ड रेस्पोन्डिंग टू कॉफ्लिक्ट, 2000; पेज.29)

ऊपर दिया गया चित्र विवाद का वृक्ष है जिसके तीन महत्वपूर्ण भाग हैं - कारण (जड़ें), केन्द्रीय समस्या (तना) और प्रभाव (शाखएं)। इस प्रकार यह द्वन्द्व वृक्ष हमें द्वन्द्व के तीन मुख्य मुद्दों को पहचानने में सहायता करता है - कारण, केन्द्रीय समस्या और प्रभाव, सबसे महत्वपूर्ण है कि यह विधि हमें किसी विवाद के मूल कारणों और केन्द्रीय समस्याओं के बीच अन्तर करने में सहायता करती है। किन्तु किसी विवाद के मूल कारणों को जानना इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं।

प्राय: यह होता हैं कि जैसे-जैसे विवाद बढ़ता है, विवाद को जन्म देने वाले मूल कारण उपेक्षित हो जाते हैं और दूसरे मुददे मुख्य स्थान ग्रहण कर लेते हैं - जिससे वे समस्याएं जो कि मूल कारणों के कारण उत्पन्न हुई, मुख्य स्थान पर आ जाती हैं। इसके अलावा स्थाई शान्ति के लिए यह आवश्यक है कि मूल कारणों को उघाड़ा (अनावृत्त किया) जाए और उन पर ध्यान दिया जाए, यदि इन मूल कारणों पर ध्यान नहीं दिया जाता तो उस विवाद के बार-बार सिर उठाने की संभावनाएँ बनी रहती हैं - चाहे उसी रूप में या किसी नए रूप में। लम्बे खींचे जा रहे हिंसक सामाजिक विवाद का मूल रूप से किन्हीं गम्भीर मुद्दों पर नहीं लड़े जाते हैं।

बल्कि इन्हें मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं या ढ़ॉचागत या व्यवस्थागत मुद्दों में खोजा जा सकता हैं । मूलभूत मानवीय आवश्यकताएं उन व्यापक आवश्यकताओं के अस्तित्व पर बल देती है जिन्हें लम्बे सामाजिक विवादों के समाधान के लिए तृप्त किया जाना जरूरी हैं ।

सभी मनुष्यों का कुछ ऐसी आवश्यकताओं की पूर्ति का अधिकार है, जिन पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता । ये मौलिक आवश्यकताए- भौतिक (भोजन, आवास, स्वास्थ्य सुरक्षा और रोजगार –आभावों से मुक्ति), सांस्कृतिक (धर्म और भाषा का अधिकार) और सामाजिक (सम्मान, गारिमा व भय से मुक्ति) आवश्यकताएं होती है । जीवन की सुरक्षा और भविष्य को सुरक्षित महसूस करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है । यदि ये आवश्यकताएं समाज सम्मत तरीके से नहीं मिल पाती हैं तो व्यक्ति और समुदाय इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं । इस प्रकार अन्याय, चाहे यह वास्तविक हो या केवल इसकी अनुभूति हो, विवाद का मूल कारण है । समकालीन विवादों में मानव की पहचान, स्वीकृति, सुरक्षा और वैयक्तिक विकास की आवश्यकताएं विशेष महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । हाल के वर्षों में मनुष्य की पहचान की आवश्यकता की लालसा राष्ट्रों के मध्य विवाद के प्राथमिक

स्त्रोत के रूप मे देखा गया । अत: यदि हम विवादों के समाधान के लिए काम करना चाहते हैं, तो यह अत्यन्त आवश्यक हैं कि हम इसके मूल कारणों पर विचार करें ।

विवादों के संदर्भ में मूल कारणों के अतिरिक्त विरोधी समूहों या व्यक्तियों के रूझान और व्यवहार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । समस्त विवादों के ये मुख्य घटक या कारक होते हैं :

क. विवाद में संलग्न समूहों या व्यक्तियों के रूझान
ख. विवाद में शामिल लोगों के व्यवहार
ग. विवाद की स्थिति या संदर्भ
ये तीनों मिलकर क, ख, ग त्रिकोण बनाते हैं ।
आइए, इस क,ख,ग त्रिकोण को दो परिप्रेक्ष्यों में भरकर देखते हैं । पहला सुश्री अम्बर के परिप्रेक्ष्य से व दूसरा अन्य शिक्षकों के नजरिए से

....

सुश्री अम्बर का क,ख, ग. त्रिभुज

स्वयं:
- ज्यादातर विद्यार्थियों का ध्यान रखना
- शिक्षकों की भुनभुनाहट के कारण हर समय तनावग्रस्त
- एक बार विद्यार्थियों को डॉट दिया

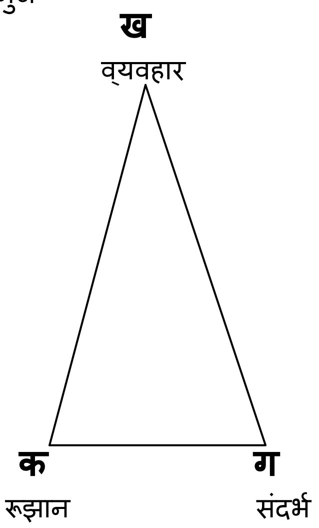

अन्य शिक्षक :
- सुश्री अम्बर की विद्यालयी सभा में अनुपस्थिति व प्रधानाचार्य के द्वारा कार्यवाही न करने को लेकर अफवाह फैलाना
- मेरे विद्यार्थियों को मेरे विरूद्व भड़काना
- दूसरों की अनिश्चित परिस्थिति का लाभ उठाना

स्वयं :
- उत्तरदायित्व स्वीकारना
- कार्य के प्रति समर्पण
- शिक्षण कार्य में रूचि

- बच्चों के साथ रहना पसन्द है
- बच्चों के प्रति समझ व समानुभूति थी ।
- कार्यस्थल पर देर से आना ना पसन्द

अन्य शिक्षक :
- वे मुझसे ईर्ष्या करते हैं

- पिछले माह विवाह हुआ ।
- ससुराल में रहने लगी जो
- पहले 5 मिनट की पैदल दूरी विद्यालय से 20 किमी.दूर है।

- विद्यालय के लिए निकलने से
- पहले समस्त घरेलू कार्यो का निपटारा करना
- नौकरानी रखना संभव नहीं है
- अत्याधिक भीड़-भाड़ वाला

- वे कामचोर हैं
- हमेशा कोई न कोई विवाद
  पैदा करने को तत्पर

- ट्रैफिक होना और समय ज्यादा लगना
- नौकरी छोड़ना नहीं चाहती
- वर्तमान विद्यालय को नहीं छोड़ना चाहती

आवश्यकता : नौकरी (विद्यालय से निकाले जाने का भय)

विद्यालय के अन्य शिक्षको के लिए क, ख, ग. त्रिकोण

ख

व्यवहार

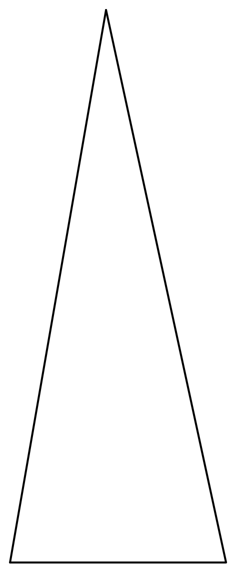

क रूझान

ग संदर्भ

सवयं :
- हमने अन्य शिक्षकों व विद्यार्थियों को घटना की सत्यता बताई ।
- हम अनुशासनहीनता को विद्यालय प्रशासन के संज्ञान में लाए
- उसके विरूद्व कार्यवाही करने के लिए प्रधानाचार्य पर दबाव बनाया
- हम समय पर विद्यालय आते हैं ।
- हमें विद्यालय और विद्यार्थियों की चिंता है

सुश्री अम्बर
- वह देर से आती है।
- प्राचार्य पर अपने प्रभाव का लाभ उठाती है
- वह छात्रों पर चिल्लाती है

सवयं :
- हम समय का पालन करते हैं
- हम नियमों का सम्मान/पालन करते है ।
- अनुशासनहीनता बर्दाशत नहीं
- नियम सबके लिए समान रूप से लागू किए जाने चाहिए,

सुश्री अम्बर :
- वह दंभी हैं ।
- सिर्फ वह काम करती है, दूसरे नहीं ।
- वह फायदा उठाना जानती है
- वह गैर जिम्मेदार है ।

- सुश्री अम्बर पिछले 15 दिनों से विद्यालय की सभा में अनुपस्थित हैं ।
- प्रधानाचार्य उसके विरूद्व कोई कार्यवाही नहीं करते ।
- उसे कम कार्य दिए गए हैं ।

आवश्यकता : सुश्री अम्बर को नियम तोड़ने के लिए दंडित किया जाना चाहिए (वे प्रधानाचार्य और विद्यार्थियों से उनकी निकटता से भयभीत हैं)

....

यदि हम समस्या के मूल कारण तक पहुँचना चाहते हैं तो हमें विवाद का समग्र रूप से ओर विस्तृत परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना होगा । जैसे एक चिकित्सक के लिए बिना मरीज की जॉच किए और उसकी समस्या का विश्लेषण किए बिना दवाएं दिया जाना संभव नहीं है । वैसा ही उदाहरण यहॉ भी है – जब तक विवाद को विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषित नहीं किया जाएगा, हम उसके समाधान के लिए रणनीतियॉ नहीं सोच सकते हैं ।

इस प्रकार विवादों का विश्लेषण वास्तविकता के कई परिप्रेक्ष्यों से परीक्षण करने और समझने की प्रक्रिया है । यह समझ उस आधार को बनाती है जिस पर विभिन्न रणनीतियॉ विकसित की जा सकती हैं और कार्य योजना बनाई जा सकती हैं । विवाद विश्लेषण के द्वारा हम निम्नलिखित काम करने में सक्षम हो सकेंगे –

i. किसी स्थिति की पृष्ठभूमि और उसका इतिहास
ii. विवाद उत्पन्न करने वाली त्वरित व वर्तमान घटनाएं
iii. सभी संबंधित समूहों और व्यक्तियों को समझना , न कि केवल मुख्य व प्रत्यक्ष लिप्त व्यक्तियों व समूहों को समझना ।
iv. सभी समूहों और व्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य को समझना और वे एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं, के विषय में अधिकाधिक जानना
v. उन कारकों और प्रवृत्तियों को पहचानना विवाद को सहारा देते हैं
vi. असफलताओं व सफलताओं दोनों से सीखना,

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि विवाद विश्लेषण एक बार करने वाली प्रक्रिया नहीं है, यह स्थितियों के विकास के साथ-साथ उत्तरोत्तर चलने वाली प्रक्रिया है, ताकि हम बदलते कारकों, गतिशीलता और परिस्थितियों के साथ-साथ अपनी कार्ययोजना में अनुकूलन कर सकें ।

नीचे एक अन्य विवाद की स्थिति दी गई है जो हमें अभी तक पढ़े हुए की रोशनी में विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करती है –

....

विचार एवं विश्लेषण करें –

शिखा सदैव अपनी कक्षा में सर्वोच्च स्थान पर रहती थी । वह न केवल अध्ययन में श्रेष्ठ थी बल्कि क्रीडा, खेल और अन्य पाठ्यक्रम संबंधी क्रिया-कलापों में भी समान रूप से अच्छी थी । समस्त कक्षा उसकी बुद्धिमता के कारण उसकी प्रशंसक थी और उससे मित्रता करना चाहती थी । वह अपने शिक्षकों की आंख का तारा थी । ऐसा लगता था कि कोई उसे कभी

नहीं हरा पाएगा । धीरे-धीरे सफलता, प्रशंसा और ध्यान मिलने से वह अभिमानी, दूसरों की अवहेलना करने वाली और अख्खड़ बन गई ।
उस दिन तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा, जिस दिन एक प्यारी सी लड़की स्वाति शिखा की कक्षा में प्रविष्ट हुई । स्वाति एक अन्तर्मुखी किन्तु पढ़ने में अच्छी और नृत्य व संगीत में उत्कृष्ट थी। उसकी अच्छी प्रकृति व नम्र व्यवहार के कारण कक्षा में उसकी प्रशंसा करनी शुरू कर दी । बहुत जल्दी स्वाति लगभग सभी की मित्र बन गई, चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो, वह अपनी कक्षा की सभी साथियों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहती थी ।

शिखा को यह परिवर्तन कतई पसन्द नहीं आया । वह स्वाति को अपना प्रतिद्वन्द्वी मानती थी । साथ ही, अब शिखा को स्वाति से कठिन प्रतियोगिता मिलने लगी । कुछ ही समय बाद ही ऐसा हुआ कि शिखा के स्थान पर स्वाति ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया । शिखा गुस्से और नफरत से खौलने लगी लेकिन कुछ कर नहीं पाई। उसने उपयुक्त अवसर पाने के लिए प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया । लेकिन स्वाति के मन में शिखा के प्रति वैर भाव रखने का कोई मुददा नहीं था और वह उसे अपना दोस्त बनाना चाहती थी । उसे इस बात का कोई अंदेशा ही नहीं था कि शिखा के मन में उसके प्रति कोई बुरी भावनाएं हैं।
एक दिन स्वाति अपना भोजन लाना भूल गई अत: वह मध्यांतर में विद्यालय के भोजनालय की ओर जा रही थी । भोजन का अवकाश मात्र दस मिनट का था और उसके तुरंत बाद गणित का परीक्षण होना था । इसलिए स्वाति लगभग दौड़ रही थी । उसी समय, शिखा भोजनालय से एक गिलास ताजा जूस लेकर लौट रही थी ।स्वाति गलती से शिखा से टकरा गई और जूस शिखा के विद्यालय की ड्रेस पर बिखर गया । शिखा गणवेश खराब करने और जूस गिराने पर स्वाति के ऊपर चिल्लाने लगी । स्वाति ने अपनी गलती स्वीकार कर उदार मन से माफी मॉगी पर शिखा ने कुछ नहीं सुना ।
शिखा घटनास्थल से चिल्लाती हुई सीधे अपनी कक्षा-अध्यापिका के कमरे में गई । वहॉ उसने घटना को नाटकीय रूप से बढ़ा चढ़ाकर वर्णन किया ।वह इसे ऐसे प्रस्तुत कर रही थी जिससे यह प्रतीत हो कि स्वाति ने ऐसा जानबूझ कर सोद्देश्य किया हो । शिखा कक्षा अध्यापिका को बहुत प्रिय थी, अत: वह भी, तुरन्त ही कक्षा की ओर चल दी ।
सवाति अभी-अभी घटित घटना पर विचार कर रही थी और पूरे प्रकरण पर अपनी गलती महसूस कर रही थी । उसने एक बार और शिखा के पास जाकर संवाद करने और माफी मॉगने का मन बनाया । स्वाति को लगा कि अब तक शिखा का गुस्सा शान्त हो गया होगा और अब वे दोनों शान्ति से इस घटना पर बातचीत कर पाएंगे।
तभी स्वाति ने देखा कि कक्षा अध्यापिका एकदम उसके सामने खड़ी है । कक्षा अध्यापिका ने स्वाति से बिना कुछ पूछे या उसकी बात सुने, पूरी कक्षा के सम्मुख उसे अपमानित किया । कक्षा अध्यापिका से प्राप्त इस व्यवहार को स्वाति ने बहुत अपमानजनक और अन्यायपूर्ण महसूस किया । उसे यह कल्पना भी नहीं थी कि एक व्यक्तिगत मामला सार्वजनिक मामला

बन जाएगा । एक व्यक्ति, जो इस समय कक्षा अध्यापिका के पीछे खड़े । मुस्करा रही थी, वह शिखा थी, उसने अपनी हार का बदला ले लिया था ।

<u>रचनात्मकता के साथ विवाद का सामना करना</u>

विवाद पर प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करने के विविध तरीकों पर हम पूर्व में चर्चा कर चुके हैं । विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विवाद पर अभिव्यक्त की गई प्रतिक्रिया अपनी आवश्यकताओं, उनकी तीव्रता, और विवाद का केन्द्र स्वयं होने, विवाद का संदर्भ और दूसरे पक्ष की शक्ति व अधिकार के साथ ही साथ स्वभाव के परिपेक्ष्य के कारण भिन्न होती है । उदाहरण के लिए, एक कायर व्यक्ति भी अत्यन्त आक्रामक व्यवहार कर सकता है यदि कोई व्यक्ति उसके जीवनयापन के स्त्रोत पर आक्रमण करता है । विवाद को संभालने के संबंध में अधिकांश व्यक्ति एक अभ्यस्त तरीका या वैयक्तिक शैली अपनाते हैं । ये शैलियॉ विवाद तर्क पहुँचने में कम या अधिक एक सी ही होती हैं, यद्यपि इनके संदर्भ व संबद्धता में किंचित हेर-फेर हो सकता है । व्यापक रूप में इसकी पॉच मुख्य शैलियों की पहचान हुई है । इन शैलियों में मुख्यत: दो आयाम अन्तर्निहित है : अपने निजी सरोकारों को संतुष्ट करने में रूचि व दूसरों के सरोकारों को संतुष्ट करने में रूचि ।

<u>विवाद समाधान की शैलियॉ -</u>

कुछ व्यक्ति विवाद से बचने को प्राथमिकता देते हैं, जो कुछ समय में, एक स्व स्थाई चक्र को आगे बढ़ाने लगता है । अर्थात व्यक्ति सोचते हैं कि विवाद बुरी चीज हे, वे अनुभव किए जा रहे द्वन्द्व से घबरा जाते है, अत: वे विवाद को जितना संभव हो टालने का प्रयास करते हैं, जिससे विवाद उनके नियंत्रण से बाहर हो जाता है और तब विवाद का मुकाबला/सामना करना बहुत मुश्किल हो जाता है । विवाद को टालने का यह नकारात्मक अनुभव आगे चलकर गंभीर विवादों को पैदा कर देता है । यह टालने की शैली है, जो उन लोगों द्वारा अपनाई जाती है जो विवाद को संभालने की दिशा में कुछ भी नहीं करना चाहते हैं । वे लोग या तो विवाद के नकारात्मक परिणामों या उनके और अधिक तीव्र होने से भयभीत होते हैं या फिर ये विश्वास करते हैं कि विवाद को उपेक्षित कर देने से वे स्वत: दूर हो जाएंगें । सामान्य से विवादों के लिए यह एक उपयुक्त रणनीति हो सकती है क्योंकि प्रत्येक छोटी-छोटी मुठभ्रेड़ के प्रति प्रतिक्रिया करने की कोई आवश्यकता नहीं हैं । बड़े द्वन्द्वों के लिए, पीछे हटना, वापस लेना कोई श्रेष्ठ रणनीति नहीं है विशेषकर तब जब टालने वाला अधिक शक्तिशाली हो (माता-पिता, शिक्षक, पर्यवेक्षक आदि) । यह स्थिति कम शक्तिशाली व्यक्ति को अपने सरोकारों को व्यक्त करने से रोकती है जो कुंठा और अप्रसन्नता को लाएगी। इस शैली में स्वयं के तथा अन्य के सरोकारों के प्रति उपेक्षा निहित हैं ।

जब व्यक्ति विवाद को उपेक्षित करने/टालने के स्थान पर सरल समाधान देता हुआ उसे समाप्त करता है तो यह समायोजन शैली हे । यह बताता है कि विवाद को दूसरों की इच्छा के समर्थन में तय किया जा सकता है । यह विवाद को संभालने के अप्रभावी तरीके के रूप में समझी जाती है, विशेष कर तब जब यह अभ्यस्त तरीके से किया जाए क्योंकि इससे विवादों के समाधान का कोई रचनात्मक तरीका नहीं उत्पन्न होता है । 'मुकाबला शैली' स्वयं उच्च सरोकारों के प्रति व दूसरों के प्रति न्यून सरोकार प्रदर्शित करती है, एक प्रतियोगी विजेता बननेके आक्रामकता को अपनाने से लेकर कुछ भी कर सकता हैं, जिसमें मौखिक आक्रमण और शारीरिक धमकियों का प्रयोग भी शामिल हो सकता है । यह शैली कतई वांछित नहीं है क्योंकि यह समस्या के समाधान हेतु कोई लाभदायिक हल उत्पन्न करने में असफल रहती है और अप्रसन्नता व शत्रुता को बढ़ाती प्रतीत होती है । एक अन्य शैली जो कि समझौता शैली है जो स्वयं के तथा दूसरों के प्रति संतुलित सरोकार रखने से संबंधित है, दोनों ही पक्ष एक दूसरे के हित में कुछ छोड़ने के लिए सहमत होती है ताकि दोनों पक्षों को कुछ प्राप्त करने का आंशिक संतोघ प्राप्त हो सके । समझौता शैली विवाद संभालने के लिए साफ रचनात्मक तरीका/उपागम है, विशेषकर तब जब मुददा सामान्य हो ।

सहयोगात्मक शैली के अन्तर्गत विवाद को ऐसी पारस्परिक समस्या के रूप में देखा जाता है जिसका समाधान किया जा सकता है । इसमें स्वयं के तथा दूसरों के सरोकारों को महत्व दिया जाता है । यह उदारता और विश्वास को प्रोत्साहित करती है । यहॉ समस्या को केन्द्रित किया जाता है न कि व्यक्ति को । यह विवाद को संभालने का सबसे प्रभावशाली उपागम जाना जाता है ।

<u>कुछ कौशल एवं रणनीतियॉ –</u>

जैसा कि आपने देखा कि द्वन्द्वों के व्यवस्थापन का सबसे प्रभावी उपागम सहयोग है । विवाद/द्वन्द्वों के संदर्भ में कुछ मुख्य मान्यताएं हैं जो विवाद समाधान की प्रक्रिया को सुगम बनाती हैं । (1) विवाद की स्थिति में, हमें दूसरे को संदेह का लाभ देना चाहिए अर्थात् जो असहमत हैं उनके अभिप्राय पर संदेह न करें और उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करना चाहिये। (2) किसी भी व्यक्ति की प्रतिष्ठा आड़े नहीं आनी चाहिए (3) विवाद को एक पारस्परिक समस्या की तरह समझना चाहिए जिसे सहयोग से सुलझाया जाता है न कि जीत- हार के रूप में । (4) विवाद के समाधान के लिए पारस्परिक रूप से स्वीकृत समय में कार्य करना चाहिए न कि समस्या के उत्पन्न होते ही उससे जूझना शुरू कर दिया जाए, और अन्त में (5) विवाद को सुलझाते समय अच्छा हो कि स्वयं के दृष्टिकोण में लचीलेपन और परिवर्तन की इच्छा जाहिर की जाये । कुछ ऐसी विशिष्ट कौशल एवं रणनीतियों है जो व्यक्तियों को विवादों को प्रभावशाली ढ़ंग से सामना करने के साधन उपलब्ध कराती हैं ।

संप्रेषण :

हजारों निरर्थक शब्दों से एक वह शब्द बेहतर है जो शान्ति लाता है ।

- बुद्ध

हमने अभी-अभी कहा कि शाब्दिक (शब्दों के माध्यम से) और अशाब्दिक (संकेतों, प्रतीकों, शारीरिक भंगिमाओं के माध्यम से) दोनों ही प्रकार की संप्रेषण द्वन्द्वों /विवादें का सामना करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं । इसीलिए हम संप्रेषण की व्याख्या विवादों को संभालने से संबंधित भाग में कर रहे हैं, संप्रेषण एक सतत व कभी न समाप्त होने वाली ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम विभिन्न मुददों पर से अपना पक्ष मौन या मौखिक आदान-प्रदान के माध्यम प्रस्तुत करते हैं । किसी मुद्दे पर हमारा मौन दूसरों को उनकी अपनी व्याख्या करने के लिए अवसर उपलब्ध कराता है जो उनकी अप्रसन्नता या मौन स्वीकृति या दिलचस्पी या संबद्धता की कमी को बता सकता है । निम्न कथा इसे स्पष्ट करेगी –

एक विद्यालय एक विज्ञान शिक्षिका अपने विद्यार्थियों के साथ एक परियोजना करना चाहती थी । यह परियोजना विद्यालय के परिवेश के निवासियों के स्वास्थ्य लब्धि से संबंधित था, इसके कुछ सामाजिक आयाम थे; क्योंकि स्वास्थ्य के कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पक्ष होते हैं । विज्ञान शिक्षिका चाहती थी कि सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका भी इस प्रोजेक्ट में भाग ले । परियोजना के दौरान स्थानीय निवासियों के शिक्षा संबंधी ज्ञान के आंकलन पर सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका विज्ञान शिक्षिका से भिन्न मत रखती थी । दोनों ने अपने अपने दृष्टिकोण और उनके पक्ष और विपक्ष में कारण प्रस्तुत किए । इसके परिणाम स्वरूप विवाद हो गया । दोनों शिक्षिकाओं के मध्य पहले से कक्षा परिवर्तन को लेकर मन-मुटाव था जो पुन: उभर आया । इसने कलह को विवाद में बदल दिया और बहुत सारे अन्य कारकों के कारण यह बहुत जटिल हो गया । दोनों ने विद्यालय में एक-दूसरे के विरूद्ध प्रचार-प्रसार करना प्रारंभ कर दिया ताकि अधिक से अधिक शिक्षकों को अपना समर्थक बना सकें ।

उपरोक्त केस में, विवाद में लिप्त दोनों व्यक्तियों ने प्रारंभ में एक दूसरे से संवाद स्थापित किया और एक-दूसरे के विभिन्न दृष्टिकोणों को जाना ।दोनों ही शिक्षिकाओं ने अपने दृष्टिकोण पर विद्यालय के अन्य शिक्षकों का समर्थन पाने के लिए उनके समक्ष घटना का वर्णन (संप्रेषण) किया ।

विवाद में लिप्त दोनों व्यक्तियों ने अपने मत-विभेद को दूर करने की आवश्यकता महसूस की, क्योकि प्रोजेक्ट का कार्य रूक गया था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि विवाद में कोई ऐसा शाक्तिशाली प्रभाव है जिसके फलस्वरूप उनके चारों ओर नकारात्मक भावनाएं और नकारात्मक ऊर्जा व्याप्त होने लगी थी । जिसने उनके अन्य समस्त कार्यों व संबंधों –

वैयक्तिक व व्यावसायिक को प्रभावित कर दिया था । उनके कुछ सहकर्मियों ने उन्हें यह भान कराया कि उन्हें बजाए एक दूसरे के पीठ पीछे या एक दूसरे के विरूद्ध बोलने के, सीधे परस्पर बात करनी चाहिए । इस तरह, एक दिन प्रात:कालीन प्रार्थना के दौरान विज्ञान शिक्षिका सामाजिक विज्ञान शिक्षिका के पास पहुँच गई और उसका अभिवादन किया । दूसरी ने मुस्कराकर अभिवादन स्वीकारा । भोजनावकाश के दौरान विज्ञान शिक्षिका सामाजिक विज्ञान शिक्षिका के पास अपना भोजन साझा करने के बहाने पहुँच गई । लंच के दौरान दोनों एक प्रकरण से दूसरे पर चर्चा करते हुए अन्तत: प्रोजेक्ट पर केन्द्रित हो गए । उन्होंने दूसरों के दृष्टिकोणों को सम्मिलित करते हुए विविध संभावनाओं पर चर्चा की और अंत में एक मत हो कर शिक्षा के मुद्देपर दस बिन्दु नियत कर दिए, जो पुन: दो उपक्षेत्रों में बॉटे गए जिसमें प्रत्येक में पॉच बिन्दु थे । दो भागों में एक भाग औपचारिक शिक्षा दूसरा अनौपचारिक शिक्षा के लिए नियम किया गया । उन्होंने तय किया कि इसका परीक्षण वे एक प्रश्नावली के द्वारा करेंगे जिसमें दस सामान्य प्रश्न निहित होंगे। ये प्रश्न स्वास्थ्य संचेतना जैसे रोगों के प्रकार, वे किन कारणों से होते हैं, उनसे शरीर का कौन सा अंग प्रभावित होता है आदि-आदि होंगे ।

उपरोक्त घटना से स्पष्ट होता है कि संप्रेषण कौशल अपरिहार्य हैं । विवाद से ग्रस्त व्यक्तियों या समूहों के मध्य संप्रेषण स्थापित किए बिना कोई समाधान नहीं हो सकता है । लेकिन एक महत्वपूर्ण आयाम इस तथ्य को याद रखना भी है कि जब विवाद का सामना कर रहे हों , तो मात्र अच्छा संप्रेषण ही अकेली जरूरत नहीं है जो समाधान तक पहुँचाए । संप्रेषण में विवादग्रस्त व्यक्तियों या समूहों की स्थिति (प्रकृति और स्वभाव) भी महत्वपूर्ण है । बिना सही स्थिति या इच्छा शक्ति के किसी भी मात्रा में किया गया संप्रेषण विवाद समाधान के लिए पर्याप्त नहीं होता । वे जो विवाद के समाधान के लिए व्यवस्थित होते हैं या विवाद समाधान की इच्छा रखते हैं, अधिक फायदे में होते हैं, और बेहतर संप्रेषण उत्पन्न करते हैं । यह वास्तव में इस बात पर निर्भर करता है कि हम क्या संप्रेषित कर रहे है और किस तरह से संप्रेषित कर रहे हैं ।

संप्रेषण को पारस्परिक आदान-प्रदान पर केन्द्रित किया जाता है, पहला, गम्भीर विवाद की स्थिति में जहॉ दो व्यक्तियों या समूहों के बीच संबंध टूट चुके हो, इन शिक्षिकाओं की तरह जिन्होंने एक दूसरे को अभिवादन किया और विवाद पर केन्द्रित होने से पूर्व परस्पर सामान्य चीजों पर वार्तालाप करती रहीं । निर्णायक मुद्दों को, जहॉ मत विभेद हों वहॉ जब तक दोनों पक्ष बातचीत के लिए आरामदेह स्थिति में न आ जाए, तब तक नहीं छूना चाहिए ।

साररूप में विवादोंका सामना करने का शान्तिपूर्ण साधन किसी संदेश का संप्रेषण या संवाद है, जिसमें दोनों पक्ष सकारात्मक होकर बातचीत करें और सक्रियता से सुनें, यदि हम यह सीख जाएं कि अधिक से अधिक प्रभावशाली संप्रेषण कैसे करें तो परिणाम एक-दूसरे के प्रति

अधिक स्वीकृत और संवेदनशील रूप में प्राप्त होंगे । इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कौशल सुनना हैं ।

<u>ध्यान देना: सुनना</u>

संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण आयाम ध्यानपूर्वक सुनना है । यह वह प्रारंभिक साधन है जिसके माध्यम से मानव अपनी समझ को दूसरे तक पहुँचाते, संप्रेषण करते हैं । किन्तु, सुनना एक कठिन क्रिया है; इसके लिए ध्यान व ऊर्जा की आवश्यकता होती है । प्राय: हम सोचते हैं कि हम सुन रहे है, किन्तु वास्तव में हम मुश्किल से ही एक दूसरे की सुनते है । अधिकतर हम बोलने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं या अपने द्वारा दिए जाने वाले उत्त्र को बनाने में जुटे होते हैं । यह बताता है कि हममें दूसरे के दृष्टिकोण के प्रति लचीलेपन का अभाव है । हम मात्र अपने मत को आरोपित करने में ही रूचि रखते हैं, जब कोई विवाद बढ़ता है और विवादग्रस्त समूह या व्यक्ति और अधिक प्रबलता और भावनात्मक रूप से सम्बद्ध होने लगता हैं, तो यह सुनने और संप्रेषित करने की क्षमता को घटाने लगता है । एक औसत व्यक्ति जो कुछ भी सुनता है उसका 25 प्रतिशत ही याद रख पाता है क्योंकि सुनते हुए या तो हमारा ध्यान इधर-उधर भटकने लगता है अथवा हम बातों की ओर कोई ध्यान ही नहीं देते हैं । क्या आप जानते हैं कि अधिकतर व्यक्ति एक मिनट में लगभग 125 शब्द बोलते हैं लेकिन हमारा मस्तिष्क सूचनाओं पर तीन गुना तीव्रता से कार्यवाही कर रहा होता है, अत: इस दौरान प्राय:हम सामंजस्य करते हुए खाली स्थान भर रहे होते हैं, दिवास्वप्न देखते हैं या अपनी प्रतिक्रियाओं का पूर्वाभ्यास कर रहे होते हैं ।

जब हम 'ध्यानपूर्वक सुनना' कहते हैं तो निश्चित रूप से हम मात्र सुनने की बात नहीं कर रहे हैं ।ध्यानपूर्वक सुनना किसी वक्ता के शब्दों के सुनने से कहीं बहुत अधिक है । यह वास्तव में दूसरे व्यक्ति के गहनतम सरोकारों और निहित आधारभूत मूल्यों के साथ जुड़ाव है । यह जुड़ाव हार्दिक होना चाहिए ।

केवल ध्यानपूर्वक सुनना ही वह माध्यम है जो विवादग्रस्त समूहों और व्यक्तियों में से प्रत्येक की गहन आवश्यकताओं के बारे में जानने के लिए उन्हें प्रेरित करता है । यह आवश्यकताएं प्राय: प्रत्यक्ष नहीं होती हैं क्योंकि दिखता तो यह है कि झगड़ा भौतिक वस्तुओं को लेकर हैं, किन्तु वास्तव में यह स्व उन्नति, सशक्तिकरण और दूसरों से स्वीकृति प्राप्त करने के लिए होता है । विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान शिक्षिकाओं के मध्य के विवाद में भी दोनों पक्ष एक दूसरे द्वारा अतीत में पहुँची ठेस और अपमान की स्वीकृति और अपने दृष्टिकोण के प्रति सम्मान चाहते थे । स्वास्थ्य की परियोजना के अन्तर्गत शिक्षा के आंकलन का कुछ प्रतिशत भाग आवंटित करना, निश्चय ही विवाद का वास्तविक कारण नहीं था, यद्यपि यह एक तत्कालिक और हड़बड़ी में प्राप्त कारण तो था ही । इस प्रकार

ध्यानपूर्वक अच्छी तरह से सुनना दूसरे मानव के अनूठेपन को स्वीकृति, आभार व सम्मान देता है । यह दूसरों को पूरी तरह से और गहराई से स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए आमंत्रित करने व समर्थन देने में समर्थ बनाता है ।इसमें शब्दिक व अशाब्दिक दोनों प्रकार का सुनना शामिल है ।

शाब्दिक और अशाब्दिक सुनना :
जब हम बातचीत में संलग्न होते हैं, तब कभी-कभी हमारी ऑखें और हमारे कान दूसरे व्यक्तियों के ऐसे संकेत, इशारों को पकड़ते हैं जिससे प्रतीत होता है कि दूसरा व्यक्ति कुछ ठीक नहीं बोल रहा है या छुपा रहा है । उसकी मुद्रा, एक हाथ या एक पैर पर सहारा बदलना, नीचे देखते रहना, पलकें झपकना, अनअपेक्षित स्वर, चेहरे पर भावाभिव्यक्ति, आदि । यहॉ हम शारीरिक भंगिमाओं की भाषा को भी पढ़ रहे होते हैं । अशाब्दिक संदेश शारीरिक भंगिमाओं और स्थितियों, संकेतों, चेहरे के हाव-भाव, ऑखें, स्वर के आरोह व ताल, और कथन द्वारा अभिव्यक्त किए जा सकते हैं, कभी-कभी हमारे शाब्दिक संदेश हमारे अशाब्दिक संकेतों से काफी विरोधी होते हैं ऐसी स्थिति में हम शाब्दिक संदेशों की बजाय अशाब्दिक संदेशों पर अधिक विश्वास करते हैं । हम प्राय: ऐसी दलीलें सुनते हैं जब विवाद में लिप्त व्यक्ति एक-दूसरे पर असली/ निष्कपट न होने के आरोप लगाते हैं । अशाब्दिक संप्रेषण और विश्वास या अविश्वास सृजित करने में अशाब्दिक संदेशों की बड़ी भूमिका होती है । हम असावधानी वश अपने आन्तरिक शंकाओं, वैर और पक्षपातों को अभिव्यक्त कर देते हैं ।

अधिकांश व्यक्ति सोचते हैं कि संप्रेषण प्राथमिक तौर पर शाब्दिक होता है, किन्तु यह भी सच है शारीरिक भाषा यह बता देती है कि व्यक्ति या समूह क्या सोच रहे हैं या अनुभव कर रहे हैं । यह भी सच है कि विवाद में लिप्त व्यक्ति या समूह अपने अशाब्दिक संप्रेषण के प्रति अनभिज्ञ रहते हैं । शोधकर्ता बताते हैं कि हमारे संप्रेषण में अस्सी प्रतिशत भाग शारीरिक भाषा द्वारा किया जाता है ।

विवादों का सामना करते समय यह बहुत आवश्यक है कि हम विवाद में लिप्त व्यक्तियों और समूहों के न केवल शाब्दिक बल्कि अ.शाब्दिक व्यवहारों की ओर भी पर्याप्त ध्यान दें, विशेषकर तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप की स्थिति में, ताकि वे विवाद में लिप्त व्यक्तियों और समूहों की प्रतिक्रियाओं पर अधिक से अधिक सूचनाएं एकत्र कर सकें । इसके अतिरिक्त हस्तक्षेप करने वाले तीसरे पक्ष को अपनी स्वयं की शारीरिक भाषा की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि वे वक्ता के प्रति सम्मान को बेहतर तरीके से संप्रेषित कर सकें, अनजाने में वक्ता के अनादर के अवसरों को कम कर सकें और यह संदेश दें सकें कि "मैं आपको सुन रही हूँ ।"

श्रेष्ठ सुनना प्राय: 'सक्रिय सुनना' कहलाता है । सक्रिय सुनने में केन्द्रण सुनने वाले के दृष्टिकोण या राय पर नहीं होता; बल्कि बोलने वाले के संदेश के विषय वस्तु - उनकी रूचियों, अनुभूतियों, ज्ञान और उनकी इच्छाओं पर रहता है । सुनने वाला, बोलने वाले ने जो कुछ कहा हे उसके सार को अपने शब्दों में बोलकर प्रतिक्रियाएं देता है । उदाहरण के लिए, "अच्छा आप महसूस करते हैं ...;आप कह रहे हैं ....आपका विश्वास है......।

....

सक्रिय सुनने के चार मूल सिद्धान्त :

1. शारीरिक ध्यान (भौतिक ध्यान) : वक्ता के सम्मुख होकर बैठें और उसके अपना पूरा ध्यान प्रदान करें, साथ ही उसकी शारीरिक भाषा पर भी दृष्टि रखें ।
2. भावानुवाद करना – वक्ता के मुख्य विचारों और तथ्यों को पुन: प्रस्तुत कीजिए । साथ-साथ जॉचते रहिए कि आप द्वारा समझी गई बातें, अर्थ और उनकी व्याख्या सही हैं। इसके लिए इस तरह के वाक्यों का प्रयोग किया जा सकता है-

   "ऐसा लगता है कि आप यह कहना चाहते हैं.....क्या यह सही है ?"

   क्या नहीं ?

   "तो क्या हुआ था.................क्या यह ठीक है ?"

   मैं देख सकती हूँ कि आप यह महसूस कर रहे हैं ....क्योंकि........
3. चिन्तन करना : यह प्रदर्शित कीजिए कि आप वक्ता की अनुभूतियों को समझ रहे हैं और अपने इस चितंन को यह कह कर व्यक्त करते रहिए ।

   "ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आप यह महसूस कर रहे हैं ...., (कुंठित, क्रोधित, निराश, नाराज, अधीर हैं, आदि ।)"
4. प्रश्नों को स्पष्ट करना : बातचीत बढ़ाने के लिए लोग हॉ ; अच्छा, तो, जैसे मौखिक प्रोत्साहन का प्रयोग करें और वक्ता ने जो बोला उस पर और स्पष्टता के लिए खुले प्रश्नों (क्या, कब, कहॉ और कैसे) का प्रयोग करें या और उससे अधिक और अधिक सूचनाएं पाने के लिए कहें :

   ' क्या आप इस बारे में कुछ और बता सकते हैं?" या मुझे और कुछ बताइए"

   "क्या हुआ ? आपने इस बारे में कैसा अनुभव किया?"

....

सुनने के दो महत्वपूर्ण रूप भावानुवाद करना और बातचीत का सार निकालना है, जो विवाद का सामना करने के लिए आधारभूत कौशल हैं विशेषत: तब जबकि आप विवाद की मध्यस्थता कर रहे हों ।

ऊपर बॉक्स में दी गई विषय वस्तु में भावानुवाद करने की कला को संक्षेप में बताया गया हे । आगे बढ़ते हुए देखें तो भावानुवाद करने में मुख्य केन्द्र वक्ता पर होता है न कि सुनने वाले पर । उदाहरण के लिए आप कह सकते हैं, "आप महसूस करते हैं कि ...." "आप जिस तरह इसे देखते हैं वह यह है कि ...." "यदि मैं आपकी बात को ठीक से समझ पाई हूँ, आप कह रहे है कि........." । यह कभी न कहें, मैं ठीक से जानती हूँ कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं । मैं भी ठीक इसी स्थिति में थी" । या "आप जानते हैं मेरी मित्र या फलां-फलां के साथ कुछ हफ्तों पहले ऐसा ही हुआ था ।"

हमे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भावानुवाद करना, बातचीत के प्रवाह के साथ- साथ ही स्वाभाविक रूप से होता है, ऐसा नहीं प्रतीत होना चाहिए कि इसके लिए हम कुछ विशिष्ट कौशल प्रयोग कर रहे हैं । वक्ता को इस ओर पर्याप्त जागरूक होना चाहिए कि वह व्यक्ति जो भावानुवाद कर रहा हैं, अच्छा श्रोता है और उसके परिप्रेक्ष्य को समझने का भरपूर प्रयास कर रहा है । इस प्रकार, जब हम भावानुवाद कर रहे हों तो हमें एक ही प्रकार के शब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए ।

....

व्याख्या करने के कुछ सुझाव :

1. एक भावानुवाद वक्ता के वक्तव्य से संक्षिप्त होती है ।
2. भावानुवाद करते समय शब्दों को हू-वहू दोहराना नहीं है बल्कि वक्ता के शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें
3. भावानुवाद में मूल्यांकन किए जाने या निर्णय दिये जाने संबंधों संकेत नहीं होते हैं बल्कि इसमें विचारपूर्वक चीजों का वर्णन शामिल होता है और यह समर्थन देने के रूप में होता है । जैसे - "तो जब वह बैठक से बाहर निकल गया तो आपने सोचा कि वह आपको प्रभावित करने का प्रयास कर रहा है" । अपनी बात को इस तरह से कहना गलत होता है - "आपकी बात मुझे ऐसी नहीं प्रतीत होती है कि आपकी मनोवृत्ति सकारात्मक है" । या "ऐसा लगता है कि आपने जो किया, वह करने के लिए आपके पास पर्याप्त कारणथे ।"
4. हमें भावानुवाद या सार निकालने की क्रिया से वक्ता पर पड़ने वाले प्रभावों की ओर ध्यान देना चाहिए। कुछ व्यक्तियों को अपनी बातों का भावानुवाद किया जाना अच्छा नहीं लगता, जबकि कुछ संस्कृतियों में इसे असम्मानजनक माना जाता है । अत: श्रोता को वक्ता की प्रतिक्रियाओं पर गौर करना चाहिए और उनके अनुसार ही उसे स्वयं की प्रतिक्रियाओं को देना चाहिए ।

....

संक्षिप्त/सार करना भी भावानुवाद के समान ही होता है यद्यपि यह थोड़ा दीर्घ होता है । इसका प्रयोग तीसरे पक्ष–मध्यस्थ द्वारा, परिचर्चा की विषय-वस्तु को संक्षिप्त करने और विवाद में लिप्त समूहों या व्यक्तियों के सामूहिक सरोकारों और सामूहिक आधारों को रेखांकित करने के लिए प्रयोग किया जाता है ।

....

चिंतन योग्य :

क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में जानते हैं जो अच्छा श्रोता है । उसकी क्या विशेषताएं हैं ?

....

संक्षेप में, समस्त संप्रेषण में शाब्दिक और अशाब्दिक आयाम समाविष्ट हैं । बिना संप्रेषण के कोई सामाजिक विवाद नहीं हो सकते, न ही किसी विवाद का समाधान संप्रेषण के बिना हो सकता है । संप्रेषण किसी विवाद के समाधान की दिशा में किए जाने वाली समस्त प्रक्रियाओं का मुख्य आधार है, जैसे – संवाद, सरलीकरण, समझौता और मध्यस्थता।

संवाद :

यदि हम शान्ति निर्माण के लिए मतभेद के साथ रहने का चयन करते हैं तो वह माध्यम जो इसे संभव बना सकता है वह "संवाद" है । सरल रूप में कहें तो संवाद का अर्थ एक दूसरें के साथ बैठना और बातें करना, विशेष रूप से उन लोगों के साथ जिनके साथ हमारे मतभेद हैं । मिलकर बात करने में, यद्यपि, दूसरे को प्रभावित करने के लिए वाद-विवाद, विचार-विमर्श तथा दूसरे के दृष्टिकोण पर तर्क-वितर्क करना और पूर्व व पश्चात प्रभावों का अनुशीलन सम्मिलित है । किन्तु, ये सब वाद-विवाद की विशेषताएं हैं, जबकि, संवाद में, समर्थन का नहीं बल्कि जॉच-पड़ताल का, तर्क करने का नहीं, बल्कि छानबीन करने का और प्रभावित करने का नहीं, बल्कि पता लगाने का इरादा शामिल होता है ।

संवाद के विषय में सबसे पहले और मुख्य चीज एक सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराना है, सुरक्षित न केवल मनोवैज्ञानिक वरन शारीरिक रूप से भी सुरक्षित । जब व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं तभी वे अपने मत स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त व्यक्त करने में समर्थ होंगे । फिर हमें इस बात पर सहमत होना जरूरी है कि इसका उद्देश्य एक दूसरे से सीखना और एक दूसरे को खोजना/जानना है । हमें संवाद के लिए समुचित संप्रेषण कौशल के उपयोग की आवश्यकता होती है और इसमें हमारे अपने निर्णयों को एक ओर रखकर और दूसरों के अनुभवों को सावधानी से और सम्मान से सुनना भी सम्मिलित है । कभी-कभी, संवाद के दौरान कई छिपी हुई चीजें जैसे सचेतन या अचेतन विश्वास, बोध, मान्यताएं और भय आदि भी फलक पर आ जाती है, जो विवेकपूर्ण या अविवेकी भी हो सकते हैं । इन स्थितियों को हमें सहन करने के लिए तैयार रहना चाहिए न कि इनका उपहास करना या हँसना चाहिए । बजाए इसके हमें परस्पर एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए जिससे ये छिपे हुए आयाम सबके सम्मुख स्पष्ट हो सकें और सचेतन प्रतिक्रियाओं के द्वारा आपसी समझ का स्तर बढ़ सके । एक संवाद के दौरान कई उतार-चढ़ाव आ सकते हैं । यह महत्वपूर्ण है कि हम कठिन परिस्थितियों, उतार- चढ़ावों, क्रोध, कुंठा,भावनात्मक विस्फोट में साथ-साथ रहें और इन्हें सीखने के अवसरों के रूप में

प्रयोग करें। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि एक शिक्षक के रूप में हमें अनुभवों के अनुरूप बदलावों को स्वीकार करें । यदि हम संवाद को दूसरों को (विद्यार्थियों को) बदलने के अवसर के रूप में देखते हैं, तो कुंठित ही होंगे, अत: हमें संवाद को खोजबीन करने के एक तरीके के रूप में और इस प्रक्रिया से आने वाले परिवर्तनों के प्रति लचीलापन रखना होगा ।

पुन: विज्ञान और सामाजिक विज्ञान शिक्षिका की कहानी पर लौटते हैं । विद्यालय के प्रधानाचार्य ने गौर किया कि कुछ दिनों से सामान्य वार्तालाप बीते दिनों की चीज हो गया है और शिक्षक बँट गए है – कुछ विज्ञान शिक्षिका के पक्ष में, तो कुछ सामाजिक विज्ञान शिक्षिका के पक्ष में, और कुछ अन्य दोनों के ही विपक्ष में खड़े हैं । इस स्थिति पर वह बहुत चिन्तित हुई, क्योंकि कुछ शिक्षिकों ने इसे दूसरों की बुराई करने के अवसर के रूप में उपयोग करना शुरू कर दिया और पुराने विवाद पुन: उभरने लगे । उसने अवसर का उपयोग करने का निर्णय लिया । प्रधानाचार्यने एक बैठक बुलाई ।

इस बैठक में, प्रधानाचार्य ने विद्यालय से संबंधित सामान्य चीजों और प्रशासनिक मुद्दों पर ही बात की । बाद में उसने शिक्षकों से एक प्रश्न पूछा – आपके दृष्टि में संबंधों का क्या अर्थ है ?" उसने प्रत्येक शिक्षक को अपने विचार रखनेका अवसर दिया । कोई भी व्यक्ति अपनी बारी से पहले नहीं बोल सकता था । कुछ शिक्षकों ने इस विषय पर चुप रहना पसन्द किया । प्रधानाचार्य ने किसी पर बोलने के लिए दबाब भी नहीं डाला । कुछ शिक्षकों ने इस तथ्य पर बल दिया कि मानव के संबंध उसके अस्तित्व और पारस्परिक बंधनों की कुंजी हैं । संबंधों के अभाव में मानव एक नीरस, एक सार और विवादग्रस्त जीवन जिएगा, इसमें सब के सब स्वतंत्र होंगे और सभी लोग सभी के विरूद्ध होंगे ।

एक बार वह कक्ष में घूमी, फिर प्रधानाचार्य ने दूसरा प्रश्न रखा – आप अपने संगठन, कार्यस्थल, और यहॉ विद्यालय में आप किस प्रकार के संबंधों का सामना कर रहे हैं ? शिक्षकों ने इस विषय पर अपने विचार रखे ; जब वे उत्तर दे रहे थे तो अधिकतर शिक्षकों ने विद्यालय में विभिन्न स्तरों पर, शिक्षकों के मध्य, शिक्षक व शिक्षण के इलावा अन्य कर्मियों के मध्य, शिक्षकों और प्रबन्धकों के मध्य, शिक्षक व प्रधानाचार्य के मध्य और शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य अच्छे, स्नेहपूर्ण और सहयोग पूर्ण संबंधों पर बल दिया । प्रधानाचार्य ने अपने समापन टिप्पणी में मूल्यों की अनिवार्यता और प्रत्येक स्तर – वैयक्तिक, संगठनात्मक और सामुदायिक स्तरों पर संबंधों के सम्मान करने पर बल दिया । साथ ही उन्होंने स्वयं शान्तिपूर्ण होने और दूसरों के साथ शान्तिपूर्वक रहने के बीच संबंधों, और उन्हें बनाए रखने की चर्चा की । अन्त में उन्होंने समस्त शिक्षकों को समय देने, चर्चा में भागीदारी करने और अपने मत व्यक्त करने के लिए धन्यवाद दिया ।

अभी-अभी आपने जिस प्रक्रिया या साध्य को अभी-अभी देखा वह संवाद है, और वह साधन जिसके माध्यम से प्रधानाचार्य द्वारा प्रक्रिया संचालित की गई, सरलीकरण कहलाती हैं । उपरोक्त केस में, प्रधानाचार्य दो भूमिकाओं में है – एक संस्था के अध्यक्ष की और दूसरी एक सुलभकर्ता की । सुलभकर्ता के रूप वह प्रक्रिया (जैसे चीजें संचालित की गई) के निर्विध्न संचालन के लिए जिम्मेदार थी, किन्तु संतुष्ट करने या अन्तिम उत्पाद/परिणामों के लिए उत्तरदायी नहीं थी । किन्तु, संस्था के अध्यक्ष के रूप में उसे संवाद की विषयवस्तु में रूचि थी और साथ ही परिचर्चा के दौरान अपनी अभिव्यक्ति भी की । उपरोक्त उदाहरण में प्रधानाचार्य का लक्ष्य संवाद प्रारंभ करना था और शिक्षकों को यह सोचने की ओर प्रेरित करना था कि वे सोचें कि वे विद्यालय में अपने लिए, और अपने विद्यार्थियों और सहकर्मियों के लिए कैसा वातावरण (संबंध) चाहते हैं ।

<u>समझौता</u> :

ऐसे केस में जहॉ विभिन्न व्यक्तियों के सामूहिक और विपरीत रूचियों के मध्य किसी समझौता स्थापित करने के लिये सहमति बनानी हो, तो सहमति तक पहुँचने की प्रक्रिया समझौता कहलाती है । समझौता करते समय हमारे पास दो तरह के चयन उपलब्ध हैं – या तो हम जीत-हार स्थिति को चुनें (विरोधी या बॉटने का प्रस्ताव) जहॉ एक व्यक्ति जीतेगा जबकि दूसरा हारेगा; या फिर पारस्परिक समस्या समाधान जिसमें दोनों व्यक्ति या समूह मिलकर अधिकतम संयुक्त परिणाम प्राप्त करने का प्रयत्न करें । यह एक समाकलित प्रयास होता है, जिसके परिणाम जीत-जीत स्थिति के रूप में प्राप्त होगा (दोनों विवाद कर रहे व्यक्तियों या समूहों के लिए लाभ/प्राप्तियॉ) । दूसरा वाला प्रस्ताव तब पसन्द किया जाता है जब विवाद में लिप्त व्यक्ति या समूह एक दूसरे के साथ सकारात्मक संबंध बनाये रखने से दोनों लाभान्वित हों ।

....

चित्र न. 6

....

समझौता करने के दौरान उपयुक्त यह होता है कि हम समस्या के प्रति कठोर रहें किन्तु व्यक्तियों के प्रति नरम रहें ।इस आशय है कि हमें एक ओर तो समस्या पर आक्रमण करना है ओर दूसरी ओर ऐसे मानव के रूप में व्यवहार करें जिसके पास भावनाएं, मूल्य और भिन्न परिप्रेक्ष्य हैं । याद कीजिए, गॉधी जी ने अंग्रेजों (ब्रिटिश) को बुरा नहीं कहा था, बल्कि उनकी नीतियों और कार्य सूचियों को बुरा माना था ।

आइए हम दैनिक जीवन में समझौता की स्थिति को देखें, जहॉ हम सब्जियों, राशन या अन्य चीजों के दामों पर समझौता करते हैं । पंसारी द्वारा बताए गए मूल्य से कम दाम से प्रारंभ करते हुए हम एक ठीक-ठाक ऐसे दाम पर राजी हो जाते हैं जो दोनों को स्वीकृत हों ।

क्या आप ऊपर वर्णित दृश्य को पहचान पा रहे हैं ?क्या यह आपको परिचित और जब तब अनुभव किए गए दृश्य की याद दिलाता है ? क्या आप इस प्रक्रिया को वर्णन करने के लिए कोई नाम सोच सकते हैं ? यह क्या कहलाती है ?
यह प्रक्रिया जो आपने अभी-अभी देखी 'समझौता' कहलाती है । हम लगभग प्रतिदिन और बहुत सी चीजों पर समझौता करते हैं । हम क्या पहनें, क्या खाएं, क्या न खाएं, मनोरंजन के लिए कहॉ जाएँ, किसी विशेष स्थान तक कैसे पहुँचें, अपने धन को कैसे व्यय करें, कितना खर्च करें, कितना न करें आदि । हम सभी आमतौर पर कहीं न कहीं समझौता करते रहते है । यह समझौता वह कौशल है जो विवादों का सामना करने के लिए सबसे उपयोगी और प्रचलित है ।

कुछ प्रक्रियाएं जिनका समझौते की प्रक्रिया में पालन किया जाता है, वे हैं –

- व्यक्तियों का समस्या से पृथकीकरण – संबंध/विवाद प्राय: समस्याओं के साथ उलझ जाते हैं । हमें विवाद में लिप्त व्यक्तियों या समूहों के मध्य दीर्घकालीन सकारात्मक संबंधों की ओर ध्यान देना चाहिए और इसकी पुष्टि सांकेतिक रूप से या अन्य तरीके से करने के प्रयास करने चाहिए ।
- प्रभावशाली संप्रेषण – समझौते के दौरान प्रभावशाली संप्रेषण करें । यह आवश्यक है और इसमें सक्रियता और आदरपूर्वक सुनना शामिल है, और अपने विषय में बोलना न कि दूसरे के विषय में बोलना भी शामिल है ।
- रूचि/लाभ पर केन्द्रित करें, परस्थितियों पर नहीं क्योंकि परस्थितियॉ रूचियों से ज्यादा विवादग्रस्त होती हैं ।
- बहु-विकल्प उत्पन्न करें । समस्या समाधान के लिए बहुत सारे विकल्प उत्पन्न करें । विकल्प पैदा करते समय हमें उनके काम करने या न करने के संबंध में निर्णय नहीं लेने चाहिए और समस्या समाधान के उन रास्तों को तलाशना चाहिए जो सबको लाभान्वित करते हों ।
- अंतिम समाधान वैध होना चाहिए । ये वास्तविक मानकों या सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए ।
- विकल्पों की तलाश करें, साथ ही – ऐसे विकल्प की जो अनुबंध का सर्वोतम विकल्प है ?
- समझौते की प्रक्रिया के दौरान दिए गए वादे वास्तविक होने चाहिए ।

आइये अब हम विवाद समाधान की अन्य प्रक्रिया को देखें ।

मध्यस्थता

विवादग्रस्त पक्षों के बीच कई बार ऐसी स्थितियॉ बन जाती है जब संवाद नहीं हो पाता या अचानक ही टूट जाता है क्योंकि दोनों पक्ष एक दूसरे से असुरक्षा या विरोध महसूस करते हैं । ऐसी स्थिति में कोई व्यक्ति या समूह, जो विवाद में संलग्न न हो या उससे प्रभावित न हो, मध्यस्थता करता है । यह प्रक्रिया मध्यस्थता कहलाती है । प्राथमिक तौर पर मध्यस्थता की आवश्यकता, दो पक्षों के मन में विवाद समाधान के इरादों के विषय में अविश्वास या अपनी स्थिति या पद पर समझौता न करने के रूझान के कारण होती है, जिसका परिणाम पूर्णत: चुप्पी और दोनों पक्षों की एक दूसरे से भौतिक व मानसिक दूरी में लक्षित होता है । मध्यस्थ एक ऐसा व्यक्ति या समूह होता है जो विवाद में लिप्त पक्षों के द्वारा स्वीकृत हो । एक मध्यस्थ की आवश्यकता दूरियों को कम करने और दोनों पक्षों के संयुक्त लाभ पर केन्द्रित करने न कि अपनी बात पर अड़ने के लिए पड़ती है । यह उन लोगों को सम्मिलित करता है जिन्हें विवाद से कोई लाभ या हानि नहीं होनी है, जो दोनों पक्षों के बीच बैठक सुलभ कराने के लिए मध्यस्थता कर सकें । विवाद में लिप्त व्यक्ति या समूहों की विवाद के समाधान के प्रति अपने पूर्वाग्रह या पूर्वधारित धारणाएं हो सकती हैं जो ऐसे विकल्पों को उत्पन्न करने से रोकती हैं जो ऐसे समाधान उपलब्ध करा सकें जो संयुक्त लाभ को बढ़ा सकें और हानि को टाल सकें ।

मध्यस्थता व्यक्तियों को अपने पूर्वाग्रहों की अभिव्यक्ति में समर्थ बनाती है । मध्यस्थ ऐक ऐसा वातावरण उपलब्ध कराता है जिसमें दोनों पक्ष मिल बैठ सकें और खुल कर संप्रेषण कर सकें, जहॉ मध्यस्थ उनके समझौतों को सुलभ करता है । मध्यस्थ उपलब्ध कराता है :

- एक ऐसा परिवेश जो विवाद में लिप्त व्यक्तियों, समूहों और मध्यस्थ के सामान्य निवास से दूर हो ।
- एक सुरक्षित स्थान, जहॉ प्रत्येक पक्ष शारीरिक या मानसिक हानि से सुरक्षा का अनुभव कर सकें ।
- ऐसा वातावरण जिससे विवाद में लिप्त व्यक्तियों का ध्यान मुद्दों में आए परिवर्तनों पर केन्द्रित हों न कि विभिन्नताओं पर । व्यक्ति और समूह संयुक्त लाभ, रूचियों और मुद्दों पर विचार करें ।
- परिस्थितियॉ जहॉ निर्णायक मुद्दों की छान-बीन जिन बिंदुओं पर दोनों पक्षों के मध्य असहमति हो ।
- विवाद में लिप्त व्यक्तियों या समूहों को स्वीकृति जिससे वे विवाद के मुद्दों के समाधान के लिए और सामूहिक लाभ के लिए अंतरिम सहयोग करें ।

सुलभीकरण –

अधिकतर संस्थाओं/संगठनों में लोग दूसरों के साथ विवाद में इसलिए लिप्त नहीं होते कि क्या निर्णय लिए गए, बल्कि इसलिए होते हैं कि निर्णय किसने लिए, किस विधि से लिए, कितने बहुमत से लिए गए । शान्ति स्थापना का केन्द्र विभिन्न समूहों समुदायों या संगठनों के निर्णय लेने की प्रक्रिया पर आधारित है । लोग जिस संगठन का भाग होते है उसके संचालन में अपनी राय का सम्मान चाहते हैं और इसलिए जब उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी का अवसर नहीं दिया जाता है तो इससे बहुत द्वेष, अफवाहें और कटुता बढ़ती है जो अन्ततः विवाद के रूप में अभिव्यक्त होती हैं । परिवार, समूह या संगठन में कलह को सुलझाने या धीरे-धीरे बढ़ते विवादों को सुलझाने के लिए कोई व्यक्ति संवाद प्रारंभ करने के लिए संवाद बढ़ा सकता है ताकि मतभेद व्यक्त किए जा सकें, चर्चा की जा सके और उनकी छान-बीन की जा सके एक सुलभ कर्ता असंतोष या अफवाहों की छान-बीन करके और मुद्दों को स्पष्ट करके तनाव को दूर करता है । इस प्रकार सरलीकरण व्यक्तियों और समूहों को किसी काम को पूरा करने, समस्याओं का समाधान करने या जो व्यक्ति संवाद या परिचर्चा में शामिल है उन्हें संयुक्त रूप से पारस्परिक संतुष्टि के साथ अनुबंध करने में मदद करता है ।

आइए, उस तरीके को देखें जिससे विवाद में लिप्त पक्ष, विज्ञान शिक्षिका और सामाजिक विज्ञान शिक्षिका, एक अनुबंध पर पहुँची, जिसे विद्यालय की उप-प्रधानचार्य द्वारा उपरोक्त वर्णित मघ्यस्थ और समझौता के सिद्धान्तों का प्रयोग करते हुए सरलीकरण किया गया ।

अपनी कहानी को आगे बढ़ाते हैं । उप-प्रधानाचार्य को विज्ञान शिक्षिका और सामाजिक विज्ञान शिक्षिका के बीच विवाद का पता चला और उसने मध्यस्थता करने का निर्णय किया । उसने दोनों को एक ही समय पर अपने कक्ष में बुलाया, उन दोनों को यह पता नहीं था । उसने उन दोनों से उनकी उन समस्याओं के बारे में पूछा जो उन्हें एक दूसरे से थीं और उन समस्याओं के बारे में भी पूछा जो परियोजना के कारण उपजी थीं । शुरू में दोनों शिक्षिकाएं केवल उप-प्रधानाचार्य से बात करती रहीं और परस्पर नहीं बोली और बजाए वास्तविक मुद्दों के इधर उधर के मुददों पर बात करती रहीं । तब उप-प्रधानाचार्य ने उन्हें सीधे एक-दूसरे से मुददा दर मुद्दा वार्तालाप करने के लिए उकसाया । प्रत्येक ने अपना हृदय उडेल दिया और पूरी प्रक्रिया के दौरान पहूँची ठेस और अपमान के बारे में बाते की और वे एक दूसरे से वे क्या चाहती हैं, इस बारे में भी बताया । बारीकी से मुददे निकाले गए, उन पर विस्तार से चर्चा की गई और विश्लेषण किया गया । दोनों समस्या समाप्त करने के लिए तीन अलग-अलग विकल्पों तक पहूँची । तीनों विकल्पों पर एक-एक कर उसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा की गई । अन्तत- वे एक विकल्प पर पहुँच गए

जो दोनों के दृष्टिकोण को शामिल कर रहा था । इस सबके दौरान, उप-प्रधानाचार्य उन दोनों के बीच आगे-पीछे आती जाती रही, उनकी कहानी, उनके अनुभवों की व्याख्या करती रही और विवाद के मुद्दों का सार करती रही और समझौते के लिए सामूहिक बिंदुओं पर राजी करती गई । इस प्रकार परियोजना से संबंधित मुददे मित्रभाव से दोनों पक्षों के मध्य पारस्परिक संतुष्टि के साथ सुलझा लिए गए ।

वह महत्वपूर्ण कौशल जो एक शान्ति निर्माता में निश्चित रूप से होना चाहिए वह प्रभावशाली संप्रेषण का है । मध्यस्थता, समझौता ओर सरलीकरण की रणनीतियों का प्रयोग करने के लिए सुनने के श्रेष्ठ कौशल आवश्यक हें । कहा जाता है कि मध्यस्थ उतना ही अधिक प्रभावी होता है जितने अधिक उसके श्रवण कौशल होते हैं । इसी कारण मध्यस्थता में निपुणता प्राप्त करने के लिए जिन कौशलों की आवश्यकता होती है, उनमें अच्छी तरह सुनने का कौशल सर्वोच्च है । सुनने के कौशल मध्यस्थ और विवादग्रस्त व्यक्तियों और समूहों के मध्य संबंध और विश्वास निर्माण में सहायता करते हैं । एक समझौता कराने वाले व्यक्ति को भी प्रभावशाली ढ़ंग से सुनने की आवश्यकता होती है और अर्थ को जॉचने की जरूरत होती है । एक सुलभकर्ता आदर और करूणा तभी प्रदर्शित कर सकता हे जबकि वे अच्छे श्रोता बनें ।

विवाद का सामना करने के विविध और रणनीतियों को समझने के बाद हम इनका उपयोग शान्तिपूर्ण कक्षा निर्माण में कर सकते हैं ।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि बहुत से विवाद शुरूआत में ही समाप्त किए जा सकते हैं । जब भी कोई विवाद होता है तो उसे टाला नहीं जाना चाहिए, बल्कि इसका संज्ञान लेकर इनका रचनात्मक तरीके से सामना किया जाना चाहिए । विवाद को रचनात्मक तरीके से समाधान करने के परिणाम लोगों के मध्य सहयोग के रूप में प्राप्त होते है जिससे दोनों पक्षों की उपलब्धियों को अधिकतम और हानि को न्यूनतम किया जा सके । विवाद के प्रति जागरूक होना और इसका सामना करने की इच्छा रखना अपने आप में सकारात्मक चरण है । स्वयं के भीतर झांकना और विवाद के विषय में अपने पूर्वाग्रहों, पक्षपातों और भयों को समझना भी सकारात्मक परिणामों के बीज बोते हैं । वे लोग जो दूसरों को सुनने और अपने को सही तरीके से अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते हैं, वे मुददों का प्रभावशाली ढ़ंग से सामना करने में सक्षम होते हैं । निर्णय लेने और समस्या समाधान के वैकल्पिक रास्ते तलाशना विवादों का सामना करने के आधार हैं ।

दूसरों के विश्वासों को समझने, स्वीकारने ओर सामंजस्य करने के इरादे भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं । किसी निर्णय पर पहुँचने या मुददों का निराकरण करने का आंतरिक संघर्ष जारी रहता है । समस्याओं के मध्य में कभी कभी उलझन का

अनुभव या नियंत्रण खो देने का अनुभव भी हो सकता है । उन परिस्थितियों में सहनशीलता व दृढ़ता मदद करेगी । विवादों के समाधान में हम जिन प्रक्रियाओं के द्वारा जाते हैं उनके प्रति जागरूकता हमें विवाद समाधान के नए तरीके सीखने में समर्थ करेगी । परिवर्तन की प्रक्रिया उसी क्षण से शुरू हो जाती है जब हम विवाद के प्रति जागरूक होते हैं और समाधान होने तक जारी रहती है । जब कोई विवाद उठता है तो इससे सम्बद्ध प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति बदलना शुरू हो जाता है । विवाद के द्वारा उत्पन्न आन्तरिक परिवर्तन की गुणवत्ता उन कौशलों द्वारा निर्धारित होती है, जिनसे विवाद का सामना किया गया । सकारात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया सार्थक वैयक्तिक व सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करती है, यह भविष्य में विवादों का रचनात्मक ढंग से सामना करने की सामर्थ्य को बढ़ाती है ।

3|स्व बोध एवं सशक्तता की ओर

- स्व एवं अन्य
  - आत्म-बोध
  - स्व का अन्य के साथ सम्बन्ध
  - दूसरों के प्रति बोध
- पूर्वाग्रह, पक्षपात, रूढ़िबद्व धारणाएँ और इनकी उत्पत्ति
  - पूर्वाग्रहों, पक्षपात एवं रूढियों पर विचार करना (अवलोकन)
- शांति के अनुकूल मनोवृति एवं नैतिक मूल्य
  - प्रेम एवं संवेदना
  - सत्य
  - न्याय
  - न्याय संगतता
  - सकारात्मक दृष्टिकोण
  - विविधता का सम्मान
  - दूसरों के सकारात्मक पहलू को केन्द्रित करना
- आत्म - चिन्तन एवं अन्तरात्मा की आवाज को सुनना

आत्म - अन्वेषण एवं स्व को समर्थ बनाने का शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि स्व समस्त विचारों, विश्वासों, क्रियाकलापों और नैतिक मूल्यों का केन्द्र बिन्दु होता है जिससे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त स्व निर्धारित करता हैं कि हम अपनी आंतरिक आवश्यकताओं के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं और अपने बाह्य संबंधों से तादात्म स्थापित करते हैं। स्वयं के प्रति जागरूकता और अपने स्वयं के व्यवहार, पूर्वाग्रह, पक्षपात, ताकत और कमजोरी को समझने से शान्ति के मार्ग के अवरोधों को विजित करने में सहायता मिलती है। अपने आपको शांति हेतु समर्थ बनाने का एक पहलू नकारात्मकता को जीतना है। जब हम नकारात्मकता को अलग करते हैं तब हम देखते हैं कि सकारात्मकता की शुरूआत हो रही है। स्वयं को समर्थ बनाने का दूसरा पहलू यहाँ सकारात्मक अभिवृत्ति और नैतिक मूल्यों को आत्मसात् करना है जो एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्वक रहने के लिए महत्वपूर्ण है। इस पाठ में इन दोनों पक्षों पर विचार किया गया है। संवाद-कौशलों के सुधार पर बल एवं प्रभावपूर्ण तरीके से सुनना, पक्षपात एवं पूर्वाग्रह को कम करने में सहायक होता है और साथ ही साथ सम्बन्धों में सकारात्मकता का विकास करता है। अनवरत चिन्तन एवं स्व बोध के महत्व को यहाँ विशिष्टता प्रदान की गई है।

"हममें से प्रत्येक की आत्मा में अच्छाई अर्न्तर्निहित है, इसे शिक्षकों के द्वारा बच्चों में प्रकट किये जाने की आवश्यकता है और केवल वही शिक्षक इस पवित्र कार्य को पूरा कर सकते हैं जिनका चरित्र निष्कलंक है, जो हमेशा सीखने एवं समग्र से समग्र की ओर बढने के लिए तैयार रहते हैं।" – महात्मा गांधी

हम दूसरें लोगों के प्रति जैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं उसका हमारे स्व की पहचान एवं नैतिक मूल्यों से गहरा संबंध होता है। हमारे विश्वास, मनोवृत्त्ति एवं नैतिक मूल्यों की कमी से हमारा व्यवहार अंत: वैयक्तिक और अन्तर वैयक्तिक स्तर पर द्वन्द्व उत्पन्न कर सकता है जिसके विषय में द्वन्द्व नामक अध्याय में चर्चा हो चुकी है। लेकिन क्या हम अपने स्व को समझते हैं? क्या हम जानते हैं कि हम कौन हैं? हममें से कुछ उत्तर देंगे" - मैं राजा हूँ" अथवा" मैं अध्यापक हूँ", दूसरे कहेंगे-" मैं भारतीय हूँ", अन्य कोई उसके उत्तर में एक से ज्यादा पहलुओं को भी जोड़ सकते हें। हम अपने आपको परिवार, समुदाय, राज्य, राष्ट्रीयता एवं धार्मिकता से जोड़ कर परिभाषित कर सकते हैं। अलग-अलग व्यक्तियों के अलग-अलग उत्तर क्यों होते हैं? इन सभी जवाबों में 'हमारी पहचान' छिपी होती है जो हमें दूसरों से अलग करती है। हमारा जवाब हमारी 'पहचान' के पहलुओं को व्यक्त करता है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी पहचान के बहुत अलग अलग घटक हैं। उदाहरणार्थ- हम एक मित्र, एक माता-पिता, एक कर्मचारी, एक पड़ोसी, एक मालिक अथवा एक अधीनस्थ हो सकते हैं लेकिन यह भूमिका अथवा पहचान प्रासंगिक हैं जो इस बात पर निर्भर है कि यह प्रश्न कौन और कहाँ पूछता है। हमारे उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

हमारी पहचान का यह पहलू स्व के अन्य संबंधित लोगों के साथ अन्त:क्रियाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। इन संबंधों के आधार पर हम अनेक स्तरों एवं संदर्भों में अपनी पहचान की तलाश करते हैं और अपना मूर्तरूप बनाते हैं। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति इन सीमित पहचानों से कहीं अधिक विस्तृत होता है। वास्तव में हम कौन हैं जानने के लिए स्वयं की गहन समझ विशिष्ट आवश्यकताएँ, अभिलाषाएँ, शक्तियाँ, सीमाएँ, अभिवृति/मनोवृति, विश्वास, मूल्य, अभिप्राय, प्रेरणा आदि - को सही दृष्टि से देखने की आवश्यकता होती है इसलिए यह परम आवश्यक है कि अपने सच्चे स्व को तलाश करें।

स्व एवं अन्य

भारतीय दर्शनशास्त्रियों एवं विचारकों ने विश्व के परिवर्तन की प्रक्रिया में स्व के महत्व का विशेष उल्लेख किया है। डेलोर की कमीशन की रिपोर्ट (1996)"Learning the Treasure within" में स्व के बारे में जानने के महत्व पर विशेष बल दिया गया है। इसमें कहा गया है – शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को सर्वप्रथम स्वयं के विषय में जानने में मदद मिलनी चाहिए, स्व

को जानने के बाद ही वह दूसरों को सही ढंग से समझ सकता है। जब व्यक्ति दूसरे को समझ पाता है तो उसे अपने आपको ज्यादा बेहतर ढंग से समझना संभव हो पाता है।

आत्म विश्लेषण अथवा चिन्तन के द्वारा हम अपने आंतरिक संसार को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। हम अपनी आवश्यकताओं को ज्यादा स्पष्ट रूप से देख पाते हैं और बिना किसी के कार्य में हस्तक्षेप किए, किसी प्रकार से उन आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। यह अपनी आवश्यकताओं के बारे अधिक स्पष्ट होने और दूसरों के कार्यों में बिना हस्तक्षेप किए उन्हें पूरा करने की समझ से संबंधित है। यह जानना कि हम कब और क्यों नाराज, उद्वेलित और चिन्तित हो जाते हैं? अपनी अन्तरात्मा की आवाज/और दूसरों को ध्यान से सुनने को तत्पर होना जरूरी है। यह दूसरों के प्रति अपने पूर्वाग्रहों एवं पक्षपातों के प्रति जागरूक होना है। यह उस स्थितियों में सावधान होने की प्रक्रिया है जब हम परम्परागत तरीके से किसी चीज का अवलोकन करते हैं जो अब अप्रासंगिक हो चुका हैं। स्वयं के एवं दूसरों के लिए शान्ति का वातावरण बनाना केवल तकनीक और कौशल नहीं है बल्कि इसमें अपने आपको गहन रूप मे समझने की आवश्यकता निहित है। प्रश्न है कि स्व क्या है? स्व के घटक क्या हैं? आइए, पता लगाने की कोशिश करते हैं।

स्व–बोध

हमारे ज्ञान और विश्वास को मिलाकर स्व का निर्माण होता है। जैसे कि हम अपनी योग्यता, शारीरिक बनावट, मूल्यों, उद्देश्य, प्रेरणा, रूझान, आकांक्षा, सम्बन्धों आदि के विषय में क्या सोचते हैं? उदाहरणार्थ – मैं एक लड़की हूँ, मैं धनी हूँ, मैं लम्बी हूँ, मैं सुन्दर हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ, मैं बहुत लोकप्रिय हूँ, मैं आसानी से नाराज हो जाती हूँ, इत्यादि। यह सब स्व की अवधारणा का निर्माण करते हैं। बहुत सी ऐसी अवधारणाएं मिल कर स्व को परिभाषित करती हैं, इसे आत्म–संकल्पना भी कहा जाता हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि स्व के प्रति अवधारणा हमें अपने बारे में बोध कराती है। ये अवधारणाएँ जीवन के अनुभवों एवं घटनाओं पर आधारित होती हैं जो जीवन की विभिन्न अवस्थाओं और विभिन्न स्थितियों में भिन्न हो सकती हैं। हममें से प्रत्येक की स्व के प्रति अवधारणा सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होती है। हर अवधारणा के साथ एक मूल्य जुड़ा होता है जिसके कारण हम अच्छा या बुरा अनुभव करते है। यदि हम स्व की उपयोगिता समझते हैं तो यह आत्म सम्मान को बढ़ाता है लेकिन यदि हम अपने आपको कम करके आँकते हैं तब यह हमारे आत्म – सम्मान को कम कर सकता है। स्व–अवधारणा और आत्म–सम्मान को प्राय: अदल बदल करके प्रयोग किया जाता है परन्तु इनमें अन्तर है। स्व–अवधारणा अपने आपको जानने का विश्वास है। आत्म – सम्मान अपना मूल्यांकन करने का साधन है। यदि लोग अपना सकारात्मक मूल्यांकन करते हैं तो निश्चित रूप से उनका आत्म – सम्मान बढ़ता है।

स्व-निर्माण की प्रक्रिया को बहुत सारे कारक प्रभावित करते हैं। स्व अतीत के अनुभवों से विकसित होता है, यह वर्तमान व्यवहार एवं भविष्य की अपेक्षाओं का निर्धारण करता है। यह शैशवकाल में विकसित होता है जब हम स्वयं दूसरों से भिन्न समझना प्रारम्भ करते हैं, और दूसरों के प्रभाव में आकर बढ़ता है, विशेषरूप से नजदीकी संबंधों में। बचपन में माता पिता व अध्यापकों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाएं एवं हमारे अनुभव हम पर गहरा प्रभाव डालते हैं। महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सामान्य टिप्पणी भी हमें अपनी योग्यता एवं क्षमता के विषय में समझने में सहायक होती है। सफलता एवं असफलता के अनुभवों द्वारा अपने आपको जानने का ज्ञान उपलब्ध होता है। उदाहरणार्थ – एक बच्चा जो पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करता है , वह अपने आपको बुद्विमान समझता/समझती है। दूसरा बच्चा जो पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है, अपनी असफलता के अनुभवों से अपने आपको कम बुद्विमान समझता है। जब माता-पिता, शिक्षक और मित्र प्रशंसा करते हैं और उत्साह-वर्धन करते हैं तब निश्चित रूप से आत्म-विश्वास बढ़ता है। दूसरी तरफ जब वे डॉटते हैं, अस्वीकार करते हैं या गाली देते हैं तब अर्न्तनिहित क्षमताओं के होते हुए भी आत्म-विश्वास बहुत कम हो जाता है। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति की अर्न्तनिहित क्षमता तब बढ़ती और परिपक्व होती है जब उसे प्रेम, प्रशंसा एवं उत्साह-वर्धन मिलता है। इसके विपरीत जब उसे प्यार नहीं मिलता अथवा जब उसे निरूत्साहित किया जाता है और गाली दी जाती है तब अर्न्तनिहित क्षमता के क्षीण होने की संभावना होती है। परिवार के सदस्यों, माता-पिता, भाई-बहन और परिवार के अन्य सदस्य, शिक्षक आदि के व्यवहार से निर्मित वातावरण सकारात्मक आत्म-विकास के लिए बहुत निर्णायक होता है।

स्व-प्रत्यय निर्माण के अन्य कारक विभिन्न परिस्थितियों में स्वत: अपना अवलोकन और लगातार मूल्यांकन हैं। दैनिक जीवन में लोग अपने व्यवहार को देखते है और अपने बारे में निष्कर्ष निकालते हैं। हमारी पसंद के बारे में, हमारे अपने व्यवहार का अवलोकन/प्रेक्षण निश्चित रूप से सूचना के मुख्य साधन हैं। हम अपने योग्यता एवं अन्य गुणों के निर्धारण हेतु अपनी तुलना दूसरों के साथ करते हैं। अपने व्यवहार का अवलोकन और मूल्यांकन पूर्णतया वस्तुनिष्**ठ** नहीं हो सकता है। कुछ क्षेत्रों में, लोग स्वयं को अधिक योग्य दिखाने के लिए अपना मूल्यांकन उससे अधिक सकारात्मक ढंग से कर सकते हैं, जितनी उनके अन्दर वास्तविक योग्यता है। दूसरी तरफ कुछ क्षेत्रों में वे अपना मूल्यांकन करके स्वयं को उससे अधिक नकारात्मक ढंग से देखते हैं जितना वे होते हैं। स्व-बोध के प्रत्यक्षन की इन गलतियों से उनके आत्म-सम्प्रत्यय विकार उत्पन्न हो जाता है।

कभी कभी लोग, वास्तव में अपने विषय में क्या सोचते हैं और वे क्या होना पसंद करते हैं; सबके बीच एक अन्तराल अनुभव करते हैं। आत्म-अवबोधन और काल्पनिक आदर्श के बीच का यह बेमेल"आत्म-विसंगति" कहलाता है। प्रत्येक व्यक्ति"आत्म-विसंगति" अनुभव करता है। फिर भी बहुत से लोग अपने विषय में स्वयं को काफी अच्छा महसूस करते हैं। यह कैसे संभव है? इसका एक महत्वपूर्ण कारक विसंगति के बारे में हमारी जागरूकता है कि क्या

संगति वास्तव में हमारे लिए महत्वपूर्ण है और हम किस सीमा तक अपने आपको स्वीकार करने के लिए तैयार हैं और हम वास्तविक और आदर्श काल्पनिक स्वरूप के बीच की दूरी को बदलने और कम करने के लिए कितना प्रेरित हैं ?

जब आत्म–सम्प्रत्यय स्थापित हो जाता है तब व्यक्ति को इसके संरक्षण एवं बचाव की आदत बन जाती है। जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं , हम अपने पूर्व विचारों के प्रति अत्यधिक भावनात्मक लगाव की वजह से नए अनुभवों की तरफ नहीं बढ़ते हैं। सामान्यत: लोग समय एवं परिस्थिति के साथ अपने विषय में सुसंगत विचार कायम करने के लिए प्रतिबद्व हो जाते हैं। यह व्यक्ति का स्वयं के साथ तथा अन्य लोगों से भी द्वन्द्व उत्पन्न कर सकता है। स्वयं के बारे में धारणा एवं संबंधित व्यवहार, जो अतीत में महत्वपूर्ण रहा हैं, द्वन्द्व का कारण बन सकते हैं या उद्देश्य को पूरा करने में रूकावट उत्पन्न करते हैं। उदाहरणार्थ– बचपन में, अन्य व्यक्तियों से संवाद के दौरान एक विशेष समुदाय के प्रति आपकी नकारात्मक मनोवृत्ति विकसित हो गई है। लेकिन अब, जबकि आपकी बचपन की परिस्थितियाँ बदल चुकी है, समुदाय भी अब पहले जैसे नहीं रह गए हैं, वे अधिक शिक्षित और सशक्त बन गये है, इस प्रकार पुरानी मनोवृत्तियों और वास्तविकता में दरार पड़ जाती है। हमारी मनोवृत्तियों की इन दरारों की पहचान की जानी चाहिए और बदलना चाहिए। लेकिन हम अपनी पुरानी मनोवृत्तियों एवं आत्म अवबोधन की प्रासंगिकता पर प्रश्न नहीं उठाते हैं, इस वास्तविकता के बावजूद कि परिस्थितियाँ एवं वातावरण पूर्णतया बदल चुके हैं। नए अनुभव जो हमारे स्व के साथ संघर्ष कर रहे होते हैं, या तो खारिज कर दिए जाते हैं या इन्हें पुरानी अवधारणाओं के साथ समायोजित कर दिया जाता है। उदाहरणार्थ अपनी योग्यता के बारे में हमारा विचार, आगे पढ़ने की हमारी आवश्यकताएँ, कड़ी मेहनत आदि एक विशेष ढंग से संबंधित है जबकि यह प्रमाण भी होता है कि हमारे अन्दर आगे बढ़ने की क्षमता है। हम तर्क संगत व्याख्या और हताशा के साथ यह कहकर कि अब बहुत देर हो चुकी हैं, इसको दरकिनार कर देते है। जो कार्य हमने किया वह आसान था, हम विश्वास करते हैं और कहते है कि यह एक विलक्षण अवसर था जिसमें हम सफल रहे। इस प्रकार हम आगे बढ़ने का अवसर खो देते हैं। ठीक इसी तरह, हमारे स्वयं के विषय में बहुत –दूसरे पहलुओं पर हमारी मनोवृत्तियाँ इतनी दृढ़ होती हैं कि वे बदल नहीं सकती। यदि हम अपने आत्म के बारे में बहुत दृढ़ हैं तो हम व्यक्ति, समाज एवं समस्याओं के विषय में नए अनुभवों एवं ज्ञान को नहीं अपनाते हैं और हम हमेशा स्वयं एवं अन्य के साथ द्वन्द्व में उलझते रहते हैं।

इस प्रकार अपने बारे में अपने विचार को बदलने की इच्छा की कमी द्वन्द्व का स्त्रोत बन जाती है, क्योंकि हमारी मनोवृत्तियाँ, अनुभव और आत्म, सत्य के साथ नहीं रह पाते। उदाहरणार्थ: यह माना जाता है कि पुरूष महिलाओं से बेहतर होते हैं। किंतु जब कार्यालय में एक महिला बॉस होंती है, तो पुरूष के 'स्व' का यह अन्तर्विरोध कि मैं एक महिला का अधीनस्थ हूँ, द्वन्द्व का कारण बन जाता है। विश्वासों एवं मनोवृत्तियों में समय और

अनुभव के साथ बदलने के अन्तर्निहित सक्रिय गुण होते हैं जो परिस्थितियों के अनुसार सांमजस्य स्थापित करने में सहायक होते हैं। इन अनुभवों को अस्वीकारने से मनोवृत्तियों को बदलने के रास्ते में प्रतिरोध उत्पन्न होता है। इन प्रतिरोधों की निश्चित रूप से पहचान करनी चाहिए तथा स्वयं को वर्तमान की ओर उन्मुख करने की आवश्यकता है ताकि हम नए अनुभवों, लोगों एवं परिस्थितियों को अपना सकें।

जब येन हो, ड्यूक ऑफ वेई लिंग, के उत्तराधिकारी के शिक्षक के रूप में अपना दायित्व सँभालने वाला था; वह च्यो के पास सलाह के लिए गया। उसने कहा,"मुझे एक चरित्रहीन और हिंसक स्वभाव के व्यक्ति के साथ संबंध रखना हे। इस तरह के व्यक्ति के साथ कोई कैसे संबंध रख सकता है?" "मै खुश हूँ," च्यो पो यू ने कहा,"आपने यह प्रश्न पूछा है। पहली चीज जो आपको करनी है वह उसको सुधारना नहीं है बल्कि अपने आपको सुधारना है।"

स्वयं का अन्य के साथ संबंध

जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है कि जब हमारे आत्म ज्ञान और बाहय वास्तविकता में एक दूसरे से अनुरूपता नहीं होती तो हमारी दृष्टिकोण में स्पष्टता का अभाव हो जाता है। हमारे अवबोधन में स्पष्टता की यह कमी हमारे बाहरी परिवेश – हमारे मित्रों, सहयोगियों, पडोसियों के साथ असहजता और अविश्वास का कारण बनते हैं। यद्यपि हम लगातार सब कुछ ठीक–ठाक है दिखाने वाला व्यवहार करते है, हमारे छोटे–2 द्वन्द्व बढ़ते रहते हैं और संबंधों में कड़वाहट उत्पन्न कर देते हैं। ऐसा जब परिवार का सदस्यों के मध्य होता है तब हमारी प्रतिक्रिया ज्यादा तेज नहीं होती है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह परिवार का वरिष्ठ अथवा ताकतवर सदस्य है। इसके विपरीत जब दूसरा दल कमजोर अथवा अधिकार क्रम में कम होता है, तो प्राय: हम अपनी इच्छानुसार प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। ऐसी स्थितियों में हमें अपने व्यवहार को प्रदर्शित करने में सावधान रहने की आवश्यकता नहीं होती है। जब हम अपने आत्म–ज्ञान का सही उपयोग करते हुए अपने विकारों को देखते हैं तब हम दूसरे लोगों को भी ठीक तरह से समझ पाने में समर्थ होते है। हम देख सकते हैं कि हमें अपने विश्व को समग्र बनाने के लिए दूसरे लोगों पारिवारिक सदस्य, विद्यालय परिवार के सदस्य या पड़ोसियों की आवश्यकता होती है। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है, कि यदि हम चाहते हैं कि हमारे आस–पास के लोग हमें सम्मान व महत्व दें, जोकि हमारे आत्म–सम्मान के लिए अत्यन्त आवश्यक है, तो हमें दूसरे लोगों को भी समझना और उन्हें महत्व देना होगा। दूसरों को महत्व देना हमें उनके साथ प्रभावपूर्ण संबंध रखने के योग्य बनाता है। लेकिन हम दूसरों को महत्व एवं सम्मान क्यों नहीं देते हैं? हम उनमें कमियाँ ही कमियाँ क्यों देखते हैं?

अन्य के विषय में ज्ञान -

दूसरों के विषय में हमारा अवबोध कमियों से भरा होता हे जो कि हमारे लिए नितान्त विस्मरणशील है। हम दूसरों में जिन गुणों को देखते हैं, उनका सतही और अपूर्ण जानकारियों के आधार पर अतिव्याप्तीकरण करने की प्रवृति रखते हैं जो शायद एक अवसर में अथवा विशिष्ठ व्यवहार अथवा किवदन्ती हो सकती है उसे न्यायसंगत और सामान्य व्यवहार के रूप में मान लिया जाता है। और अन्य अवलोकनों को उस काल्पनिक संदर्भ में स्थापित कर दिया जाता हे। यदा-कदा, अनियत और सीमित अन्तक्रिया के कारण वास्तुनिष्ठा की कमी हो जाती है जो दूसरे के विषय में अव्यवस्थित और भ्रांतिपूर्ण जानकारी की तरफ ले जाती है और दूसरों के विषय में पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों को उत्पन्न करती है, चाहे यह एक व्यक्ति से संबंधित हो या समूह से। दूसरों के बारे में निर्णय देने और मूल्यांकन करने की अपनी प्रवृति से हमें सावधान रहना चाहिए। पूर्वाग्रह, पक्षपात और रूढ़ियाँ मनुष्य की इस आदत के कारण उत्पन्न हुई हैं कि हम किसी एक अवलोकन अथवा गपशप अथवा किवदंती अथवा कुछ सीमित नकारात्मक सूचनाओं के आधार पर किसी व्यक्ति या समूह का सामान्य व्यवहार मान लेते हैं विशेषकर उनके विषय में जिन्हें हम पसन्द नहीं करते हैं। हम जिन लोगों को पसंद करते हैं उनके प्रति सकारात्मक नजरिया अपनाते है दूसरों को समझने के क्रम में हमें अपने पक्षपातपूर्ण व्यवहार को खोजना चाहिए। हम क्यों एक व्यक्ति या समूह के प्रति विशेषरूप से पक्षपात करते हैं? क्या यह हमारे ज्ञान पर आधारित है अथवा हमने इसे दूसरों से ले लिया है।

पक्षपात, पूर्वाग्रह, रूढ़ियाँ और उनकी उत्पत्ति –

पक्षपात अथवा पूर्वाग्रह व्यक्तियों के बारे में बिना वास्तविक अनुभव के हमारा सामान्य अनुमान है। वे एक विशेष सामाजिक, आर्थिक, क्षेत्रीय अथवा जैविक समूहों पर आधारित हैं जिससे वे संबंधित हैं। इस प्रत्यक्षन के आधार पर लोगों को अपने में समावेशित एवं बहिष्कृत किया जाता है। सामान्य तौर पर हम अपने पूर्वाग्रहों के प्रति या तो अस्पष्ट हैं अथवा बिलकुल जागरूक नहीं हैं। जागरूकता तब केन्द्रबिन्दु बनती है जब हम संकट में होते हैं। निम्नलिखित स्थितियों पर दृष्टि डालकर अपने पूर्वाग्रहों को समझने की कोशिश करें।

- आप अपने महिला या पुरूष होने के प्रति पूर्ण जागरूक कब हुए थे?
- आपके दिमाग में क्या विचार आया जब आपको किसी समूह से बाहर रखा गया?
- आप किसी अजनबी स्थान पर हैं तो आप बातचीत करने के लिए किसे चुनते हैं?

इन कथनों के संदर्भ में हमारा क्या उत्तर होना चाहिए? उस श्रेणी अथवा समूह से संबंधित सभी व्यक्तियों के लिए हमारी अपनी भावनाएँ किस सीमा तक साथ रहेंगी? उस श्रेणी अथवा समूह से संबंधित सभी व्यक्तियों पर प्रयोग करने का क्या तात्पर्य होगा?

जब हम बिना चिन्तन किए इस तरह से पक्षपात पूर्ण व्यवहार करते हैं तब इससे दूसरों से दूरी बढ़ती है और कुछ मामलों में हिंसा भी जन्म लेती है। यह स्पष्ट होता जाएगा जब हम नीचे लिखे कुछ कथनों की खोज करते हैं और देखते हैं कि किस प्रकार से दूसरों के बारे में हमारा ज्ञान उनके प्रति हमारे व्यवहार को सुनिश्चित करता है।

- लड़के गणित में लड़कियों से ज्यादा अच्छे होते हैं।
- बुजुर्ग लोगों में तंग करने की आदत होती है।
- जो बच्चे चश्मा पहनते हैं वे अधिक टेलिविजन देखते हैं।
- पुलिस बहुत कठोर और असंवेदनशील है।
- ज्यादातर सौतेली माँ अपने बच्चों के साथ गलत व्यवहार करती हैं।
- कठिन शारीरिक परिश्रम महिलाओं के लिए नहीं है।
- सभी राजनेता भ्रष्ट होते हैं।
- समाज के गरीब/निचले तबके के माता पिता अपने बच्चों को पढ़ने के बजाए काम पर भेजना ज्यादा पसंद करते हैं।
- सास प्राय: बहुओं को परेशान करती हैं।
- वे सभी लोग जो अच्छी अंग्रेजी बोल सकते हैं, सुशिक्षित होते हैं।
- सरकारी दफतरों में काम करने वाले ज्यादातर लोग अकुशल होते हैं।
- सरकारी स्कूलों में पढ़ाने वाले अधिकतर अध्यापक पढ़ाने में बहुत कम रूचि रखते हैं।
- शारीरिक श्रम करने वाले लोग बुद्विमान नहीं होते हैं।
- गांव में रहने वाले लोग बुद्धू होते हैं।

ये कथन व्यक्तियों को श्रेणीबद्व करने अथवा तथ्यों का सर्वव्यापीकरण कर समझने के प्रयास को प्रदर्शित करता है। इसके अन्दर प्रत्येक एक व्यक्ति के योगदान को उसके समूह से अलग करके पहचान करने में असमर्थ हो जाने का खतरा होता है। कभी कभी इन कथनों का प्रभाव इतना सशक्त हो जाता है कि यह हमें व्यक्ति को वस्तुनिष्ठ परिप्रक्ष्य में देखने में अवरोध उत्पन्न करता है। अलबर्ट आइन्स्टीन इसी तरह की अवधारणा का शिकार थे। वे तीन वर्ष की आयु तक बोल नहीं पाए। वे विद्यालय में इतने शान्त और अवज्ञाकारी थे कि अध्यापक उनके मानसिक मंद होने का संदेह करते थे। वयस्क होने पर उन्होंने चार पेपर्स लिखे जिनसे आधुनिक भौतिकी में क्रान्ति आई। जबकि उपरोक्त कथनों में विश्वास करने से

कोई गंभीर परिणाम नहीं दिखाई दें परन्तु ये विश्वास कुछ विशेष समूह के लोगों में निश्चित रूप हो नकारात्मक मनोवृत्ति लाते हैं जिससे आपसी संबंधों, अतंरवैयक्तिक संबंधों में कठिनाइयाँ आती हैं। बचपन से ही बिना विवेचनात्मक सोच के इन कथनों को आत्मसात कर लेने से गंभीर दुष्परिणाम हो सकते हैं। लेकिन इससे पहले कि मैं, एक अध्यापक के रूप में, इन मुद्वों को अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर देखने के विषय में सोचूँ, मुझे अपने परिप्रेक्ष्य को देखने की आवश्यकता है कि मैं कहाँ से शुरू करूँ? ऊपर के कथन पूर्वाग्रह, पक्षपात और रूढ़ियों को प्रकट करते हैं। इन शब्दावलियों के अर्थ को समझना बहुत आवश्यक है जो हमारे स्व में यदि कोई पूर्वाग्रह हैं उनकी खोज में मदद कर सकते हैं।

पक्षपात एक ऐसी वरीयता है जो हमें निष्पक्ष निर्णय करने से रोकती है। एक अध्यापक के रूप में मैं एक ऐसे बच्चे के साथ पक्षपात कर सकती हूँ जो अच्छा प्रदर्शन करता है, विद्यालय में प्रतिदिन स्वच्छ (यूनिफार्म) में आता है अथवा जो एक जाति विशेष से संबंधित है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि मैं इन चीजों को मैं बहुत ऊँचे मूल्य देती हूँ। अपनी इस वरीयता के कारण मैं ऐसे इस बच्चों को कक्षा में कई दायित्व सौंप सकती हूँ। लेकिन यह आवश्यक रूप से अच्छा निर्णय नहीं हो सकता क्योंकि यह दूसरे बच्चों को उत्तरदायित्व संभालने के अवसर से वंचित कर देगा। अध्यापक को निष्पक्ष नहीं माना जा सकता है। यदि कक्षा में इस प्रकार का वातावरण बनाया जाता है, तो वह बहुत अनुकूल नहीं होता है। पक्षपात दूसरों के विशेषताओं अथवा गुणों को देखने की योग्यता के प्रति अंधा बना देता है।

अभ्यास

ऐसी विशेषताओं एवं गुणों की सूची तैयार करना जिन्हें मैं अपनी कक्षा के बच्चों में देखने की अपेक्षा रखती हूँ, एक अच्छा अभ्यास होगा। इस सूची के आधार पर अपने चिन्तन प्रकिया को जाँचने का प्रयास कीजिए कि बच्चों में इन गुणों का होना या न होना बच्चों के प्रति आपकी राय को किस सीमा तक प्रभावित करता हैं।

अब हम दूसरी शब्दावली की तरफ देखते हैं – पूर्वाग्रह। इसका अर्थ है पहले से ही निर्णय ले लेना, अर्थात किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के बारे में परम्परा पर आधारित होकर अथवा अपने अनुभव के बजाए दूसरे स्त्रोतों के आधार पर निर्णय लेना। पूर्वाग्रह दूसरों के प्रति एक दृढ़ अनुकूल/विपरीत भावनात्मक मनोवृत्ति है, जो एक समूह अथवा व्यक्ति के प्रति हमें नकारात्मक तरीके से सोचने के लिए पहले से ही तैयार कर देती है, जैसे 'एक विशेष समुदाय के लोग बहुत आक्रामक होते हैं क्योंकि वे बहुत अधिक मॉस खाते हैं।' यह कथन पूर्वाग्रह को दर्शाता है। यदि हम इस कथन को कहने वाले से यह पूछें कि वह इस समुदाय के कितने लोगों को नजदीकी रूप से जानता है या कितने लोगों से प्राय: संवाद करता है तो संभवत: उसका उत्तर होगा, एक या दो अथवा कोई नहीं। तब वह क्या है जिससे उनकी यह मनोवृत्ति बनी? संभवत: एक उत्तर यह हो सकता हे कि हमने यह अपने आस-पास के

लोगों से सुना है। इन पूर्वाग्रहों में एक खतरा यह है कि यदि कभी हमारा उस समूह विशेष या समुदाय विशेष के सदस्य से सामना होता है तब हम उनके साथ उनकी व्यवहारिक विशेषताओं के विषय में पहले से माने हुए विचारों को ध्यान में रखकर सम्पर्क करते हैं। इस प्रकार उनके साथ यथार्थपरक सम्पर्क की संभावना कम हो जाती है।

पूर्वाग्रह में हमारी समझ को उस सीमा तक पूर्वानिश्चित करने की क्षमता होती है कि वे जो कुछ कहते हैं, या करते है, उसको हम इस तरह से गलत परिभाषित करते और गलत पढ़ते हैं, कि यह उनके बारे में पहले से ही निर्धारित प्रारूप में सटीक बैठते हैं। इस विषय में सबसे खराब तो यह है कि हम ऐसे व्यक्तियों अथवा समूहों के साथ संपर्क करने के इच्छुक ही नहीं होते क्योंकि हम सोचते हैं कि हम उनके विषय में पहले से ही इतना कुछ जानते हैं जितना हमें जानने की आवश्यकता है।

पूर्वाग्रह नकारात्मक (शत्रुतापूर्ण, विरोधी) अथवा सकारात्मक (पक्ष में, मित्रतापूर्ण) हो सकता है लेकिन किसी भी मामले में एक समूह के प्रति सुनिश्चित मनोवृत्ति उस समूह के सभी सदस्यों के लिए लागू होती है। परोक्ष रूप में, किसी व्यक्ति को एक व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि समूह के एक सदस्य के रूप में मूल्यांकित किया जाता है। पूर्वाग्रह में, चाहे सकारात्मक हो अथवा नकारात्मक, अनुचित होता है। नकारात्मक प्रकार के पूर्वाग्रह पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि यह सामाजिक संघर्ष का कारण बनता है।

एक बार (कक्षा 6 से 12 तक के शिक्षकों के साथ) बाल अधिकार के संदर्भ में एक सत्र के दौरान, जो सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक हिस्सा है, एक अध्यापक ने अपना हाथ उठाया और कहा,"आप जो कुछ भी कहती हैं, उसके बावजूद मैं जानती हूँ कि झुग्गी- झोपड़ी के बच्चों में कोई सुधार होने वाला नहीं है। उनके लिए कोई आशा नहीं है क्योंकि उनमें और उनके माता-पिता में अपने बच्चों में बदलाव लाने के लिए प्रेरणा नहीं है।" यह कथन उन सभी बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ ने चौंकाने वाला था जो उस शिक्षक के संरक्षण में आएँगे।

वास्तविक सरोकार यह है कि हम अपने पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूक हों और अपने पास आने वाले प्रत्येक बच्चे को अलग अलग रूप में देखने का पूर्ण प्रयास करें बजाए इसके कि सबको एकीकृत करके रखें।

अब हम तीसरी शब्दावली को देखते हैं - रूढ़िबद्ध धारणा। रूढ़िबद्ध धारणा एक या कुछ सदस्यों के अनुभवों का अति-सामान्यीकरण करके उसके आधार पर पूरे समूह के लिए धारणा बनाना है। हमारा समाज प्राय: अबोध रूप से रूढ़ियों को बनाता है और कायम रखता है लेकिन ये रूढ़ियाँ**,** विशेषकर नकारात्मक, प्राय: व्यक्तियों या समूहों के साथ गलत भेदभाव एवं अत्याचार की ओर ले जाती हैं। दूरदर्शन, फिल्म और हास्य- साहित्य इन रूढ़ियों को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक समूह के सदस्यों की रूढ़िबद्ध पूर्वकल्पना पूर्वाग्रह आधारित प्रतिक्रियाओं को उद्वीप्त और जीवित रखती हैं। जिस ढंग से

बच्चों के बीच वार्तालाप में रूढिबद्ध धारणाऐं अपना प्रभाव छोड़ती हैं, वह निम्नलिखित कहानी में सटीक ढंग से बताया गया है -

रूपा ने कक्षा में देर से प्रवेश लिया था। वह विकलांग थी। कक्षा- अध्यापक ने कक्षा के अन्य बच्चों से उसकी पिछली छूट गई पढ़ाई में मदद करने का अनुरोध किया। रूपा दूसरे बच्चों के साथ ज्यादा नहीं बोलती थी। वे भी उसे एक कमजोर विद्यार्थी समझते थे जिसे शैक्षिक मदद की जरूरत थी। कक्षा परीक्षा के बाद अन्य बच्चों को अन्यन्त आश्चर्य हुआ क्योंकि रूपा सर्वोच्च अंक पाने वालों में से एक थी। वह अपना बहुत सारा समय अकेले व्यतीत करती थी। एक दिन उन्होंने उसे धक्का दिया और वह फिसल गई। वह गंभीर रूप से घायल हो गई। उसे अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। उस घटना के बाद उसके बारे में दूसरों की राय बदल गई और कुछ लोगों ने उससे दोस्ती कर ली। अगली परीक्षा में उसने कक्षा में फिर से सर्वोच्च स्थान पाया। दूसरी लड़की जो पहले सर्वोच्च स्थान पर थी, को इससे बहुत कष्ट हुआ। वह हमेशा उसकी अपंगता के बारे में कटाक्ष करने लगी। वह और उसके दूसरे मित्र भी, जो उससे नाराज थे, उसे धक्का भी दे देते थे।

रूपा की कहानी आईना दिखाती है कि कैसे कुछ बच्चों के शान्त व चुप रहने वाले बच्चों के साथ हुए अनुभव शेष बच्चों में विश्वास बना देते है कि चुप रहने वाले बच्चे घमंडी होते है। रूढ़िबद्ध विशेषताएँ पक्षपातपूर्ण होती हें इसीलिए यह जानना जरूरी हे कि जब हम कुछ बच्चों में इस प्रकार की विशेषताएँ देख चुके होते हैं, हम शीघ्रता से उनका सर्वव्यापीकरण कर लेते हैं। निम्नलिखित समस्याओं पर चर्चा करने के लिए यह कहानी कक्षा में प्रयोग की जा सकती है -

- रूपा के साथ विशेष ढंग से बर्ताव करने के लिए सहपाठी किस तरह प्रेरित हुए?
- क्या वे इस तरह की अन्य स्थितियों से पहले से परिचित थे?
- यदि यह उनके साथ घटित होता तो वे कैसा महसूस करते?
- इस प्रकार की स्थितियों से किस प्रकार बचा जा सकता है?

अब दूसरा अभ्यास कीजिए। यह बच्चों के साथ किया जा सकता है।

अपनी आँखें बंद कीजिए और कुछ गहरी साँसें लीजिए। एक भारतीय और एक विदेशी के रंग-रूप के अन्तर की ओर विचार कीजिए। आप संभवत: भारतीय के रंग को काला कहेंगे। लेकिन क्या सभी भारतीयों का रंग काला है? यह अलग- अलग है और उनमें से कुछ का रंग पश्चिमी देशों के लोगों जैसा गोरा है। प्रत्येक को मूल्यांकन करने के लिए स्वतंत्र अवसर देने के लिए एक मैत्रीपूर्ण सह-अस्तित्व की आवश्यकता होती है। अब हम उस स्थिति को देखते हैं जिसका बच्चे प्राय: सामना करते हैं।

चित्र

....

- इस चित्र में क्या चित्र में क्या दिखाया गया हैं?
- यदि व्यस्क एक बच्चे को यह पहने हुए देखते हैं तो वे उससे क्या कहेंगे?
- बच्चा उस समय क्या महसूस करेगा?

....

कुछ वयस्कों के साथ इसका परीक्षण किया गया उनमें से कुछ की सीधी प्रतिक्रिया थी,"वह बहुत अधिक टेलिविजन देखता होगा","वह टेलिविजन के बहुत नजदीक बैठती होगी","बिस्तर पर लेटकर पढ़ती होगी"। इन व्यस्कों की प्रतिक्रिया अपने वास्तविक जीवन के कुछ अनुभवों पर आधारित होगी, तो भी इस अतिव्यापतिकरण के पीछे खतरा यह है कि यह प्रत्येक व्यक्ति की असाधरणता/विशिष्टता के प्रति हमारी आँखें बंद कर देता है। हम सब अपने आपको विशेष गुणों से युक्त एक असाधारण व्यक्ति के रूप में देखा जाना पसंद करते हैं। ऊपर के प्रकरण में बच्चा कुछ जन्मजात समस्याओं के कारण चश्मा पहन रहा हो सकता है। कक्षा II के एक छात्र ने रेटीना में जन्मजात समस्या के कारण अपनी एक आँख की दृष्टि शक्ति खोनी शुरू कर दी। डॉक्टरों का विचार था कि उसकी यह स्थिति बदली नहीं जा सकती और धीरे- धीरे वह अपनी एक आँख से देखने की शक्ति खो देगा। यदि इस तरह के बच्चे को सपष्ट रूप से ऊपर वर्णित टिप्पणी से अवगत कराया जाए तो इससे उसे अत्यधिक दु:ख होगा। यह भी हो सकता है कि वह अपने अध्यापक को असंवेदनशील समझे। इसके विपरीत, बच्चे की स्थिति विशेष को समझने से बच्चा अपने आपको सुरक्षित महसूस करेगा और स्वाभाविक रूप से परिणाम बहुत सकारात्मक होंगे।

हमें यह जानने/पहचानने की आवश्यकता है कि हमारा कुछ विश्वास वास्तव में पक्षपात, पूर्वाग्रह और रूढ़िबद्ध धारणाएँ हैं। हम उन्हें वास्तविकता समझते हैं और अपने कार्य को पूर्णतया न्यायोचित समझते हैं। इसके विपरीत, तथ्य ज्ञान अथवा सूचना हैं जो वास्तविक रूप में घटित होने पर आधारित हैं और इसे सत्यापित भी कहा जा सकता है; उदाहरणार्थ - एक कक्षा में किसी विशेष दिन बच्चों की उपस्थिति संख्या। यह किसी के द्वारा कभी भी सत्यापित किया जा सकता है और सबका उत्तर एक जैसा होगा।

लोगों के प्रति पक्षपात, पूर्वाग्रह और रूढ़िबद्ध धारणा रखना, हमारे अनुभवों को केवल उन्हीं स्मृतियों को टटोलने की ओर ले जाती हैं जो हमारी परम्परागत रूढ़ियों के अनुसार सटीक बैठती हैं और इस प्रकार हमारी समझ में विकार उत्पन्न कर देती हैं। यह बहुत आवश्यक है कि हमारे विचारों का आदान-प्रदान खुले दिमाग से और तथ्यों की ठीक समझ पर आधारित हों।

ऊपर की चर्चा में एक महत्वपूर्ण प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है, -"वह क्या है जो हमें पक्षपाती, पूर्वाग्रही और रूढ़िबद्ध धारणा युक्त बनाता है?" जबकि मानव प्रकृति की जटिलता, के कारण इस प्रश्न की समग्र व्याख्या व्यवहारिक रूप से असंभव है, तो भी कुछ व्याख्याओं को संक्षिप्त करते हैं।

पक्षपाती, पूर्वाग्रही अथवा रूढ़िबद्ध धारणात्मक प्रतिक्रियाएँ हम अपने तात्कालिक परिवेश में अपने माता-पिता अथवा दूसरे महत्वपूर्ण व्यक्तियों का अवलोकन करते हुए सीखते हैं। एक उदाहरण का उल्लेख करते हैं - यदि मैं लगातार अपने माता-पिता से यह सुनती हूँ कि बुजुर्ग लोगों में तंग करने की आदत पाई जाती है तो यह पूरी संभावना है कि मैं इस कथन को सच मानते हुए बड़ी होऊँगी।

- अपने समूह के मानदंडों के अनुरूप होने की इच्छा इस प्रकार की प्रतिक्रियाओं की ओर ले जाता है। कुछ लोगों के लिए समूह के द्वारा स्वीकारा जाना ऐसी आवश्यकता हो सकती है कि समूह के विश्वास को सुनिश्चित करने के लिए वे किसी भी सीमा तक जाने को तैयार हो सकते हैं। लोगों से अलग दृष्टिकोण रखना - सामाजिक बहिष्कार का भय उत्पन्न कर देता है जो हम, एक सामाजिक व्यक्ति होने के कारण, हम स्वीकार करने के इच्छुक नहीं हैं। उदाहरणार्थ- किशोरावस्था में एक सामान्य भावना है कि उनके माता-पिता उन्हें नहीं समझते हैं। यह कुछ के संदर्भ में सही हो सकता है परन्तु इस कथन को सामान्य रूप से सभी माता- पिता के लिए कहना उचित नहीं हो सकता। छोटे बच्चों में जो असमर्थ हैं अथवा जो पिछड़ी जाति या वर्ग से हैं उनके साथ बार-बार पक्षपात होता है। वे प्राय: अपनी योग्यता को दिखाने के पर्याप्त अवसर मिले बिना ही प्रदर्शन करने में सक्षम मान लिए जाते हैं। हम सबको हेलेन केलर की कहानी ज्ञात है। वे बाल्यावस्था में तेज बुखार से बचीं और देखने एवं सुनने की अशक्तता/ के बावजूद एक लेखिका एवं व्याख्याता बनीं।
- उन समूहों के साथ सीमित बातचीत जिनके प्रति ये पूर्वाग्रह होते हैं, एक सहायक तत्व होता है। दूसरों से अंतरंग बातचीत के संदर्भ में हमारी अपनी सीमाएँ होती हैं, जो हम सब में संभव हो सकती हैं। ऐसे व्यक्तियों अथवा समूहों के विषय में जो हमारे लगातार संपर्क के दायरे में नहीं हैं, हमारी जानकारी या हमारे विचार का आधार दूसरों से या मीडिया से सुनी जानकारी पर आधारित होती है, न कि हमारे खुद के अनुभवों पर। इस प्रकार की सूचना, विशेष रूप से वे, जो नकारात्मक होती हैं, व्यक्ति विशेष या लोगों का वास्तविक रूप में देखने में कठिनाई उत्पन्न करती है।

अब हमें कुछ लगातार होने वाली रूढ़िबद्ध धारणाओं की तरफ देखना चाहिए। जब हम एक रूढ़िबद्ध धारणा प्रयोग करते हैं तब हम व्यक्तियों अथवा समूह के बारे में सामान्य कथन

बनाते हैं। जैसे कहता हैं "लड़कियाँ कमजोर होती हैं" अथवा "यह समुदाय आलसी होता है।" अथवा"वह हमेशा प्रभावशाली होती है।" हम सभी लड़कियों को कमजोर कैसे समझ सकते है अथवा एक समुदाय के सभी सदस्य को आलसी, अथवा किसी लड़की का हमेशा प्रभावशाली होना कैसे समझ सकते हैं? इस तरह हम बहुत सारे मुद्वों पर बहुत आसानी से सामान्यीकरण के खतरे को समझ सकते हैं। यह हमें समझने में मदद करेगा कि दृढ़ अवधारणाएँ/विचार लोगों को समझने में एक अवरोध हो सकते है और वे व्यक्तिक और सामाजिक स्तर पर बदलाव में बाधा भी हो सकते हैं।

हमें अपनी मनोवृत्तियों के स्त्रोतों पर समीक्षात्मक रूप से परीक्षण करने और विचार करने की आवश्यकता है। केवल तब हम अपनी मनोवृत्तियों में परिवर्तन ला सकते हैं। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि जब हम नए ज्ञान या व्यक्तिगत अनुभव को अपनी विश्वास प्रणाली में शामिल करते हैं तब बदलाव आ सकता हे। यह समझ पक्षपातों, पूर्वाग्रहों एवं रूढ़िबद्ध धारणाओं का सामना करने में प्रयोग की जा सकती है।

पूर्वाग्रहों पक्षपातों एवं रूढ़िबद्ध धारणाओं का समाधान-

तथ्यों पर निर्भर रहने की आवश्यकता हमारे दिमाग में उथल-पुथल एवं अशांति पैदा कर सकती है और इस उत्साह में कि हमें अपने व्यक्त पक्षपातों एवं रूढ़िबद्ध धारणाओं के विषय में कुछ करना चाहिए, हम कुछ अविवेकपूर्ण कार्य कर सकते हैं। हमें इन रूढ़िबद्ध धारणाओं एवं पक्षपातों का कैसे समाधान करना चाहिए? पूर्वाग्रह एवं पक्षपातों का सामना करने में संवाद शैली एक महत्वपूर्ण कारक है। निम्नलिखित तीन प्रकार की संवाद-शैली बार-बार प्रयोग होती हे।

- बचाव : कुछ न कहना अथवा उपेक्षा करना
- आक्रामक : वापस आक्रमण करना
- दृढ़तापूर्ण दावा/व्यवहार : स्पष्ट एवं खुले रूप से सामना करते हुए निम्न व्यवहार प्रदर्शित करना:
  - अपनी भावनाओं को अपने एक मित्र या सहकर्मी से कहकर दर्द से छुटकारा पाना
  - क्रोध को कम करने के लिए उल्टी गिनती, कुछ घूँट पानी का प्रयोग करना ताकि आप जो शब्द प्रयोग करना चाहते हैं उसके बारे में सोच सकें यदि आप दूसरे व्यक्ति को गलत या दोषी महसूस कराने का कारण बनते हैं तो आपकी बात कोई नहीं सुनेगा।
  - रणनीति बनाना (ध्यानपूर्वक सुनना, प्रश्नों को स्पष्ट करना और खुद को समझाना) दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रियात्मकता को न्यूनतम करना।

– एक सकारात्मक लहजा रखना।

एक पक्षपातपूर्ण एवं पूर्वाग्रहपूर्ण कथन का समाधान करने के लिए तीनों शैलियों में से सबसेबढ़िया तरीका है दृढ़तापूर्ण व्यवहार।

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि जब इस प्रकार की पक्षपातपूर्ण एवं पूर्वाग्रहपूर्ण टिप्पणी की जा रही है तब उसे बीच में रोकना आसान नहीं हैं। प्रायः हम रक्षात्मक तरीका अपनाते हैं जो कि वास्तव में स्थिति को गंभीर बनाता हे। वास्तव में इसको रोकने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को आहत किए बिना दृढ़विश्वास और सावधानी पूर्ण संवाद की जरूरत होती है।

अध्यापकों का संवाद- कौशल पक्षपातों, पूर्वाग्रहों एवं रूढ़िबद्ध धारणाओं का समाधान करने में बहुत महत्वपूर्ण होता है।

जब एक शिक्षक एक पक्षपातपूर्ण अथवा पूर्वाग्रहपूर्ण से संबंधित स्थिति में हस्तक्षेप करना आवश्यक समझता है जो गंभीर प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है, तो यह सावधानी रखना महत्वपूर्ण है कि हम क्या कहते हैं और किस प्रकार कहते हैं। हमें ऐसी स्थित से संबंधित लोगों को अपने विचारों को स्पष्ट व्यक्त करने के योग्य बनाना चाहिए। हमारी भूमिका सूचना, राय, मनोवृत्ति, अनुभव और भावनाओं को व्यक्त करवाने व सरल बनाने में सहायक की होनी चाहिए।

हम दूसरे लोगों को चिन्तित करके अथवा उलझा करके स्थिति को खराब नहीं करना चाहते। लोगों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने योग्य बनाने के क्रम में यह आवश्यक हे कि उनकी बात बिना किसी व्यवधान के सुनें। दूसरों की राय कितनी भी निरर्थक हो, हमें अधीर नही होना चाहिएया उनकी उपेक्षा नहीं करना चाहिए। दूसरे व्यक्ति को अपनी कठिन स्थितियों को बताने हेतु उत्साहित करने के लिए आदरपूर्ण और सहायक व्यवहार बहुत जरूरी होता है जो मजबूत भावनाओं को उत्पन्न करता है। हमें समस्या के समाधान के लिए दूसरे की बातों को बहुत ध्यान से सुनना चाहिए। कुछ सहायक अभिव्यक्तियाँ और सावधानियों नीचे रेखांकित की गई हैं :

उदाहरणार्थ–

- अपने बारे में बात कीजिए, अपनी अनुभूतियों, आवश्यकताओं, इच्छाओं और विचारों को बताओ।
  - मेरे पास एक समस्या है ....
  - मैं क्रोधित हो जाता हूँ जब दूसरे ....
  - मैं अवांछित और अकेला महसूस करता हूँ ....
  - मैं महसूस करता हूँ कि मेरे साथ कुछ गलत हो रहा है, जब ....

- आप अपना वाक्य "आप" के बजाय "मैं" से शुरू कीजिए। उदाहरण के लिए- "मैं बहुत दु:खी महसूस करता हूँ जब आप मेरे उन निर्देशों को नहीं सुनते हैं जो मैं कक्षा में गृहकार्य के संबंध में देता हूँ", बजाए यह कहने के कि"आप अपना कार्य कभी नहीं पूरा करते हो। आप पढ़ाई के प्रति सावधान /जागरूक नहीं हो।"
- **तटस्थ भाषा का प्रयोग कीजिए और जितना संभव हो सके सुनिश्चित रहिए।** उदाहरण के लिए - इस प्रकार की निर्णायक भाषा का प्रयोग करना -"मैं आपके ऊपर कभी भी विश्वास नहीं कर सकता," चिन्तित करने वाला और अस्पष्ट हो सकता है। इसके स्थान पर सुनिश्चित पृष्ठपोषण उपलब्ध कराना कि किस प्रकार दूसरा व्यक्ति आपको क्रोधित कर देता है, बहुत उपयोगी हो सकता है। उदाहरण के लिए, कहते हुए"मैं परेशान हो जाता हूँ, जब आप ध्यान नहीं देते हो अथवा आप काम पूरा नहीं करते हो अथवा समय पर नहीं आते हो, इत्यादि" बहुत सहायक होता है।
- **नाम से चिढ़ाना**, **दोषारोपण**, **किसी खास श्रेणी में रखना या निर्णय देना**, **न करें**- जैसे ही हम दूसरों पर दोषारोपण करते हैं, आलोचना करते हैं या निर्णय देने लगते हैं तो वे गुस्सा हो जाते हैं और आगे कोई सार्थक संवाद बंद कर देते हें।"आप बहुत बेवफूक हो, आप जैसे लोग अपना काम पूरा करना कभी भी याद नहीं रखते हैं। आप अपने काम करने की आदत को कभी भी नहीं सुधार सकते हो।" इस तरह के कथन छात्रों को केवल क्रोधित करेंगे।
- **अपने सकारात्मक रूझान को संघर्ष/द्वन्द्व का समाधान करने के लिए व्यक्त करो**,"हमारे बीच यह असहजता वास्तव में मुझे चिन्तित करती है, मैं सोचती हूँ कि हम बैठें और बात करें, हम चीजों को बेहतर बना सकते हैं, स्थिति में सुधार के लिए आवश्यक समय देने के लिए मैं इच्छुक हूँ। आप मुझे बता सकते हैं कि मेरी कौन सी बात आपको नाराज करती है अथवा मैं तुम्हारी मदद के लिए क्या कर सकती हूँ।"
- **दूसरे लोगों को बताइए कि आप उनके विचारों को सुनना चाहते हैं।**"मैं समझती हूँ कि आपकी अपनी समस्याएँ एवं परेशानियाँ हैं। मैं आपके विचारों को सुनना पसंद करूँगी। आपका दृष्टिकोण मेरे लिए महत्वपूर्ण है। मैं समझती हूँ कि यह कार्य आपको अरूचिकर और कठिन लग रहा हे। आप मुझे अपनी समस्या के बारे में बता सकते हैं, जो मुझे आगे के नियत कार्यों को सुधारने में मदद करेगा।"

क्रम सं.	नाराज करने वाली बातें	इसके बदले आप कह सकते हैं
1	आप बेवकूफ हो, आप निकम्मे हो।	इसका कौन सा भाग आपको नहीं समझ में आया है?
2	आप बहुत नकारात्मक हो।	वह क्या है जो आपको परेशान कर रहा है?
3	आप बहुत विवाद करते हो।	आप किस मुददे पर बहस कर रहे थे?
4	आप आक्रामक हो।	क्या हुआ? आपने इस तरह व्यवहार क्यों किया?
5	आपने बेकार प्रदर्शन किया।	आपने अच्छी कोशिश की। मुझे विश्वास है कि आप इससे अच्छा कर सकते हो।
6	एक बुद्धिमान बच्चे के साथ बैठो। तब, आप कक्षा में चीजों को समझोगे।	यदि कुछ चीजें आप नहीं समझ पा रहे हो तो आप अपनी कक्षा के बच्चों से मदद ले सकते हैं।

कुछ और स्थितियों पर विचार करते हैं :

प्राय: हमारे और दूसरों के विचारों में मतभेद होते हैं। क्या आपको ऐसी समस्या अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य के साथ है? ऐसी परिस्थिति में हम सामान्य तौर पर महसूस करते हैं कि कुछ बातें जो प्रधानाचार्य हमसे अपेक्षा रखते हैं, युक्तिसंगत नही हैं। ऐसी परिस्थितियों में हम क्या करते हैं? क्या हम परिस्थिति पर ध्यान नहीं देते हैं अथवा क्या हम अपनी चिन्ता को मौखिक गुस्से में व्यक्त करते हैं? आप क्या सोचते हैं कि इन परिस्थितियों में द्वन्द्व का समाधान करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

- क्या हम प्रधानाचार्य को अपनी अनुभूतियों, आवश्यकताओं अथवा विचारों के विषय में बताते हैं? अथवा क्या हम अधिक भार डालने के लिए उन पर दोषारोपण करते हैं?
- क्या हम अपने भावनाओं और मुद्दों के बारे में बात करते हैं अथवा क्या हम उनके व्यवहार की आलोचना एवं उनका व्यवहार का मूल्यांकन करके आक्रमण करते हैं
- क्या हम उस बारे में विशेष सूचना देते हैं जिससे हमें क्रोध आया अथवा क्या हम इस तरह के अस्पष्ट कथन बनाते हैं,"आप शिक्षकों की परवाह नहीं करती हैं।"

- क्या हमने प्रधानाचार्य को अपनी बात रखने दी अथवा क्या हम अपनी चिन्ता को व्यक्त करने में ही बहुत व्यस्त थे? हमें पीछे की तरफ सोचना चाहिए और याद करने की कोशिश करनी चाहिए कि क्या हम जितना बोलते थे उतना सुनते भी थे?
- हमारी शारीरिक भाषा (मौन भाषा) कैसी है? क्या आप सोचते हैं कि हमारी मौन अभिव्यक्ति प्रदर्शित करती थी कि हम वहाँ 'बातचीत' के लिए गए थे और हम संघर्ष के समाधान करने की कोशिश कर रहे थे अथवा क्या यह कुछ और दर्शा रही थी**?**
- पूर्व घटनाओं को सोचने के बाद और विद्यालय के प्रधानाचार्य के साथ अपने अनुभवों को विचार करके**,** क्या हम सोचते हैं हमारी 'बातचीत' एक अलग ढंग से हो सकती थी? हमने अलग तरह से बातचीत करना पसन्द किया होता**,** क्या हम सोचते हैं इससे हमारा विचार-विमर्श एक अलग दिशा में जा सकता था?

इस विषय में सोचिए !! हमारा मौखिक और मौन व्यवहार हमारे सहयोगियों, वरिष्ठजनों, मित्रों, परिवार और बच्चों के साथ हमारे दैनिक जीवन की समस्याओं के समाधान की दिशा में एक बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकता है।

इस प्रकार हमारी पारस्परिक क्रिया और संबंध सार्थक हो सकते हैं और प्रसन्नता का साधन हो सकते हैं यदि हम अपनी मनोवृत्तियों और संवाद-शैली के प्रति जागरूक हैं। अपने सकारात्मक अभिवृत्ति को आगे दृढ़ करने के क्रम में, हम केवल अपने पक्षपातों को ही विजित करने के विषय में न सोच कर, शान्ति के अनुकूल व्यवहार एवं जीवन मूल्यों/मान्यताओं को ग्रहण करना चाहिए।

शान्ति के अनुकूल मनोवृत्तियाँ एवं मान्यताएँ -

स्वयं के एवं अन्य के विषय में जानना के पीछे मनोवृत्तियों एवं मान्यताओं का एक समूह है जो कि निश्चित करती हैं कि व्यक्ति संसार को किस तरह से समझते हैं, ये मान्यताएँ उनके कार्य एवं व्यवहार को दिशा दिखाती एवं नियंत्रित करती रहती हैं। मान्यताएँ एवं मनोवृत्तियाँ परिवार, पास-पड़ोस, समाज और संस्कृति से सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सीखी जाती हैं। सामाजीकरण के प्रतिमानों में विभिन्नता, अलग-अलग प्रकार के विश्वासों, व्यवहारों एवं मान्यताओं को विकसित करती है। इसके अलावा कुछ निश्चित आधारभूत मान्यताएँ हैं जो समस्त संसार के मानवों के द्वारा शान्ति के अनुकूल और सभ्यता के अनुकूल समझी जाती हैं ये सब मान्यताएँ सभी के साथ सामंजस्य में जीने के लिए परम आवश्यक है !

शांति का शिक्षक मान्यताओं का अनवरत स्पष्टीकरण करने में लगा रहता है जो संसार में उसकी वास्तविकताओं की समझ एवं क्रियान्वयन की स्थापित करते हैं। शांति के लिए

आवश्यक मुख्य जीवन मूल्य हैं- प्रेम, संवेदना, न्याय, सच्चाई, धार्मिकता, विविधता का सम्मान, ईमानदारी, आशावाद, आशा इत्यादि। इन मूल्यों को हमें अपने अंदर और अपने विद्यार्थियों में क्यों विकसित करना चाहिए? आईए उनकी तरफ संक्षेप में देखें।

प्रेम एवं संवेदना

> जिन चीजों के प्रति हमारी आसाक्ति होती है, उन्ही के आधार पर हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। - गोटे

जहाँ पर प्रेम का शासन होता है, शान्ति वहीं पर रहती है। प्रेम योग्यता का स्त्रोत होता है। जिसे हम पसंद/प्रेम करते हैं, हम उसका मूल्य समझते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और सुरक्षित रखते हैं। प्रेम उन्नति एवं विकास हेतु शक्ति देता है। प्रेम हमें अपना सर्वश्रेष्ठ व्यक्त करने के योग्य बनाता है और दूसरों में भी अच्छाई देखता है जो कि उन्नति का रहस्य/मूलमंत्र है। एक व्यक्ति अथवा समूह के प्रति विभेदीकरण, निरूत्साहित करना अथवा प्रगति के अवसरों पर रोक लगाना प्रेम की असफलता को सूचित करता है। दूसरों से प्रेम करने का अर्थ है कि उनके विकास के लिए जितनी सहायता आप कर सकते हैं, करना।

संवेदना दूसरों के लिए हृदय की गहराइयों से प्रेम और अपनेपन की भावना के रूप में बाहर आती है। हममें इसका उदय मानव परिवार का सदस्य होने की वजह से होता है। यह हमें सभी बाधाओं वर्गीकरण एवं पूर्वाग्रहों से उपर उठने के योग्य बनाती हैं। किसी को कष्ट में देखकर हम उनके लिए संवेदना महसूस करते हैं; बेशक वे हमारे लिए अजनबी हैं अथवा हमसे काफी दूर हैं पर हम उनके कष्टों को इस तरह महसूस करते हैं जैसे कि वे हमारे ऊपर ही घटित हुए हैं। विश्व-बन्धुत्व की यह तीव्र भावना शांति और भाईचारे के लिए बहुत अच्छा साधन है। जो प्रचार, अफवाह फैलाने वाले एवं घृणित अभियान करते हैं, उनका काम भाई-चारे की भावना को दबाना और संवेदना को रोकना होता है। जब संवेदना को दबा दिया जाता है, तो क्रूरता जाग जाती है और हिंसा फूट पड़ती है।

एक अध्यापक के रूप में हमें अपने अन्दर एवं अपने विद्यार्थियों में संवेदना पोषित करने के पूर्ण अन्वेषण की आवश्यकता है। बिना इसके, परन्तु लोगों को नौकरी के लिए तैयार करने में तो सफल हो सकते हैं पर हम शिक्षित करने में पूर्णतया असफल होते हैं।

> जब आप यह स्वीकार करते हैं कि सभी मनुष्य बराबर हैं और सभी आपकी ही तरह प्रसन्नता प्राप्त करने की इच्छा और अधिकार रखते हैं तो आप स्वत: उनके प्रति समानुभूति और आत्मीयता अनुभव करने लगते हैं। सच्ची सहानुभूति सिर्फ एक भावनात्मक प्रतिक्रिया मात्र नहीं बल्कि तर्कपूर्ण दृढ़ प्रतिबद्धता है। - दलाई लामा -

सत्य / सच्चाई

शांति के लिए सत्य का वही स्थान है जो हिंसा के लिए झूठ का। उस मिथ्या ज्ञान का क्या मूल्य जो सत्य के प्रति अनुराग न उत्पन्न करें। सत्यनिष्ठ होना, मानव स्वभाव के अनुकूल है। सत्यनिष्ठ होना प्राकृतिक है और झूठ बोलना कृत्रिमता है। एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति न केवल सत्य बोलता है बल्कि अपने कार्य के प्रति सत्यनिष्ठ भी होता है। किसी असत्य को जानना अज्ञानता से बेहतर/श्रेष्ठ नहीं है, यह हिंसा है। विद्यार्थियों में सत्य के आधार को मजबूती प्रदान करने हेतु सबसे समुचित स्थान अध्यापकों का है। जब हमारे विरूद्ध असत्य का प्रचार किया जाता है तो दु:ख होता है। एक शिक्षित व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति, समूह या समुदाय के विरूद्ध प्रचारित असत्य से पहुँचने वाले मानसिक आघात को उसी स्तर तक महसूस करना चाहिए। एक अध्यापक का कार्य विद्यार्थियो में सत्य की खोज करने संबन्धि कला-कौशल को पोषित करने की जिम्मेदारी से अलग नहीं हो सकता हे। शिक्षा के माध्यम से सत्य को पोषित करने की दृढ़ प्रतिबद्वता सबसे अच्छा निवेश है जिसे हम शांति के उत्कर्ष में लगा सकते हैं। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी, चाहे वह प्रचारक हो अथवा एक पीड़ित। हम असत्य बोलने या फैलाने से बचे रहें। केवल यही पर्याप्त नही है। हमें उस सत्य को सामने लाना चाहिए जो हम जानते हैं। यदि इसके विपरीत यदि हम शान्त रहते हैं तो कोई न कोई इसका शिकार हो जाएगा। इस प्रकार की चुप्पी हिंसा है। प्रसिद्व”ट्रिपल फिल्टर टेस्ट" त्रिस्तरीय छलनी परीक्षण आपको सत्य के विषय में और भी बातें बताएगा जो बॉक्स में दी गई हैं।

....

त्रिस्तरीय छलनी परीक्षण?

सुकरात ने शायद ऐसा नहीं कहा है। फिर भी यह एक बहुत अच्छा परीक्षण है। अगली बार जब कोई व्यक्ति किसी अफवाह का फैलाना शुरू करते हैं तो इस विषय में सोचिए -प्राचीन यूनान में (469- 399 ईसा पूर्व) सुकरात को उसकी विद्धता के लिए जाना जाता था। एक दिन महान दार्शनिक एक परिचित से मिले जो उत्साह से दौड़ता हुआ उनके पास आया और बोला,”सुकरात, क्या आप जानते हो कि आपके एक विद्यार्थी के बारे में मैंने क्या सुना है?"

“एक क्षण रूकिए" सुकरात ने उत्तर दिया,” इससे पहले कि आप मुझे बताएँ, मैं चाहता हूँ कि आप एक छोटा सा परीक्षण उत्तीर्ण करें। इसे ट्रिपल फिल्टर टेस्ट त्रिस्तरीय छलनी परीक्षण कहा जाता है।"

"त्रिस्तरीय छलनी परीक्षण"

“बिल्कुल सही" सुकरात ने अपनी बात जारी रखा,”इससे पहले कि आप मेरे विद्यार्थी के विषय में मुझसे बताएं, हमें यह छानबीन के लिए एक क्षण रूकना चाहिए कि आप क्या बताने जा रहे हैं। पहली छानबीन सत्यता है। क्या आपने पूर्णतया सुनिशिचत कर लिया है कि जो कुछ आप बताने वाले हैं वह सत्य हैं?"“नही" उस आदमी ने कहा,”दरअसल मैंने इसके बारे में सुना है और......।"“ठीक हैं", सुकरात ने कहा,”तो आप वास्तव में नहीं जानते है

कि यह सत्य है कि नहीं। अब, हमें दूसरी छलनी के माध्यम से देखना चाहिए,"अच्छाई" की छलनी। क्या आप मेरे विद्यार्थी के विषय में जो कुछ बताने वाले हैं, वह कुछ अच्छा है।"

"नहीं, इसके विपरीत........"

"अच्छा", सुकरात ने अपनी बात जारी रखा,"आप उसके बारे में कुछ बुरा बताना चाहते हैं हालांकि आप इसके विषय में निश्चित नहीं है कि यह सत्य है?" कुछ शर्मिंदा होते हुए उस व्यक्ति ने कंधे उचकाए।

सुकरात ने अपनी बात जारी रखा,"आप अभी भी एक परीक्षण उत्तीर्ण कर सकते हैं, यह तीसरा परीक्षण उपयोगिता का परीक्षण है। क्या आप जो कुछ मेरे विद्यार्थी के बारे में मुझसे बताने वाले हैं, वह मेरे लिए उपयोगी होने वाला है?"

" नहीं, वास्तव में नही....."

"ठीक है," सुकरात ने निष्कर्ष निकाला,"यदि जो कुछ आप मुझे बताना चाहते हैं वह न तो सत्य है, न अच्छा और न ही उपयोगी, तो यह मुझे क्यों बता रहे हो?"

यही कारण है कि सुकरात एक महान दार्शनिक थे और इस प्रकार की दृढ़ आत्म- शक्ति रखते थे।

न्याय

"न्याय विवेक है, एक व्यक्तिगत विवेक नहीं सम्पूर्ण मानवता का विवेक है। वे जो स्पष्ट रूप से अपने अंत:करण की आवाज को स्वीकार करते हैं प्राय: न्याय की आवाज को भी पहचानते हैं।" - अलेक्जेल्न्डर सोल्जेनित्सिन

अन्याय शांति को क्षति पहुँचाता है। जब एक समाज न्याय की प्रतिबद्धता से समझौता करता है तो यह अपनी शांति को भी क्षति पहुँचाता है। शांति और न्याय एक सिक्के के दो पहलू के समान हैं। न्याय की प्रतिबद्धता को एक शिक्षित व्यक्ति की गुणवत्ता का प्रमाणचिह्न समझना चाहिए। दूसरों के प्रति-न्यायोचित होना उनके प्रति ऐसा व्यवहार करना है जैसा व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इन्सान के प्रति भाई-चारे की भावना से न्याय उत्पन्न होता है। बाहरी भिन्नताओं को अलग कर दें तो हम सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसलिए जो हम दूसरों के साथ करते हैं, वह किसी न किसी दिन हमारे साथ भी घटित होगा। प्रत्येक व्यक्ति विशेष है अथवा कोई भी नहीं। इसलिए मैं वास्तव में उस न्याय की अपेक्षा नहीं कर सकती जिससे मेरे पड़ोसी या मेरे सहपाठी को मेरे या किसी अन्य के द्वारा वंचित किया गया है। इसलिए सबसे अच्छा तरीका-वास्तव में एकमात्र तरीका- यह सुनिश्चित करना कि मुझे न्याय लेना है तो दूसरों को भी न्याय देना है, और सबके लिए न्याय हेतु वचनबद्ध रहना हे। विद्यालय और कक्षा-कक्ष न्याय के बगीचे के रूप में देखे जाने चाहिए। क्या विद्यार्थियों में दूसरों के सरोकारों को समझने की भावना विकसित

हो रही हैं अथवा क्या वे सामान्य तौर से आत्म-केन्द्रित हैं”क्या वे एक दूसरे की कीमत पर आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं? क्या उनमें न्याय पाने व देने का साहस है, तब भी जबकि यह उनके हितों को हानि पहँचा रहा है? एक नियम के रूप में, जहाँ कहीं न्याय को समर्थन मिलता है, शांति का उद्देश्य सुरक्षित होता है। एक शिक्षक के रूप में हम सभी के व्यवहार को प्रभावित नहीं कर सकते परन्तु हम कम से कम उन बालक/बालिकाओं एक बेहतर दिशा दे सकते हैं जिनको हम शिक्षा देते हैं। जो संबंध हम उनके साथ कायम करते हैं, जो विषय पढ़ाते हैं और जिस दृष्टि के साथ हम अपने कार्य को आगे बढ़ाते हैं, ये सब साधन वे माध्यम और स्त्रोत हैं जो हमें न्याय एवं शांति में रचनात्मक निवेश के लिए दिए गए हैं।

नैतिकता -

एक अन्य महत्वपूर्ण मूल्य - अपने दायित्व का निर्वहन करना और अपने कार्य एवं व्यवहार के उत्तरदायित्व को स्वीकार करना। अपने कार्यों के लिए उत्तरदायित्व स्वीकार करने के लिए संवेदनशीलता, पहलकदमी, कार्य करने की इच्छा, प्रतिबद्धता, जुड़ाव, दृढ़संकल्प, अध्यवसाय, साहस और साधन सम्पन्नता जरूरी होती है। अपने कर्तव्यों को पूरा करना अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद करता है और आत्म संतोष की भावना प्रदान करता है। कार्य का उत्तरदायित्व लेना और कर्म करना ही अपना कर्तव्य है। प्राय: उदासीन मनोवृति पहलकदमी व काम करने की इच्छा का अभाव उपाय, कुशलता व साधन सम्पन्नता की कमी, दूसरों पर अत्यधिक निर्भरता तथा लचीले दृष्टिकोण का अभाव लोगों को असहाय बनाता है। असहाय परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को नैतिकता को बढ़ावा देना चाहिए - मैं अपना कर्त्तव्य इस तरह करता हूँ जैसे सब कुछ मेरे ऊपर निर्भर है।" यह वाक्यांश व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी की याद दिलाता है बजाय दूसरों की प्रतीक्षा करने और समस्याओं का सामना करते समय साहस छोड़ने के, यह दृष्टिकोण असहायता को जीतने में मदद करता है।

सकारात्मक दृष्टिकोण -

"संसार में बहुत महत्वपूर्ण कार्य उन लोगों के द्वारा सम्पादित किए गए हैं जो तब भी कोशिश करते रहे जब कोई आशा नहीं दिखाई दे रही थी। - डेल कारनेगी -

सकारात्मकता शांति का बीज है। नकारात्मकता हमारी ऊर्जा, प्रतिभा एवं अवसरों को नष्ट करती हैं। नकारात्मकता से ग्रसित व्यक्ति आपसी संबंधों में असफल रहते हैं। वे अपने विकास और परिपूर्णता के दरवाजे स्वयं बंद कर देते हैं। अपने साथ न्याय करने में असमर्थ, वे अपने आपको पीड़ित मानते हैं और अपनी असफलता के लिए दूसरों पर दोषारोपण करते हैं और जो कुछ उनके पास है उसके लिए सराहना एवं कृतज्ञता व्यक्त करने के बजाय दु:खी रहते रहते हैं।

सकारात्मक सोच आत्म-शक्ति को बढ़ाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। लोगों के दिमाग की सकारात्मक एवं नकारात्मक अवस्था उनकी स्व-अवधारणा/आत्मबिम्ब से उत्पन्न होती है जो वे स्वयं अपने बारे मे बनाते हैं। यदि वे सोचते हैं कि वे विजेता है, यह विचार उन्हें जीतने का साहस देता है। इस प्रकार सफलता से सफलता मिलती है और असफलता से असफलता। जब व्यक्ति के पास सकारात्मक अभिवृत्ति होती है वह चीजों के उज्ज्वल पक्ष को देखता है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण आनंद, रचनात्मकता और उद्देश्य की भावना लाता है। सकारात्मक सोच के तरीके सीखना और सकारात्मक मनोदशा की स्थिति का निर्माण शांति के महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है।

विभिन्नता का सम्मान -

प्रेम, संवेदना और न्याय में यह आधारभूत सिद्धान्त निहित है कि सभी इन्सान एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। विभिन्नताएँ पाई जाती हैं परन्तु वे आवश्यक रूप से एक दूसरे को विभाजित नहीं करती हैं। ये विविधताएँ भाषा, धर्म, विचाराधारा, संस्कृति, आदि के कारण हो सकती हैं। मानव जाति की विविधता को समझने के लिए प्रयास की आवश्यकता है और यह देखना है कि लोगों में क्या समानताएँ है। प्रेम और सम्मान के पोषण और संस्कृतिक विविधता के संरक्षण के लिए प्रयास की आवश्यकता है जिसे मात्र अपनी अस्तितव रक्षा हेतु सहन करने की भावना की नहीं बल्कि सम्मान व सराहना की जरूरत है। इसके लिए संवेदनशीलता, उदारविचारधारा, मिलकर काम करने की खुशी, विवाद का प्रतिरोध और आपसी समझदारी की आवश्यकता होती है। यह देखना व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का मामला है कि क्या हम अलगाव अथवा विभाजन करने के लिए जिम्मेदार हैं जो कि घृणा और हिंसा में परिणित हो सकता है अथवा हम प्रेम एवं स्नेह फैला रहे हैं।

अन्य लोगों के सकारात्मक पहलू को केन्द्रित करना -

सकारात्मक सामाजिक अंत:क्रियाओं को विकसित करने के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण मूल्य है। एक दूसरे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना, दूसरों को महत्व देना, स्नेह व सराहना की भावना को व्यक्त करने के कौशल को प्राप्त करना ये सब दूसरे लोगों के साथ संबंध बनाने में सहायक होते हैं। इनसे उदार वार्तालाप और दूसरों के प्रति सकारात्मक सम्मान ही राह मिलती है। यह कहा जाता है कि जो व्यक्ति दूसरों के बारे में बोलने के लिए अच्छी बातें खोज लेते हैं, दूसरे लोगों को अपने बारे में अच्छी बातें करते हुए पाते हैं।

तेजी से बदलती हुई दुनिया के साथ, इन शाश्वत मूल्यों का महत्व क्षीण होता हुआ प्रतीत हो सकता है लेकिन वास्तविकता में, लोग इस तरह के प्रश्नों को पूछना शुरू करने लगे हैं - मेरे लिए क्या महत्वपूर्ण हैं और मैं वास्तव में अपनी जिन्दगी में क्या चाहता हूँ? शान्ति के अभ्यास के लिए हमें स्वयं के प्रिय मूल्यों के स्पष्टीकरण तथा पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है क्योंकि स्थाई मूल्यों के स्त्रोत से जुड़े रहना और जीवन में उनका अभ्यास ही शांति प्रदान करता है। हम उसी उद्गम (स्त्रोत) के साथ खड़े रह सकते हैं, जो स्थाई हो।

क्षणभंगुर और अस्थायी मूल्यों के साथ जुड़ाव केवल चिन्ता और बेचैनी को जन्म दे सकता है।

उदाहरणार्थ - एक वृक्ष की उस शाखा पर बैठे रहना जो किसी भी क्षण टूट सकती है एक शान्तिपूर्ण अवस्था नहीं है। मूल्य और सिद्धान्त व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को बनाए रखने के लिए होते हैं।

आजकल, हममें से कुछ प्राय: प्रश्न करते हैं क्या जीवन मूल्यों को सिखाया जा सकता है ? हमें उनको सिखाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि हमें उन शाश्वत मूल्यों के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता है जिन्हें हम भली-भॉति जानते हैं। लेकिन हम इन्हें अपने जीवन में नहीं अपना पाते हैं, क्योंकि हम इन मूल्यों, स्वास्थ्य एवं खुशी के बीच संबंध देखने में असफल रह जाते हैं। अपने कार्य, रूझान, उद्देश्य एवं लक्ष्य पर लगातार चिन्तन मनन करने से यह संबंध प्रकट हो जाएँगे। यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने ध्यान को अन्दर की तरफ ले जाएँ और पूर्ण शांति के साथ मनन करें।

जो कुछ हम अब तक सीख चुके हैं, वह हमें अपने आस-पास की दुनिया और उससे भी ज्यादा अपने भीतर की दुनिया को संभालने में मदद कर सकता है। स्वयं अपनी आन्तरिक प्रक्रियाओं को समझने में इन व्यवहार और कौशलों का अधिकमहत्व नही है। अगम्य को समझने के लिए हमें स्वयं की समझ, आत्म-विश्वास और अपने को सुनने की इच्छा की आवश्यकता होती है। यह जानने के लिए कि हम कहाँ है और हमें आगे कहाँ जाना है। हमें स्वयं को सुनने की आवश्यकता होती है।

आत्म -चिन्तन एवं अन्तरात्मा की आवाज को सुनना -

यह इसलिए महत्वपूर्ण है कि हम अपने"आत्म" के बारे में जागरूक हो जाएँ और अपने विषय में सचेत रहें। अपने बारे में जागरूकता रूपान्तरण विकास लाता हे और अवरूद्व ऊर्जा को मुक्त कर देती है। स्वयं को अधिक शान्तिपूर्ण बनाने के लिए हमें निरन्तर किंतु स्नेह के साथ अपने कार्यों पर चिंतन करना है जिससे हम अपने आपको व स्थितियों पर जिस प्रकार प्रतिक्रिया देते हैं, को समझ सकें और सुधार कर सकें।"वास्तव में हम अपने अनुभवों से कुछ नहीं सीखते हैं। हम केवल अपने अनुभवों पर चिन्तन करने से सीखते हैं।

- राबर्ट सिन्क्लेयर -

....

अपने आपको समझने के लिए अपने सकारात्मक गुणों के बारे में जागरूकता और अपनी सीमाओं/सीमितताओं को स्वीकार करना महत्वपूर्ण होता है। अपने गुणों ताकत को जानना व्यक्ति के स्व के मूल्य संवर्धन में सहायक है और आत्म- विश्वास नई संभावनाओं की खोज में पहल करता है जो क्षमता को/गति प्रदान करने में सहायक होता है। यह दूसरों को देखने के हमारे नजरिए को बदलता है। अपनी सीमितताओं के विषय में जागरूकता विकसित

करना आवश्यक है। यह अपने आपको जानने एवं सुधार करने और अन्ततोगत्वा अपने आप को सशक्त करने हेतु एक कदम है। अपनी कमजोरी, सीमितता, असफलता एवं गलतियों को स्वीकार करने में झिझकना इन्सान की स्वाभविक प्रवृति है लेकिन यह स्वीकृती हमें हमारे वास्तविक रूप को पहचानने में मदद करती है, बजाए इसके कि हम जो नहीं है वह बनने का प्रयास करे। स्वयं को जानने के लिए अपने वास्तविक स्वरूप को खोजना आवश्यक है।

आत्म चिन्तन में विचारों को सम्मिलित करना आवश्यक है -

1. मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आई हूँ?
2. मैं इस तरह की क्यों हूँ? (मैं जैसा हूँ, मैं वैसा क्यों हूँ?)
3. मैं क्या कर रही हूँ?
4. मैं जीवन में क्या प्राप्त करना चाहती हूँ?
5. क्या मैं सभी परिस्थितियों में प्रत्येक के साथ एक तरह का व्यवहार करती हूँ?
6. मैं एक विशेष प्रकार से व्यवहार क्यों करती हूँ?

इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए हमें पूर्ण शान्ति में अपने ध्यान को अन्दर की तरफ केन्द्रित करने की आवश्यकता है जहाँ हम अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुन सकें। हम प्राय: वाह्य वातावरण में सृजित शोर खो जाते हैं जो हमें विभिन्न दिशाओं में खींचता है और हमारी भावनाओं के साथ खेलता है। हमें अपनी अन्तरात्मा की आवाज को सुनने और उस पर विश्वास करने की जरूरत है। इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्तरात्मा की आवाज हमेशा सही होती है। यह त्रुटिपूर्ण भी हो सकती है। अन्तरात्मा की आवाज सुनने हेतु सीखने का मूल्य स्वयं को बदलाव हेतु प्रस्तुत करना, आत्म-निरीक्षण और चिन्तन करना है। जब हम चिन्तन करते हैं; हम प्राय: गूढ़ मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं जिसमें ऐसी बुद्धिमता समाहित होती है जिसे हमारी चेतना प्रकट करने में असमर्थ थी। जब कभी आपके पास समय हो, एक शांत स्थान खोजिए जहाँ आपकी शान्ति में कोई बाधा न डाले, बैठ जाइए, आँखें बंद कीजिए और कुछ क्षण विश्राम कीजिए।जब हम दैनिक जीवन के शोरगुल से दूर हटकर अपने आपको समय देते हैं तब आन्तरिक विवेक का उदय होता है। यह आन्तरिक विवेक हमसे बातें करता है और बताता है कि कुछ चीजें पूर्णत: सही नहीं हैं। यह हमें बताता है कि कब हम अपने आप पर बहुत अधिक दबाव डालते हैं अथवा जब हम किसी के साथ निष्पक्ष व्यवहार नहीं करते हैं अथवा क्या यह ठीक नही है कि हम अपने आपको कुछ समय के लिए शान्त/संयत रखें बजाए इसके कि लगातार दौड़ते रहें। हमें अपने अन्दर झॉककर देखने के लिए अवसरों की तलाश करनी चाहिए और अपने आपका सामना करना चाहिए।

केवल आत्म-निरीक्षण के द्वारा ही हम समझ सकते हैं कि आन्तरिक प्रकृति ही बाहय-व्यवहार को नियन्त्रित करने का कारक हैं। ज्यादातर मामलों में हम बाह्य कारकों को उत्तरदाई ठहराते हैं और महसूस करते हैं कि लोगों को बदलना चाहिए। अपने अन्दर देखने

की आदत और आत्म निरीक्षण संवेदनशीलता जगाता है कि जो परिवर्तन हम दूसरों में चाहते हैं पहले स्वयं में बदलाव लाकर ही लाया जा सकता है। जितना अधिक, हम बाहय वास्तविकता के विकार को समझने, अपनी ताकत और अपनी कमजोरियों को स्वीकारने के लिए अपने भीतर जाते हैं, उतना ही अधिक हम दूसरों के प्रति सहनशील एवं क्षमाशील हो जाते हैं। लेकिन क्षमाशील बनना, स्वीकार करना इतना आसान नहीं है, यह स्वयं के गहन एवं अंत: दृष्टिकोण से संबंधित है जिसके साथ हमारा भावनात्मक लगाव बहुत मजबूत होता है। स्वयं के इन्हीं मजबूत भावानात्मक पहलुओं, जिन पर हम खुल कर प्रश्न नहीं उठा पाते हैं, बहुत सारे पक्षपात, पूर्वाग्रह एवं रूढ़िबद्ध धारणाएँ दूसरों के प्रति निर्धारित हो जाती हैं। फिर भी -

बाहर भागने की कोई आवश्यकता नहीं,

बेहतर निरीक्षण हेतु,

न ही झरोखों से झांकने की। बजाय कर्मरत रहो

आत्म केन्द्र को खोजने में

जितना इससे आप दूर; होंगे, उतना कम आप सीखेंगे। अपने हृदय को खोजो और देखो

क्या वह बुद्धिमान है जो बदलाव स्वीकारता है

ऐसा करने का मार्ग ही, अस्तित्व का होना है।

- लाओ त्जे- (600 वर्ष ईसा पूर्व)

4|शांति हेतु शिक्षण

- पैराडाइम शिफ्ट की आवश्यकता
- शांति के अवरोध
- शांतिपूर्ण कक्षा की परिकल्पना
- शांति शिक्षक बनना
  - संबंध
  - आदर्श व्यवहार
  - श्रव्य एवं संवाद कौशल
  - प्रतिक्रियात्मक या जवाब देने का कौशल
  - स्पष्टीकरण की आवश्यकता
  - स्व का अन्य के साथ सम्बन्ध
- कक्षा परिपाटियों में सुधार
  - मनोवैज्ञानिक रुप से सुरक्षित वातावरण
  - सर्जनात्मक फीड बैक
  - सकारात्मक पुनर्बलन
  - गलतियों को स्वीकारना
  - आवेगपूर्ण निर्णयों तथा मूल्यांकन करने वाली टिप्पणियों से दूर रहना
  - विचारों तथा प्रश्नों का आदर करना
  - आंतरिक अभिप्रेरणा की वृद्धि
  - हास्य का प्रयोग

इस पाठ में, बदलाव का केन्द्र स्वयं अपने आप से विद्यार्थियों की ओर स्थानान्तरित होता है और शिक्षण विज्ञान में पैराडाइम शिफ्ट की आवश्यकता पर बल देता है। शांति के अवरोधों तथा कक्षा में शांति के पोषण को स्थान देने वाले गुणों की पहचान पिछले अध्याय में कर ली गई है। शांति से संबंधित दृष्टिकोणों, मूल्यों तथा व्यवहारों को पोषण करने हेतु शिक्षक की भूमिका तथा उसके बच्चों के साथ संबंधों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है। शिक्षक को उसके अपने व्यवहार तथा बच्चों पर पड़ने वाले उसके प्रभाव के प्रति सचेत रहना चाहिए। उसके स्वयं के दृष्टिकोण तथा संबंध उसकी शिक्षण पद्धति को सुनिश्चित करते हैं। इस संदर्भ में, शांतिपूर्ण व्यवहार को अपनाने के महत्व तथा प्रसन्नता पूर्वक अधिगम में बच्चों की प्रतिभागिता करने में सहायक वातावरण का सृजन करने का वर्णन किया गया है।

शांतिपूर्ण तथा प्रबुद्ध समाज के निर्माण का दायित्व शिक्षाविदों पर निर्भर है।

– जे- कृष्णामूर्ति

शिक्षाविदों के रुप में कैसे अपने बच्चों तथा युवाओं को उन चुनौतियों हेतु तैयार करें जिनका हम वर्तमान में सामना कर रहे है और हिंसा की संस्कृति का शांति की संस्कृति में रुपांतरण कैसे करें? कैसे हम उन्हें स्वयं अपने दूसरों, और प्रकृति के साथ सामंजस्य से रहना सिखाए? कैसे बेहतर संसार के परिवर्तन हेतु उत्तरदायी तथा प्रतिबद्ध एजेन्ट के रुप में उनको शक्तिसम्पन्न किया जा सकता है ? कैसे हम उनमें अंतश्चेतना, प्रतिबद्धता और करुणा उत्पन्न करने में मदद कर सकते है? अपने विद्यार्थियों को हमें किस प्रकार की शिक्षा देने की आवश्यकता है? स्वयं अपने में, हमारी नीतियों, कक्षा तथा विद्यालयी पद्धतियों से संबंधित कार्यो तथा विचारों में किस प्रकार के वृहद तथा महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने की आवश्यकता है? निम्न नीति कथा एक विद्यार्थी की निराशा का वर्णन करती हैं।

शिक्षक, आपने मुझे रोटी का आधा हिस्सा दिया । एक शिक्षिका को एक स्वप्न दिखा जिसमें उसने एक विद्यार्थी को आज से पचास वर्ष बाद देखा। विद्यार्थी क्रोधित था और उसने पूछा, “मैने अपने देश के अतीत और प्रशासन के विषय में अत्याधिक विस्तार से और संसार के विषय में इतना कम क्यों पढ़ा? वह नाराज था क्योंकि उसे किसी ने नहीं बताया कि एक वयस्क के रुप में उसे प्रतिदिन पारस्परिक निर्भरता की वैश्विक प्रकृति विषयक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, चाहे वे शांति, सुरक्षा, जीवन की गुणवत्ता, मुद्रास्फीती या प्राकृतिक संसाधनों की कमी आदि परेशानियाँ ही क्यों न हो। मुझे पहले ही चेतावनी क्यों नहीं दी गई?” मुझे बेहतर शिक्षित क्यों नही किया गया? क्यों मेरे अध्यापकों ने मुझे इन परेशानियों के बारे में नहीं बताया और यह समझने में मदद नहीं की कि मैं परस्पर निर्भर मानव जाति का एक सदस्य हूँ?” और अधिक क्रोध के साथ, विद्यार्थी चीखते हुये बोला, "आपने मेरे हाथों में अतुलनीय मशीनों की क्षमता के साथ मेरी आँखों को टेलीस्कोप तथा माइक्रोस्कोप के साथ, मेरे कानों को टेलीफोन, रेडियों और सोनार के साथ, मेरे मस्तिष्क को कम्पयूटर के ज्ञान के साथ विस्तार पाने में मेरी मदद की परंतु आपने मानव परिवार के प्रति मेरे हृदय में प्रेम और सहानुभूति को विस्तार देने में मेरी सहायता नहीं की। अध्यापक, आपने मुझे रोटी का आधा हिस्सा दिया।

स्त्रोत: एक नीतिकथा से उद्धृत

–जॉन राई किंगहार्न

विद्यार्थियों को मात्र परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने तथा जीविकोपार्जन हेतु तैयार करना पर्याप्त नहीं है। शिक्षा जो ज्ञानोन्मुख हो, भी स्वयं में महत्वपूर्ण नहीं है। ज्ञानी और सक्षम होने का क्या उपयोग यदि विद्यार्थी किसी प्रयोजन हेतु स्वयं को प्रतिबद्ध करने में सक्षम न हो, यदि वे

स्वार्थी हो और दूसरों की देखभाल व दूसरों को बांटने, दूसरों का आदर करने तथा शांति स्वीकारने के अनिच्छुक हों। उस ज्ञान का क्या उपयोग यदि वे अपने तथा दूसरों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार न कर सके ? शिक्षा, बच्चों को शांतिपूर्ण जीवन यापन करने और विश्व में शांति और एकता बनाये रखने और भविष्य के नागरिक तथा नेतृत्वकर्ता बनाने के लिए शक्ति प्रदान करने वालों महत्वूपर्ण उपकरणों में से एक है। हमें उनमें शांति के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की आवश्यकता है, यह जागरुकता कि हिंसा और बदला लेना असहमतियों के हल का रास्ता नही है। हमें उनके भीतर दूसरों के अधिकारों, अपवंचितों हेतु विशेष चिंता, विविधता के प्रति सहनशीलता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, क्षमा, सामाजिक न्याय और इसी प्रकार के मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता जैसे सम्मानीय दृष्टिकोणों का विकास करने की आवश्यकता है। शिक्षा के मात्र इस दृष्टिकोण में सम्पूर्ण व्यक्ति का पूर्ण विकास सम्मिलित है, ना कि दिये गये समय या स्थान में, विशेष पाठ्यचर्या का अंतिम उत्पाद या निष्कर्ष।

एक आवश्यक प्रश्न, एक शिक्षाशास्त्री और शिक्षक के रुप में, हमें स्वयं से अवश्य पूछना चाहिए कि क्या वर्तमान में हम बच्चों को शांति की सराहना,अभ्यास और उन्नति हेतु शिक्षित कर रहे है? यदि शिक्षा को शांति को बढ़ावा देने की आवश्यकता हैं, तो क्या हम जानते है कि कौन सी शिक्षण शास्त्रीय पद्धति शांति के दृष्टिकोण, मूल्यों और कौशलों का निर्माण करेंगी यदि हम अपने छात्रों से शांति प्रदान कर्ता या शांति निर्माता के रुप में प्रत्याशा रखते हैं ? क्या हमारे विद्यालय और कक्षा, विद्यालयी व्यवस्था तथा पाठ्यचर्या में शांति को स्थान देते हैं?

पैराडाइम शिफ्ट की आवश्यकता

सर्वप्रथम यह समझने की आवश्यकता है कि शिक्षणशास्त्र क्या है और शांति शिक्षण के आयाम क्या-क्या है। शिक्षणशास्त्र शिक्षण की कला और विज्ञान को वर्णन करता है, वह विधि जो अध्यापक शिक्षणार्थी की वृद्धि और विकास हेतु अपनाता है वह विषयवस्तु को पढ़ाना मात्र नहीं है वरन रिश्तों, प्रक्रियाओं और रणनीतियों की संपूर्ण व्यवस्था है जो अधिगम वृद्धि हेतु निर्मित किये जाते हैं ।

शांति का शिक्षण शिक्षा की बैंकिग मॉडल की परांपरिक शिक्षण पद्धति से अलग है जो शिक्षार्थी से अधिक, विषयवस्तु पर जोर देता है। पॉलो फ्रैरो (1970) द्वारा शिक्षा के बैंकिग मॉडल की अत्यधिक आलोचना की गई जो अध्यापक को विद्यार्थी के ज्ञान का मुख्य स्रोत के रुप में केंद्रित करता है । विद्यार्थी खाली बर्तनों की भांति हैं जिनमें ज्ञान को भरा जाना है। वर्ष के अंत में एक परीक्षा का आयोजन यह देखने के लिए किया जाता है कि विद्यार्थी ने उसके द्वारा दिये गये कितने ज्ञान को याद रखा। इस प्रकार का मॉडल अध्यापक पर मुख्य ध्यान केन्द्रित रखता है जो आगे खड़ा होता है और बच्चे श्रोता होते हैं जो आदरपूर्ण चुप्पी के साथ अध्यापक को देखते हुये बैठे हैं। शिक्षक तथा विद्यार्थियों के मध्य कम से

कम सम्प्रेषण होता है। शांति का शिक्षण इसके विपरीत, इस दर्शन पर आधारित है कि बच्चे अपनी अवधारणाएँ, कि संसार कैसे कार्य करता है, स्वयं सर्जित करते हैं। हालांकि उनका मस्तिष्क शिक्षित वयस्कों से थोड़ा कम विकसित होता है ।

शिक्षण के दृष्टिकोण तथा शिक्षक के सम्प्रेषण, संबंधों व कक्षा के भीतर व बाहर शिक्षा देने के तरीकों में बदलाव की आवश्यकता है क्योंकि शांति का शिक्षण अन्य विषयों के शिक्षण के समान नहीं है। यह विद्यार्थी को यह सिखाता है कैसे किसी के बारे में विचार, मनन, विवेचनात्मक मूल्यांकन, अपने तथा दूसरों के मूल्यों की सराहना, बेहतर सम्प्रेषण, बेहतर निर्णय लेना और विवाद समाधान का अहिंसक कौशल आदि का प्रयोग किया जाता है जिससे ये अवधारणाँ अन्त में व्यवहारों तथा अन्त: क्रियाओं में व्यक्त हों । ये संज्ञानात्मक स्तर तक ही सीमित नहीं है वरन भावनात्मक तथा व्यवहारिक स्तर तक है। उदाहरण के लिए किसी अवधारणा जैसे सहयोग, की समझ होना ही पर्याप्त नहीं है। अन्तत: यह सुनिश्चित होना चाहिए कि विवादों का सामना करने पर सहयोग आंतरिक स्वभाव के रुप में प्रदर्शित हो। प्रश्न उठता है कि यह कैसे किया जाएगा? शांति संबंधी दृष्टिकोण, मूल्यों तथा कौशलों को विद्यार्थियों द्वारा याद कर विकसित नहीं किया जा सकता और न ही थोपा जा सकता है। ऐसे दृष्टिकोणों तथा मूल्यों को भीतर पैंठने के लिए अनुभवों और अवसरों को प्रदान किया जाना चाहिए जिससे उनको लम्बे समय तक सहेजा जा सके । तभी शिक्षार्थी संचेतना और उत्तरदायित्व के साथ शांति मूल्यों, व्यवहारों और कौशलों पर आधारित चेतना पूर्ण निर्णय ले सकता है। इस प्रकार के शिक्षणा की आवश्यकता पारंपरिक बैंकिग मॉडल से अधिगम को प्रयोगात्मक या प्रतिभागी मॉडल की ओर जाना है।

यह मॉडल मानता है कि, आप क्या पढ़ा रहे है नहीं, वरन आप कैसे पढ़ा रहे है ज्यादा महत्वपूर्ण है और यही शांति हेतु शिक्षा का सार है। इसके अभाव में शांति शिक्षा मात्र एक उत्तरदायित्व बन जाएगा जिसे विद्यालयों द्वारा पूर्ण करने का दावा किया जाएगा, जबकि यह विद्यालय द्वारा संपूर्ण नये तरीके से शिक्षण- अधिगम को अपनाना तथा विद्यार्थियों के साथ होना है। विषयों के बंटवारे और सिलेबस को पूर्ण करने का कठोर नियमबद्धता से ऊपर उठना 'शांति के लिए शिक्षण' है।

शांति के लिए अवरोध

एक ऐसे वातावरण का सृजन जिसमें शांति व्याप्त हो और जहाँ शिक्षण-अधिगम सभी प्रतिभागियों के लिए प्रायोगिक तथा सुखदायी गतिविधि हो, शायद सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है जिसका कोई भी शिक्षक के रुप में सामना करता है। ऐसी कक्षा का निर्माण एक चुनौती है जहाँ सभी बच्चे सीखे और शिक्षक चिड़चिड़ाने और हताशा के बजाय शक्ति महसूस करें। इससे भी अधिक, यह ऐसा वातावरण हो जहाँ बच्चे एक-दूसरे से लड़ने और

हिंसा में व्यस्त रहने की अपेक्षा सीखने की इच्छा करें। शिक्षकों की चिड़चिड़ाहट और विद्यार्थियों की लड़ाइयाँ और अनिच्छा शायद शिक्षक तथा विद्यार्थियों दोनों के असुलझे संघषों और नकारात्मक मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति है। ये संघर्ष और नकरारात्मक मनोवृत्तियाँ शिक्षक एवं विद्यार्थियों दोनों ही के सम्मान को ठेस पहुँचाते हैं। कब एक कक्षा ऐसे स्थान में बदल जाती है जो कि बंधनयुक्त और उबाऊ हो, गहन समझ और चिंतन के अवसर के बिना, जो शांति अन्तर्निहित व्यवहार और कौशलों के सृजन के लिए आवश्यक है? ऐसी ही एक कक्षा को देखें।

शिक्षका कक्षा में प्रवेश करती है। विद्यार्थी एक-दूसरे पर चिल्ला रहे हैं। कुछ पानी पी रहे है, दूसरे हँस या बातें कर रहें हैं। यहाँ सामान्यतया अव्यवस्था है। शिक्षक पहले 10 मिनट उनको बैठने के लिए कहने में व बाकि 30 अनुशासन की सुनिश्चितता में खर्च करती है जिससे अधिगम हो सके। 40 मिनट गश्त लगाने, शिष्टाचार बनाये रखने, उधमियों को डराने के लिए भद्र अनुनय करने के पश्चात समय पूरा हो जाता है, और वह पूरी तरह थक जाती है। जैसे-जैसे दिन आगे बढ़ता है उसका ऊर्जा स्तर नीचे गिरता जाता है और वह चिड़चिड़ी तथा उदासीन हो जाती है। वह एक शिक्षक है और पढ़ाना चाहती है परंतु क्या शिक्षार्थियों को भी सीखने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए?

आज हमारी कक्षायें, शांति संवर्धनकक्ष के स्थान पर संघर्षो का स्थान बन गए हैं। बच्चों के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अन्तरों की बड़ी विभिन्नता जो अनुशासन और उपलब्धियों के लिए उनकी मनोवृत्तियों में परिलक्षित होती हैं, शिक्षकों को चिड़चिड़ाती और असहाय छोड़ देती हैं। यदि कोई शिक्षक कक्षा में वर्ग, जाति और संस्कृति के द्वारा उपजे विरोधों में मध्यस्थता व हल निकालने की इच्छा करें, तो कक्षा के बाहर के कुछ अतिरिक्त विवाद जैसे लड़के-लड़की के संबंधों, अभिवावकों की लापरवाही, ड्रग, हिंसा आदि शिक्षक संकाय को पूरी तरह से निचोड़ लेता है। लड़ाई, उबाऊपन, अनुपस्थिति व संघर्ष आदि के दृश्य, कक्षा में शिक्षकों के निरन्तर प्रयासों के बाद भी बार-बार दिखाई देते है।

इसके अलावा, वहाँ हमेशा अनगिनत दायित्वों की पूर्ति के लिये समय के साथ होड़ लगी होती है। इस परिस्थिति में कोई शांति शिक्षण के लिए समय कैसे निकाल सकता है ? कड़ी वजनी पाठ्यचर्या का बोझ बच्चों को रचनात्मकता तथा अपनी गति एवं सुविधानुसार सीखने में रुकावट डालता है। अध्यापकों पर पाठ्यक्रम को पूरा करने का कक्षादवाब एवं किन्हीं कारणों से जब वे नहीं पढ़ाना चाहते, शिक्षण ऊबाउ तथा नीरस बना देता है।

इसके अतिरिक्त, एक ढाँचागत समय सारणी, शिक्षक को विभिन्न विषयों, श्रेत्रीय भ्रमण आयोजित करने या बच्चों को प्रोजेक्ट कार्य तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न करने और कक्षा में अधिगम तथा समन्वयन से संबंधित प्रयोग करने के अवसर प्रदान नहीं करती है। नाटकीय क्रीड़ाओं, संवाद स्थापित करने तथा सीखने के आनंद को जानने तथा

समझने के बजाय वे शिक्षण के लिए निर्धारित पुस्तकों तथा "ब्लैक बोर्ड" पर लौटना जारी रखते हैं।

विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के मध्य संवाद किये जाने के बजाय कक्षा में एक तरफा, परीक्षा उन्मुख और संकीर्णता से ओतप्रोत मात्र शिक्षक का व्याख्यान रह जाता है। सामान्यत: शिक्षक बाध्य किये जाने वाले तरीकों जैसे- सजा, शब्दिक अपमान, ठप्पा लगाना, अलग करना या विद्यार्थी को कक्षा छोड़कर जाने के लिए कहना आदि पर निर्भर रहते हैं। कभी-कभी निराशा में वे उनकी कमजोरियों या शारीरिक गुणों का मजाक बनाना, अभिवावकों को निशाना बनाना और इससे भी बुरा, शारीरिक हिंसा का रास्ता चुन लेते हैं।

शिक्षक के रुप में हम में से बहुत कक्षा में प्रतिकूल वातावरण होने पर आक्रामक हो जाती हैं। समन्वय स्थापित करने के हमारे श्रेष्ठ प्रयासों के बावजूद हम हिंसक हो जाते हैं शायद शारीरिक रुप से नहीं, परंतु बच्चों के प्रति शब्दों, अशाब्दिक भाव भंगिमा और मनोवृत्तियों से, विशेष कर उनके लिए जो नकारात्मक व्यवहार में लिप्त रहते हैं, या वे जो अनुशासनहीनता के लिए उत्तरदायी है या कम उपलब्धि वाले । जब बच्चे की विद्यालय और घर में सराहना और पहचान की आवश्यकता पूरी नहीं होती तो वे बेचैन और शोर मचाने वाले हो जाते हैं। आक्रामक, ध्यान न देने वाले और आज्ञा न मानने वाले वे होते हैं जिनमें आश्वासन, सकारात्मक फीडबैक और सराहना की जरुरतों की भूख होती है। इस तथ्य को ना समझकर, शिक्षक इन बच्चों को कक्षा की शांति की सबसे बड़ी चुनौती मानते हैं। यदि सकारात्मक रास्ते संतोष नही देते तो नकारात्मक रास्तों को अपनाया जाता है। विद्यार्थी अवचेतन भाव से घर, विद्यालय या सहपाठियों से सीखी गई नकारात्मक गतिविधियों में व्यस्त रहते है, जो उन्हें पहचान की झूठी भावना देती हैं। वे दूसरों पर धौंस जमाने में भी आश्रय पाते है। घर में पत्नी को पीटना या बच्चों को पीटना या दूसरों को पिटते हुए देखना जैसे हिंसा के अनुभव तथा इसके अलावा विद्यालय में शारीरिक प्रताड़ना पाना, इनमें से कुछ किशोरों की ऊर्जा अन्य दिशाओं में अभिव्यक्ति पाती है। इन अनुभवों का अंतिम परिणाम घर और विद्यालय में सबको चौंकाता है जैसा कि बच्चों द्वारा हिंसक कृत्यों की बढ़ती रिपोर्टो से प्रत्यक्ष होता है।

बच्चों से अभिवावकों और शिक्षकों की माँगों और अपेक्षाओं का केन्द्र मुख्यत: उत्कृष्टता पर है, केवल सर्वोत्तम ही सराहे जाते हैं। यह केवल शैक्षिक क्षेत्र ही नहीं वरन खेलों में भी है यह उन्हें सभी गतिविधियों का आनंद लेने की आशाओं पर तुषारापात करती है और उन मनोवृत्तियों और कौशलों के बारे में, जो सफलता और उपलब्धियों को आधार देते है, दिशाविहीन कर देते हैं। परीक्षाओं का भय फुरसत के क्षणों के आनंद को खत्म कर देता है इसके साथ ही, रचनात्मकता और ऊर्जा की पुनर्प्राप्ति को नष्ट कर देता है। किशोर खुशी-खुशी प्रतिद्वन्दी बनना सीख रहे हैं और साथी विद्यार्थियों के प्रति शत्रुता को विभिन्न रुपों से अभिव्यक्त कर, पूर्ण निकास दे रहे हैं। उनमें से कुछ सर्वोत्तम होना चाहते हैं और इस

लक्ष्य को पाने के लिए इतने आक्रामक हो जाते है कि प्रतियोगिता के अलावा कुछ नहीं सोचते। अपने अधिगम को बढ़ाने की दिशा में प्रयासों की वृद्धि के स्थान पर उनहें दूसरों की नकल और पिटाई में ज्यादा आनंद आता है। किसी वजह से, वे अपने लक्ष्यों को पाने में असफल होते हैं तो वे आक्रामकता को स्वयं की ओर, आत्महत्या के रुप में, मोड़ देते हैं या कभी-कभी दूसरों के घोर विरोधी हो जाते हैं। हम यह समझने में असफल रहते हैं कि वे बच्चे जो ऊँचे अंक पाने में, सराहना, पहचान और शिक्षकों का ध्यान पाने में असफल रहते है, जो कि बहुत जरूरी व्यक्तिगत आवश्यकताऐं हैं जिनकी पूर्ति व्यक्ति के आत्म-समान के विकास, स्पष्ट या सुप्त प्रतिभा को चमकाने के लिए अत्याधिक आवश्यक है।

एकत्रित भावात्मक बोझ न केवल छात्र बल्कि शिक्षकों के भीतर भी है। वे स्कूल अधिकारियों, अभिभावकों तथा समुदाय से, समय के दबाव, शिक्षण भार तथा अतिरिक्त उत्तरदायित्वों के कारण अपने प्रयासों की सराहना न पाने पर आत्म सम्मान को कमजोर करते हैं। इन बोझों और तनावों का स्त्रोत परिवार में पैदा होने वाले तनाव हैं जहाँ महिलाओं और बच्चों के प्रति घरेलू हिंसा की जाती है, कार्य में सहयोग नहीं होता, सम्प्रेषण नहीं होता तथा प्रेम और सहयोग नहीं मिलता है। यहीं किस्सा विद्यालयों में भी है जहाँ पाठ्यक्रम के लक्ष्य हेतु अपेक्षाओं के अलावा निश्चित समय का लक्ष्य, विश्राम, मनोरंजन और आत्मभिव्यक्ति के अवसरों की कमी और शिक्षकों के अधिकारों का उल्लंघन होता है। परिणाम स्वरुप, कभी-कभी शिक्षक हताशा अनुभव करते है और उनका व्यवहार न केवल विद्यार्थियों बल्कि सह-शिक्षकों के प्रति भी हिंसक हो जाता है।

आइए बच्चों को प्रभावित करने वाले और शांति की राह में आने वाले मुद्दों को स्पष्ट करें। इनमें से कुछ मसले शांति शिक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अध्यापकों द्वारा बताये गए हैं।

- दबंगई : बच्चों द्वारा अन्य बच्चों का उनकी जाति, प्रतिष्ठा, अभिवावकों के व्यवसायों, धर्म, व्यक्तिगत रूपरंग, अक्षमता और लड़के-लड़कियों के प्रति रूढ़िबद्धता, ऐसी परिस्थिति को जन्म देता है कि वे साथ बैठने और मिलकर समूह में कार्य करने से मना कर देते हैं।
- रैगिंग : शक्तिशाली सहपाठियों द्वारा कुछ बच्चों पर धौंस जमाना।
- पूर्वाग्रह, पक्षपात और दुर्व्यवहार : सामाजिक / समूह सदस्यता के आधार पर नकारना / विरोध, गंभीर शारीरिक चोटें (उदाहरण, दूसरे धार्मिक समूहों के बच्चों के प्रति बैर) ।
- निरंतर अस्वस्थता जो मनोवैज्ञानिक तनाव के कारण भी हो सकती है।
- अन्त: पारिवारिक विरोध
- युवा बच्चों द्वारा नुकसानदायक पदार्थो जैसे सिगरेट और शराब का सेवन
- बच्चों द्वारा विद्यालयी सम्पत्ति की हानि
- कम उपस्थिति

- कक्षाकार्य में अनियमितता
- नियमित ग्रहकार्य न करना, नकल करना
- कम उपलब्धि
- स्वच्छता की कमी
- भीड़ भरे कक्षाकक्ष

इस प्रकार की परेशानियाँ कक्षा में पायी जाती है। हम इनमें से सबसे तात्कालिक समस्याओं को लेते है और अन्य की अवहेलना करते हैं। कम उपलब्धि हमें ध्यान देने पर मजबूर करती है परंतु स्वच्छता की कमी, पूर्वाग्रह, पक्षपात, रुढ़िवादिता, दूसरों का मजाक उड़ाना, दूसरे समूहों का विरोध आदि, का क्या जिनके दूरगामी परिणाम होते हैं। बच्चों के संपूर्ण विकास से संबंधित इन मुद्दों का हल निकालना महत्वपूर्ण है। वे क्या तरीकें हैं जिनसे एक कक्षा, बन्धन युक्त और उबाऊ, गहन समझ और चिंतन को स्थान न देने के बजाय शांति के संवर्धन स्थल में बदल जाए, जहाँ शांति के अनुकूल मनोवृत्तियों और कौशलों का परिवर्धन हो। स्वयं से पूछा जाने वाला प्रासंगिक प्रश्न है - शांति की राह में आने वाली समस्याओं के लिए हमारी मनोवृत्ति और कौशल क्या है ? क्या हमें इन पहलुओं के बारे में चिंता करनी चाहिये ? या साधारण तरीके से ज्ञान और जानकारियों के बोझ को अपने दिमागों में डालने और फिर विद्यार्थियों पर डालने का दायित्व पूरा करना चाहिए? हम अध्यापकों के लिए कक्षा की उत्तेजना और दैनिक माँगों में जकड़ा जाना सरल है। कभी-कभी, हमारे मिशन का उच्च उद्देश्य विवरणों में नष्ट हो जाता है। परंतु, प्रतिदिन के सम्प्रेषणों में छिपे कुछ अवसर अभी भी हैं। ऐसी समस्याओं को हल करने के कुछ सकारात्मक रास्ते हो सकते है जो कक्षा में अक्सर पाये जाते हैं। कुछ वैकल्पिक रास्ते भी है जो कक्षा को शांति का पोषण करने वाले स्थान में बदल दें। इसके लिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम स्वयं को उस महान जिम्मेदारी का स्मरण कराये जिसका हम पर दायित्व है, और वह शक्तिशाली प्रभाव जो हम विद्यार्थियों के जीवन और भविष्य पर डाल सकते है।

शांति हेतु शिक्षणशास्त्र हमें हमारे दोषों, और शिक्षण के आदतन तरीकों को देखना कि शिक्षण का क्या तात्पर्य है, हम क्या और कैसे पढ़ाते है और जो हम सिखाते है उसमें क्या मूल्य है आदि पर प्रश्न करना याद दिलाते है। शांति शिक्षणशास्त्र का क्या अर्थ है इसका भाव पाने के लिए, आइए हम एक शांतिपूर्ण कक्षाकक्ष की परिकल्पना करें।

शांति पूर्ण कक्षा की परिकल्पना

कल्पना करें

अपनी आँखें बंद करें और साँसो पर ध्यान केन्द्रित करें। अब, अपनी बंद आँखों से कक्षा में अपने विद्यार्थियों के बारे में कल्पना करें। उनमें से प्रत्येक के विषय में एक असाधारण व्यक्ति के रुप में विचार करें जिसमें प्रस्तुत करने के लिए कुछ विशिष्ट है। अब, उनके मुस्कुराते चेहरों, चमकती आँखों और जिज्ञासु ह्दयों के बारे में सोचें। एक कक्षा की कल्पना

करें जो यह परिदृश्य दर्शा रहा होगा।
इस परिवेश में विद्यार्थी एक-दूसरे और शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार कर रहे होंगे?
वे किस प्रकार की मनोवृत्तियाँ दर्शा रहे होंगे?

एक शांतिपूर्ण कक्षा में आवश्यक नहीं कि बढ़िया, सुसज्जित, रंगबिरंगे कक्ष, बढ़िया कपड़े पहने विद्यार्थी हो जो शांति से अपनी पुस्तकों में झुके हो। हाँ, भौतिक स्थल महत्वपूर्ण है परंतु इससे अधिक महत्वपूर्ण शायद स्वच्छता, स्थान की व्यवस्था और सबसे ऊपर, अधिगम कार्यो में सक्रियता से व्यस्त बच्चों से भरा हुआ स्थान है। ऐसा कक्षाकक्ष गतिविधियों, समूह कार्यों, खुशियों और व्यवस्था से सरोबार होगा।

पहली और सबसे जरुरी है कि ये अ-हिसंक कक्षाकक्ष होगा। जैसा हमने पहले भी कहा, हिंसा केवल शारीरिक ही नहीं वरन मनोवृत्ति और मूल्य भी हिंसक हो सकते हैं। अत: यह कक्षाकक्ष ऐसी मनोवृत्तियों, मूल्यों और व्यवहारों से युक्त होगा जो हिंसा को कोई स्थान न दे सके। बच्चे उकसाने के बावजूद एक-दूसरे के लिए पीड़ादायक या अभद्र शब्दों का सहारा नहीं लेंगे। वे सहपाठियों के मध्य मतभेद होने पर हस्तक्षेप करेंगे, वे प्रतिभाग न करते हुए मध्यस्थता और सहायता करेंगे न कि दर्शक के रुप में मात्र देखें या उकसायेंगे। बच्चों को सहमित्रों द्वारा आगे किया जाएगा या समर्थन दिया जाएगा ना कि इच्छा से पीछे/अकेले छोड़ दिया जाएगा । आक्रमक बच्चों की अवहेलना या सुधार किया जाएगा। यहाँ विभिन्न प्रकार के बच्चों की एक-दूसरे से मिलने की संभावना होगी बजाय क्षमता, जाति, असमर्थता के आधार पर बाहर किये जाने के। बच्चे एक-दूसरे को उनके लिंग, असमर्थता व धर्म के कारण पीड़ा, शारीरिक प्रताड़ना, क्रूरता या भेदभाव नहीं करेंगे।

शांतिपूर्ण कक्षा का गुण सभी का सम्मिलित तथा सहभागी होना होगा। बच्चे सीखने के इच्छुक होंगे न केवल तीक्ष्ण बुद्धि वाले बल्कि वे भी जो अलग-अलग, शांत और शर्मीले हो। विलग तथा हाशिये के बच्चे जो असुरक्षित और भयभीत होते है, हालांकि वे कभी-कभी आक्रमक प्रतीत हो सकते है। हाशियों पर पाये जाने वाले बच्चों के साथ संवेदनशीलता जताना कभी-कभी उन्हे कम विरोधी व कम अलग-थलग और इच्छा से दूसरे से जुड़ने वाला बनाता है। शांति शिक्षण शास्त्र का मुख्य बिंदु यह है कि सबकी सहभागिता हो, विशेष रुप से उनकी जो, सामाज के हाशिये पर पाये जाने वाले वर्ग से जुड़ाव के कारण, या असमर्थता के कारण असुरक्षित महसूस करते हैं।

शांति पूर्ण कक्षाकक्ष वे स्थान है जो सबको आनंद पूर्वक सीखने के अवसर प्रदान करता है। कार्य के साथ उत्सुकता और सक्रिय सहभागिता की प्रक्रिया में चुनौती का तत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हालांकि, चुनौती बच्चों की पहुँच के भीतर होनी चाहिए। एक बच्चें के लिए जो चुनौतीपूर्ण हो वह उसी कक्षा के अन्य बच्चे या शीघ्रता से सीखने वाले बच्चे के लिए आसान या अरुचिपूर्ण हो सकता है, यहाँ तक कि किसी अन्य के लिए दुर्गम या महत्वहीन हो सकता है। जब तेज, धीमे या मध्यम गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों सभी के सरोकारों

का ध्यान रखा जाए, तो वे प्रश्न करने, पूछने, वाद विवाद चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित तथा अभिप्रेरित होते है या शिक्षक के सहारे और प्रोत्साहन से नये विचारों का सृजन करते हैं और सीखना आनंददायी तथा तनावमुक्त होता है। आनंद और सीखने की खुशी सबको इसलिए नहीं होती कि शिक्षिका ने अतिरिक्त समय दिया बल्कि इसलिए कि उसने सबकी सहभागिता सुनिश्चित की, कक्षा में विद्यार्थियों के साथ व्यवहार में विकल्पों का प्रयोग जिससे शिक्षिका को भी तनावमुक्त रहने और विद्यार्थियों पर ध्यान देने का मौका मिला ।

आइये शांतिपूर्ण कक्षा के एक अन्य गुण को देखें, विद्यार्थी अपने कार्यों का उत्तरदायित्व लेते हैं। उनमें दूसरों पर दोष डालने की प्रवृति विकसित नहीं होती, इसके बजाय वे दूसरों के लिए या उनके पक्ष में कार्य करते हैं। यहाँ ऐसा प्रभावपूर्ण वातावरण होगा जो गलतियों के लिए भावात्मक रुप से सुरक्षित है। ऐसे भावात्मक रुप से सुरक्षित कक्षा में, विद्यार्थी खुलेंगे, सोचेंगें, पहचानेंगे और चिंतन करेंगे। यह बाह्य नियंत्रण को रोकेगा और विद्यार्थियों का भीतर से पोषित करेगा। जब विद्यार्थी चिंतन करेंगे, गलतियों पर हँसी उड़ाना या शर्मिन्दा किया जाना नहीं होगा तो वे सीखने के लिए अभिप्रेरित होंगे और असफल होने पर पुन: प्रयास करेंगे । चुनौतियों का सामना करने व सुलझाने का आत्मविश्वास बढ़ेगा। अत: प्रत्येक विद्यार्थी अपनी प्रगति का उत्तरदायित्व लेगा। उत्तरदायित्व की समझ एक ऐसी मनोवृत्ति है जो पीड़ा की भावना के स्थान पर उद्देश्य का भाव महसूस कराती है। यह बोध गलतियों या परेशानियों से भागने के स्थान पर सक्रियता को प्रोत्साहन देता है। स्व-उतरदायित्व पूछताछ, खोजबीन प्रश्न करने, वाद विवाद, प्रयोगों और चिंतन संबंधी गतिविधियों का आरंभ करने व सक्रियता को प्रोत्साहित करता है, और समस्याओं व संघर्षों के समाधान हेतु विचारों, दृष्टिकोणों और विकल्पों की ओर ले जाता है।

शांतिपूर्ण कक्षा में, बच्चे सहयोगी होते हैं। वे अपने लक्ष्यों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की स्वस्थ रणनीतियों के लिए सहयोग के महत्व के प्रति जागरुक होते हैं, वे स्वयं को बेहतर बनाने के लिए एक-दूसरे से सहयोग कर सकते हैं। सहयोग की इस भावना का उदय स्वयं अपने स्व, उसकी क्षमताओं और कमियों की समझ व स्वीकार्यता से होता है। स्व की स्वीकार्यता आसान होती है, क्योंकि वे क्या है, किस वर्ग, जाति या संस्कृति या वे विषयों या अन्य क्षेत्रों में क्या करने में सक्षम है, इन सबके लिए उन्हें अध्यापक द्वारा रुखे कटाक्षों, या हंसी या सजा का पात्र नहीं बनाया जाता है। वे सभी प्रतिस्पर्धियों के स्थान पर एक दल के रुप में बेहतर कार्य करने में सक्षम हैं।

शांतिपूर्ण कक्षा में, बच्चे एक-दूसरे के प्रति स्नेहिल होते हैं और एक-दूसरे की परेशानियों को बांटते हैं, एक दूसरे की मदद करते है तथा मिलकर समस्याओं का हल निकालते हैं। क्षमता, उपलब्धियों, कौशलों, जाति, वर्ग या किसी अन्य विशेषता के कारण अलगाव या भेदभाव नहीं होता। प्रत्येक कक्षा प्रक्रियाओं-चर्चा, वाद विवाद में प्रतिभाग करता है। सभी, सफल और असफल, उपलब्धि पाने या न पाने वालों के साथ समान व्यवहार होता है और किसी को भी

असफल घोषित नहीं किया जाता है। आनंद और मजा, प्रतियोगिता तथा कड़ुवाहट का स्थान लेते हैं। शांति पूर्ण कक्षा क्षमता के स्वं के स्तर को पाने पर जोर देते है ना कि विद्यार्थियों को श्रेणीबद्ध करने के। अत: सभी आगे की ओर देखते हैं और अपने-अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु कार्य करते हैं क्योंकि वे स्वयं से प्रतिस्पर्धा करते हैं।

शांतिपूर्ण कक्षा में सांस्कृतिक विविधता के लिए सम्मान होता है। शांतिपूर्ण कक्षा ऐसा स्थान है जहाँ बच्चों द्वारा प्रशंसा करना तथा विभिन्नताओं का सामना करना सीखा जाता है तथा उनकी पृष्ठभूमि को नकारा नहीं जाता। ऐसे कक्षा में मुद्दों पर बहस और चर्चा होती है और बिना किसी को अलग महसूस कराने या अस्वीकार करने के धर्म, क्षेत्रवाद, भाषाई मसलों पर जानकारियों का साँझा किया जाता है। सभी की पहचान बनाये रखने के लिए विश्वास और स्वीकार्यता के लिए प्रयास होते है, तब भी जब कक्षा में मात्र एक बच्चा किसी धर्म या संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रहा हो, उसे सभी सामूहिक गतिविधियों में प्रतिभाग करने का अवसर दिया जाता है। ऐसी कक्षा में सभी वर्गो के चित्र, प्रतीक, प्रार्थनाएँ रखी होंगी और विविध प्रकार के समूह प्रार्थना में भाग लेंगे। अपने विश्वास, संस्कृति और अस्तितव की पहचान और स्वीकार्यता देखकर प्रत्येक समूह का हिस्सा होगा।

ऐसे कक्षा के निर्माण का यह अर्थ नही कि कक्षाओं की सामान्य परेशानियाँ समाप्त हो गयी। परंतु इसका अर्थ है कि शिक्षकों ने चुनौती को स्वीकार किया, ऐसे मुद्दों के अहिंसक तथा सकारात्मक तरीकें से हल खोजने के प्रयास किये। शिक्षक के महत्वपूर्ण स्थान के कारण कक्षा में उनकी मनोवृत्तियाँ तथा कार्य करने की शैली एक ऐसा वातावरण सृजित करती है जो शांति हेतु कक्षा के सहज वातावरण को सुनिश्चित करता हैं।

शांति शिक्षक बनना

शांतिपूर्ण कक्षा का सृजन ऐसे शिक्षकों द्वारा होता हैं जो संवेदनशील और उत्सुक हो, जिनमें दृढ़ विश्वास हो और वे ऐसे अपनी मनोवृत्तियों और कौशलों के तथा सम्बधों को महत्व देने के कारण होते हैं ।

सम्बन्ध

सम्बन्ध मानवों के पारस्पारिक क्रियाओं का अपारिहार्य परिणाम है । सम्बन्ध, विभिन्न सन्दर्भो और विभिन्न कालों में सहायक या अवरोधक या दोनों, हो सकते हैं । शोध बताते है कि जानने और अधिगम में बाध्य सम्बन्ध है । शिक्षण अधिगम के दौरान शिक्षकों और विद्यार्थियों के संबंधों का शांति शिक्षण पर संभावित प्रभाव अवश्य पड़ता है । विद्यार्थियों के संबधों का प्रभाव उनकी स्वयं की कल्पना तथा उनके अधिगम पर पढ़ता है और पाठ्यचर्या की विषयवस्तु का ज्ञान, अध्यापकों तथा कक्षा के विद्यार्थियों के साथ संबंधों से धनिष्ठता से जुड़ा होता हैं । जहॉ शिक्षक विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संबध स्थापित करने में असमर्थ होते हैं, वहॉ अधिगम का विकास उनमें और उनके विद्यार्थियों में अवरूद्व हो जाता है ।

गिनट (1972) ने अपनी उत्कृष्ट पुस्तक ' शिक्षक और बच्चा' में एक शिक्षक की शक्ति का वर्णन किया हैं " मैं भयभीत कर देने वाले निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मै कक्षा में निर्णायक तत्व हूँ । यह मेरी व्यक्तिगत पहुँच है जो कक्षा के वातावरण का सृजन करती है । यह मेरी दैनिक मनोदशा है जो कक्षा के मौसम का निर्माण करती है एक अध्यापक के रूप में मेरे पास एक बच्चें के जीवन को दुखद या सुखद बनाने की जबरदस्त ताकत है । मैं यत्रंणा का एक औजार या अन्त:प्रेरणा का एक बाध्य हो सकता हूँ ।मै अपमान या हास्य, पीड़ा या स्वास्थ्य को जन्म दे सकता हूँ । सभी परिस्थितियों में यह मेरी प्रतिक्रिया होगी जो यह सुनिश्चित करेगी कि कोई संकटमय परिस्थिति तीव्र या कम होगी या एक बच्चा मानवीय या अमानवीय होगा" । (PP 15-16)

क्यों कुछ बच्चे खुशी अनुभव करते हैं जब उन्हें विद्यालय नहीं जाना होता । यह उनके कक्षा तथा विद्यालय में मुख्यत: उनके नकारात्मक अनुभवों के कारण होता हैं, ऐसा नहीं है कि कोई शिक्षक जान बूझकर विद्यार्थियों के साथ अपने सम्बन्धों को समाप्त करें । यह अक्सर विद्यार्थियों की उपलब्धियों और परीक्षाओं के परिणामों के उत्तरदायित्व के प्रति दबाव और व्यथा के कारण होता है । ये दबाव शिक्षक द्वारा बच्चों के संपूर्ण विकास की संभावनाओं को सकीर्ण कर देते है और शिक्षक विद्यार्थी के सम्बन्धों के आधार को बदल देते हैं । शांति शिक्षण शास्त्र में हमें अपने और विद्यार्थियों के सम्बन्धों को एक बार पुन: देखने की

आवश्यकता है । ऐसा नही कि विषयवस्तु महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु शांति हेतु शिक्षण शास्त्र कक्षा में सम्बद्वता को महत्वपूर्ण स्थान देता है क्योकि हमारे विद्यालय और कक्षाए, सम्बन्धों को प्राथमिकता नहीं देते । दूसरी ओर शिक्षार्थी का विषय सम्बन्धी बोध शिक्षक के व्यवहार और उनसे सम्बन्धों से प्रभावित होता है बजाय इसके कि वे उस विषय में क्या सीख रहे हैं ।

कोई भी पीछे मुड़कर प्रतिभाशाली अध्यापकों को प्रंशसा के साथ देखता है परन्तु जिन्होनें उनकी भावनाओं को छुआ हो उन्हें कृतज्ञता के साथ देखता है । पाठ्यचर्या नये पदार्थो के समान अत्याधिक आवश्यक है परन्तु कार्ल जगं के अनुसार प्रेम की गर्माहट बढ़ते पौधों और बच्चों की आत्मा के लिए अनिवार्य तत्व है ।

कार्ल यूंग

यदि हम अपने विद्यालयी दिनों को मुडकर देखें, हमें दयालु और विवेकपूर्ण शिक्षकों को याद कर सकते हैं । क्या पढ़ाया गया शायद हमें याद ना आये । यहॉ एक विद्यालय के छात्र

द्वारा अपने विद्यालय दिवसों के संस्मरण दिये गये है । “मेरे गणित के अध्यापक ने शीघ्र ही गणित पढ़ाने के प्रयास छोड़ दिये । मैने एक भी परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की । अध्यापक को किसी प्रकार जानकारी प्राप्त हुई कि मैं विद्यालय पत्रिका हेतु लिख सकता हूँ । जिस विशेष कहानी को मुझे लिखने के लिए दिया गया, इससे पहले कि मै लिख सकूं मुझे बहुत खोज बीन करनी पड़ी । मैं बहुत शर्मीला, गैर मिलनसार और चिन्तित था । यहाॅ, मेरे अध्यापक ने मुझे विश्वास दिलाया कि मै सीख सकता हूँ । अध्यापक मेरी सीमाओं को स्वीकार कर सका । मैं अपने अघ्यापक पर विश्वास करने लगा । जब मैं स्वयं अपने लिए भविष्य को नहीं देख सका, मेरे अध्यापक ने बताया कि वह मेरा भविष्य है। ”

ऊपर दिया गया विवरण एक शिक्षक के बारे में है जो गणित भली भाॅति जानता था । परन्तु एक शिक्षक के रूप में वह अपने जॉब विवरण में बँधा नहीं था वरन पूछ रहा था कि यह छात्र कौन है, और कैसे इसकी शक्तियों को पोषित किया जा सकता है ? विद्यार्थी को लेखन की ओर दिशा दी गई । बाद में, वह विद्यार्थी एक प्रतिष्ठित रचनात्मक लेखक बना । इस अध्यापक पर भी हममें से अधिकतर लोगों की भाॅति ही, जो पढ़ाते हैं, अपने प्रशिक्षण और विद्यालय को संचालित करने वाली नीतियों के कारण उत्पन्न अपेक्षाओं के अनुकूल करने हेतु दबाव था । यह कितना आसान होता कि मात्र गणित पढ़ाया जाता और विद्यार्थी पर अतिरिक्त समय और ऊर्जा न लगाई जाती । वास्तव में एक बच्चें को पढ़ाने के लिए अलग प्रकार से पढ़ाने का साहस चाहिए ।

विषय सामग्री और विधियों से न बंधकर, एक शांति शिक्षक वह है जो महसूस करे कि उसका व्यवहार कोई खास विषय पढ़ाना नहीं वरन बच्चें को पढ़ाना है ।

अज्ञात

अध्यापक हालांकि, उम्र, अनुभव, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, लिंग, वैवाहिक स्थिति, विषय, विशेषज्ञता बुद्विमता, प्रकृति और स्व प्रत्यय में भिन्न होते हैं । जिन विद्यालयों में वे कार्यरत होते है और जिन विद्यार्थियों के समूहों को वे पढ़ाते है वे भी भिन्न –भिन्न होते हैं । बच्चे अपने साथ अपने परिवारों से मनोवृत्तियों और मूल्यों के दिशा निर्धारण के साथ आते हैं । ये सभी अन्तर उन्हें विद्यार्थियों के साथ सम्बन्धों की विभिन्न शैलियों की ओर ले जाते हैं । आइए अब हम शिक्षकों के कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों के सम्प्रेषण के बोध की ओर चले ।

कुछ अध्यापक बेहद सख्त तथा नियमनिष्ठ होते हैं और यहाॅ तक कि थोड़ा सा शोर अवरोध भी उन्हें आक्रमक स्वरूप में बदलने के लिए पर्याप्त होता है । वे बिना जाॅच किये ही उसे मार देते है जो उन्हें शैतानी में शामिल लगता है । कुछ ऐसे भी होते है जो केवल स्वयं को आश्वस्त करना चाहते हैं, विद्यार्थियों से अन्य अध्यापकों के विषय में प्रश्न करते रहते है और उनसे अपनी तुलना करते हैं । वे जानना चाहते है कि वे क्या कर रहें हैं और कैसे शिक्षण कर रहे हैं ।

कुछ शिक्षक विद्यार्थियों के साथ ज्यादा करीब और व्यक्तिगत होने में असुविधा महसूस करते हैं । ऐसे ही एक शिक्षक कहते हैं , " मै विद्यार्थियों के साथ करीबी सम्प्रेषण रखना पसन्द करूंगा परन्तु मैं अपने में यह कौशल नहीं पाता हूँ । जिस क्षण बच्चें निजता प्रदर्शित करने लगते हैं मै उन परिस्थितियों को टाल देता हूँ" । इसका सामना करने में मैं असहज हो जाता हूँ, हालांकि मैं जानता हूँ कि विद्यार्थियों के लिए यह बेहतर है । कुछ अध्यापकों की कक्षा में विद्यार्थियों के साथ सम्प्रेषण की अवधारणा आगे दी गई हैं :

- एक शिक्षिका को अपने सम्बधों का बोध मित्रता से अधिक मातृत्व का होता है । वह कहती है "जब मै कक्षा में प्रवेश कराती हूँ मुझे वे अपने बच्चों जैसे महसूस होते हैं और मैं उन पर मातृत्व स्नेह प्रदर्शित करती हूँ । मै नही जानती मैं कितनी सफल हूँ परन्तु मैं चाहती हूँ कि वे अच्छा व्यवहार करें और सब कुछ भंली प्रकार से सीखें" ।
- जबकि अन्य अध्यापिका कहती है, " मै अन्ध-आज्ञाकारिता नहीं चाहती । मैं एक निर्देशक की भाँति उनकी सहायता कर सकती हूँ । मैं नही चाहती कि विद्यार्थी भयभीत हो ।"
- जबकि अन्य अध्यापिका कहती है "मै दयालुता के साथ व्यवहार में विश्वास करती हूँ । यदि एक विद्यार्थी कहता है कि मै बीमार हूँ । तो मै उसे अगले दिन कार्य पूर्ण करने की आज्ञा दे देती हूँ । परन्तु कक्षा के भीतर विद्यार्थियों को पूरा घ्यान देना होगा । यदि मैं उनके साथ सख्त हूँ , यह बिना विचार नहीं होता बल्कि मैं उनको विश्वास दिलाती हूँ कि अनुशासन उनके लिए बेहतर है, और यह भी कि अनुशासित रह कर वे मुझ पर अहसान नहीं कर रहे हैं ।

किसी भी अध्यापक की सबसे महत्वपूर्ण योग्यता अन्तत: दयालुता और स्नेहमय होना है । कैसे शिक्षण के दौरान एक शिक्षक स्नेहमय और देखभाल करने वाला हो, शांति शिक्षण शास्त्र इसकी व्याख्या करता है ।

व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करना

शिक्षक के विश्वास और तरीके कक्षा में पाये जाने वाली शिक्षाशास्त्रीय रणनीतियों और संस्कृति को निश्चित करते हैं । एक शिक्षक के रूप में हम मनोवृत्तियों और मूल्यों को स्थापित करते है चाहे हम करना चाहे या ना हम करना चाहें । हम मूल्यों को सम्प्रेषण करते हैं जब हम एक दूसरे से, विद्यार्थियों से, या दूसरों से सम्बन्ध स्थापित करते हैं । अत:

हमें एक शिक्षक के रूप में, विद्यार्थियों के ऊपर पड़ने वाले हमारे अपने व्यवहार और मनोवृत्तियों के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता है । यदि हम जो कहते और करते हैं, के मध्य अतंर होगा तो अवचेतन भाव से विद्यार्थी जो हम करते हैं हुबहू वैसा करेगें, न की जैसा हम कहते है ।

विद्यार्थी, चाहे वे विद्रोही हो या अध्ययनशील, अच्छे व्यवहार वाले हो या नहीं, अवचेतन रूप से व्यस्क अभिवावकों, शिक्षकों तथा अन्य, जो उनके चारों ओर होते है की नकल करते है और आदर्श मानते हैं । यदि घर में उचित वातावरण नहीं मिल रहा हो तो शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार बच्चों को शांतिपूर्ण तरीके अपनाने के लिए बहुत विशिष्ठ योगदान देता है । यह तत्काल दिखाई नहीं देता परन्तु अधिगम जारी है । अत: ये बहुत महत्वपूर्ण है कि हम सचेत रहे कि कैसा व्यवहार हम प्रदर्शित कर रहे है जो कि विद्यार्थियों द्वारा नकल किया जायगा । उदाहरण के लिए, हम दो विद्यार्थियों के मध्य प्रताड़ना, लडाई या अन्य संघर्ष देखते हैं । शांति के लिए हम दोनों के तमाचा मारते हैं जिससे हम अपना शिक्षण जारी रख सकें । उदाहरण के लिए, यह कहने के बजाय कि " दूसरों का सम्मान करो, " यह ज्यादा महत्वपूर्ण होगा कि शिक्षिका अपने व्यवहार से कक्षा में और बाहर इसका प्रदर्शन करें, और विद्यार्थियों को सम्मान की स्वयं अपनी समझ बनाने में सहायता करें । यदि उनमें स्व नियन्त्रण है और क्रोध प्रदर्शित नहीं करती हैं , बल्कि सभी परिस्थितियों में शांत तथा अविचिलित रहती है वह धैर्य, सहनशीलता, शान्तिशीलता और शान्ति के मूल्यों को प्रदर्शित और प्रतिस्थापित करती है । यदि वह ज्यादा से ज्यादा सीखने में रूचि लेती है और जो कुछ वह है या जानती हैं से संतुष्ट नहीं है, वह विद्यार्थियों को उन्नति के लिए प्रोत्साहित करती है । यदि वह विद्यार्थियों के ऊपर अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित नहीं करती ना ही किसी एक या दूसरे के प्रति कोई पसंद या लगाव प्रदर्शित करती है, वह विषयपरकता और समानता प्रदर्शित करती है । यदि शिक्षिका का स्वयं के ऊपर नियन्त्रण नहीं होगा, तो कैसे वह किसी अन्य से नियन्त्रण की अपेक्षा कर सकती है ? बच्चों से प्रहार तथा तमाचों के साथ व्यवहार करना, समस्या समाधान के लिए आक्रामकता तथा हिंसा के प्रयोग को दर्शाता है । यह विशेष रूप से हमारी सस्कृति के लिए सत्य है जहॉ विश्वास किया जाता है कि सम्पूर्ण ज्ञान और बुद्विमता अध्यापक द्वारा प्रकट होती है ।

निम्नलिखित कविता इस संदेश को प्रदर्शित करती है ।

बच्चे जैसा सीखते हैं वैसा जीवन जीते हैं

यदि बच्चें आलोचना के साथ जीते हैं, वे निन्दा करना सीखते हैं ।
यदि बच्चें शत्रुता के साथ जीते हैं, वे लड़ना सीखते हैं,
यदि बच्चें भय के साथ जीते हैं, वे आशंकित होना सीखते है ।
यदि बच्चें दया के साथ जीते हैं, वे स्वयं के लिए दुखी महसूस करते हैं ।
यदि बच्चें उपहास के साथ जीते हैं, वे शर्म महसूस करना सीखते हैं ।
यदि बच्चें ईर्ष्या के साथ जीते हैं, वे जलन महसूस करना सीखते हैं ।

यदि बच्चें शर्म के साथ जीते हैं, वे अपराधी महसूस करना सीखते हैं ।
यदि बच्चें प्रोत्साहन के साथ जीते हैं, वे आत्मविश्वास सीखते हैं ।
यदि बच्चें उदारता के साथ जीते हैं, वे धैर्य सीखते हैं ।
यदि बच्चें प्रशंसा के साथ जीते हैं, वे सराहना करना सीखते हैं ।
यदि बच्चें स्वीकार्यता के साथ जीते हैं, वे प्यार करना सीखते हैं ।
यदि बच्चें अनुमोदन के साथ जीते हैं, वे स्वयं को पसंद करना सीखते हैं ।
यदि बच्चें कद्रदानी के साथ जीते हैं, वे लक्ष्य होना अच्छा है, सीखते हैं ।
यदि बच्चें साँझेदारी के साथ जीते हैं, वे उदारता सीखते हैं ।
यदि बच्चें ईमानदारी के साथ जीते हैं, वे सत्यता सीखते हैं ।
यदि बच्चें औचित्य के साथ जीते हैं, वे न्याय सीखते हैं ।
यदि बच्चें भद्रता और मुलाहिज के साथ जीते हैं, वे सम्मान सीखते हैं ।
यदि बच्चें सुरक्षा के साथ जीते हैं, वे स्वयं अपने पर और
जो उनके चारों ओर हैं उन पर विश्वास करना सीखते हैं
यदि बच्चें मित्रता के साथ जीते हैं, वे सीखते हैं कि जिस संसार में उन्हें रहना है वो एक अच्छा स्थान हैं ।
(स्त्रोत http:www.empowerment resources.com/info2/childrenlelarn.html)

कक्षा में दैनिक शिक्षण के दौरान ऐसे व्यवहारों के निरूपण के विस्तृत अवसर हैं, जो सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण परिवेश का पोषण करता है । यदि शिक्षक 'धन्यवाद' या 'कृपया' या 'मुझे खुशी है' आदि कहती है, विद्यार्थी सीखते है कि ऐसी टिप्पणियाँ हर्ष उत्पन्न करती है जबकि एक रूखा मौन नापसंदगी दर्शाता है । जैसा कि ऊपर कविता में दिया गया है, शांतिपूर्ण या आक्रामक, विचारपूर्ण या पशुतापूर्ण और लचीला या सख्त व्यवहार दर्शा कर शिक्षक ऐसे व्यवहारों का प्रतिमान बनता है ।
शिक्षकों की सुनने और संवाद के कौशल ऐसे व्यवहारों के आदर्शो के लिए निर्णायक होते हैं । इन कौशलों को आगे दिया गया है ।

श्रवण और सम्प्रेषण कौशल

मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाने तथा शिक्षार्थियों की रूचि बनाये रखने के लिए सम्प्रेषण कौशल अत्यन्त महत्वपूर्ण है । सम्प्रेषण एक दो तरफा प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के मध्य संवाद शामिल है । शिक्षक और छात्र या अभिवावक और बच्चें या अन्य कँहीं भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विचारों का आदान-प्रदान सम्मिलित होता है । शिक्षण अधिगम के दौरान शिक्षक सोच सकते हैं कि उन्होने पढ़ा दिया है परन्तु जब तक वे बच्चें ने क्या सीखा, इस पर फीडबैक नहीं लेगें, शिक्षण प्रकिया अधूरी रहेगी । अधिकतर दूसरे ने क्या सीखा, इस पर निर्भर करता है कि उसने क्या सुना । श्रवण कौशल सम्प्रेषण का एक अत्यन्त महत्वपूर्णपक्ष है । हालांकि श्रवण सम्प्रेषण का मात्र एक पक्ष है । विद्यालयों, घरों

और बहुत से अन्य स्थानों पर, हम बहुत से सन्देश, न्यूज आइटम और निर्देश पढ़ते हैं । यह सुनना बहुत सामान्य है, 'ओह, मैने सोचा इसका मतलब ------------ ' । संदेशों को सम्पूर्णता के साथ आदान प्रदान किया जाना और उन पर अर्थपूर्ण प्रतिक्रिया देना एक कौशल है जिसकी आवश्यकता शिक्षक को सम्प्रेषण आरम्भ करने, उसे बनाये रखने और सम्बन्धों की प्रगाढ़ता के लिए विश्वास विकसित करने के लिए किया जाता है । जिसके बिना कक्षा में किसी भी प्रकार का गंभीर शिक्षण अधिगम नहीं हो सकता है ।

अधिकाशं समय शिक्षक तथा अभिवावक के रूप में, हमें विद्यार्थियों को सुनना होता है परन्तु वास्तव में हम उन्हें सुन नहीं रहे होते है या उनके बोले गये शब्दों को ग्रहण नहीं कर रहे होते है हालांकि यह सामान्यत: होता है कि हम बामुश्किल एक दूसरे को सुनते हैं । हमें सुनने और ध्यान से सुनने में अंतर करना होगा । विशेष रूप से शिक्षक के रूप में, हमारे पास ज्यादा वक्त नही होता, खास तौर पर विद्यार्थियों को सुनने का । हम उनको सुनने का दिखावा करते है परन्तु सक्रिय सुनने में दूसरों को महत्व देना तथा उनसे घुल मिल पाना सम्मिलित है । यह इसलिए नहीं है कि हम ऐसा नहीं चाहते बल्कि दैनिक जीवन के तनाव और हमारी अपनी व्यक्तिगत, कार्यसूची हमें दूसरों को सुनने की स्वतंत्रता और एक दूसरे से बातचीत का आनंद नही लेने देती । इसके बजाय, संदेशों का गलत अर्थ ले लेना बहुत सी गलत फहमियॉ पैदा कर देती हैं । परिणामस्वरूप, विद्यार्थी, हमारे अपने बच्चे और मित्र, भी धीरे-धीरे हमें सुनना बंद कर देते हैं और तब हम प्रतिवाद करते है । कभी कभी यदि हम ध्यान दे भी रहे हो, हम उनकी ओर नहीं देखते। परिणामस्वरूप, संदेश प्राप्त करना और उनसे अर्थ निकाला अपूर्ण रहता है । सक्रिय सुनना स्वस्थ अन्तर्वैयक्ति सम्बन्धों को बनाने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और प्रभावी शिक्षण के लिए आवश्यक भी है ।

हमारे सुनने के कौशल को अप्रभावी बनाने वाली दूसरी कमी 'आंशिक सुनना' है क्योकि हम संदेशों के उन्ही हिस्सों को सुनते है जो हमारी पसंद के हो, हमें उत्तेजित करते है या हमारी रूचि के हो या ज्यादा स्पष्टता के साथ कहें गये हों । कभी कभी, कुछ विषयों में हमारी रूचि होती है और हम केवल उन्ही हिस्सों को सुनते है और संदेश का बाकि हिस्सें घ्यान नहीं देते । हम ऐसे अधूरे संदेशों के आधार पर अपनी प्रतिक्रियाओं का विकास करते हैं और, बाद में, अधूरी जानकारियॉ गलतफहमी उत्पन्न करती हैं ।

इस संदर्भ में, सुनने के सबसे महत्वपूर्ण पक्षों में से एक मौन है । शिक्षक इंटरवल के दौरान बच्चों से बातचीत के दौरान मौन का प्रयोग कर सकते हैं । जब वे बिना कोई राय बनाए उनकी बात सुन सकतें हैं । बच्चों के बारे में पूर्व निर्धारित विचार और धारणाएँ उनको सुनने और समझने में अवरोध उत्पन्न करते हैं । बेहतर समझ के लिए, शिक्षक को एक श्रोता के रूप में, अपने पूर्वाग्रहों को सुनिश्चित करने की कोशिश के बजाय औचित्यपूर्ण स्पष्टता प्रदान करने वाले प्रश्न पूछने चाहिए । सामान्यत: हम दूसरों के दृष्टिकोण को नहीं सुनते । इसके बजाय हम अपने मत को पुष्ट करने का प्रयास करते है । जब हमारे सुनने में समझ की कमी हो तो यह दूसरों को दुख पहुचाती हैं । शिक्षकों के लिए यह समझना आवश्यक है कि

कैसे शाब्दिक संदेश बच्चों को भयभीत, अपमानित, वर्गीकृत और दुखी करते है तथा और अधिक सुनने की उनकी क्षमता को रोकते है ।

अर्थो को समझने में होने वाली गलतियों में इजाफा करने वाला एक पक्ष बिना पूर्वाग्रह और पक्षपात के शाब्दिक वक्तव्यों के साथ साथ अशाब्दिक संकेतों को ना सुनना है । अशाब्दिक संदेश/संकेत सुनने का अर्थ शारीरिक मुद्रा तथा शारीरिक भाषा है । शाब्दिक संदेश अक्सर आशाब्दिक संदेशों का खण्डन करते हैं । उदाहरण के लिए , जब आप एक बच्चे को कहते हुए सुनते है, 'मैने आज परीक्षा की तैयारी नहीं की' आप उस बच्चे के बारे में क्या सोचेगें ? अब, इन शब्दों को बोलते हुए बच्चे के अशाब्दिक भावों को भी सम्मिलित करें । बच्चा रूऑसा और नीची दृष्टि कर के यह बोल रहा है । क्या उन शब्दों के मायने अब भी वही होगें ? एक शिक्षक जिसमें विद्यार्थियों के मतों के लिए धैर्य और सम्मान नहीं हो वह पूर्ण नहीं सुनता होगा। शाब्दिक संदेशों को अक्सर श्रोताओं द्वारा वास्तविकता के बजाय अपने विचारों और विश्वासों को समर्थन देने के लिए सुना जाता है और उनका अर्थ निकाला जाता है ।

प्रतिक्रिया या ध्यान देने का कौशल

प्रभावी श्रवण कौशल के विकास के लिए, हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि सुनते समय कैसे हम दूसरों पर ध्यान दें तथा प्रतिक्रिया करें । प्रतिक्रिया या ध्यान देने के कौशल में सुनते समय यदि संदेश अस्पष्ट या भ्रमित करने वाला प्रतीत हो तो बीच में न टोकना, बिना रायशुमारी के प्रतिक्रिया देना, और खोजने वाले, लचीलापन, समानुभूति तथा उचित प्रश्न पूछना सम्मिलित है ।

स्पष्टीकरण करना

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि अक्सर, व्यस्क के रूप में हम अपनी समझ व निहिताओं को पूर्ण मानते हैं हालांकि सुनने में आमतौर पर गलतियॉ हो जाती हैं । फिर भी स्पष्टीकरण हेतु प्रश्न इस प्रकार पूछ जाए कि वे उदार और निष्कपट हो । उदाहरण के लिए, यह कहने के बजाय कि 'क्या तुम सोचते हो तुम्हें अधिक कठोर परिश्रम करना चाहिए ?' आप कह सकते हैं, आप क्या सोचते है अच्छें प्राप्तांको के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है ?' बाद वाला प्रश्न बच्चों को विचार करने पर बाध्य करेगा कि उसे क्या करने की आवश्यकता है और वह क्या कर सकता है, जबकि पहला प्रश्न सुझावात्मक है और बच्चें को विचार करने का अवसर प्रदान नहीं करता । इसी प्रकार के रायशुमारी प्रवचन, चुनौती और अन्य सहायता न प्रदान करने वाले प्रश्न जो नीचे सारणी में दिये है से यह ज्यादा बेहतर है कि समानुभूति पूर्ण प्रतिक्रिया दें, जिसमें चिंतनपूर्ण प्रतिक्रिया होगी जो बच्चों को चेतनपूर्ण विचार करने में मदद करेगी कि वे क्या कह रहे है । क्योंकि अधिकतर बच्चें विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में स्पष्ट नहीं होते हैं और उनकी प्रतिक्रियायें समझदारीपूर्ण विचार विमर्श के पश्चात नहीं दी जाती । चितंनपूर्ण और समानुभूतिपूर्ण सम्प्रेषण में सम्प्रेषित अभिव्यक्ति के सारांश की यथासंभव सही पुनरावृति की जाती है । उदाहरण के लिए, एक बच्चा क्रोध से

शिक्षिका को कह रहा है ‘ अपने दूसरे बच्चे को कुछ नहीं बोला । आप हमेशा मुझे ही डॉटतें है ।‘ क्रोधपूर्ण प्रतिक्रिया देने के स्थान पर चितंनशील शिक्षक कहते है ’, क्या आप यह कह रहे हो मै दूसरे बच्चे को ज्यादा समर्थन देता हूँ और तुम्हारे विरूद्व हूँ । तुम क्यों सोचते हो कि मैं ऐसा करूंगा ?

ऐसे शब्दों या वाक्यों का प्रयोग जो किसी व्यक्ति को नकारात्मक रूप से जॉचे, उपदेश, चुनौती या मूल्यांकित करें उस व्यक्ति को रक्षात्मक बना देते है और सुनने की प्रक्रिया को रोक देते हैं । सम्प्रेषण के साथ, कुछ अन्य कौशल व रणनीतियॉ भी है जो शांतिपूर्ण कक्षा के निर्माण में सहायता करती हैं । आइये हम देखें वे कौन सी हैं ।

सक्रिय श्रवण में सहायक चरण

- यह जाने के लिए कि वह क्या कह रहें हैं और क्या महसूस कर रहें हैं स्वयं को दूसरे व्यक्ति के स्थान पर रख कर देखें ।

- अशाब्दिक व्यवहार से समझ तथा स्वीकार्यता दर्शायें :
  - आवाज का लहजा
  - चेहरे के भाव
  - चेष्ठाऍ
  - ऑखो का सम्पर्क
  - शारीरिक मुद्रा
- व्यक्ति के सबसे महत्वपूर्ण विचारों तथा भावनाओं को पुन: दोहराऍ ।
- टोकें नहीं, या सलाह न दे या सुझाव न दें या स्वयं अपने अनुभवों से वैसी ही भावनाऍ और समस्याऍ न कहें ।
- किसी का भी पक्ष न लेकर निष्पक्ष रहे ।
- दूसरे व्यक्ति को भली भॉति समझने के लिए खुले प्रश्न करें ।

कक्षा पद्वतियों का विकास

विद्यार्थियों के व्यवहार तथा कृत्यों को कक्षा में दिशा देना शिक्षक के लिए एक चुनौती है । उनके पास विकल्प हैं कि वे विद्यार्थियों के व्यवहार के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करें । विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करने के अनेक तरीके हैं जो प्रश्न की प्रकृति और भावप्रवणता पर निर्भर करते है । विद्यार्थियों के उत्तेजित या विघटनकारी व्यवहार को सभालने के साथ साथ शांति के अनुकूल स्वैच्छिक व्यवहारों का विकास करने के लिए कुछ सामान्य सिद्वांतो, रणनीतियों और कौशलों पर यहॉ विचार किया गया है ।

कक्षा में विद्यार्थियों के अधिकांश व्यवहार को अवांछनीय समझा जाता है यह उनके अनुशासन, व्यवहार और शांति को प्रभावित करता है । इनमें से कुछ व्यवहार प्राकृतिक तथा आयु अनुसार होते है, और बच्चों के विकास के साथ बदल जाते हैं । उदाहरण के लिए छोटी कक्षाओं में बच्चे गतिशील और आवेगपूर्ण होते है और शिक्षक समझते है कि

इस प्रकार की गतिविधियों को भली प्रकार से पहचानने और सही परिवर्तन देने की आवश्यकता है । हालांकि, शिक्षकों द्वारा सामान्य व्यवहारों जैसे, चिल्लाना, नाम पुकारना, धक्का देना, शिकायत करना, दूसरों की मजाक उड़ाना, लड़ना, नियमों का सम्मान न करना और जोर जोर से बात करना आदि के साथ सामान्य प्रतिक्रिया करना कठिन लगता है क्योंकि ये सब कक्षा में शांति तथा अनुशासन बनाये रखने में अवरोध पैदा करते हैं ।

शारीरिक दंड स्कूलों में लंबें समय से चली आ रही एक प्रथा है । हालांकि इसकी गंभीरता तथा अतिशयता वर्तमान में बहुत ज्यादा हो गई है । डेवलपमेंटल मनोवैज्ञानिकों ने सिद्व किया है कि शारीरिक दंड और प्रताड़ना का व्यवहार सहने वाले बच्चों में बड़ों के लिए नकारात्मक या प्रतिकूल व्यवहार तथा असामान्यताॅए भी विकसित हो जाती हैं । किसी बच्चे या किशोर द्वारा शारीरिक हिंसा अनुभव किये जाने पर उसके मन को अत्याधिक हानि पहुँचती है । यह अपमानित करती है और स्व- करूणा और, शर्म का भाव उत्पन्न करती है । सजा के पश्चात मानसिक अवरोध भारी बोझ बन जाते है जिन्हें हटाना आसान नही होता । शारीरिक हानि दिखायी देती है परन्तु बच्चे के व्यक्तिव पर पहुँचे नुकसान को पलटा नहीं जा सकता। बच्चा या तो गैर मिलनसार हो जाता है या दूसरों पर आक्रामकता दिखाता है । उपद्रव करने के कारण आक्रामक बच्चों पर ज्यादा ध्यान जाता है परन्तु जो गैर मिलनसार हो जाते है उनकी स्थिति ज्यादा बुरी हो सकती है । उनमें या तो हीन भावना विकसित हो जाती है । वे असुरक्षित महसूस करते है और स्व का विकास अपर्याप्त होता है जिससे वे अपने सामर्थ्य को नकारते है । हालांकि शिक्षकों के हाथों होने वाली वास्तविक शारीरिक हानि जैसे ऑख की दृष्टि व सुनने की क्षमता की हानि या नाक से खून बहना, हाथ टूटना आदि के बारे में इन दिनों काफी सुना जाता है ।

बाल अधिकारों की समिति, जो संयुक्त राष्ट्रसंघ के बाल अधिकार, तथा प्रबोधक कमेटी की संचालक अंग है, ने दो बार (2000 और 2004) में सभी प्रकार के परिवेश में शारीरिक दंड को रोकने की अनुशंसा की है ।समिति ने स्पष्ट किया है कि हिंसा और अपमानित करने वाली सजाओं को रोकने का अर्थ अच्छे अनुशासन अस्वीकारना नहीं है जो बच्चों को अच्छे व्यवहार की ओर ले जाता है ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के 12 प्रतिशत सदस्य राष्ट्रों 23 देशों ने घर के साथ साथ सभी प्रकार के परिवेशों में शारीरिक दंड को रोक दिया है । शारीरिक दंड को हटाने के लिए सुस्पष्ट कानून की पुर्नरचना और सार्वजनिक अभिभावक शिक्षा कायम रखना होगा । बच्चों के बाल अधिकार को पूर्ण करने हेतु उन पर किये जाने वाले हमलों को भी, व्यस्कों पर हमलों के समान कानून में अपराधिक दोष माना जाए । भले ही वह हमला अनुशासन की आड़ में हो ।

एन. सी. पी. सी. आर को मार्च 2007 में पार्लियामेंट एक्ट (दिसम्बर 2005) के बाल अधिकार सरंक्षण एक्ट कमीशन, 2005 द्वारा निर्धारित किया गया है । इसके आदेश सुनिश्चित करते है कि सभी कानून, नीतियॉ, कार्यक्रम और प्रशासनिक मशीनरी बाल अधिकार परिदृश्य के साथ सामजंस्य रखे, जैसा कि भारत के संविधान तथा बाल अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में कहा गया है ।

कमीशन द्वारा शारीरिक दंड के विरूद्व एक राष्ट्रीय कानून समर्पित अभियान आंरभ किया गया है । इसके द्वारा विद्यालयों में शिक्षकों, अभिवावकों और स्टाफ के बीच शिक्षा, स्वास्थ्य, देखभाल, प्रेम और सम्मान के बाल अधिकार तथा सीखने के भय से मुक्ति पर जागरूकता हेतु दिशा निर्देश दिये गये है । एन. सी. पी. सी. आर की वेबसाइट (ncpcr.gov.in.com) द्वारा कष्टकारी शारीरिक प्रताड़ना थोपने के विरूद्व कानूनी कार्यवाही के विषय में जानकारी प्रदान की जाती है । सम्पूर्ण विश्व इस विषय में एकमत है कि शारीरिक दंड बच्चों के लिए हानिकारक है ।

विद्यार्थियों को नियंत्रित करने हेतु चिल्लाना, थप्पड़ मारना व पीटना सही मायने में अनुशासन नहीं है । कक्षा में अनुशासनहीनता की अवहेलना संभव नहीं हो सकती। परन्तु संयम का अभ्यास और सामान्य प्रतिक्रियाओं को रोककर हमें उन्हें नियंत्रित कर सकते है ।एक अध्यापक क्या करे ? यह वास्तव में विद्यार्थियों से सम्बधित शैली और दर्शन और शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को सिखाने हेतु मूल्यों और व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करता है । यह ऐसे वातावरण में फलता-फूलता है जहॉ अध्यापक उन्हें गरिमा के साथ उत्तर देते हैं, और उनमें विद्यार्थियों के व्यवहार संबंधी वास्तविक अपेक्षाऍ सुनिश्चित करने का कौशल हो । अनुशासन स्थापित करने के लिए शिक्षक द्वारा बहुत से कौशलों का उपयोग किया जा सकता है, जो विद्यार्थियों को उत्तरदायी तथा स्वर्निदेशित करने में मदद करता है ।

अनुशासन स्थापित करने को अनेक महत्वपूर्ण तरीकों में से एक नियमों तथा अपेक्षाओं के संबंध में स्पष्टता प्रदान करना है जिससे विद्यार्थी नियमों का पालन करने में सचेत हो सके । नियमों के अनुसरण संबंधी अप्रत्यक्ष स्मृति बिन्दुओं को बोर्ड पर लगाया जा सकता है या संबंधित पोस्टरों का प्रयोग कर सकते हैं, जिनमें लिखा हो "हम एक दूसरे की बात सुनेंगे, बोलने से पूर्व हम आज्ञा लेंगे, हम दूसरों को सीखने में मदद करेंगे" आदि । नियमों के बनाने में स्वयं विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है । यह उन्हें नियमों के निरीक्षणों के उत्तरदायित्व में सक्षम बनायेगा। सम्पूर्णता में, उत्तरदायित्वों तथा नियमों के निरीक्षणों को सकारात्मकता से बताया जाना श्रेष्ठ है । अशाब्दिक तरीकों या संकेतों का प्रयोग व्यवहार की पुनर्दिशा हेतु एक अन्य भद्र तरीका है ।शरीर की गति, आवाजें या भाव भंगिमाऍ जैसे सीट से उठना, जोर की आवाज से गला साफ करना, आदि कक्षा का ध्यान खींचने में मदद करते हैं । छात्र की ओर जाना तथा उस वस्तु को हटाना जो उसका दूसरी ओर ध्यान

आकर्षित कर रही हो, भी परेशानी को दूर करने व लगातार विद्यार्थी का नाम पुकारने के स्थान पर उपयोग कर सकते हैं । शिक्षक कक्षा के ध्यानाकर्षणों को कम करने हेतु परिस्थितियों की पुनर्व्यवस्था तथा किंचित सीटों में परिवर्तन विद्यार्थियों के समूह निर्माण और नियत कार्यों में बदलाव आदि द्वारा कर सकते हैं । चेतावनी का प्रयोग भी किया जा सकता है परन्तु बार-बार नहीं क्योंकि तब यह अपना मूल्य खो देती है ।

कुल मिलाकर, शिक्षार्थी के अवांछनीय व्यवहार में रमने के कारण को जानने के लिए लचीलापन आवश्यक है । इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार किया जाना है बल्कि विद्यार्थियों में यह समझ विकसित करना कि उनके नकारात्मक व्यवहार, अनचाहे परिणाम दे सकते हैं । शिक्षक के सम्मुख कुछ विकल्प है जैसे हल्की सजा का प्रयोग, जैसे कमरे के कोने में भेज देना, सुविधाएँ न देना, प्वाइंट कम करना या व्यवहार और आदतों में कम स्कोर देना या ज्यादा शिक्षण कार्य देना । यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि उनका प्रयोग विद्यार्थी की प्रगति के ध्यानपूर्वक पुनर्वलोकन के साथ किया जाए । शिक्षक को विद्यार्थी की क्षमताओं को ध्यान में रखना है और वांछनीय व्यवहार की प्रशंसा के अवसर खोजने हैं । एक शांति शिक्षक को प्रतिरोधी या दण्डात्मक नहीं वरन मददगार, शांत और स्थिर होना चाहिए ।

यदि तोड़-फोड़ जैसे व्यवहारों को हल करने के लिए इनमें से कुछ रणनीतियॉ कार्य नहीं करती तो इसके कारणों को देखना और खोजना महत्वपूर्ण है। विद्यालय में विद्यार्थी का व्यवहार और उसके कारण संपूर्णता का मात्र एक हिस्सा है और वह अपने साथ संस्कृति, भाषा, आदतों तथा व्यवहारों की संपति लाते हैं। अत: यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को जानें। उन्हें अपने बारे में और अपनी भावनाओं के बारे में बात करने दें । विद्यार्थियों और उनके जीवन के बारे में जानना और उनको यह जानने देना कि शिक्षक उनके विषय में जानने को उत्सुक है स्वयं में स्नेह भरा कार्य है । यह याद रखना चाहिए कि इन विधियों के प्रयोग का मकसद विद्यार्थी के आवांछनीय व्यवहार को नियंत्रित करना नहीं वरन उन्हें स्वीकार्य और प्रेमपूर्वक तरीके से व्यवहार करने में मदद करना है । वाछंनीय मनोवृति तथा व्यवहार को प्रोत्साहित करने के कुछ सामान्य नियम आगे दिये गये हैं ।

मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित वातावरण

शांति शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्तों में से एक है ऐसे कक्षा वातावरण का निर्माण जो अत्यधिक प्रतियोगिता, धमकियों, मजाक उड़ाने आदि से मुक्त हो । यह वातावरण ना तो अधिकारपूर्ण शिक्षक द्वारा शासित हो और न ही बिना किसी सरंचना के पूरी तरह से उन्मुक्त हो । इसका उद्देश्य ऐसे भावात्मक वातावरण का सृजन है जो विद्यार्थियों को व्यक्तिगत योग्यता का ज्ञान और भावना, विश्वास, सम्मान और स्व-अनुशासन की ओर ले जाने वाले स्व-आत्मविश्वास का अनुभव दे ।

विद्यार्थियों को बदलने वाला एक और अभ्यास अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है । इसमें बच्चों को प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान करना सम्मिलित है जो उन्हें विद्यालय में सीखे ज्ञान से

सम्बद्ध करने, और बाहर होने वाली घटनाओं से जोड़ने में मदद करती है, इसकी युक्ति स्मरण करने तथा मात्र एक दिशा में उत्तर देने में नहीं है बल्कि विद्यार्थियों द्वारा अपने शब्दों में और अपने अनुभवों के आधार पर उत्तर देने में समर्थ बनाना है । ये सभी अत्यंत छोटे परन्तु महत्वपूर्ण चरण हैं जो बच्चों को जिस संसार में वे है उसकी समझ विकसित करने और अपने पूर्वाग्रहों और पक्षपात पूर्ण विचारों पर चिंतन करने में सहायता करते हैं । अक्सर बच्चों के विचार उनके अभिभावकों, मित्रों और उनके मीडिया के प्रदर्शन के प्रतिदिन के अनुभवों के कारण बनते है, परन्तु वे इन्हें अभिव्यक्त करने के लिए तैयार नहीं होते कि शिक्षक द्वारा सराहे जा सके ।

एक संवेदनशील और जानकार शिक्षक जानता है कि विद्यालय, घर या समुदाय से एकत्रित इन अनुभवों के भीतर विभिन्न पक्षपातपूर्ण विचार और पूर्वाग्रह होते हैं । बहु-सांस्कृतिक, बहु-धार्मिक व बहु-भाषिक वातावरण के दर्शनों के कारण अनुभवों को बढ़ाकर पूर्वाग्रह के विचारों के अवसरों को कम किया जा सकता है । हालांकि, मात्र बहु-सांस्कृतिक विद्यार्थियों की जनसंख्या की उपस्थिति का तात्पर्य बहु-सांस्कृतिक वातावरण नहीं है । जब उनमें संवाद लेन देन और प्रत्येक की सहभागिता हो तभी बहु-सांस्कृतिक वातावरण का सृजन होता है और बच्चों को भली प्रकार चयनित कार्यों और प्रश्नों के द्वारा व्यस्त रखने में समर्थ होता है, जिससे वे अपनी शंकाओं को अभिव्यक्त करने, विचारों को बॉटने तथा विभिन्न मान्यताओं, प्रथाओं, रीतिओं और सामाजिक संरचनाओं को समझे और उन पर प्रश्न करने में समर्थ होगें ।

रचनात्मक पृष्ठपोषण (फीडबैक)

फीडबैक देना शिक्षण का एक अभिन्न अंग है । विद्यार्थियों का उन शिक्षकों से विश्वास उठ जाता है जो सब कुछ स्वीकार कर लेते है और उन्नति के लिए प्रोत्साहित नहीं करते । बहुधा, आलोचना से यह परिणाम निकलता है कि व्यक्ति योग्य नहीं है । आलोचना का कोमल तरीका है जब विद्यार्थी को बताया जाए कि इसका तात्पर्य व्यक्ति की शक्ति या क्षमता का मूल्य ऑकना नहीं है । सकारात्मक और अर्थपूर्ण फीडबैक महत्वपूर्ण हैं । "तुम अपना दिमाग कभी इस्तेमाल नहीं करते" हम कह सकते है कि "क्या तुम उसको करने का कोई दूसरा तरीका सोच सकते हो" ? या "मैं तुम्हें इसका दूसरा तरीका बताती हूँ" ।

सकारात्मक पुनर्बलन

वांछनीय व्यवहार के लिए सकारात्मक पुनर्बलन के अलावा अन्य कोई रणनीति अधिक प्रभावशाली नहीं मानी जाती । सकारात्मक पुनर्बलन, जहॉ उपलब्धियों व्यवहारगत तथा साथ शैक्षिक, को सही तरीके से पहचान तथा सम्मान प्रदान होता है, मूल्यवान है । जब भी संभव हो, शिक्षक को सकारात्मक पुनर्बलन देने के तरीकों को खोजने का प्रयास करना चाहिए । यह पहचान, नेतृत्व तथा सम्मानीय भूमिका, सराहना के शब्द, शाब्दिक तथा अशाब्दिक अनुमोदन, अवार्ड आदि कुछ भी हो सकता है । यह बेहतर होगा कि पुनर्बलन वर्णनात्मक

और कार्य पर केन्द्रित हो ना कि व्यक्तित्व पर । वर्णनात्मक प्रशंसा एक विद्यार्थी के व्यक्तित्व नहीं वरन अभिप्रेरणा तथा उपलब्धियों का वर्णन करने का कौशल है ।

कुछ शिक्षकों द्वारा एक पद्धति अपनाई जाती है कि वे विद्यार्थियों की उनके शैक्षिक क्षेत्रों के अलावा भी अन्य गुणों के लिए भी सराहना करते हैं । प्रत्येक बच्चे में एक न एक गुण होता है और हमें वह ढूँढना चाहिए। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि प्रत्येक विद्यार्थी स्मार्ट है परन्तु अलग रूप में और इसके अनुसार, हमें और विद्यार्थियों को यह खोजने में मदद करने की आवश्यकता है कि उनका उत्साह और बुद्धि किस विषय में है । बुद्धि के लिए शैक्षिक उपलब्धि एक मात्र सूचक नहीं है, और एक शिक्षक के रूप में हमें इसे जानने की आवश्यकता है और यह हमारे विद्यार्थियों में पाये जाने वाले अन्य कौशलों को प्रोत्साहित करना है । यह सरल नही है । परन्तु, केवल इस प्रकार विद्यार्थियों को अध्यव्यवसाय तथा सतत मानसिक सचेतना की राह मिलेगी।

गलतियों को स्वीकार करना

विद्यार्थियों में यह समझ विकसित करनी होगी कि गलतियॉ काम का एक हिस्सा है और ये शिक्षा देती हैं । केवल तभी हम गलतियों का मूल्य समझ सकेंगे और गलतियों को छिपाने की कोशिश या शर्मिन्दा महसूस नहीं करेंगे । वह शिक्षक जो ऐसा वातावरण बनाता है जिसमें गलतियॉ करने में निरापद महसूस हो, चुनाव करने के सही या गलत अधिगम मूल्यों तथा इसके पश्चात परिणामों को अनुभव करना सिखाता है । भावात्मक रूप से सुरक्षित धरातल प्रदान कर शिक्षक विद्यार्थियों को उनके स्वयं के कार्यो के लिए उत्तरदायी बनाता है । यह तत्पश्चात उनके कृत्यों के लिये जवाबदेही सुनिश्चित करने में मदद करता है, ना कि अपनी छवि की सुरक्षा हेतु गलतियॉ छुपाना और प्रतिवाद करना । निम्न अवतरण में दिया गया है कि किस प्रकार एक अध्यापक विद्यार्थी के लिए गहरे सम्मान का सूचक बन जाता है ।

सन्नी बहुत प्रसन्नता अनुभव नहीं कर रहा था ।वह देर से उठा, गणित का गृहकार्य ले जाना भूल गया और स्कूल के भाग गया । मैडम खुशी अंदर आयी और प्रत्येक को अभिवादन किया । "क्या आप सभी ने गृहकार्य किया है?" "जिन्होंने किया है, कृपया हाथ ऊपर करें ।" सन्नी उनकी जॉचने वाली ऑखों से बचने के लिए डेस्क के नीचे हो गया । उसने अचानक ऊपर देखा मैडम खुशी उसकी डेस्क के पास खड़ी थी । "सन्नी, क्या ऐसा कुछ है जो तुम मुझे बताना चाहोगे ?", उन्होंने कहा । "अब मैं पकड़ा गया" सन्नी ने सोचा, "मैडम मैडम" जब वह नर्वस होता है जो वह ज्यादा हकलाने लगता है । " "मैं मैं अपनी नो....नोटबुक ला..ला..ना भूल गया " उसने कहा । स्वाभाविक रूप से पूरी कक्षा हँसने लगी, और मैडम खुशी द्वारा दी जाने वाली सजा का इंतजार करने लगे । "सन्नी, क्या तुमने अपना गृहकार्य किया था ?" उन्होंने पूछा "मैंने किया था परन्तु लाना भूल गया" उसने उत्तर दिया। पूरी कक्षा में शांति थी बच्चों की फुसफसाहट "झूठ-झूठ" सुनी जा सकती थी ।

अचानक मैडम खुशी ने शांति तोड़ी, "मुझे तुम पर विश्वास है, सन्नी । कृपया कल अपनी पुस्तिका लाना। याद रखना ।" उन्होंने बात समाप्त की ।

त्वरित न्याय और टिपपणियों के आकलन से बचना

शिक्षक के रूप में, हम अक्सर त्वरित निर्णय लेने के आदी होते हैं । स्वयं अपना निर्णय देने के स्थान पर हम पूछ सकते है , "क्या जो तुमने किया है, तुम्हें पसंद है ?" इसको ठीक करने के लिए तुम क्या बदलाव करना पसंद करोगे ?" यहॉ तक कि उन परिस्थितियों में भी जब उन्होने गलती की हो, परिस्थिति की गंभीरता के अनुसार, उन्हें गलती हेतु क्षमा करना कभी-कभी ज्यादा मददगार साबित होगा । सामान्य परिदृश्य के विपरीत कि क्षमा लापरवाही को पोषित करती है, यदि एक शिक्षक विद्यार्थी के व्यवहार पर उचित प्रश्नोत्तर कर चिंतन करने में मदद करें तथा क्षमा कर दे, वह सजा से कही ज्यादा सहायक होगा ।

विचारों और प्रश्नों का सम्मान

बच्चों की टिप्पणियों की आलोचना और मजाक उड़ाना उन्हें स्वयं को अभिव्यक्त करने से रोकता है । यह महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी स्वयं को अभिव्यक्त करें क्योंकि हम नहीं जान सकते कि वे क्या सोचते और महसूस करते है, जब तक हम उन्हें स्वयं को स्वतन्त्रतापूर्वक अभिव्यक्त न करने दें । हालांकि, जब वे अभिव्यक्ति करें, यदि कोई गलती हो तो उसे तत्काल नहीं सुधारा जाना चाहिए । बजाय इसके ऐसे भावों का उपयोग जैसे, क्या इससे बेहतर उत्तर हैं ? "क्या कोई अन्य तरीके से सोचता है और क्यों ?" , अधिक महत्वपूर्ण टिप्पणी साबित होगी ।

आन्तरिक अभिप्रेरणा की वृद्वि

अत्यधिक प्रतियोगिता शांति को क्षति पहुँचताती है । प्रतियोगिता में मूल्यों का समूह अन्तर्निहित है जिसमें सफलता दूसरों को पछाड़ने और हराने पर निर्भर है । प्रतियोगिता में जो मूल्य निहित है वह दूसरों पर विजय प्राप्त करना और सर्वप्रथम आना है । प्रतियोगिता सिखाती है कि स्वयं का मूल्य, विजय पर निर्भर करता है । जीतना ही लक्ष्य है ना कि सीखना , अभ्यास और विकास । दूसरे लोगों को हराना बाहय निर्देशित अभिप्रेरणा है ।आन्तरिक अभिप्रेरणा का विकास अधिक महत्वपूर्ण है अर्थात स्वयं के लिए खुशी के लिए सीखना, चुनौतियों को स्वीकारना ना कि इनाम जीतना और दूसरों को हराना आदि । सफलता के अपने मानकों तक पहुँचना अधिक महत्वपूर्ण है । आन्तरिक अभिप्रेरणा का पोषण होता है जब शिक्षक प्रोत्साहन दे, और बच्चे के प्रयासों की सराहना करें और उसको सफलता प्राप्ति में मदद दे ।

हास्य का प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हल्का फुल्का मजाक तनाव हटाने में मदद करता है और प्रत्येक को सहज और प्रसन्न महसूस कराता है । व्यंग्यात्मक हास्य दूसरों को अपमानित करने का एक तरीका है जिसमें एक व्यक्ति को मजा आता है और दूसरे को दुख होता है ।

उपचारात्मक हास्य एक दो तरफा अनुभव है जहॉ दोनो दल स्थिति का मजा लेते हैं । शिक्षक अपने लाभ के लिए हास्य का उपयोग कर सकते हैं । आगे दिया गया उदाहरण उस बिंदु को स्पष्ट करता है ।

एक शिक्षक कक्षा में प्रवेश करने पर बोर्ड पर अनेक अजीब-अजीब चित्र पाती है जिनके नीचे ‘शिक्षक’ लिखा था । हम किसी शिक्षक की असुरक्षा की भावना और बोर्ड पर ऐसे चित्रों के लिए प्रतिक्रिया को महसूस कर सकते हैं । हालांकि वह ब्लैक बोर्ड के पास जाती है और चॉक का एक टुकड़ा उठाती है । वह पहले चित्र को देखती है और फिर कक्षा को । फिर वह चित्र की ओर बढ़ती है और कहती है, ‘एक यह मेरे समान प्रतीत होता है परन्तु थोड़ें और बालों की जरूरत है’ । अगले चित्र में वह स्वयं ऐनक बनाती है और अगले में बड़ी नाक और लंबी गर्दन, और इसी प्रकार और चित्रों में भी, कक्षा मुस्कराने और हँसने लगती है । अंत में, वह घोषणा करता हैं कि यह पढ़ने का समय है । उसको स्थिति का सामना करने का तरीका ऐसा था कि विद्यार्थियों को शर्मिन्दगी महसूस नहीं हुई । इसके बजाय इसने शायद डनहें अपने कृत्यों पर चिंतन करने का उन्मुख किया ।

- स्त्रोत - कक्षा में संघर्ष, पेज 390 लॉन्ग, एन जे आदि द्वारा (2007)

इस शिक्षक ने चुनौतीपूर्ण क्षणों को उपचारात्मक हास्य में बदल दिया और अपने विद्यार्थियों को ऐसी परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करने का शांतिपूर्ण तरीका प्रदर्शित किया ।

शिक्षणशास्त्र का पैराडाइम शिफ्ट शिक्षकों को उनके विद्यार्थियों से आनंददायक और अर्थपूर्ण तरीके से सम्बंध बनाने में सक्षम करता है । शिक्षकों तथा विद्यार्थियों दोनों पर थोपी गयी परिवर्तनशील अपेक्षाओं दैनिक तनावों तथा चुनौतियों द्वारा यह कक्षा के परिवेश में परिवर्तन लाता है । यह शिक्षा के किसी गंभीर उददेश्य का परित्याग नहीं करता वरन शिक्षा के सम्पूर्ण लक्ष्य को पूरा करता है । शिक्षक के अपने कौशलों और संवादों और सुनने की रणनीतियों, समानुभूतिपूर्ण व उचित परामर्शदाता के रूप में, और ऐसी कक्षा आचरणों द्वारा जो वास्तविक शिक्षण अधिगम को प्रोत्साहित करें सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आती है । विद्यार्थी तब सीखते है और विकसित होते है जब एक सूचना बैंक के रूप में नहीं वरन् जानकार मानव के रूप में । यहॉ तक कि विषयों के शिक्षण और अन्य गतिविधियों को भी इसी परिदृश्य के अनुसार देखा जाना चाहिए, जिस पर अगले पाठ में बातचीत की गई है

अब तक, इस पाठ में अपने कक्षा की रणनीतियों को विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील, स्नेही और उत्तरादायित्वपूर्ण व्यक्तियों के रूप में सम्पूर्ण विकास के लक्ष्य की पूर्ति के लिए तैयार करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है । शांति शिक्षणशास्त्र ठोस रूप से प्रतिभागिता को प्रोत्साहित करने वाली शिक्षण रणनीतियों को मान्यता देता है । अगले भाग में, हम इन मुददों को हल करने के तरीकों का अध्ययन करेगें।

5| शिक्षणअधिगम में शांति परिप्रेक्ष्य

- समग्र अभिगम/उपागम
- विशेष अवस्था संबंधी सरोकार
- शांति शिक्षण के अवसर
- विभिन्न विषयों के द्वारा शांति शिक्षण
- पाठय पुस्तकों मे शांति -संदर्भ
- शांति शिक्षण हेतु रणनीतियाँ
  - स्थिर बैठना
  - नाटक एवं भूमिका निर्वहन
  - कहानी कथन
  - परिचर्चा
  - छोटे समूहों में सीखना
  - दैनन्दिनी लेखन / डायरी लेखन
- कुछ उदाहरण योग्य विचार
- परीक्षा एवं आंकलन संबंधी मुद्दे

यह अध्याय शांति का शिक्षणशास्त्र नामक पूर्व अध्याय का विस्तार है| पूर्व अध्याय शिक्षक के व्यवहार, मनोवृति, संवाद शैली और विद्यार्थियों के साथ उसके संबंध किस प्रकार शांति की संस्कृति आधरित शिक्षण शास्त्र को निर्धारित करते हैं, के संबंध में चर्चा करता है। समग्र उपागम का अनुसरण करते हुए विषय-वस्तु का शिक्षण करते समय भी शांति के परिप्रेक्ष्य को सम्मिलित करना आवश्यक है। इस प्रकार का उपागम यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षकों के लिए विषय -वस्तु शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास मात्र नही है बल्कि उसके व्यवहार में शांति का समावेश करने के मार्ग ढूँढना है। यह अध्याय शांति परिप्रेक्ष्य को उत्पन्न करने के लिए कक्षा एवं शिक्षण स्थितियों के उपयोग पर केन्द्रित है। यह पाठ्यसामग्री में अव्यक्त रूप से निहित शांति संदर्भो को पहचानने और उसके अन्तरण के लिए विषय-वस्तु के ज्ञान के साथ ही विद्यार्थियों का शांति के मूल्यों, अभिवृति एवं सरोकारों की ओर अभिमुखीकरण करने के लिए कुछ उदाहरण एवं विचार प्रस्तुत करता है। विषय क्षेत्रों में विभिन्न शिक्षण रणनीतियों के उपयोग को रेखांकित किया गया है ताकि शिक्षक अपने संदर्भों में स्वयं रणनीतियाँ बना सके/(अभिकल्पन/डिजाइन कर सकें)।

कोई भी वास्तविक शिक्षण, यदि वह सफल होता है तो उसका परिणाम किसी को यह जानने योग्य बनायेगा कि किसी भी वस्तु को उसके पहले की स्थिति से बेहतर कैसे बनाया जा सकता है। — जॉन डेवे

शिक्षण-अधगिम प्रक्रिया में शांति संबंधित मनोवृत्तियों के आदान-प्रदान के भरपूर अवसर मौजूद है, वह चाहे विषय विशेष का शिक्षण हो या फिर विद्यार्थियों के सरोकारों से संबंधित हो। बाह्य जीवन और सीखना परस्पर घंनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। जब एक शिक्षक विद्यार्थियों के सरोकारों व उद्विग्नता के प्रति सतर्क होता है और विद्यार्थियों को इन्हें अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित (उत्साहित) करता है तो विद्यार्थी अपने वातावरणके प्रति सतर्क होते है और विषय के अध्ययन तथा स्कूलिंग (विद्यालय गतिविधियों) में निहित वास्तविक उद्देश्य को स्पष्ट रूप से देख पाते हैं। वे दूसरों के विषय में सोचने लगते है व समाज की भलाई को ओर प्रेरित हो जाते हैं। यही शांति का वह परिप्रेक्ष्य है जिस पर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को केन्द्रित करना है।

समग्र उपागम

शांति की शिक्षा के लिए एक समग्र और एकीकृत उपागम की आवश्यकता है। क्योंकि शांति शिक्षा, शिक्षा से पृथक नही हैं अत: इसके लिए विशेष रूप से अभिकल्पित पाठ्यक्रम अथवा विशेष समय की आवश्यकता नही है बल्कि इसे विद्यालय के सम्पूर्ण परिवेश में व्याप्त होना चाहिए। यह उपागम प्रस्तावित करता है कि सम्पूर्ण शिक्षण अधिगम, समस्त गतिविधियाँ एवं पारस्परिक क्रियाएं चाहे वह कक्षा कक्ष में हो या कक्षा-कक्ष से बाहर शिक्षा के व्यापक उद्देश्य से अनुप्रेरित होनी चाहिए, जिसमें शांति शिक्षा समावेशित है। इस संदर्भ में, शांति संवर्धन का कार्य किन्हीं एक या दो शिक्षकों को नहीं सौंपा जाना है बल्कि प्रत्येक शिक्षक शांति शिक्षक है। वह नोडल बिंदु, जहाँ यह एकीकरण हो सकता है, विद्यालय की पाठ्यचर्या है जो विद्यालय में हो रहे समस्त क्षेत्रों के अनुभवों को अनुप्राणित करती है। कभी-कभी पाठ्यचर्या को मात्र पाठयक्रम मान लिया जाता है और उसे भी पाठ्य- पुस्तकों तक सीमित कर दिया जाता है।

वास्तव में पाठयचर्या विद्यालय की समस्त गतिविधियों, सम्पूर्ण संगठन और नीतियों की मूल आत्मा है। कक्षा-कक्ष अन्तकरण प्रक्रिया से पाठयपुस्तक विद्यालय संगठन और इसका स्थानीय समुदाय के साथ संबंध, विद्यालय के अन्दर समस्त आदान-प्रदान चाहे विद्यालय वे कक्षा-कक्ष में हो या खेल के मैदान में या फिर विद्यालय के गलियारों में शिक्षकों के मघ्य के अनौप्रचारिक वार्तालाप, या फिर कला, शिल्प, अभिनय प्रात:कालीन सभा समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, या सामुदायिक समाज सेवा, परीक्षा या पिकनिक, सब में समाहित है। ये समस्त गतिविधियाँ और उनका अनुप्रयोग पाठ्यचर्या में सन्निहित नीतियों

और उपागम/अभिगम से निकलती हैं। कक्षा के स्तर पर, शांति के आयाम विषय-वस्तु में पहले से ही समांहित है, जो विद्यार्थियों में शांति के मूल्यों को आत्मसात् कराने में सहायता करने के साधन हैं। पाठ्यपुस्तकों को भी शांति के उन परिप्रेक्ष्य को बढ़ानें की दृष्टि से देखा जाना है, जो पूर्व से ही विषय वस्तु में अन्तर्निहित है और शिक्षण उद्देश्यों में भी उल्लिखित हैं।

सम्पूर्ण और एकीकृत उपागम/अभिगम अनेक दृष्टिकोणों - मनोवैज्ञानिक, अभिप्रेरणात्मक और शिक्षण शास्त्रीय से पृथक विषय उपागम से बेहतर है/आगे है। संज्ञानात्मक व विकासात्मक दृष्टिकोण से रचनात्मक मनोविज्ञान ने यह स्थापित किया है कि बच्चे ज्ञान का सृजन समग्रता में करते हैं। एकीकृत उपागम में पाठ एवं प्रकरण सार्थक संदर्भो में शांति के संदेश के सम्प्रेषण हेतु वाहक बन जाते हैं। यह प्रयास विषय -वस्तु को वास्तविक जीवन से तादात्मय स्थापित करने के लिए हितकर/पुष्ठिकारक बनाता है जो विद्यार्थियों को सीखने और उसे अपने वास्तविक जीवन से जोड़ने के लिए प्रेरित करता है। यह विद्यार्थियों को विषय वस्तु ववास्तविक जीवन के संदर्भों के मध्य संबंध खोजने और संबंध बनाने में सक्षम बनाता है और ऐसा करते हुए विषय ज्ञान को सकरात्मक तरीकों के उपयोग, चिन्तन और उनको आत्मसात करता रहता है। प्राय: शिक्षक का शिक्षण शास्त्रीय लक्ष्य, पाठ्यक्रम को समय पर समाप्त करने की अनिवार्यता के रूप में अभिव्यक्त होता है। इससे शिक्षण का पूर्वनिर्धारित उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम समाप्त करने की ओर उन्मुख हो जाता है ताकि समस्त विद्यार्थी परीक्षा के लिए अच्छी तैयारी कर सकें और उच्च अंक प्राप्त कर सकें ।

विभिन्न विषयों के शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य विद्यार्थियों को बाह्य जगत के साथ सार्थक रूप में अन्तक्रिया करने, जीवन को बेहतर ढंग से समझने और प्रभावपूर्ण ढंग से इससे संबंध बैठाना, खोता जा रहा है। शिक्षा के सतही उद्देश्य की बजाय यथाथपूर्ण उद्देश्य, विषय-वस्तु को रटने की परिपाटी को प्राथमिकता देने के स्थान पर, बच्चों को विषय वस्तु का जीवन के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए मुक्त करते है। डेवी ने लिखा है "बच्चा प्रारभ्भ बिन्दु, केन्द्र बिन्दु और अन्त बिदुं है। उसका विकास एवं उन्नति समस्त अघ्ययनों का विकास एवं उन्नति आदर्श अभीष्ट हैं। ये (विषय) वे साधन हैं जो विकास की आवश्यकताओं को पूर्ण करते है। व्यक्तिव/चरित्र विषय से बढ़कर है। बच्चे स्वयं अपने आधेगम की गुणतत्ता और मात्रा को निधार्रित करते हैं।

यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों की क्षमता विभिन्न अवस्थाओं में अलग-अलग होती है। अत: बच्चों की अभिवृति, मूल्य व कौशलों को केन्द्रित करते हुए शिक्षण रणनीतियाँ भी उनकी वय के अनुसार भिन्न'भिन्न होती है।

विशेष अवस्था संबंधी सरोकार

शिक्षा का प्राथमिक स्तर शांति उन्मुख व्यक्तितत्व का आधार रखने के लिए आदर्श अवस्था है। विद्यार्थियों के जीवन में ये वर्ष रचनात्मक विकास-काल को समाहित करते हैं। इस अवस्था में बच्चों पर अपेक्षाकृत कम बोझ होता है। इस अवस्था में अधिकांश विद्यार्थियों को शांति की ओर उन्मुख कराया जा सकता है। इसके बाद विद्यार्थी शाला त्यागी होने लगते हैं। इसलिए यही वह स्तर है जिसमें शिक्षा के माध्यम से शांति की संस्कृति की आधारशिला रखने के लिए बहुत अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। कहावत है "एक व्यस्क में सुधारने की अपेक्षा एक बच्चे का निर्माण करना अधिक सरल है"।

वे मूल्य जो शांति उन्मुख व्यक्त्वि का निर्माण करते हैं, उनमें स्व व परिवेश की स्वच्छता, दूसरों तथा बड़ों का सम्मान, श्रम की महत्वा की स्वीकार्यता, ईमानदारी, प्रेम, साझा करना, सहयोग, सहनशीलता, सहिष्णुता, नियमितता, समयबद्वता एवं उत्तरदायित्व आदि समाहित हैं। सभी बच्चे स्वभाविक रूप से स्नेही और दयालु होते हैं कितुं उनमें विपरीत क्षमताओं के भी विकास की भी संभावना होती है। इस प्रकार बच्चों में पूर्व विद्यमान रचनात्मक प्रवृतियों का समर्थन करने व हिंसक प्रवृतियों को पहले ही रोकने की आवश्यकता होती है। उन्हें इस तरह के कौशलों जैसे सुनने की कला, प्रकृति के साथ संवेदना और उत्तरदायित्व की भावना के विकास के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

जब बच्चें कुछ बड़े हो जाते हैं और माध्यमिक स्तर पर पहुँचते हैं तो वे अमूर्त चिंतन करने लगते हैं। सीमित रूप में, उनमें अपने पास-पड़ोस में घटित हो रही विभिन्न घटनाओं के प्रति तर्कपूर्ण और सम्बंधित ढंग से सोच विचार करने के कौशल विकसित हो जाते हैं। इस स्तर पर बच्चों के लिए एक संवेदनशील (विकट) मुद्दा दूसरे बच्चों के साथ समूह में सम्बन्ध बनाना व प्रतिष्ठा पाना है। क्योंकि विद्यालय में विविध धार्मिक, साँस्कृतिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चे होते हैं अत: बच्चों को ऐसी संज्ञानात्मक सामर्थ्य विकसित करने की आवश्यकता है जिससे वे लोकतंत्र में निहित मूल्यों - समता, न्याय, सम्मान व मानव-अधिकार को समझ सकें।

यह ऐसे कौशलों के विकास के लिए उपयुक्त अवस्था है जैसे जानकारियों का उपयोग करना, समूहों में भागीदारी कर सकना, उत्तरदायित्व पूर्ण ढंग से सम्बन्ध बनाना, विवादों के लिए संवाद स्थापित करना और हिंसा के विविध स्वरूपों के निवारण के तरीकों का विकास करना। इसके अतिरिक्त, उनमें ऐसी विवेक बुद्वि के विकास की भी आवश्यकता है, जिससे वे परिपवक्ता के साथ भ्रष्टाचार, भ्रामक विज्ञापनों और मीडिया में प्रदर्शित हिसंक और अशोभनीय वस्तुओं पर विवेकपूर्ण प्रतिक्रिया देने में सक्षम हो सकें। सबसे महत्वपूर्ण बच्चों को एक समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र का उत्तरदायी नागरिक बनाने के लिए शिक्षित करना है।

उच्च माध्यमिक और सीनियर सैकैंडरी (उच्चतर माध्यमिक) स्तर पर बच्चे धीरे-धीरे अपनी पहचान के प्रति जागरूक हो जाते हैं। वे स्वतंत्र व्यक्ति बनने की दहलीज पर होते हैं

यद्यपि उनमें अभी भी परिपक्वता की कमी होती है। इस उलझन के परिणामस्वरूप उनके अपने साथियों, माता-पिता और अध्यापकों के साथ विवाद/द्वन्द उत्पन्न हो जाते हैं। इस अवस्था के दौरान उन्हें तर्कपूर्ण चिन्तन, संवाद कौशल सीखाने के लिये जिनकी जरूरत उन्हें अपनी दैनिक अन्त:क्रियाओं के दौरान विवादों के समाधान के लिए पड़ती है। प्रशिक्षण देना जरूरी है। वैश्विक व पर्यावरणीय संदर्भो में पारस्परिक निर्भरता के संदर्भ में जागरूक करने की भी आवश्यक्ता है ताकि वे न्याय, शांति व अहिंसा के विस्तृत परिप्रेक्ष्य रच सकें।यह महत्त्वपूर्ण है कि उन्हें शांति के प्राप्तकर्ता मात्र के रूप नहीं बल्कि ऐसे सक्रिय शांति -निर्माता बनने की सक्षमता प्रदान की जाए, जो दूसरों के विषय में सोचते हों, और उनकी सहायता करते हों। उन्हें एक शांतिपूर्ण तरीके से रहने वाले विकसित मानव बनने की आवश्यकता है जो शांतिप्रिय व अहिंसक केवल इस कारण न हो कि वे कमजोर हैं बल्कि शांति के प्रति विवेकपूर्ण और व्यापक जागरूकता पर आधरित प्रतिबद्वता के कारण हों।

शांति -शिक्षण हेतु अवसर

प्राय: देखा गया है कि शिक्षकों का शिक्षण उद्देश्य केवल पाठयक्रगम को समाप्त करना व बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना मात्र है। विषय शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य कहीं पीछे छोड़ दिया जाता है। शिक्षक और विषयवस्तु हावी हो जाती हैं। वह बच्चा जिसके लिए समस्त शैक्षणिक अनुभवों की योजना निर्मित की जाती है, केन्द्र बिन्दु से बाहर रह जाता है। कक्षा में विषय शिक्षण से पूर्व या विषय शिक्षण के दौरान शांति परिप्रेक्ष्य को अन्तरगुंफित/ सम्मिलित करने की अपार संभावनाएँ निहित हैं। यह शिक्षकों के अपने कार्य भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों के प्रत्यक्षण (परसेप्शन) पर निर्भर करता है। निम्नंकित उपाख्यान (एनकडोट) इसी प्रकार की संभावना को प्रकट करता है।

सुबह के 9 बजे का हैं। प्रात:कालीन सभा के बाद श्रीमती लता स्टॉफ रूम में अपनी उपस्थिति पंजिका लेने गई अपनी कक्षा की ओर जाते हुए वे सोच रहीं थीं कि आज भारत का संविधान नामक पाठ पूर्ण कर लेना हैं, क्योंकि यह बहुत ज्यादा खिंच चुका है। वें यह सोच कर भी प्रसन्न थीं कि संभवत: उनके द्वारा निर्मित शिक्षण योजना बच्चों के लिए आनन्ददायी होगी। उनका विचार था कि कक्षा में बच्चे अपने स्थान पर व्यवस्थित बैठे हुए मिलेंगे, अभिवादन व उपस्थिति के उपरान्त वे पढ़ाना शुरू कर देंगी।

उन्हें कक्षा से चीखने -चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं। दरवाजे पर पहुँचकर उन्होनें देखा कि दो बच्चे परस्पर मार-पीट कर रहे थे जबकि अन्य बच्चे उन्हें घेरकर खड़ें थे और उन्हें उकसा रहे थे। उनकी ओर किसी बच्चे का ध्यान नहीं गया क्योंकि वे सभी अपने सामने चल रहे नाटक में तल्लीन थे ।

वे उस स्थिति से स्तब्ध रह गई वे यह भी नहीं समझ पा रही थी कि वे क्या करें?

कक्षा की एक बालिका का ध्यान उनकी ओर गया और उसने अपने मित्रों को अपनी सीट पर बैठने के लिए कहा। कुछ ही मिनट में, सभी बच्चे जिनमें वे दो लड. रहे बच्चें भी शामिल थे, अपनी स्थान पर बैठ गए। उन्होने बच्चों की ओर देखा और पाया कि उनमें से एक बच्चे के वस्त्र फट गए। और वह अत्यन्त लज्जित सा दिख रहा था। उन्होने दूसरे बच्चे की ओर देखा, जिसके चेहरे से खून बह रहा था, और जो अभी भी बहुत क्रोधित था। एक बालिका ने अपने स्थान पर खड़ें होकर कहा - "मैडम, राहुल ने मनिन्दर के कपड़ें फाड़ दिए क्योंकि मन्निदर ने राहुल का खाना खा लिया"। उसके ऐसा कहते ही दूसरे विद्यार्थी भी एक का पक्ष लेते हुए बोलने लगे कि मंदिर ने खाया, नहीं खाया या फिर राहुल ने कपड़ें नहीं फाड़ें।

श्रीमती लता कक्षा ने कक्षा को चुप कराया और पूर्व निर्धारित पाठ जो उन्हें आज समाप्त करना था, पढाना शुरू कर दिया।

इस प्रकार की स्थिति को संभालने के अन्य कई वैकल्पिक तरीके हो सकते थे। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित तरीके अपनाए जा सकते थे

- लड़ाई बंद करने और अपनी जगह पर बैठने को कहना अथवा उन्हें प्रधानाचार्य के पास ले जाना या किसी अन्ण्तरीके से दण्डित करना।
- बच्चों से झगड़ें के कारणों पर बातचीत करना।
- सभी विद्यार्थियों से इस विषय पर बातचीत करना कि वे लोग झगड़ें को रोकने के प्रयास करने के बजाए मूक दर्शक क्यों बने रहे।
- कुछ समय के लिए घटना की उपेक्षा करना और अवसर पाकर पुन: इस मुद्दे को उठाना।
- इस अवसर का लाभ उठाते हुए इन मुद्दों को सभालने के लिए समय देना और पाठ समाप्त करने की अनिवार्यता को कुछ समय के लिए स्थगित करना।

हम बच्चों को पाठ्य-पुस्तक के अन्तर्गत लोकतंत्र और न्याय संबंधी प्रकरण पढ़ातें हैं किन्तु जब हम वास्तविक परिस्थितियों, जहाँ हम इन मसलों को समावेशित कर सकते हैं, का समाना करते हैं तो हम उन्हें छेड़ने में झिझकते हैं बच्चे इन मूल्यों को तभी ग्रहण कर पाएगें जब वे इन्हें अपने वास्तविक जीवन में अनुभव करेंगे। वे ये भी समझ पाएंगे कि अवधारणाएँ कोई दूर की वस्तु नहीं है बल्कि ये उनकी अपनी वास्तविकताओं में ही समाहित हैं यह शिक्षक को चिंतन का अवसर देती है कि यदि कक्षा में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने पर उसका समाधान करना जरूरी है। बच्चों के लिए यह सीखना भी जरूरी है कि किसी विवाद/द्वन्द को शांतिपूर्ण तरीके से कैसे सुलझाया जा सकता है। यह शिक्षकों के लिए ऐसा अवसर है कि जहाँ वे बच्चों का साम्प्रदायिक सद् भाव और दूसरों के सम्मान के महत्व को समझने की दिशा में संवेदीकरण कर सकते हैं और उनमें ऐसे विवादों के समाधान करने के

कौशल विकसित कर सकते हैं ताकि जब भी वे इस प्रकार की हिंसक घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी बने तो वे उनके समाधान की दिशा में हस्तक्षेप करने में सक्षम हो सकें।यह वास्तव में एक महान कार्य होगा यदि एक शिक्षक अपनी कक्षा के चालीस असंबद्व से बच्चों को विवादों/द्वन्दों को समझने और मैत्रीपूर्ण तरीके से उनका समाधान कर पाने में समर्थ बनाने में सफल होता है।

अध्यापक कक्ष में दो युवा शिक्षकों के मध्य का यह संवाद, जो उनके वास्तविक जीवन पर आधारित है , एक उदाहरण है -

गीता : शारदा, आज दिन कैसा बीता? मै तो आज बहुत थक गई हूँ। मैं सुबह से बिना रूके निरन्तर पढ़ाती रही हूँ।

शारदा : तो क्या आज आपका पाठ "दिवाली" पूर्ण हो गया है।

गीता : हाँ और इससे मै कुछ संतुष्ट भी हूँ। कम से कम पाठ तो पूरा हुआ।

शारदा : बहुत अच्छा । पर मै आज अपनी शिक्षण योजना पूर्ण करने में सफल नहीं हो पाई।

गीता : क्यों, आपने क्या किया?

शारदा : मै अपनी कक्षा के आज के अनुभवों को आपके साथ साझा करना चाहती हूँ।

गीता : बताइए भी।

शारदा : 'दिवाली' प्रकरण पढ़ाने के लिए मैने तय किया था कि बच्चों से दिवाली व ईद मनाने के उनके अनुभवों का साझा करवाऊँगी। चर्चा के दौरान, एक बच्चे ने कहा कि दीवाली के एक दिन पहले जो धमाके हुए थे, उनका कारण यह था कि उग्रवादी एक समुदाय विशेष के लोगों को मारना चाहते थे। मैने उस बच्चे से पूछा कि उसे कैसे पता था कि उस एक समुदाय विशेष के व्यक्ति उग्रवादी थे। इस पर वह बच्चा हँसने लगा और शेष बच्चों ने भी उसका साथ दिया तब उस बच्चे ने कहा कि इस बात को वह ऐसे हीं जानता है बाद में उसने जोड़ा कि उसने यह टेलीविजन में भी देखा।

गीता : हे भगवान। क्या वास्तव में बच्चे ने ऐसा कहा?

शारदा : हाँ,। मैं यह जानकर हैरान थी कि एक आठ साल के बच्चे को बम धमाके की जानकारी थी।

गीता : हाँ आजकल टेलीविजन में/से अत्याधिक खुलासे होते हैं। माता-पिता को अपने बच्चों को ऐसे कार्यक्रम देखने से मना करना चाहिए।

शारदा : लेकिन सच्चाई तो यही है कि ऐसी घटनाओं से बच्चे परिचित हो जाते हैं। इस घटना ने मेरी आँखे खोल दीं और मैं समझ गई कि एक आठ वर्ष का बच्चा भी बाहरी दुनिया के संघर्षों से प्रभावित होता है।

गीता : कितुं बच्चों को इन सब बातों से बचाया जाना चाहिए। ऐसी घटनाओं पर बच्चों से चर्चा नहीं करनी चाहिए।

शारदा : लेंकिन जब आपकी कक्षा में बच्चें इस प्रकार के पूर्वाग्रह लेकर आते हैं, तो आप क्या करती हैं? क्या हमें इन बातों पर चर्चा उनसे चर्चा नहीं करनी चाहिए?

गीता : बिलकुल नहीं। हमें बच्चों को इन सब बातों से दूर रखना चाहिए। आखिर बचपन को सुरक्षित रखना महत्वपूर्ण है।

शारदा : किंतु, यदि हम बच्चों से इन मुददों पर बातचीत/चर्चा नहीं करेंगे तो दूसरे माध्यम जैसे मीडिया उनके दिमाग में अधिक परिपक्व पूर्वाग्रह आरोपित कर सकता है।

गीता : मै इससे सहमत हूँ। लेंकिन, हमें क्या करना चाहिए, इस बारे में मैं निश्चित नहीं हूँ। खैर, आप बताइये कि बच्चे के ऐसा कहने पर आपने क्या किया?

शारदा : मैने बच्चों के साथ इस बात पर चर्चा की कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है? मेरी कक्षा में उस समुदाय विशेष के कई बच्चे है, इसलिए मैने इस बात पर चर्चा की कि क्या मेरी कक्षा के वे बच्चे उग्रवादी थे। उस बच्चे ने कहा कि नहीं ऐसा नहीं है। शेष बच्चों का भी यही मत था। मैने कहा कि मैं नही जानती कि उन धमाकों में किसका हाथ था कितु हमें सुनी-सुनाई बातों के आधार पर अपनी राय नहीं बनानी चाहिए।

गीता : अच्छा, आप कैसे पता लगाने वाली हो कि धमाकों के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या आप सी.बी.आई. से हो? (हँसती है)

शारदा : मैने सोचा है कि इस विषय पर अखबार में छपी खबरें एकत्र करूँगी और उन पर बच्चों के साथ परिचर्चा करूँगी और इन कतरनों से आगे भी परिचर्या करांऊगी।

गीता : यह बहुत अच्छा विचार है। यह आप अवश्य करें। यदि इस प्रकरण पर कोई आलेख मिलेगा तो मैं आपको उपलब्ध करा दूँगी।

शारदा : धन्यवाद गीता। आप बहुत अच्छी हो।

इस प्रकार कक्षा वह गतिशील स्थान है जहाँ शिक्षक ऐसी अनेक परिस्थितियों का सामना करता है जिन्हें संवेदनशीलता के साथ संभालना होता है। यह एक दूसरे पर धौंस जमाने, सताने वाले बच्चों के सदर्भ में हो या परेशान हाल घरों के बच्चे हो या फिर जैंडर संबंधी परम्परागत समस्याएँ हो। एक ऐसा शिक्षक जो इन स्थितियों को संवेदनशीलता और मैत्रीभाव से संभालने में सक्षम है वास्तव में 'शांति का निर्माण' करता है।

विषयों के माध्यम से शांति -शिक्षण

शिक्षण के द्वारा बच्चों को अपने जीवन और बाह्य जीवन की वास्तविकताओं को विषय से जोड़ने व समेंकित करते हुए अपने ज्ञान को रचने के अवसरों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। साथ ही उन्हें चुनौतियों का उपयुक्त व प्रभावशाली तरीके से सामना करने की सक्षमता देना भी जरूरी है। शांति के लिए शिक्षण करने का कार्य चुनौतीपूर्ण व रूचिकर है और इसके लिए शिक्षकों में इच्छा शक्ति, प्रतिबद्वता और प्रवीणता की आवश्यक है। अपनी दुनिया और उसकी वास्तविकताओं की प्रति शिक्षार्थियों की प्रतिक्रियाओं को विभिन्न विषयों भाषा, विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु के अध्ययन द्वारा प्रभावी रूप से बढ़ाया जा सकता है। इसके बदले विद्यार्थियों को पढ़ा देने के अतिरिक्त उत्साह में कई बार बहुत आगे निकल जाते हैं और उनके सीखने में गुणवत्ता लाने के बजाए मात्र विषय अध्यापन भर करते रह जाते हैं।

हमें किसी भी विषय के शिक्षण के लक्ष्यों को समझना और स्पष्ट रूप से निर्धारित करना चाहिए। उदाहरण के लिए भाषा सीखने और सिखाने का एक उद्देश्य मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से सम्प्रेक्षण की क्षमता में है, साथ ही भाषा में अन्तर्निहित संस्कृति और सौंदर्य को समझना, और विभिन्न विचारों और भावनाओं को प्रभावपूर्ण व सुन्दर ढ़ग से बताने में निपुणता प्राप्त करना है। यदि भाषा यह नहीं कर पाती है तो भाषा शिक्षण के लक्ष्य पूरे नहीं होते है। यदि शिक्षा के उपरोक्त लक्ष्य पूर्ण होते हैं तो भाषा वास्तविक शांति की स्थिति के लिए उपयुक्त तरीके से प्रेम आदर और सहानूभूति/तदनुभूति की अभिव्यक्ति को बढ़ावा देती है, और गलत सम्प्रेषण, पूर्वाग्रह या पक्षपात को रोक सकती है जिसे विद्यार्थियों को सीखने की आवश्यकता है। शब्दों , भाषा अपर्याप्त अभिव्यक्ति के कारण उत्पन्न संप्रेषण के अवरोधों को भाषा की कक्षा में समझना होगा। उदाहरण के लिए शेक्सपीयर द्वारा रचित 'Desdemona' को पढ़ाते हुए यह सप्ष्ट किया जा सकता है कि विचारों की स्पष्ट न करने व अभिव्यक्ति का अभाव किस प्रकार पूर्वाग्रहों और पक्षपातों को बनाता व गहराता है। भाषा शिक्षण के उपर्युक्त लक्ष्यों पर आलोचनात्मक चिंतन विषय के सीखने व शातिं की शिक्षा के लक्ष्य के मध्य संगति बैठानें को (संबंध बनाने) आसान करते हैं।

इसी प्रकार, सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्यों को देखें। सामाजिक विज्ञान की विषय सामग्री का लक्ष्य विद्यार्थियों को इनके पर्यावरण, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व भौगौलिक वातावरण से परिचित कराने के साथ -साथ व्याक्तियों, संस्थानों व संगठनों के मध्य अन्तसंबंध और अन्त:क्रियाओं को समझने में सहायता करना है। इसका उद्देश्य उनमें सामाजिक विकास का विस्तृत परिप्रेक्ष्य विकसित करने में तथा सामाजिक ढाँचें और प्रक्रियाओं में अन्तर्निहित व्यैक्तिक तथा सामाजिक समस्याओं पर व्यापक दृष्टिकोण निर्मित करने में सहायता करना है।

सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु पारस्परिक सम्बन्धों पर आधारित है अत: इसे विद्यार्थियों में सामाजिक संरचनाओं के बनने के तरीकों को अनुभव करने में सक्षम बनाना चाहिए तथा उनमें ऐसी विवेचनात्मक समझ का विकास करना चाहिए जिससे वे न्याय, लोकतंत्र व समानता को प्रेरित करने की दृष्टि से राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक परिच्छेदन, पलायन, वंचितों के मुददे व जेंडर, जाति वंश के मुददों और इनके पारस्परिक संबंधों का परीक्षण कर सकें। यह विषय उन्हें शिक्षा देगा कि सामाजिक अन्याय किस प्रकार परिवेशीय असंतुलन व वैयक्तिक समस्याओं को बढ़ाते हैं, जिनका मानवीय मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, विश्वास और आदर, मानवीय गरिमा व सांस्कृतिक विकास हेतु महत्व है। सामाजिक विज्ञान द्वारा विद्यार्थियों को इन सामाजिक संस्थाओं और संगठनों के प्रति अपने अनुभवों को दृढ़ करने वाली शब्दावली से परिचित कराना चाहिए तथा वास्तविक समाजिक स्थितियों को समझने के लिए अर्न्तदृष्टि व अवलोकन के अवसर उत्पन्न करना चाहिए।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण का परम लक्ष्य विवेचनात्मक चितंन का विकास, सामाजिक वास्तविकताओं और सह-अस्तित्व में अन्तर्निहित भिन्न पहचानों को समझना तथा कल्याण, शांति, व समृद्वि की दिशा में इच्छित बदलाव को सुलभ करने के सुझावों तक पहुँचना है। प्राय: इन विषयों का शिक्षण जिस प्रकार किया जाता है, उससे इन उददेश्यों को प्राप्त करने के बहुत से अवसर छूट जाते हैं। हम अवधारणाओं को बाह्य जीवन के साथ रूचिकर संबंध जोड़ने पर केन्द्रित करने के बदले इन्हें रटकर याद कर लेने पर केन्द्रित हो जाते हैं। यदि कभी शिक्षक और विद्यार्थी इन मुददों पर चर्चा करते भी है तो यह सकारात्मक और सृजनात्मक पक्ष पर केन्द्रित होने के बदले एक निराशावादी आलोचना की दृष्टि से होती है। सकारात्मक व्यवहारों को बढ़ाने या सृजनात्मक कदम उठाने के बारे में सोचना आगे बढ़ने की प्रक्रिया है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण की यही भूमिका है कि विषय शिक्षण की वास्तविक आत्मा को बनाए रखने के लिए शांति के परिप्रेक्ष्य को शिक्षण के केन्द्र में रखा जाए।

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु का लक्ष्य सामाजिक अध्ययन के विस्तृत क्षेत्र में अन्तर्निहित विषयों में रूचि उत्पन्न करना व चितंन करना सिखाना है, न

कि विद्यमान जानकारियों के विस्तार को याद करना। इस स्तर पर बच्चों की विकासात्मक स्थिति के अनुसार उनमें इस प्रकार के विस्तृत ज्ञान के समावेशित करने के लिए अपेक्षित संज्ञानात्मक क्षमता नही होती है। ऐसा कोई अति उत्साहयुक्त प्रयास जो उनमें बहुत अधिक ज्ञान ठूँसने का प्रयत्न करे, विपरीत प्रभाव डालेगा, पाठ्यक्रम को बोझिल बनाएगा, समस्याएं उत्पन्न करेगा और विषय के प्रति अरूचि बढ़ाएगा माध्यमिक स्तर पर विषय-वस्तु परिवर्तित हो जाती है और विषय ज्ञान अधिकाधिक थीम केन्द्रित होकर इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे अलग-अलग क्षेत्रों में विभक्त हो जाता है। हम यह देखने का प्रयास करते है कि विभिन्न स्तरों पर इन विषयों का शिक्षण करते समय कैसे विषय शिक्षण के मूल उददेश्यों से भटके बिना शान्ति सम्बन्धी सरोकारों पर बल दिया जा सकता है और विषय वस्तु की अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर, गहन और प्रभावी बनाया जा सकता है। नीचे एक पाठ योजना का वर्णन प्रस्तुत है -

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की कक्षा 8th की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में एक प्रकरण 'व्यापार से साम्राज्य: कम्पनी की सत्ता स्थापना है ' इसकी विषय-वस्तु 'ईस्ट इंडिया कम्पनी के व्यापार पर एकाधिकार' पर आधरित है जिससे व्यापार के एकमात्र अधिकार कम्पनी को देने, प्रतिद्वन्दी कम्पनियों को व्यापार न बढ़ाने देने, उच्च लाभ अर्जन की दृष्टि से मूल्य वृद्वि और प्रतिद्वन्दी कम्पनियों के मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न करने की नीतियों का वर्णन समाहित है। इस प्रकरण को पढ़ाते समय शिक्षक बच्चों को इन तथ्यों को उनके वर्तमान संदर्भो से जोड़ने का प्रयत्न कर सकते है; वे बच्चों से प्रश्न पूछ सकते हैं कि क्या उन्होनें कभी उपरोक्त प्रकार की स्थितियों का कभी अनुभव हुआ है। उनके अनुभवों का प्रयोग शिक्षकों द्वारा अर्न्तसमूह विवादों से संबंधित शांति के सरोकारों, स्थानीय समुदाय और उसके कल्याण के प्रति उदासीनता, और व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए बल प्रयोग और प्रतिद्वन्द्वियों को नीचे गिराना आदि को रेखांकित करने के लिये करना चाहिये।

उदाहरणार्थ, एन.सी.ई.आर.टी. की भूगोल की कक्षा 9 की पाठय्पुस्तक में एक प्रकरण 'वन एवं वन्यजीवन संसाधन पर है। प्रकरण में भारत के जीव जन्तुओं व वनस्पति पर, घटते वनों के संरक्षण और औपनिवेशिक नीतियों पर चर्चा हैं। ये समस्त प्रकरण वन-संरक्षण, पर्यावरणीय सरोकार, जीवों पर क्रूरता से संरक्षण और इनका पर्यावरण पर प्रभाव इत्यादि विषयों पर आधरित हैं जो मनुष्यों, जीवों व प्रकृति के मध्य पारस्परिक संबंधों के संकेतक है। इन सरोकारों की समझ उत्पन्न करने के लिए कक्षा में ऐसे अवसर उपलब्ध कराने होगें जिनमें उन आदिवासियों के विषय में चर्चा की जा सके जो जीवनयापन के लिए वनों पर निर्भर है जबकि शासकीय नियमानुसार ये समस्त वन संरक्षित घोषित हैं। विवाद/द्वन्द के इन उदाहरणों और न्याय व असमानता के इन मुददों पर चर्चा से बच्चे व्यापक परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगें और उनकी भावनात्मक व व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाएं भी प्रभावित होंगी। इसी प्रकार एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 7 की इतिहास की पाठ्यपुस्तक हमारा अतीत भाग-II

का पाठ 'हजार वर्षो के परिवर्तनों की पड़ताल' में विषय वस्तु को वास्तविक जीवन से जोड़ने और शांति के परिप्रेक्ष्यों को स्थापित करने के व्यापक अवसर उपलब्ध हैं। वह विषय वस्तु, जो विभिन्न धर्मों की अवधारणा पर चर्चा करती है ऐसे मुद्दे जैसे ऐतिहासिक घटनाक्रम जब लोग भारत यात्रा पर आए, और यहाँ व्यापार के अवसर तलाशते या स्वयं को शासक के रूप में स्थापित किया, चाहे वे अंग्रेज हों या मुगल या अन्य कोई, पढ़ाते समय इन बातों भी पर चर्चा करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराती है कि कैसे ये लोग अपने साथ नई तकनीक लाए और भारत की समन्वित संस्कृति बनाने में योगदान किया। उदाहरणार्थ: शेरशाह सूरी ने सड़कें बनवाई और पेड़ लगवाए जो आज भी व्यापार और यातायात सुलभ करा रही हैं। इस तरह के अन्य कई उदाहरण हैं।

विज्ञान विषय शांति के मूल्यों और सरोकारों को समाहित करने व रेखांकित करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराता है। विज्ञान के माध्यम से संक्षिप्तीकरण, लचीलापन, वस्तुनिष्ठता, सटीक अवलोकन, पुन: जाँच या सत्यापन और विवेचनात्मक चितंन की मनोवृत्तियों, मूल्यों और कौशलों को पोषित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक ज्ञान में स्वास्थ्य और स्वच्छता, पोषण, सफाई संबंधी मनोवृत्तियाँ, का विकास भी समाहित होता है जो गुणवत्तापूर्ण जीवन, वैयक्तितक प्रसन्नता व सामजिक सम्बंधों के लिए अत्यावश्यक है। विज्ञान शिक्षण के माध्यम से बहुत से पर्यावरणीय सरोकारों के साथ-साथ बहु-सांस्कृतिक मिथक और तथ्यों को भी सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जा सकता है। जीव विज्ञान की विषय वस्तु जो जीवों की उत्पत्ति और रोगों के प्रसार से संबंधित है हमें अपने उत्तरदायित्वों को समझने व दूसरों की सुरक्षा व देखभाल करने की प्रवृति का विकास करती है। शिक्षकों को विषय की अन्त:शक्ति को शांति के सरोकारों को आत्मसात करवाने के लिए पकड़ लेना चाहिए और यह स्पष्ट करना चाहिए कि किस प्रकार हमारे कार्य व्यवहार दूसरों को प्रभावित करते है व्यक्तियों में अनेक प्रकार से पारस्परिक निर्भरता होती है जो हमें कई बार स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं हो पाती है। इसी प्रकार रसायन विज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न धातुओं की क्रियाशीलता, अभिकर्मक और उत्प्रेरक आदि से संबंधित प्रकरण हैं इनमें भी ऐसे कई अवसर सुसंप्त या छिपे हुए हैं जिनसे हम न केवल पाठों को रूचिकर और मजेदार बना सकते हैं बल्कि यह भी बता सकते हैं कि किय प्रकार हमारा व्यवहार एक उत्प्रेरक या अभिकर्मक धातु या शांत धातु की तरह काम करता है जिससे निष्क्रिय व्यक्ति भी भागीदारी करने लगें। हम झगड़ों को उत्प्रेरित करते हैं या हम शांति स्थापित करने के लिए मध्यस्थता का कार्य करते हैं। इसी प्रकार भौतिक विज्ञान हमें यह देखने में मदद करता है कि किस प्रकार हमारे जीवन में संतुलन लाने वाली शक्तियों का पुनरावलोकन किया जाए जिससे हम यह समझ सकें कि क्यों हम अपने किसी विचार से जुड़/चिपक जाते हैं और दूसरों के प्रति नहीं खुलते हैं दूसरों के प्रति निष्पक्ष नहीं हो पाते हैं। हमारे सांस्कृतिक, पारिवारिक, और यहाँ तक कि विद्यालय के बंधन वे शक्तियाँ हैं जो हमें पूर्वाग्रही बनाते है।

एक शिक्षक को ये समस्त और ऐसे ही अन्य कई स्पष्ट या अस्पष्ट अवसर दिखाई दे सकते हैं जिससे वह शिक्षा को शांति के परिप्रेक्ष्य से ओत-प्रोत कर सकता है।

एन.सी.ई.आर.टी. की की कक्षा 10 की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में एक अध्याय ‘जीवन प्रक्रिया’ है जिसमें वनस्पतियों, जन्तुओं व मानवों के पोषण के विषय में बताया गया है। इस विषय वस्तु को बच्चों के अपने व अपने परिवार के अनुभवों जैसे दंत क्षय, रक्तदाब, हीमोगलोबिन और किडनी सम्बधी समस्याओं से जोड़ा जा सकता है। यह विषयवस्तु उन्हें प्रकृति के साथ हमारी अन्योन्याश्रित को स्पष्ट करती है जैसे पेड़ पौधे प्रकाश से उर्जा ग्रहण करके उसे हमारे लिए ईधन के रूप में परावर्तित कर देते हैं। इस प्रकरणों पर चर्चा-परिचर्चा उन्हें विषय-वस्तु की बेहतर समझ बनाने में सक्षम करेगी। साथ ही उन्हें विवेचनात्मक चितंन करने योग्य बनाएगी और वे अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनेगें।

इसी तरह "कोयला व पेट्रोल का बनना (संगठन)" नामक पाठ को यदि यात्रा की बढ़ती कीमतों और वायु प्रदूषण तथा भूमिगत संसाधनों की क्षीणता जैसे सामाजिक मुददों से जोड़कर समझाया जाए तो यह न केवल विषय-वस्तु को रूचिकर बनाएगा। बल्कि बच्चों द्वारा बेहतर तरीके से ग्रहण भी कर लिया जाएगा। विशेष रूप से जब विद्यार्थियों के विचारों और अनुभवों को स्थान दिया जाए ताकि ऐसे विशिष्ट (critical) मुददों पर उनके वास्तविक अनुभव आधारित प्रतिकियाएं मिल सकें।

इसके अतिरिक्त, कई बार, विषय वस्तु को रूटीन तरीके से पढ़ाने और शिक्षक के अपनी तल्लीनता के कारण विषय में अन्तर्निहित ये अवसर अनदेखे ही रह सकते हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि पुस्तकों की पाठ्य सामग्री को ऐसे परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाए जिससे विषय में अन्तर्निहित शांति की अभिवृत्तियाँ और मूल्य प्रकट हो सकें और शिक्षक अपने शिक्षण के दौरान उनका लाभ उठा सकें, न केवल विषय वस्तु, जिसमें शांति के मूल्य प्रकट या छिपे हुए हैं बल्कि नकरात्मक और शांति विरोधी उदाहरणों पर भी चर्चा परिचर्चा की जानी चाहिए। ताकि उनके प्रभाव को कम किया जा सके। यहाँ तक कि मुददों के सम्बन्ध में मतों की विभिन्नता को भी व्यक्त किया जाना चाहिए ताकि इन पर शांति के दृष्टिकोण से खूब गहराई से मनन किया जा सके। पाठ्यपुस्तकों में शिक्षकों के लिए ऐसे दिशा निर्देश व संकेत उपलब्ध कराए जा सकते हैं जिनके माध्यम से वे इन थीमों पर चर्चा को केन्द्रित कर सके।

पाठ्य-पुस्तकों में शांति संदर्भ

यह माना जाता है कि पाठ्यपुस्तकों में निहित विषय वस्तु का मूल्यों के सम्प्रेषण एवं शांति सम्बन्धित सरोकारों को रेखांकित करने में बहुत महत्व होता है। विशेषत: इस दृष्टिकोण से कि कोई भी विषय वस्तु मूल्य रहित नहीं होती है जो कि सामान्यत विहित अवधारणा के विपरीत है। वास्तव में, मूल्य पाठ्यपुस्तक में चयनित विषयवस्तु पर निर्भर

करते हैं। मूल्यों का सम्प्रेषण पाठ्यपुस्तकों में अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित हैं जिसमें दिशा निर्धारण करने की शक्ति है। शिक्षा प्रणाली में अनेक कारणों से पाठ्यपुस्तक में निहित इस क्षमता की उपेक्षा करना अथवा लाभ उठाना दोनों किया जाता रहा है। पाठ्यपुस्तक में अन्तर्निहित यह क्षमता चयनित विषय वस्तु, इसके प्रस्तुतीकरण के साथ -साथ प्रश्नों, दृष्टांतों, रेखांकन, चित्रांकन और यहाँ तक कि विषय-वस्तु के संगठन पर भी निर्भर करती है। विभिन्न विषयों की विषयवस्तु में अन्तर्निहित, दृष्टिकोण एवं मूल्य, जिनका शांति के सरोकारों से सम्बन्ध है उनकी पहचान करना और सचेत होकर उन्हें रेखांकित करना व पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत विषयवस्तु में अन्तर्गुष्फित करना होता है। यद्यपि समस्त विषयों में शांति से सम्बद्व दृष्टिकोणों एवं मूल्यों को विहित करने की क्षमता है, तथापि कुछ विषयों जैसे सामाजिक विज्ञान व भाषाएँ शान्ति संबंधी मूल्यों पर बल देने व रेखांकित करने के लिए अधिक उत्तरदायी हैं।

पाठों का शिक्षण करते समय उन थीमों व पाठों कीपहचान करना महत्त्वपूर्ण है जिनमें शांति के संदर्भ पूर्व से ही विद्यमान है ताकि शिक्षक विषयों में समावेशित शांति के इन सरोकारों पर बल दे सके। पाठ्यपुस्तको में समाहित विषय-वस्तु के शिक्षण की सचेतन योजना निर्माण और प्रस्तुतीकरण के द्वारा बच्चों को बहुत अधिक प्रभावित किया जा सकता है। अपंवचित व हाशिए पर जी रहे लोगों /जनता के मानवाधिकार व लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूक करते हुए शांति के मूल्यों को रेखांकित किया जा सकता है और बच्चों के मस्तिष्क में शांति के मूल्य स्थापित किए जा सकते हैं। उदाहरणार्थ: राजनीति विज्ञान की पुस्तक के भारतीय संविधान आधरित पाठ को पढ़ाते हुए समानता, न्याय, अधिकार और कर्तव्य, समरसता, पंथनिरपेक्षता और राष्ट्रीय अखंडता पर चर्चा की सकती है, जो शांति के सरोकार भी है। शान्ति की संभावना से पूर्ण थीमों और पाठों के अतिरिक्त ऐसे भाग जिनमें अंजाने ही हिंसा के दृष्टिकोण और संदर्भ आ गये हैं, को भी शिक्षकों को समझना होगा ताकि प्रकरण के शिक्षण के दौरान वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य विकसित किए जा सकें जो हिंसा की निरर्थकता के संदर्भ में जागरूकता विकसित करें।

उदाहरणार्थ: इतिहास की पाठ्यपुस्तकें पक्षपात या धार्मिक असहिष्णुता से सम्बधित विषयवस्तु को प्रस्तुत करते समय कभी - कभी क्रोध व आवेग को भड़का सकती है इस परिस्थिति को शिक्षक को सावधानीपूर्वक सँभालना होता है और इस प्रकार समझाना होता है कि पक्षपात का अर्थ दूसरों के विषय में निर्णय देने से होता है और हमें किसी अन्य के विषय में निर्णय न देकर केवल शान्ति व मानवतावादी दृष्टिकोण से देखना चाहिए। शिक्षक की जागरूकता का महत्त्व विद्यार्थियों को शांति समर्थक व शांति प्रतिगामी, दोनों संदर्भो को समझने, चितंन करने और तदनुसार समुचित चुनाव करने में सक्षम बनाने में निहित है। यह रणनीति न केवल संज्ञानात्मक वरन भावात्मक व व्यवहारत्मक क्षेत्रों में भी बदलाव को प्रेरित करेगी।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि विभिन्न विकासात्मक स्तरों पर शांति के संदर्भ में ज्ञान, मनोवृत्तियाँ एवं मूल्य जिन्हें बच्चों में पोषित करने की आवश्यकता है, भिन्न होती हैं। प्राथमिक स्तर पर जिन शांति के सरोकार को प्रेषित करने की आवश्यकता है वे हैं स्वंय के दूसरों के प्रति जागरूकता और सकारात्मक सोच, कार्य, अवकाश, अनुशासन, शिष्टाचार, भावनात्मक व सामजिक सुरक्षा, करूणा, विविधता और पर्यावरण के प्रति सम्मान,। माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में दी गई विषयवस्तु, प्रश्नों व चित्रों को भी उनमे निहित शान्ति के मूल्यों तथा वैयक्तिक विकास, सामाजिक कौशलों के विकास और सांस्कृतिक व राष्ट्रीय पहचान के महत्त्व की दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

शान्ति के घटकों जैसे सौन्दर्य बोध, दूसरों की परवाह करना, दया, सामूहिक जीवन, धर्म निरपेक्षता व लोकतंत्र के मूल्य इत्यादि को भी समकालीन किताबों की विषय वस्तु में सम्मिलित किया गया है। जैसे कि प्राइमरी स्तर पर वातावरण के अध्ययन संबंधि किताब में एनवारमैंट, स्वस्थ और गुणकारी जीवन की कला, इत्यादि। भाषा की पाठ्य पुस्तकें संप्रेषण की कला पर ध्यान देती हैं लेकिन अन्य सरोकार जैसे प्रसन्नता, आन्तरिक सद्भाव, जैंडर-पूर्वाग्रह, शारीरिक श्रम का आदर, शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्क विकास और कल्याण, सांस्कृति धरोहर की कद्र करना, इत्यादि कुछ ऐसे मुद्दे हैं जो स्पष्ट या अस्पष्ट रूप में, 8वीं कक्षा तक की किताबों में बुनी हुई हैं। ये मुद्दे 8वीं कक्षा के आगे की किताबों में भी जारी रहते हैं। माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में दी गई विषयवस्तु, प्रश्नों व चित्रों को भी उनमें निहित शान्ति के मूल्यों यथा वैयक्तिक विकास, सामाजिक कौशलों का विकास और सांस्कृति व राष्ट्रीय पहचान के महत्व की दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

प्राप्त समस्त अवसरों को चैतन्य होकर पूर्ण उपयोग करने के क्रम में, जिससें बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण और मूल्यों को विहित किया जा सकें, जो उन्हें स्वंय में सकारात्मकता विकसित करने, उत्तरादायी बनाने और स्व्यं के व दूसरों के अधिकारों के प्रति सम्मान जगाने में सक्षम बनाए; साथ ही पाठ्यपुस्तकों की सामग्री पर न्यायपूर्ण चिंतन व परिचर्चा भी की जानी है ताकि सभी प्रकार की मत विभिन्नताओं को अभिव्यक्त करने के अवसर दिए जा सकें। पाठ्यपुस्तकों में ऐसी विषय-वस्तु को सम्मिलित करने की आवश्यकता है जो बच्चों में शब्द सामर्थ्थ, ज्ञान, अवधारणा, प्रसन्नता के दृष्टिकोण व मूल्यों का विकास कर उन्हें शिष्ट, सौंदर्यबोध युक्त और सामाजिक रूप से जागरूक मानव बनाए।

उदाहरण के लिए भाषा की पाठ्य पुस्तकों में ऐसे उदाहरण होने चाहिए जो सांस्कृतिक विविधता में जीने, आदर व तदानुभूति के संप्रेषण दूसरों की सहायता करने, और स्वयं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति तथा मुख्यरूप से विवादों की स्थिति से निपटने के आर्दश व संप्रेषण कौशलों में सक्षम बनाए। उदाहरणार्थ के लिए एन.सी. ई. आर. टी. की कक्षा 4 की पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक 'आस-पास' में एक पाठ 'नन्दू के साथ एक दिन' है। इस पाठ की

विषयवस्तु बच्चों में एक साथ मिल-जुलकर रहने और सहयोग पर आधारित विचार को स्थापित करती है जिसे शिक्षकों द्वारा और अधिक विस्तार दिया जा सकता है। इसी पुस्तक के एक अन्य पाठ में प्रकृति, पेड़ -पौधे और जन्तुओं तथा इनके संरक्षण में मानव की भूमिका के बारे में चर्चा की गई है। इसी प्रकार, एन.सी.ई. आर. टी की कक्षा V की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक रिमझिम में एक पाठ 'किरमिच की गेंद' है।यह पाठ अप्रत्यक्ष रूप से एक सामान्य लक्ष्य पर केन्द्रित होकर विवादों को निपटाने की प्रक्रिया को सम्प्रेषित करता है। बच्चे एक गेंद को पाने के लिए परस्पर लड़ पड़ते हैं, किन्तु फिर वे लड़ाई खत्म करते हैं और मिलकर खेलने का निर्णय लेते हैं। इस प्रकार उदाहरणों का प्रयोग करते हुए शिक्षक बच्चों को कक्षा में प्राय: होने वाले विवादों, द्वन्दों के समाधान पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। कक्षा 8 में इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'हमारा अतीत' भाग तीन में एक पाठ 'व्यापार से साम्राज्य तक ' जो ईस्ट इंडिया कम्पनी के साम्राज्यीय ढॉचे और इसके कर्मचारियों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर केन्द्रित है। यद्यपि, यह इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि सभी कर्मचारी एक जैसे (भ्रष्ट) नहीं थे, और वे जिस प्रबल मानवीय भावना से प्रेरित होकर भारत आए थे, वह व्यापार करना, अधिकाधिक धनार्जन करना और वापस ब्रिटेन लौट कर एक आरामतलब जिन्दगी बिताना थी। तथापि कुछ भ्रष्ट अधिकारियों और सत्ता पाने की इनकी लालसा ने इतिहास की दिशा बदल दी। यह ईस्ट इंडिया कम्पनी की भूमिका और ब्रिटिश (लोगों) के प्रति दृष्टिकोण को सही परिप्रेक्ष्य स्थापित करता है। इस प्रकार, पाठ्यपुस्तकें प्रभावपूर्ण तरीके से अंत:सांस्कृतिक समस्या (समन्वय) के मूल्यों विवाद सुलझाने व सहयोग की ओर ध्यानाकर्षण करती हैं, जो शान्ति स्थापना को बढ़ावा देती हैं ।

शांति हेतु शिक्षण रणनीतियाँ

इस बात पर बल दिया जा चुका है कि कक्षा शिक्षण में विषय ज्ञान पर विवेचनात्मक चिन्तन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और यह समझा जाना चाहिए कि कैसे इन अनुभवों का उपयोग स्वयं के व दूसरों के जीवन को शांतिपूर्ण बनाने के लिए किया जा सकता है। यह तभी संभव हो सकता है जब शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सीखने के लिए स्वतंत्रता, समय व स्थान उपलब्ध हो सके जो उनकी सीखने की गति के अनुरूप और आरामदेह हो। यह सभी शिक्षार्थियों को अपने अभिमत व्यक्त करने से और विषयवस्तु को समझने में सक्षम भी बनाएगा। यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षार्थियों की अधिकाधिक भागीदारी को सुनिश्चित करने के साथ ही साथ शिक्षकों पर दबाव को भी कम करेगा। परन्तु इसका तात्पर्य यह नही है कि उनका कोई उत्तरदयित्व नही होंगा, बल्कि इसका अर्थ अलग तरह के उत्तरदायित्व से है। यह समर्थक की भूमिका है, जिसमें शिक्षक शिक्षार्थियों की क्षमताओं, रूचियों, और सीखने की शैली पर ध्यान दिए बिना सत्तावादी रूप में शिक्षण करने के स्थान पर सीखने को प्रोत्साहन देता है। पहले से ही बोझ से दबे शिक्षकों को बिना अतिरिक्त तनाव दिये यह कैसे संभव होगा? पाठ्यक्रम

समाप्त कर लेने के एकमात्र शिक्षाशास्त्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के स्थान पर शिक्षण की विभिन्न रणनीतियों व विधियों का उपयोग करके वे अधिकाधिक रचनात्मक हो जाते हैं ताकि बिना अधिक बोझ के वे सीखने को सुगम बना सकें।

विद्यार्थियों में सीखने के लिए विभिन्न इन्द्रिय व शारीरिक क्षमताओं के प्रयोग में अन्तरीय झुकाव होते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली व शिक्षण सामान्यत उन लोंगों के लिए अधिक अनुकूल है जो शाब्दिक माध्यम प्रयोग करते हैं। शिक्षण के समय छात्रों की विभिन्न अधिगम शैलियों और दूसरे माध्यमों जैसे दृश्य और भौतिक के प्रति प्राथमिकता की ओर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है जो चार्ट, चित्रकारी और कला या संगीत के माध्यम से सीखने के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। शिक्षण के द्वारा शिक्षार्थियों के समस्त आयाम- शारीरिक, भावात्मक व सौंन्दर्यात्मक और उनकी सामाजिक क्षमताओं को क्रियाशील करना चाहिए। केवल तभी शिक्षार्थियों का वास्तविक रूप में मूल्यों और कौशलों को अनुभव करते हुए, सम्पूर्ण विकास होगा। उदाहरण के लिए - लोकतंत्र या न्याय को पढ़कर याद कर लेने का अनुभव, इनसे सम्बधित किसी नाटक में प्रतिभाग करने या कार्य करने के लिए उन्हें एक लोकतंत्रीय ढांचा उपलब्ध कराने से भिन्न होता है यद्यपि पाठ्यवस्तु पढ़ाते समय भी नाटक के दौरान प्राप्त हुए अनुभवों पर चर्चा की जाती है। इस प्रकार की गतिविधियों में प्रतिभाग करने से शिक्षार्थियों को वे अनुभव प्राप्त होते हैं जो उनकी स्मृति में अमिट छाप छोडते हैं। ये रणनीतियाँ शिक्षार्थियों की वय के अनुसार प्रत्यके व वर्ग के लिए भिन्न भिन्न होगीं यहाँ शिक्षकों के प्रयोग हेतु कुछ विशेष रणनीतियों पर चर्चा की जा रही है।

प्राथामिक स्तर पर बच्चे सबसे ज्यादा तब सीखते हैं जब उनकी समस्त ज्ञानेन्द्रियों को सीखने की प्रक्रिया में प्रयोग के अवसर मिले हैं। वे अभी अपनी शारीरिक और शाब्दिक क्षमताओं की छानबीन/खोजकर रहे होते हैं जबकि उनका संज्ञानात्मक विकास अत्यन्त तीव्र गति हो रहा होता है। वे अपने प्रेरक (गामक) कौशलों और विभिन्न संदर्भो में सम्प्रेषण हेतु सम्प्रेषण कौशलों का प्रयोग, औपचारिक अवसरों और माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले विषयवस्तु की समझ के लिए शब्द सामर्थ्य विकसित कर रहे होते हैं। उनके व्यक्तितव विकास की प्रक्रिया तब अधिक तीव्र हो जाती हैं जब बच्चे सीखी गई मनोवृतियों व व्यवहारों का अभ्यास कर पाते हैं। छोटे समूहों में नाटक, कहानी कथन और अनुभव आधारित गतिविधियाँ जैसे, भ्रमण आदि के प्रयोग द्वारा सीखने के ऐसे अनेक अवसर सृर्जित किए जा सकते हैं।

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर ज्यादातर विद्यार्थी प्रेरक कौशलों और विद्यालयों में सीखने के लिए आवश्यक भाषा में निपुणता प्राप्त कर चुके होते हैं। उनका व्यक्तितव अब तक विद्यालय की मान्यताओं जो अनुरूप ढ़ल जाता है। वे मनोवृत्तियाँ, मूल्य व व्यवहार जो शांतिपूर्ण व्यवहार के अनुकूल नहीं होते, प्राय: विद्यार्थियों द्वारा छिपा लिए जाते हैं क्योकि वे जान चुके होते हैं कि इन व्यवहारों को सामाजिक मान्यता प्राप्त नहीं है।

इसके अतिरिक्त, कई बार ध्यान न दिए जानेके कारण घर या विद्यालय में सीखी गई मनोवृत्तियाँ विकसित नहीं हो पाती हैं।

अनुभवात्क्रम अधिगम अभिव्यक्ति और चिंतन को सुलभ बनाता है और मनोवृत्तियों व व्यवहारों को शांन्ति उन्मुख बनाता है। इसमें न केवल उन रणनीतियों का प्रयोग सन्निहित है जो सही मनोवृत्तियों के निर्माण के लिए मार्गदर्शन करती हैं बल्कि विषय-वस्तु को गहनता से समझने व उन विद्यार्थियों को भी काम में संलग्न कर लेती हैं जिन्हें शाब्दिक रूप से समझने में असुविधा होती है।

मौन बैठक

कक्षा में कई बार ऐसी स्थितियों उत्पन्न हो जाती है जब शिक्षक बच्चों पर बहुत उत्तेजित हो जाते हैं, क्योंकि वे उस समय सुनने या पढ़ने के लिए बिल्कुल इच्छुक नहीं होते हैं। जब कक्षा में शिक्षार्थियों को किसी गभ्भीर कार्य पर केन्द्रित करना हो या वे थके हुए हों या जान बुझकर उन्हें किसी गभ्भीर मुददे पर लाना हो तो ऐसे समय में इस रणनीति का प्रयोग उन्हें पुन: सक्रिय करने और उनकी अधीरता को नियंत्रित करने के लिए किया जा सकता है।इस रणनीति का प्रयोग सभी बय के बच्चों के साथ कियां जा सकता है। शिक्षार्थी हलके से अपनी आँखे बन्द करें और स्थिर होकर बैठ जाएँ। शिक्षक स्वयं भी इस अभ्यास में प्रतिभाग करें। इस मौन बैठक के दौरान प्राप्त अनुभवों का बच्चों के बीच साझा करवाया जा सकता है और चर्चा की जा सकती है कि इस दौरान व इसके बाद उन्हें क्या व कैसा अनुभव हुआ। शिक्षक यह देख पाने में सक्षम होगें कि इस अभ्यास के बाद बच्चों की अधीरता में कमी आती है। प्रयोगों से यह ज्ञात हुआ है कि मौन बैठक और स्वयं के साथ रहने की प्रक्रिया आत्म -विश्वास बढ़ाने और दूसरों के साथ सामंजस्य में रहने की क्षमता कों बढ़ाती हैं। यह नकारात्मक भावनाओं को कम करता है और शांति का अनुभव करने में सहायता करता है। यह पाठ प्रारभ्भ करने से पूर्व स्वयं को तैयार करने हेतु अभ्यास की तरह कार्य करता है।

नाटक और भूमिका निभाना

एक अन्य रणनीति 'नाटक' से आप सुपरिचित हैं। नाटक और भूमिका निर्वहन में अन्तर हैं। दोनों की ही प्रयोग छोटे बच्चों व किशोर बच्चों के साथ किया जा सकता हैं किन्तु दोनों के द्वारा अनुभूत समस्याएँ व मुददे भिन्न है अत: इनके प्रयोग के उददेश्य भी अलग अलग होगें। नाटक उन स्थितियों में अनुकूल होता है जब यह विस्तृत रूप में लिखित और सुनियोजित हो और कुछ बच्चों अथवा किशोरों को उसकी जानकारी हो। नाटक में पाठों को आत्मसात् करने या उसमें मौजूद विषयवस्तु को या विषय वस्तु की अवधारणा या विचार को व्यक्त करने के लिए इसे दूसरों के समक्ष मंचन/अभिनीत करना होता है। उदाहरण के लिए इतिहास के पाठ या भाषा सीखने के लिए या घरेलू -सामजिक मुददों को स्पष्ट करने

के लिए नाटक का प्रयोग किया जा सकता है। मुंशी प्रेमचंद्र की कहानी - बडे भाई साहब या बिशप का शमादाना (Bishop’s Candlesticks) या ऐसी ही कोई अन्य कहानी या पाठ का मंचन परिस्थितियों, लोकाचार या मूल्यों को रेखंकित करने के लिए किया सकता हैं। नाटक के लिए बच्चों के द्वारा कोई भी उपयुक्त विषय चयनित किया जा सकता है। किंतु अधिगम की दृष्टि से सबसे अच्छा होता हैं कि नाटक को विद्यालय प्रतियोगिता अथवा पुरस्कार के लिए न किया जाए बल्कि सामान्य रूप से कक्षा में खेला जाए, जिससे उन मूल्यों का सिंहावलोकन किया जा सके जो नाटक करने के अनुभव के दौरान हुए।

आत्मभिव्यक्ति व तदानूभूति (सहानुभूति) की भावना का विकास और विवाद समाधान की दृष्टि से भूमिका निर्वहन अधिक उपयुक्त है। कक्षा, विद्यालय, परिवार या समुदाय में सक्रिय भावानात्मक स्थितियों को अभिव्यक्त करने के लिए भूमिका निर्वहन अधिक उपयुक्त है जहाँ पात्र उन व्यक्तियों की भूमिकाओं को निभाते हैं जिन्हें उन्होने विवाद के समय, या अनुशासन व अवज्ञा संबंधी मुददों में संलग्न व्यक्तियों के अवलोकन के दौरान देखा है ; उदाहरण के लिए किशोरों का अपने माता-पिता व शिक्षकों का अन्य व्यक्तियों के साथ हो रहा द्वन्द। भूमिका निर्वहन में शिक्षक द्वारा किसी परिस्थिति का वर्णन किया जाता है तब विभिन्न व्यक्ति विभिन्न भूमिकाओं की कल्पना करते हैं। फिर जिसक प्रकार का चरित्र उन्हें बताया गया है उसके अनुरूप अपने अनुभवों को टटोलकर पात्र भूमिका निर्वाह करते हैं। भूमिका निर्वहन हो चुकने बाद बच्चों को अपनी भूमिका व चरित्र निभाते हुए स्वयं को तथा दूसरे बच्चों को क्या अनुभव हुए पर चर्चा की जाती है। यह एक अत्यन्त शक्तिशाली माध्यम है। इसे शिक्षकों या बच्चों द्वारा आकस्मिक या लापरवाही से प्रयोग नही किया जाना चाहिए। भूमिका निर्वहन के दौरान पात्रौ द्वारा निभाए जा रहे चरित्र की सीमाओं और उसकी कुंठाओं को अनुभूत किया जाता है। भूमिका निर्वहन के दौरान भावानात्मक विस्फोट और गभ्भीर भावनात्मक अधिगम होता है। अत- शिक्षक को निर्णय दिए बगैर अनुभवों की व्याख्या करनी चाहिए, प्रतिभागियों को सहारा देना चाहिए और क्रोध, कुंठा और कड़वाहट की भावना को सम्मानपूर्वक स्वीकार करना चाहिए।

कहानी सुनाना

हाल के वर्षो में हमने सीखा है कि दिमाग कहानियों को वरीयता देता है। यह प्राथमिक विद्यालय कक्षाओं के बच्चों, जो हाव-भाव व अभिनय के प्रति मोहित होते हैं, के लिए लाभदायी है यह उन्हें कहानी के चरित्र के साथ अपनी राय को सुरक्षित रूप से रख पाने में सक्षम बनाता है। जब किसी विषयवस्तु पर व्यवहारिक अनुभवों से जोड़ते हुए चर्चा की जाती है तो वह बेहतर तरीके से आत्मसात (धारित) होती है और इस पर निरंतर चिंतन करना अपरिहार्य है। सत्रान्त में चर्चा का उपयोग विद्यार्थियों की रचनात्मकता को उद्दीप्त करने, गहराई में बैठी डर की भावनाओं, कुंठा और चिंता या पक्षपात को व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है जो कहानी के पात्रों को ऐसी भावनाओं के संबंध में उनके विचारों से

प्रकट होती हैं। कहानी के समापन पर उनकी भावनाओं, मनोवृत्तियों और मूल्यों को अभिव्यक्त करने के लिए उनसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए चोरी के विषय में कहानी सुनाने के बाद यह पूछा जा सकता है कि चोर को क्या सजा दी जानी चाहिए या अनुचित व्यवहार करने वाले पात्र के साथ कैसा व्यवहार किया जाए? इस प्रकार के प्रश्नों से उनके समस्त डर, पक्षपात व पूर्वाग्रहों को बाहर निकाल ऐसे अनुभवों की संरचना के लिए किया जा सकता है जो भावनात्मक रूप से सुरक्षित, सहनशील ओर पक्षपात रहित मनोवृत्ति व व्यवहार को बनाते है।

कई बार पाठ्य-सामग्री का उपयोग करते हुए उनको शामित करने व उनकी रूचि जगाने के लिए उन्हें स्वयं अपनी कहानी सुनाने के लिए भी कहा जा सकता है, जिससे उन्हें अपनी शब्द-सामर्थ्य विकसित करने और पाठ व विचार को आत्मसात करने में सहायता मिलती है। तथापि, यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि ये सत्र आलोचनात्मक न हों और उनकी राय पर शिक्षकों द्वारा निर्णय न दिया जा जाए। यह किसी बात/विषय पर विचारों का निर्माण, कर उनकी अभिव्यक्ति व प्रदर्शन के लिए है।

परिचर्चा

एक रणनीति के रूप में परिचर्चा तब उपयोगी होती है जब शिक्षक को किसी प्रकरण पर विभिन्न दृष्टिकोण का विवेचनात्मक परीक्षण एवं विस्तार करना हो। प्राय- अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान एवं अन्य विषयों में शिक्षार्थियों के सामने सिद्वान्तों, घटनाओं और आंकड़ों को विभिन्न प्ररिप्रेक्ष्यों में तथा महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करना होता है। उदाहरण के लिए - माना हम विदेशियों के भारत में आने और उनका भारतीय अर्थवयवस्था एवं व्यापार पर प्रभाव की चर्चा कर रहे हैं। विविध विचारों जिनसे से कुछ अत्यधिक ध्रूवीकृत होते हैं, इस प्रकार शांति से सम्बधित दृष्टिकोणों को सीखने के अवसर उपलब्ध होते ही हैं। कुछ विद्यार्थी इन प्रवासियों को स्थानीय संस्कृति व विविधता से संवर्धन करने वाले और तकनीकी प्रगति, व्यापार व भूमंडलीकरण को बढ़ावा देने वालों के रूप में देख सकते हैं, तो वहीं कुछ दूसरे विद्यार्थी इन्हें स्थानीय संस्कृति पर खतरे के रूप में देख सकते हैं। कुछ अन्य विद्यार्थी भारत की बहुलतावादी संस्कृति और विविध राज्यों पर बात करते हुए चर्चा को आगे ले जा सकते हैं। विभिन्न शिक्षार्थियों के योगदान से सांस्कृतिक विविधता, पारस्परिक निर्भरता और विभिन्न संस्कृतियों की शक्ति के प्रति सम्मान को स्वीकारा जा सकता है। यद्यपि, सम्पूर्ण कक्षा के साथ परिचर्या का प्रयोग सभी बच्चों को भागीदारी करने में सक्षम नहीं बना सकता। संकोची/ शर्मीले ऐसे बच्चे जिनकी विषय पर पर्याप्त तैयारी नहीं है, को भी प्रेरित करने की आवश्यकता होती है। बच्चों को प्रेरित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती है

इसके विपरीत मात्र इतना ही पर्याप्त होता है कि न तो उनकी आलोचना की जाए और न ही उनकी गलतियों पर अँगुली उठाई जाए। इससे उनकी सहभागिता और योगदान को स्वीकार

करने में सहायता मिलती है। गलतियों को बताने के लिये पूरे समूह के सम्मुख विषय वस्तु को प्रस्तुत करके या तथ्यों को पुन- बता कर रखा जा सकता है। संकोची, चुप रहने वाले, शान्त, शर्मीले बच्चों को छोटे समूहों में परिचर्या में संलग्न किया जा सकता हैं।

छोटे समूह में सीखना

शिक्षक बच्चों को छोटे समूहों में बाँट सकते हैं जो बिना किसी आधार पर बेतरतीबी से बनाया जा सकता है। इन समूहों को विषय-वस्तु या पाठ्य-वस्तु पढ़ने का उत्तरदायित्व दिया जा सकता है। शिक्षक की भूमिका सहयोगी, निरीक्षण कर्ता व समन्वयक की है। यह तकनीक प्राथमिक स्तर के अपेक्षा माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए प्रयोग की जा सकती है, हालंकि समूहों का प्रयोग प्रत्येक स्तर पर किया जा सकता है। छोटे समूहों उन शिक्षार्थियों की भी अभिव्यक्ति में सहायता करते हैं जो सम्पूर्ण कक्षा में भागीदारी नहीं करते हैं। यह रणनीति गणित भाषा या विज्ञान के कठिन प्रकरणों को पढ़ाने में प्रयोग की जा सकती हैं क्योंकि सभी बच्चों की कठिनाइयों को दूर करने एवं भावानात्मक सहयोग के लिए समूह के सदस्य एक दूसरे की सहासता करते हैं। श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए समूहों के मघ्य एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा स्थापित हो जाती है जिसके कारण समूह का प्रत्यके सदस्य दूसरे की सहायता करने लगता है ताकि प्रत्येक सदस्य श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सके। यधपि इन समूहों के मध्य अनेक वैयक्तिक- सामाजिक मुददे भी उत्पन्न हो जाते हैं तथापि ये स्थितियाँ बच्चों को देखभाल, क्षमा और संयम के मूल्यों को सीखने में सक्षम बनाती हैं।सभी शिक्षार्थियों को शामिल करने और सीखना सुगम करने के साथ ही यह तकनीक शिक्षक को आगे सोचने व योजना बनाने के लिए स्वतंत्र भी करती है। शिक्षार्थी एक दूसरे से सहयोग करना तथा समूह में काम करना सीखते हैं वे एक-दूसरे को भावनात्मक सहयोग देने के लिए परस्पर मध्यस्थता करना व संप्रेषण भी सीखते हैं।

डायरी (दैनन्दिनी) लेखन

बच्चों को अपनी दैनिक डायरी रखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है जिसमें वे प्रतिदिन की समस्त घटनाओं, विचारों को लिख सकते हैं जा कक्षाओं के प्रारंभ होने से अन्त तक उन्हें महत्वपूर्ण लगी हों। यह उन्हें अपनी दैनिक गतिविधियों को याद करने, और अपने कार्य, गृहकार्य व अध्ययन के प्रति नियमित व समयबद्व बनने में सहायता करने की रणनीति के रूप में कार्य करती है। यह उन्हे अपने नए ज्ञान व अनुभवों का पुनरावलोकन करने व चिंतन को सुलभ बनाता है। डायरी दिनभर की कार्य व्यस्तताओं में पाए गए अपने आवेगों और अनइच्छित व्यवहार का अनुश्रवण करने की मुक्ति के रूप में कार्य करती है। अपने व्यवहार का अभिलेख रखने के कारण वे जागरूक होते है और अपने दृष्टिकोणों और व्यवहारों के पीछे की वास्तविकताओं को समझने लगते है। अपने सकारात्मक या नकारात्मक व्यवहारों के प्रति यह जागरूकता अन्हें बेहतर परिवर्तन लाने के लिए उददीप्त करती है। यद्यपि बहुत छोटे बच्चे अपने विचार या अनुभवों को लिख पाने में सक्षम नहीं

होते हैं किंतु उन्हे भी अपने दिन-भर के स्वयं अनुभवों पर चित्र बनाने को कहा जाना चाहिए। यह उन्हें दिन भर की गतिविधियोंपर अशाब्दिक अभिव्यक्ति में सहायता करेगा। इससे बच्चों में एक बहुत उपयोगी आदत विकसित होगी।

इनके अतिरिक्त भी अन्य कई रणनीतियाँ हैं जिन्हें विभिन्न समूहों के साथ उपलब्ध संसाधनों के आधार पर उपयोग किया जा सकता है। उदाहण के लिए कॉलाज बनना बच्चों में राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र या इतिहास संबधी पाठों की समझ बनाता है। चयनित विषय-वस्तु पर बच्चे सामग्री एकत्र करके कॉलाज बना सकते हैं। सामुदायिक सामाजिक कार्य या निकटवर्ती घरों का भ्रमण, बच्चों के घरों में बारे में पारस्परिक क्रिया कराने या ग्रामीण समुदाय से बातचीत न्याय, समानता और स्वतंत्रता के मुददों की समझ बनाने में मदद करते हैं। पिकनिक और किसी पार्क और ऐसे स्थान भ्रमण का जो शान्ति या बच्चों को समानता, सामंजस्य और स्वतंत्रता से संबंधित हों बच्चों को अपने इन मूल्यों को अनुभव करते और उन पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं।

उदाहरण हेतु कुछ विचार

प्राथमिकता स्तर पर एक बच्चे का 'स्व' विस्तार पाता है। यह स्वयं की क्षमताओं के प्रति धारणाओं के विकास के रूप में होता है और इसमें परिवार की विशेषताएँ जुड़ती है। बच्चों को इन्हे दूसरे बच्चों के साथ बिना किसी को भी नकारात्मक विचार दिए, साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए प्राथमिक स्तर पर परिवेशीय अध्यन की कक्षा में, उन्हें अपने घर में प्रयोग की जा रही भाषा व बोली सांस्कृतिक उत्सव और रीति-रिवाजों, परम्परागत वेशभूषा आदि के बारे में बोलने के अवसर दिए जाने चाहिए। इस प्रकार का आदान-प्रदान उन्हें पिकनिक और किसी पार्क या ऐसे स्थान का भ्रमण जो शान्ति या समानता,सामंजस्य और स्वतंत्रता से संबंधित हों,बच्चों को अपने इन मूल्यों को अनुभव करने और उन पर चिंतन करने के लिये प्रेरित करता है। अपनी व दूसरों की संस्कृति को समझने और पक्षपात के तत्वों को दूर करने में सहायता करता है। ये गतिविधियाँ, जो बिना निर्णय दिए या मूल्यांकन के, परस्पर साझा करने को सुगम बनाती हैं, बच्चों में स्वयं को स्वीकारने, मूल्यांकन के तनाव को दूर करने और अपने प्रति आदर तथा पारस्परिक भिन्नता के प्रति सम्मान की भावना उतपन्न करने में सहायता करती हैं। यह पक्षपात को न्यूनतम कर देता है और आन्तरिक शान्ति को बढ़ावा देता है 1

इसी प्रकार छोटी-छोटी परियोजनाएं (प्रोजेक्ट) क्राफ्ट और कला के सामूहिक कार्य उन्हें पारस्परिक सहयोग और समन्वयन के लिए पूर्व तत्पर करते हैं।

माध्यमिक स्तर पर भाषा संबंधी गतिविधियों में इस प्रकार के प्रकरण जैसे : मित्रों के मध्य गलतफहमियाँ और तीसरे व्यक्ति द्वारा मध्यस्थता जो दोनों का मित्र हो, के विषय में लिखने को कहा जा सकता है। यह बच्चों में मध्यस्थता करने और समझौता कराने के लिए

आवश्यक सकारात्मक शब्द चयन की क्षमता का विकास करेगा। क्षमा करना और दूसरों की सहायता करना, सीखने के साथ-साथ अर्थहीन शब्दों, अनुचित स्थितियों व टीका-टिप्पणियों के कारण जन्मी गलतफहमियों के विषय में एक अर्न्तदृष्टि विकसित करने में भी सहायता करता है। इसी प्रकार 'पर्यावरण के प्रति लोगों का कठोर दृष्टिकोण या समुदाय में 'सामाजिक न्याय, भेदभाव व नागरिकता के मुददे' पर सम्पादक के नाम पत्र लिखने के लिए कहा जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षक इस प्रकार के प्रश्न पूछ सकते हैं - 'एक शांतिपूर्ण विश्व कैसा होगा'? विश्व में शांति दुर्लभ क्यों हो गई है? आप किस प्रकार के परिवर्तन लाना पसंद करेगे? और इन प्रश्नों के उत्तर अपने भूगोल, इतिहास और राजनीति विज्ञान की समझ के आधार पर खोजने के लिए सहायता करें। इस प्रकार के प्रश्न हमारी शांति संबंधी या शांति के विपरीत, दोनों प्रकार की मनोवृत्तियों और मूल्यों को स्पष्ट करते हैं। उन मूल्यों एवं दृष्टिकोणों पर भी चर्चा की जाना आवश्यक है जो शान्ति

विरोधी है ताकि भ्रमों को दूर किया जा सकें। जैसा कि उस अघ्यापिका ने किया जिसने कक्षा में बच्चों की उग्रवादियों संबंधी दृष्टिकोण का सामना और विचारों की विसंगति और निष्कर्षो को स्पष्ट किया। वरिष्ठ विद्यार्थियों के लिए इसी प्रकार की एक गतिविधि, समाज की ऐसी समस्याओं जिनके रचनात्मक समाधान की जरूरत है, की पहचान, और उनके समाधान के लिए कुछ सुझाव अभिव्यक्त करना, हो सकती है ।

विज्ञान प्रकृति से ही क्रिया प्रधान विषय है। और यह प्रथामिक स्तर से ही विषयवस्तु की गहन छानबीन की प्रक्रिया के माध्यम से बच्चों में उपयुक्त मनोवृत्तियों, मूल्यों और आदतों के विकास के अवसर उपलब्ण करता हैं, बच्चों में अवलोकन, संक्षिप्तीकरण, मापन व विवेचनात्मक चिंतन की मनोवृत्तियों व कौशलों का पोषण करता है गतिविधियाँ, जो उन्हें पर्यावरणीय या सामाजिक मुद्दों में अन्तनिर्हित पूर्वाग्रहों, पक्षपातों और कई प्रकार के सामाजिक अन्याय के बिदुओं पर अपरिपक्व निर्णय लेने य अति सामान्यीकरण करने बचाती हैं। जीव विज्ञान में ऊतकों का अध्ययन और मानव शरीर की अन्य प्रणालियों का अध्ययन कराते हुए जीवनशैली प्रबन्धन के माध्यम से स्वास्थ्य एवं रहन-सहन सिखाया जा सकता है। उदाहरणार्थ : खान-पान और भोजन का रक्तदाब, मधुमेह और हृदय संबंधी रोगों के साथ संबंध बताया जा सकता हैं।

इस प्रकार का विषय शिक्षण विषय-वस्तु द्वारा सीखे जाने वाले प्रकरणोंपर समझौता किए बगैर शांति के परिप्रेक्ष्य स्थापित करने के लिए अनेक अवसर प्रदान करता हैं।बल्कि, यह विषय -वस्तु की समझ और प्रक्रिया को गहनता प्रदान करता है। शांति परिप्रेक्ष्य को शिक्षण में सम्मिलित करना और उपयुक्त रणनीति का प्रयोग शिक्षक को विषयवस्तु को अधिक रोचक बनाने में सक्षम करता है और उस बच्चें के न केवल संज्ञानात्मक बल्कि भावात्मक और व्यवहारात्मक आयाम को भी व्यापकता देने में सहायता करता है।

परीक्षा एवं आकलन संबंधी मुददे

शिक्षक के रूप में हम जानते हैं कि आकलन एवं मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया के आवश्यक अंग हैं। आकलन की वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय प्रणाली शिक्षर्थियों के लिए पश्च-पोषण (फीडबैक) उपलब्ध कराने के साथ ही साथ शिक्षकों को छात्रों की प्रगति व अपनाई गई सीखने-सिखाने की विधियों पर भी पश्चपोषण उपलब्ध कराता है। एक विश्वसनीय परीक्षा प्रणाली के अभाव में शिक्षण अधिगम के संरचनात्मक व सत्रांत उद्देश्य अपूर्ण रह जाते हैं।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली, शिक्षार्थियों व शिक्षकों को फीडबैक (पश्चपोषण) उपलब्ध कराने की प्रणाली के स्थान पर शिक्षार्थियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा में बदल गई है।परीक्षा पर इस अति केन्द्रीय करण ने कक्षाकक्ष व विद्यालय के वातावरण को दोषपूर्ण प्रतियोगिता की ओर झुका दिया है और इससे शिक्षा के अन्य सभी उद्देश्य बहिष्कृत हो गए हैं। इस प्रतियोगितामयता के कारण सीखने की वास्तविक अभिलाषा का स्थान परीक्षा के भय अनुचित व्यवहार, तनाव व कुंठा ने ले लिया है 1

यह भीषण प्रतियोगिता और असफल होने वाले बच्चों को कलंक घोषित करना, उन्हें हताश कर देता हैं और कुछ लोगों को आत्महत्या तक पहुँचा देता है। सीखना, जिसका अर्थ आनन्दायी अनुभव है, कुछ कष्टप्रद अनुभव में बदल गया है। हम जानते हैं कि कुछ बच्चे जो शीर्ष स्थान बना पाने में असफल हो जाते हैं, तनावगंस्त होकर आत्महत्या कर लेते हैं, बहुत-से उन बच्चों की तरह, जो परीक्षा में उत्तीर्ण श्रेणी में नही आ पाते हैं। ये चरम प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं, किंतु समान्य विद्यार्थी भी मूल्यांकन की इस व्यवस्था से प्रसन्न नहीं हैं। तथापि आकलन को मात्र इस कारण से हटाया नहीं ता सकता कि यह शिक्षार्थियों में अत्यधिक चिंता व तनाव उत्पन्न करता है और सीखने के आनन्द को समाप्त कर देता है। आवश्यकता इस बात की है कि न केवल सीखने-सिखाने की व्यवस्था में परिवर्तन लाया जाए बल्कि आकलन प्रणाली में भी यह परिवर्तन आए। इसे मूलत: पुनर्संगठित करने और शान्ति उन्मुख व शिक्षार्थी के प्रति मैत्रीपूर्ण बनाने की आवश्यकता है। किंतु, व्यवस्थागत सुधारों की प्रतीक्षा किए बिना, एक शिक्षक के रूप में हम तत्काल क्या कर सकते हैं?

एक शिक्षक के रूप में हमारी निर्णायक भूमिका है। वास्तव में, यह हम हैं जो मूल्यांकन की इस यांत्रिक तरीके से, जो प्रगति का अभिलेखन नहीं करता, व इच्छित स्थान न पाने वाले शिक्षार्थियों को आत्मनिंदा की ओर पूर्व प्रवृत या पृथक कर सकते हैं, बल्कि इसके बजाय हम समझ की कमी के कारण उन्हें दंड़ित करते हैं या पास व फेल के रूप में वर्गीकृत करने लगते है। यह वर्गीकरण न केवल उन्हें हतोत्साहित करता है और सीखने की उनकी क्षमता और प्रेरणा को प्रभावित करता हैं; बल्कि उनका ध्यान अपने साथी-समूह से पहचान पाने के लिए दूसरी ओर ले जाती है, जो उनकी सकारात्मक आत्मछवि के लिए निर्णायक होती हैं। ऐसी पहचान के अभाव में कक्षा में पिछड़ें बच्चे प्राय: कामचोरी, लड़ाई-झगड़ें और अन्य नकारात्मक व्यवहार अपना लेते हैं। हम क्या कर सकते हैं?

सर्वप्रथम हमें मूल्यांकन के उददेश्य को समझना होगा जो कि शिक्षार्थियों की प्रगति का अभिलेखन करना है। ऐसा अभिलेखन जो यह बताए कि उन्होने क्या सीख लिया है, न कि क्या नहीं सीखा, प्रगति का अभिलेखन उनका ध्यान उन दूसरे क्षेत्रों, जो उनके लिए कठिन हैं, की ओर ले जाने में सक्षम बनाता है। विद्यालयों में आकलन को एक एक साध्य के रूप में लिया जाता है, कि टैस्ट या परीक्षा जो के नम्बर अपने-आप में बहुत कुछ नहीं बताते हैं। शिक्षार्थी मुश्किल से ही अपने सशक्त पक्ष या सुधार के उन क्षेत्रों में ध्यान दे पाते हैं। सामान्य प्रवृति उन क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित करने की है जिनमें शिक्षार्थी पिछड़ रहे हैं बजाए उनके सशक्त क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित करने के शिक्षकों और अभिभावकों में भी एक सामान्य भय यह भी है कि प्रगति का जश्न मनाना/प्रशंसा करना शिक्षार्थियों को आत्मसंतुष्ट या घमंडी बना देता है। इसके विपरीत किसी गुण की प्रशंसा सभी क्षेत्रों में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है। अत: यह अत्यन्त महत्पूर्ण है कि वे जिन भी क्षेत्रों में प्रगति करने में सक्षम हुए हैं उसकी प्रशंसा की जाए। मात्र सही ढंग से की गई प्रशंसा ही बच्चों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित व उत्साहित करती है। हममें से कुछ लोग वास्तव अपने विद्यार्थियों से सरोकार रखते हैं, उनके कार्य-निष्पादन के विषय में उनकी सहायता करते हैं, उन्हें उपदेश देते हैं किंतु हमारा ध्यान उनके मजबूत पक्षों के बजाए उनकी असफलताओं पर केन्द्रित रहता है। हम बजाए उनकी योग्यता पर विश्वास करने के धमकी और डर का प्रयोग करते हैं।

अनुसंधान सिद्व कर रहे हैं कि माता-पिता और शिक्षकों की अपने बच्चों से जो अपेक्षाएं (आकाक्षाएं) हैं वे बच्चों के वास्तविक कार्य-निष्पादन स्तर को प्रभावित करती हैं। अत: हमे अपने बच्चों मे निहित अन्त:शक्ति और क्षमताओं पर वास्तविक विश्वास रखना चाहिए। इस संदर्भ में बच्चों की अन्तरीय शक्तियों पहचानने की आवश्यकता दूसरा सरोकार है। सभी शिक्षार्थियों को सभी विषयों में उतकृष्ट प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं हैं। हम विद्यार्थियों की सफलता पर प्रशंसा करने या उत्तीर्ण होने पर श्रेय देने या अधिकतर विषयों में अच्छा करने के लिए प्रशंसा करने के बजाए उनकी असफलताओं पर बहुत अधिक केन्द्रित हो जाते हैं। इसकी अतिरिक्त केवल अकादमिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों जैसे खेल, नाटक आदि क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को भी पहचान प्राप्त करने के अवसर दिए जाने आवश्यक हैं, ताकि सभी शिक्षार्थियों को सफलता व प्रशंसा के अवसर प्राप्त हों। प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए कुछ न कुछ सफलता सुनिश्चित करना आवश्यक है ताकि वे निरन्तर सफलता की भूख बनाए रखने के लिए प्रेरित हों, विशेषत: उन मामलों में जबकि अन्य बाहरी असम्बद्व कारकों जैसे घर, साथी, भाषा आदि के कारण उनकी क्षमताएँ न उभर पा रही हों।

किसी भी मनुष्य के कार्य-निष्पादन का आंकलन करना वस्तुत: बहुत जटिल है क्योंकि कार्य-निष्पादन गतिशील होता है, स्थिर नहीं। शिक्षार्थियों की असफलता के कारणों को समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्ति की मनोदशाएं (मूड), आवश्यकताएं एवं

अभिलाषाएं उनके कार्य निष्पादन पर प्रभाव डालती हैं। संदर्भ और पृष्ठभूमि भी महत्त्वपूर्ण हैं। अनुसंधान बताते है कि आसपास का वातावरण विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन को प्रबल रूप में न्यून कर सकता है। यह समाज के अपवंचित वर्ग के बच्चों के संदर्भ में सही है।सुविधाजनक विद्यार्थियों के लिए आकलन में प्रयुक्त मानकों को प्रयोग करते हुए विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता है। कार्य-निष्पादन की तुलना भी, उसी विद्यार्थी की कुछ समय पूर्व की प्रगति से की जानी चाहिए न कि अन्य विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन परिणामों से। मूलरूप से अलग पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थियों को कठोर प्रतिक्रियाओं और तुलनाओं का सामना करना पड़ें तो यह समानता और न्याय के सरोकारों को नकारना है।

शान्ति के अनुकूल परिप्रेक्ष्य में आकलन रचनात्मक पश्चपोषण उपलब्ध कराता है और शिक्षार्थियों को अपनी गलतियों को जानने और समझने के लिए प्रेरित करता है जो कि सुधारात्मक कदम उठाने में सहायता करता है। यदि केवल प्राप्तांक ही बताए जाते हैं तो विद्यार्थी मुश्किल से ही यह जान पाते हैं कि उनकी कमी कहाँ रही और कहाँ उन्हें सुधार करने की आवश्यकता है। जिस प्रकार से परिणाम घोषित किए जाते है और बच्चों को संप्रेषित किए जाते हैं, उस पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है, विशेषत: कम उपलब्धि पाने वाले बच्चों के संदर्भ में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। यह समझा जाना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों को अपने प्राप्तांकों से भावनात्मक और मानसिक रूप से संबधित भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का सामना कर पाने लिए तैयार करना चाहिए और अपनी अनुभूतियों और अपेक्षाओं को व्यक्त करने के लिए समय देना चाहिए, और असफलता या कम उपलब्धि के कारणों पर उनकी अपनी समझ के कारणों को समझा जाना चाहिए।

आंकलन का एक अन्य मुददा बच्चों का ज्ञान के आधार पर वर्गीकरण है, बल्कि कहना चाहिए रट कर याद करने पर आधारित परीक्षण है जो उन बच्चों को जो सूचनाओं को बिना उनके व्यावहारिक और महत्त्वपूर्ण निहितार्थ को गहराई से समझ सतही तौर पर रट लेते हैं उनको बढ़ावा देता है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि आकलन केवल विषय वस्तु की रट ली गई जानकारी के आधार पर न हो बल्कि परिवर्ती वास्तविक जीवन में इसके प्रभाव के उद्देश्यों के आधार पर भी किया जाए। उदाहरण के लिए लोकतंत्र, सामाजिक, न्याय या राष्ट्रीय अखंडता जैसी अवधारणाओं की समझ को इन अवधारणाओं के प्रति उनके ज्ञान व समझ के साथ ही मनोवृत्तियों एवं प्रकृति से जोड़कर देखना चाहिए कि बच्चों के व्यवहार में इनकी स्वीकृति और समावेश कितना हो पाया है। अत: शिक्षार्थियों के आकलन में लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी मनोवृत्ति और पूर्वत्ततत्परता को भी सम्मिलित करना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य से आकलन में शिक्षकों को निरन्तर व गहनता से सम्मिलित रहने की आवश्यकता होती है न कि सत्र के अन्त में संचालित किए जा रहे पेपर-पेन्सिल आधारित परीक्षण की।

वास्तव में, यह तथ्य प्राथमिक कक्षाओं से ही याद रखा जाना चाहिए, जहाँ अकादमिक उपलब्धियों की अपेक्षा व्यवहारात्मक आयाम अधिक महत्त्वपूर्ण हैं; और यह केवल शान्ति परिप्रेक्ष्य में ही नहीं बल्कि शिष्यों के समग्र विकास की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। समग्र विकास में शामिल वैयक्तिक गुण-मनोवृत्तियों, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के मूल्य, नियमितता, समयबद्वता, सहयोग, समूहकार्य, सकारात्मक दृष्टिकोण आदि अकादमिक आयामों की सफलता में भी सहयोग करते हैं। अत:एक शान्ति शिक्षक के रूप में हमारा यह उत्तरदायित्व है कि हम प्रारंभ से ही बच्चों में इन गुणों का पोषण करें और समय के साथ से गुण मजबूत होते जाएंगे तथा अकादमिक सफलताओं को भी सुगम बनाएंगे।

परीक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधार दृष्टिगत हो रहे हैं किंतु हमें इनके लागू होते तक प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। बल्कि मूंल्याकन व परीक्षा के संबंध में हमारे अपनेविचार छोटे-छोटे प्रयासों के साथ प्रारंभ हो जाने चाहिए; जैसे प्रतियोगिता पर जोर देने से बचना, शिक्षार्थियों को मूल्यांकन का भय दिखाए बिना अपनी क्षमता के अनुसार सीखने देना, अपनी सशक्तता को पहचानना, आत्मविश्वास निर्माण के लिए सफल होने का अनुभव देना, बच्चों का वर्गीकरण न करना और सीखना बढ़ाने के लिए सुधार की ओर ध्यान उपलब्ध करना और केवल अधिकाधिक नम्बर लाने के लिए जोर न देना आदि।

इस अध्याय में, हमने उन शिक्षा - शास्त्रीय प्रयोगों में परिवर्तन की आवश्यकता पर विचार किया जो कक्षा-कक्ष में अन्तर्निहित या स्थानीय ढॉचे के कारण शान्ति के मार्ग में आ रही बाधाओं और रूकावटों को दूर करने के लिए किए जा सकते हैं। शान्ति परिप्रेक्ष्य में विद्यालय के वातावरण प्रभावित करने के लिए शिक्षकों में जिस प्रकार के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण होने चाहिए, उन्हें अगले अध्याय में बताया गया है।

6 | शांति शिक्षा का ऊर्ध्ववीकरण

- विद्यालय का विन्यास
- विद्यालय में संभावित हस्तक्षेप
  - विद्यालय की प्रकृति, नीतियॉ एवं प्रथाएँ
  - विद्यालय की गतिविधियाँ एवँ परियोजनाएँ
  - शांति–निर्माण में बच्चों का आवेष्ठन
  - घर–विद्यालय अन्तर्रापृष्ठ
  - एक संसाधन के रूप में घर एवं परिवार का महत्व
- समुदाय का आवेष्टन
- मीडिया
  - संदेश निर्मित किए जाते हैं
  - सन्निहित मूल्य एवं दृष्टिकोण
  - लाभ एवं अधिकार प्रयोजन
- शांति–प्रक्रिया का मूल्यांकन

यह अध्याय एक परिवर्तनकारी के रूप में कार्य करने हेतु अपनी क्षमताओं के अधिकतम स्तर तक उपयोग करने पर केन्द्रित है और अपने चारों तरफ शांति रूपी अमृत को फैलाना है विशेष रूप से विद्यालय के पर्यावरण में। इसे विद्यालय एवं समुदाय के सभी लोगों तक पहुँचाना आवश्यक/महत्वपूर्ण है क्योंकि शांति निर्माण सबकी जिम्मेदारी है। हम यह पहले ही समझ चुके हैं कि समाज में पूर्णतया शांति हो सकती है यदि सभी स्तरों व्यक्तिगत, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर प्रयास किये जाए। तथापि व्यक्ति की शुरूआत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि समाज व्यक्तियों से मिलकर ही बना है समाज वैसा ही बनता है जैसे इसके व्यक्ति होते। पूर्व अध्याय में, व्यक्तिगत परिवर्तन से ध्यान हटाकर शांति प्रक्रियाओं के लिए विद्यार्थियों को सशक्त बनाने की ओर ध्यान दिया गया था, साथ ही साथ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शांति परिप्रेक्ष्य बल दिया गया था। इस अध्याय में हम समस्त विद्यालय तन्त्र का अवलोकन करेंगे और हमारी भूमिका एक चितंनशील विचारक एवं मध्यस्थ की तरह होगी।

> एक मोमबत्ती से दूसरी मोमबत्ती को प्रकाशित करने में इसका प्रकाश बिल्कुल कम नही होता है।
> –थॉमस जेफरसन

एक संवेदनशील एवं आशावादी अध्यापक के रूप में हम केवल शांति के उपभोक्ता नहीं हो सकते हैं बल्कि हमें शांति निर्माता बनना है ताकि हम चारों तरफ उपस्थित होने वाली कठिन एवं संघर्षमय परिस्थितियों में सक्रिय रूप से हस्तक्षेप कर सकें। शांति कायम रखना केवल व्यक्गित जिम्मेदारी नहीं है बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है। यदि हम विशेष सुविधाओं का आनन्द लेते हैं, तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन सुविधाओं को बनाए रखने में भी सहयोग करें। यदि हम शान्ति का आनन्द प्राप्त करते हैं तब यह हमारी व्यक्गित एवं सामाजिक जिम्मेदारी होती है कि हम अपने चारों तरफ शांति का निर्माण करें। शिक्षकों के लिए यह सामाजिक जिम्मेदारी भी हो जाती है क्योंकि विद्यार्थियों को शांति की ओर पाठ पढ़ाते समय शिक्षित करने की हमारी अध्यापक एवं शिक्षा शास्त्री की भूमिका में यह अन्तर्भूत है। तथापि हमारे दिमाग में संदेह अभी भी उत्पन्न हो सकते हैं। हम पूछ सकते हैं – "एक शिक्षक के रूप में विद्यालय में अकेले मैं क्या कर सकता हूँ? विद्यालय में बहुत से अन्य शिक्षक हैं जिसका व्यवहार भी शांति–निर्माण हेतु जरूरी है। इसके अतिरिक्त प्रधानाचार्य, विद्यालय के अन्य कर्मचारी और बच्चों के माता–पिता जिनकी बच्चों के मनोवृत्ति एवं मूल्यों के निर्धारण में बहुत निर्णायक भूमिका होती है। इन सबके अलावा, प्रबंधन समिति, मित्र–समूह, परिवार, समुदाय और मीडिया जैसे अन्य सशक्त साधनों का प्रभाव भी पड़ता है। हमारे नियंत्रण से बाहर की परिस्थ्तियाँ लगातार असहाय होने की भावना उत्पन्न करती हैं। तथापि योग्य शिक्षक अपनी उच्च संवेदनशीलता और समृद्ध क्षमताओं के द्वारा उस तरह का बदलाव ला सकते हैं जो अभी संभव नहीं दिखाई दे रहा है। हमारे पास दो रास्ते हैं - वर्तमान परिस्थिति पर चिन्तित होना और असहाय महसूस करना या आशा एवं विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रयत्न करना।

विद्यालय पर्यावरण

एक शांति–शिक्षक के रूप में हमारी भूमिका विद्यालय के उपलब्ध सामाजिक वातावरण को समझना तथा एक परिवर्तक रूप में मध्यस्थता करना है। हर संभव स्थान व स्थिति में हम स्वस्थ्य मनोवृतियों एवं संबंधों को सभी स्तरों - बच्चे, शिक्षक, माता-पिता एवं स्टॉफ के सदस्य तथा कर्मचारियों पर विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। यद्यपि यह हमें एक विशेष ऊँचे स्तर से संचालित करके नहीं करना है बल्कि विद्यालय के एक सदस्य के रूप में करना है। इसके अतिरिक्त, हमें डरना नहीं चाहिए कि हम हर समय इस जिम्मेदारी के भार से दबे रहेंगे और हमें अपने कार्य को करने के लिए समय और शक्ति नही रहेगी। हमें इस तथ्य को पहचानना चाहिए कि हमारी मनोवृति एवं व्यवहार श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया शुरू करते हैं और सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं।

इस सब के लिए हमें अचानक परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए बल्कि छोटे छोटे बदलावों पर जोर देना चाहिए, रचनात्मक विकल्पों की तलाश करनी चाहिए और अपनी प्रवृत्तियों, शक्तियों, अभियंत्रण एवं मज़बूतियों पर भरोसा करना चाहिए। छोटे परिवर्तन

हमेशा छोटे नहीं रहते हैं बल्कि हमारे साहस एवं वचनबद्धता के साथ धीरे धीरे एक आंदोलन के रूप में फैल जाते हैं। संवेदना के द्वारा उत्पन्न किए गए आत्मविश्वास में जादू एवं कठिनाइयों की तरह एक रचानात्मक मनोवृति होती है जो अन्य नकारात्मक प्रभावों को सीमित कर देती है। अपने एवं अन्य में अभिक्षमतात्मक (दृष्टिकोण) परिवर्तन सबसे पहली चुनौती है।

पहचान पर आधारित भाग में हमने चर्चा की कि अपने प्रति हमारा रूझान, पूर्वाग्रह एवं पक्षपात हमें निर्णायक बनाता है। हमारे ये निर्णायक रूझान हमारे स्वस्थ संबंधों के बीच आते हैं। विद्यालय में बच्चों, सहयोगियों, कर्मचारियों एवं अन्य के साथ संबंधों में हमारे ज्यादातार द्वन्द्वों व तनावों का कारण उनके प्रति हमारा निर्णायक रूझान होता है। इन रूझान का सामना करने का तरीका एक अनिर्णायक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने, सक्रिय रूप से सुनने का सम्प्रेषण कौशल एवं तदानुभूति विकसित करने में निहित है जिसकी अध्याय - III - आत्म-अन्वेषण एवं पूर्वाग्रहों का सामना में चर्चा हो चुकी है। शांति-शिक्षकों द्वारा सभी रिश्तों में अनिर्णयात्मक रूझानों को अपनाना और आदर्श रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। अनिर्णयात्मक होने से अभिप्राय मूल्यांकनात्मक होने के स्थान पर विवेचनात्मक होना एवं लचीलापन तथा दूसरों से साथ तदानुभूति अपनाना है। तदानुभूति आपसी समझ उत्पन्न करती है और रिश्तों को सुधारती है। एक प्रबुद्ध अध्यापक के रूप में हम न केवल अपने रिश्तों को सुधारने में सक्रिय भूमिका निभा सकते बल्कि सकारात्मक अभिक्षमता, मूल्यों एवं व्यवहार को व्यक्त करके दूसरों को भी प्रभावित कर सकते हैं।

उदाहरणार्थ - जब एक प्रधानाचार्य एक शिक्षक पर विलम्ब से आने के लिए क्रोधित होता है तो उस समय गुस्से अथवा हताशा के अथवा, प्रधानाचार्य को पक्षपात करने के लिए दोषी ठहरने के स्थान पर एक शांति-शिक्षा अध्यापक तदानुभूति के साथ जवाब देता है मैं समझ सकती हूँ कि मेरे देर से आने से आपको असुविधा हुई है। लेकिन स्थिति मेरे नियंत्रण से बाहर थी। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि भविष्य में मैं सावधान रहूँगी। इसके अतिरिक्त मैं यह सुनिश्चित करूँगी कि मेरा कार्य पूरा हो और मेरे शिक्षार्थियों/ बच्चों को किसी प्रकार की हानि न हो।" यह वास्तव में अपने अहम् , क्रोध एवं हताशा को बाहर निकालने अथवा तदानुभूति को व्यक्त करने का एक विकल्प है। इस स्थिति में यह संभावना है कि प्रधानाचार्य एवं शिक्षक दोनों कम क्रोधित एवं कम दुखी होंगे। इस शिक्षक ने एक विषम परिस्थिति का सामना करने के लिए सकारात्मक एवं रचनात्मक तरीके का प्रदर्शन किया है। यह तरीका अन्य लागों के लिए एक सीख होगी जिसका वे अनुसरण कर सकते है और शांति-निर्माण के लिए प्रयत्न कर सकते हैं।

सकारात्मक सम्बन्धों को सबके साथ स्थापित करने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी दूसरों को क्षमा करना एवं उनकी कमियों को स्वीकार करना आश्चर्यजनक कार्य करता है, जैसा हम अपने बारे में दूसरों से अपेक्षा करते हैं। प्राय: अध्यापक कक्ष में, शिक्षक-

अभिभावक संघ की बैठक में या इस प्रकार की बहुत सारी स्थितियों में हम अपने पक्ष को नकारात्मक विचार एवं ऊर्जा संग्रह करने की आदत बना लेते है, और अपने विचारों को न्यायोचित एवं सही ठहराने की कोशिश में प्रधानाचार्य या अपने अन्य सहयोगी की शिकायत या आलोचना अथवा अपनी कठिनाइयों पर पश्चाताप करने के स्थान पर एक शांति-शिक्षक अपने आपको नियंत्रित करता/करती है और विवादों के समाधान के लिए अन्य लोगों राय को व्यक्त करने के लिए आमंत्रित करके सही ढ़ग से निराकरण करने की कोशिश करती है। यह शिक्षिका एक असाधारण नवाचारी तरीके से प्रतिक्रिया करती है। वह, क्रोध पर चिन्तन करती है और पूछती है- ऐसा क्या किया जा सकता है जो न मेरे और न दूसरों के लिए हानिकारक एवं चिन्तित करने वाला हो? यदि एक बार हम अपने आप को विचार करने के लिए समय दें तो हम अपने रचनात्मक तरीकों से आश्चर्यचकित हो जाएंगे जो कि उत्तेजक एवं विभिन्न स्थितियों में प्रतिक्रिया करने की एक आदत बन जाने की वजह से छिपे रहते हैं। यदि द्वन्द्वों का समाधान नहीं किया जा सकता है, तो भी तो भी शिक्षिका शांतिपूर्ण वार्तालाप या आपसी समझौते की तरफ देखता/देखती है। यदि किसी के लिए अपनी समस्याओं को समाप्त करना संभव नही है तब वह हमेशा दूसरों से सहायता की तलाश करता है लेकिन यह केवल तभी संभव है जब कि अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध सकारात्मक हों। एक शांति-शिक्षक को समझना चाहिए कि हमारी आन्तरिक शांति एवं कुशलता हमारे द्वारा निर्मित संबंधों पर निर्भर करती है। हमें भी दूसरे लोगों की आवश्यकता है ठीक उसी प्रकार से जैसे उन्हें हमारी आवश्यकता है। हमारे आस-पास प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति जितने अधिक होंगे उतना अधिक हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। तब क्या यह महत्वपूर्ण नही है कि हम अन्य लोगों के स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता में अपना योगदान दें?"

हमारी अभिक्षमता हमारे व्यवहार के लिए बहुत निर्णायक होती है। हमारा रूझान दृष्टिकोण/ आसानी से नहीं बदलता है। जब कोई हमारी अभिक्षमता को चुनौती देता है और यह सिद्ध करने की कोशिश करता है कि हमारी अभिक्षमताएँa गलत है हम सुरक्षात्मक दृष्टिकोण अपना लेते हैं। हम अपने पक्ष का बचाव करते हैं क्योंकि हमारी अभिक्षमताएँ हमारी व्यक्गित व वैयक्तिक एवं संस्कृतिक पहचान से भावनात्मक रूप से भरी होती हैं। यदि कोई हमारे विचारों के प्रति कुछ विचार प्रकट कर छोड़ देता है और बजाय अपने बिन्दुओं को सही सिद्व करने के, हमें उस पर विचार करने के लिए छोड़ देता है, उस स्थिति में हमारे द्वारा अपने पक्षपात और पूर्वाग्रहों को छोड़ देने की अधिक संभावना है। बजाय इसके कि अपने को सही साबित करने का हठ करें।

विद्यालय में संभावित हस्तक्षेप

शान्ति उन्मुख दृष्टिकोणों, अभिक्षमताओं एवं मूल्यों के पोषण में विद्यालय की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। यह स्थान शांति के लिए संवर्धन-गृह के रूप में पहचाना जाना चाहिए जो

उत्साह, वचनबद्धता और कार्य करने की इच्छा की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है बजाए भय, द्वन्द एवं हिंसा उत्पन्न करने के।

विद्यालय की प्रकृति नीतियाँ एवं प्रथाएँ

विद्यालय की नीतियों एवं दृष्टिकोण को देखिए। क्या ये विद्यमान हैं? यदि हाँ, तो क्या ये शांति के उददेश्य को प्रतिबिम्बित करती हैं? ये शिक्षकों एवं छात्रों के प्रति कितनी निष्पक्ष हैं? यदि विद्यालय की कोई घोषित नीति एवं दृष्टिकोण नहीं है फिर भी इनका अस्तितव होता है एवं विद्यालय के संगठन के साथ जुड़ी होती हैं। दैनिक कार्य, काम का बँटवारा और अनुशासन से सम्बन्धित प्रथाओं में ये नीतियाँ प्रतिबिम्बित होती हैं। विद्यालय परिसर में उपलब्ध भौतिक ढॉचा एवं सुविधाएँ विद्यालय की नीति को प्रतिबिम्बित करते हैं। विद्यालय पर्यावरण में प्रदर्शित किए हुए प्रतीक चिहन, चित्र एवं भित्ति-चित्र आदि भी विद्यालय के प्रकट अथवा अप्रकट दृष्टिकोण से निकलते हैं। त्यौहार, महत्वपूर्ण दिन, अवकाश विभिन्न गतिविधियों को दी गई प्राथमिकताएं सभी विद्यालय के दर्शन से निकलते है। यदि विद्यालय का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष दर्शन शांति पर होता है तब विद्यालय की संस्कृति का झुकाव शांति की तरफ होने की अधिक संभावना होती है।

यदि विद्यालय के द्वारा स्थापित आदर्श एवं दर्शन जिन लोगों से सम्बन्धित हैं उनके लिए दुर्ग्राहय होते हैं तब ये अप्रभावी रहते हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि न केवल आदर्श एवं भविष्य दृष्टि रखी बल्कि उसे सपष्ट रूप में बाहर प्रकट करना भी जरूरी है। इसे स्टॉफ एवं विद्यार्थियों को समझाने एवं सम्प्रेषित करने की आवश्यकता है। विद्यालय की नीतियाँ एवं दृष्टि कभी-कभी शांति की तरफ निदेशित होती हैं लेकिन विद्यालय के कार्य कलापों में नहीं दिखाई पड़ती हैं। उदाहरण के लिए, एक उद्देश्य कथन को देखिए - "न्याय की विजय होती है।" इस दर्शन को अपनाने वाला विद्यालय अपने छात्रों एवं शिक्षकों के साथ न्याय कर सकता है और नहीं भी कर सकता है। यह उदाहरण दर्शाता है कि विद्यालय की प्रथाओं में उसका विचार प्रतिबिम्बित नही है। क्या यह कथन "हम श्रेष्ठता में विश्वास करते हैं" सही परिप्रेक्ष्य में समझा जाता है? किसमें श्रेष्ठता और किससे श्रेष्ठता? क्या यह केवल शैक्षिक उपलब्धि है अथवा साथ ही साथ व्यक्तितव एवं नैतिक विकास भी? क्या विद्यालय कुछ लोगों की योगयता का गुणगान करता है या बहुत सारे लोगों के पुरस्कार प्राप्त करने की संभावना होती है? इसी प्रकार से, यदि विद्यालय का लक्षय तो अपने छात्रों का समग्र रूप से विकास है परन्तु शतप्रतिशत परिणाम को वरीयता दी जाती है। विद्यालय में प्रयुक्त दर्शन के इन कथनों को सपष्ट रूप से समझाया जाना चाहिए एवं उनमें विरोधाभास नहीं होना चाहिए।

विद्यालय में विवाद का सबसे बड़ा स्त्रोत शारीरिक दण्ड देना है। अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण है। हम सभी को सपष्ट होना चाहिए कि अनुशासन विद्यालय को सही प्रकार से चलाने के लिए और बच्चों के कल्याण के लिए बनाया जाता है। यदि विद्यालय का अनुशासन ही

बच्चों, शिक्षकों, प्रधानचार्य एवं स्टॉफ के बीच तनाव एवं विवाद बढ़ाता है। तो यह सही नही है; कुछ बदलाव की आवश्यकता है। अनुशासन के नाम पर यदि बच्चे तिरस्कृत किए जाते हैं एवं शारीरिक रूप से पीटे जाते हैं, इस मानसिक आघात का प्रभाव युवावस्था में भी जारी रहेगा। क्या हम एक ऐसा समाज तैयार कर रहे हैं जो हिंसा, शारीरिक एवं पाशविक बल में विश्वास करता है? हमने पहले चर्चा की है कि हिंसा केवल शारीरिक नहीं होती बल्कि मौखिक एवं संरचनात्मक हिंसा जो कि लिंग भेद, जाति भेद एवं क्षेत्रीय विभिन्नता के आधार पर व्यक्त की जाती है, उसे भी समझाने की आवश्यकता है। एक शांति-शिक्षक इन मनोवृत्तियों को दूर करने के लिए सूक्ष्म प्रयास कर सकता है। ये प्रयास कक्षा में प्रारम्भ हो सकते हैं - चिंतन के लिए छात्रों से उपयुक्त प्रश्नों को पूछकर एवं चर्चा में पहल करके आदि। बाद में इन प्रयासों को अन्य कक्षाओं के लिए प्रातःकालीन सभा में लैक्चर द्वारा जागरूकता बढ़ाकर और प्रदर्शन बोर्ड के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है। विद्यालय की नीतियाँ, जिनमें हिंसा अन्तर्निहित है। उस पर भी चर्चा की जा सकती है। विद्यालय के संदर्भों एवं संस्कृति का परीक्षण किया जाना चाहिए। और सभी शिक्षकों, स्टॉफ एवं विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए ऐसे मुद्दों को उठाना चाहिए।

शिक्षक के रूप में हम इस प्रकार की रचनात्मक हिंसा के कर्ता एवं शिकार दोनों ही हैं। पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए प्रबंध-समिति की अपेक्षाएँ, समयनिष्ठा एवं कार्य की अधिकता एवं स्टॉफ की अभिक्षमताएँ हममें से बहुतों को परेशान करती है और हम लचीलापन एवं समान व्यवहार पसंद करेंगे। लेकिन विद्यार्थियों के साथ पारस्परिक क्रिया के समय हम उन नियमों को जबरदस्ती लागू करते हैं जो हमें तब अप्रिय लगते हैं जब वे हमारे ऊपर लागू किए जाते हैं, और हम अनुशासन कायम करने के नाम पर अपने व्यवहार एवं विभिन्न प्रकार के दण्डों को सही ठहराते हैं। यह विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है कि कठोर नियमों के कारण जिस प्रकार का गुस्सा एवं अप्रसन्नता हमारे अन्दर बनता है उसी प्रकार से विद्यार्थी भी तनावयुक्त एवं कुठित हो जाते हैं। हमें यह जागरूकता बनानी होगी कि किस प्रकार से हिंसा एक बच्चे को अमानवीय बना देती है और महसूस करना चाहिए कि इस प्रकार के दण्ड का प्रभाव शिक्षा के उद्देश्य के अन्तर्गत नहीं आता है। "स्वस्थ अनुशासन को कैसे लागू करें" जैसे विषयों पर अन्य शिक्षकों को चर्चा में शामिल करके जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। बच्चों को पहुँचे मानसिक आघात और चिन्ता को शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करके साथी शिक्षकों की शारीरिक दण्ड के प्रति मनोवृत्ति को परिवर्तित किया जा सकता है।" अध्यापकों को भी अपने बचपन के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है जब उन्हें दण्ड मिला था। हम स्वस्थ अनुशासन की शुरूआत अपनी रणनीति का बच्चों के साथ साझा करके कर सकते हैं। यदि हम अनुशासन कायम करने के लिए हिंसा का रास्ता अपनाते हैं और दूसरों के दमन के खिलाफ अपना मत नहीं देते और उसका विरोध नहीं करते हैं तो वैसे ही व्यवहार की अपने साथ होने की अपेक्षा कर सकते हैं। अनुशासन कायम रखने के लिए बने नियम उसके द्वारा

स्वीकृत हों जिनके लिए वे नियम बने हैं। इसलिए नियम बनाते समय उनकी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए जिनके लिए वे नियम बने हैं।

एक विद्यालय में विज्ञान - शिक्षक अपने खाली समय में विज्ञान की प्रयोगशाला में बैठा करते थे। प्रधानाचार्य ने निश्चय किया कि उन्हें प्रयोगशाला में न बैठकर स्टॉफ रूम में बैठना होगा। इससे विवाद शुरू हो गया। जब प्रधानाचार्य ने उनके सामने यह बात रखी, तो उन्होंने पूछा कि क्या कोई विज्ञान का शिक्षक उस समिति में था जिसने यह नियम बनाया। इस मामले पर चर्चा की गई और स्पष्ट हुआ कि प्रयोगशाला के बहुत सारे कीमती उपकरणों को एक विज्ञान - शिक्षक के निगरानी की आवश्यकता रहती है। प्रधानाचार्य को यह बात स्वीकार करना पड़ा और उन्होंने अपना नियम वापस ले लिया।

ऊपर वर्णित घटना से पता चलता है कि नियमों एवं मानकों को निर्धारित करते समय उससे सम्बन्धित लोगों को शामिल करने से फायदा होता है। जैसा कि एक छोटी सी समिति के द्वारा बनाए नियम परेशानी का कारण बनते हैं और दूसरे अध्यापकों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इसी प्रकार से शिक्षकों के द्वारा तैयार किए गए नियम विद्यार्थियों के लिए दमनात्मक हो सकते हैं। ऐसा कोई भी नियम या अनुशासनीय प्रथा जो लगातार संकट उत्पन्न करती है उसे उससे सम्बन्धित सभी लोगों के द्वारा परीक्षण किया जाना एवं चर्चा की आवश्यकता होती है यद्यपि आवश्यक रूप से उसमें परिवर्तन की जरूरत नहीं है।

विद्यालय का पर्यावरण या सांस्कृतिक प्रकृति जो भी हो, यह आपसी सम्मान एवं जिम्मेदारी के मूल्यों से ओत-प्रोत होनी चाहिए जो कि शांति-शिक्षा की ओर किए जाने वाले प्रयासों का केन्द्र बिन्दु है। विद्यालय को अपने भौतिक पहचान से आगे बढ़ना चाहिए। उस विद्यालय में शांति-शिक्षा के लिए कोई स्थान नहीं है, जहाँ के पर्यावरण में कोई स्पष्ट दर्शन अथवा अपेक्षा नहीं हैं अथवा अपेक्षा, खराब सम्प्रेषण, शिक्षकों की उदासीनता एवं कम उत्पादकता, शिकायतें, आत्म-संतोष और सम्मान एवं विश्वास की मात्रा बहुत कम है। अनुसंधान एवं सामान्य समझ कहती है कि यदि शांति-शिक्षा को विद्यालय में फलना-फूलना है तो इन नकारात्मक कारकों के अस्तित्व को हटाना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शांति के मूल्यों को विद्यालय की दैनिक चर्या एवं संस्कृति में समाहित करना है। यह विद्यालय के उत्सवों, पाठ्यगामी एवं सह-पाठ्यगामी कार्यक्रमों, कक्षा का वातावरण एवं कार्यप्रणाली, अवसरों एवं अपेक्षाओं आदि के द्वारा हो सकता है। इन सब को विद्यालय में होने वाली सभी गातिविधियों एवं परियोजनाओं से जोड़ा जाना चाहिए। एक शांति-शिक्षक के रूप में उसे इस तरह के प्रश्नों को उठाना चाहिए - "क्या विद्यालय पर्यावरण में ऐसा कुछ है जो शांति-शिक्षा के मूल्यों एवं सिद्धान्तों को कम कर रहा है?" "क्या शांति-शिक्षा की अपेक्षाओं एवं उद्देश्यों के प्रकाश में नीतियों एवं कार्यप्रणाली का पुनपरीक्षण करना चाहिए?" आदि।

एक शांति-शिक्षक के रूप में, एक सामान्य परन्तु गंभीर हस्तक्षेप न केवल स्टॉफ में अध्यापकों के साथ बल्कि, छात्रों, उनके माता-पिता और प्रबन्धन के साथ भी बहस, चर्चा या वाद-विवाद से शुरू किया जा सकता है। एक अध्यापक के रूप में बहुत ऐसे समय आते हैं जब हम महसूस करते हैं कि हम अन्याय के शिकार हैं। निर्णय संस्था के प्रधान अथवा प्रधानाचार्य द्वारा लिए जाते हैं और हमें उनका पालन करने के लिए कहा जाता है। विद्यालय का प्रबन्धन शिक्षकों का सम्मान नहीं करता है और उनका वेतन या तो दिया नहीं जाता या कम मात्रा में दिया जाता है। काम का बंटवारा गलत तरीके से किया जाता है। बच्चों के माता-पिता को लगता है कि उनके बच्चों की हर बात के लिए अध्यापक जिम्मेदार है। विद्यालय में कोई सुविधा नहीं है फिर भी शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थियों के लिए आदर्श बनें। हमें बच्चों के समग्र विकास हेतु उनके माता-पिता की अपेक्षाओं को पूरा करने, अच्छा परिणाम प्राप्त करने, शिक्षण से संबंधित प्रशासनिक कार्यों में हिस्सेदारी करना और समय-समय पर दिए गए अन्य उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने, और सभी प्रकार के व्यावहारिक समस्याओं एवं कठिनाइयों का सामना करने की जरूरत होती है। इन परिस्थितियों एवं तनावों से हम स्वयं को दबा हुआ महसूस करते हैं। इन हताशाओं व चिन्ताओं की अभिव्यक्ति के मार्ग तलाशे जाने चाहिए। बहस, चर्चा और वाद-विवाद अपने विचारों को व्यक्त करने एवं अन्य लोगों के विचारों को सुनने-समझने में हमारी मदद करते हैं। एक वाद-विवाद में जीतना बिल्कुल आवश्यक नहीं होता है। इस तरह की प्रतियोगिता में केवल भागेदारी करने से ही चिंतन एवं परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है और हमारी परिस्थितियों के रचनात्मक समाधान संबंधी विकल्पों के प्रकट होने की संभावना बनती है। हमारी व्यवहारिक कठिनाइयों एवं हमारे अंतर- वैयक्तिक मुद्दों पर यह विमर्श एवं उनका अनुवर्ती परिणाम हमारे रूझान एवं व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु निर्णायक हैं। जब हम अपने मुद्दों का सामना करने में समर्थ हो जाते हैं, केवल तब हम विद्यालय की गतिविधियों में हस्तक्षेप करने के लिए आत्मविश्वास महसूस करते हैं।

विद्यालय की गतिविधियाँ एवं परियोजनाएँ

हमें विद्यालय जीवन में परिवर्तन लाने के लिए बड़ी परियोजना की पहल या निधि तलाश करने की आवश्यकता नहीं होती है। विद्यालय में आयोजित की जाने वाली सामान्य गतिविधियों में शांति-परिप्रेक्ष्य को पहले से ही समायोजित करने से परिवर्तन की प्रक्रिया की शुरूआत हो सकती है। गतिविधियों को साधारण तरीके से करने से हमें ज्यादा फायदा नहीं मिल पाता है। उदाहरणार्थ - सुबह की सभा रूहीन तरीके से आयोजित की जाती है। इसे नागरिकता, उत्तरदायित्व की भावना, पूर्वाग्रह, विवादों का समाधान, न्याय से सम्बन्धित मुद्दे, प्रजातंत्र का महत्व, पर्यावरण आदि को सम्मिलित करते हुए शान्ति और समरसता की दृष्टि से योजनाबद्व किया जा सकता है। प्रसंगों, समाचार की मुख्य बातें एवं कहानियों को प्रयोग के पश्चात् सम्बन्धित कक्षाओं में चर्चा, विचार एवं स्पष्ट करने का अवसर देने के

लिए किया जा सकता है। छात्रों को वाद-विवाद, सेमिनार, नृत्य, नाटक एवं अन्य प्रदर्शनी, कविताओं एवं गानों आदि में शांति के मुद्दों को सम्मिलित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। महत्वपूर्ण दिनों जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, त्योहारों एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने वाले महत्वपूर्ण दिनों जैसे मानव-अधिकार दिवस, बाल-दिवस, संयुक्त-राष्ट्र-दिवस, **अशक्त** विकलांग-दिवस, बालिका महिला-दिवस, पर्यावरण दिवस आदि को विद्यालय में मनाया जाता है। ये उत्सव क्यों मनाए जाते हैं और इनमें अन्तर्निहित शांति-संदेशों को बताना एवं प्रकाशित किया जाना चाहिए।

इन दिनों का उत्सव मनाने का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल उत्सव में अपना समय व्यतीत करें। इनके माध्यम से वे किस प्रकार से शांति के संदेश को आगे ले जाएंगे, विद्यार्थियों को इसे समझाने की आवश्यकता है। घटनाओं, परियोजनाओं एवं गतिविधियों की व्याख्या महिलाओं, पर्यावरण, वंचितों एवं अशक्तों, जरूरतमंद एवं गरीबों के प्रति आदर और जिम्मेदारी का रूझान विकसित करने के लिए किया जा सकता है। लोगों के प्रति संवेदना विकसित करने सहनशीलता के विकास के क्रम में दूसरे लोगों के कल्याण के बारे में समझने एवं रूचि लेने के लिए बच्चों को वृद्धाश्रम एवं वंचित लोगों के समूहों को देखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बच्चों को एक साथ रहने के लिए एकात्मक शिविर आयोजित किया जा सकता है। इसके अलावा खेल गतिविधियों के माध्यम से एक टीम के रूप में कार्य करने की भावना, आपसी सहयोग एवं खेल की भावना का विकास किया जा सकता है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मध्य विचार-विमर्श को बढ़ाने के लिए हम एक साझा मंच बना सकते हैं इस मंच की गतिविधियों या सहयोगी शिक्षकों के मध्य विवाद का कारण न बन सकें, इस संबंध में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। इसमें हमेशा शरारत की संभावना होती है। इसमें लचीलापन रखना चाहिए और एक दूसरे को चिढ़ाने एवं अपमानित करने के प्रयास को दृढ़ता के साथ रोकना चाहिए। विभिन्न पृष्ठभूमि एवं धाराओं के विद्यार्थियों के बीच परस्पर साझा और विमर्श उन्हें अपने पूर्वाग्रहों, धर्म के बंधनों, जाति, वर्ग आदि से आगे बढ़ने में सहायता करेगा।

एक शांति-शिक्षक के द्वारा अपने प्रभाव को व्यापक बनाने का तरीका, विद्यार्थियों शिक्षकों एवं अन्य लोगों के मध्य शांति से सम्बन्धित मुद्दों के विषय में ज्ञान बॉटकर उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना हो सकता है। पहले से ही चल रही गतिविधियों में विशेष रूप से निवेश भी किया जा सकता है, जैसा नीचे वर्णित है -

बहुत से विद्यालय छोटे-छोटे समाचार पत्र निकालने में समर्थ होते हैं जिसे विद्यार्थियों एवं उनके माता-पिता के बीच बॉटा जाता है। कभी-कभी फिल्म भी दिखाई जाती है। इन गतिविधियों में पहले से ही शांति से संबंधित मनोवृत्तियाँ निहित होती हैं। शिक्षक के द्वारा इन गतिविधियों के द्वारा दिए जाने वाले संदेशों को समेकित करना और इनके निहितार्थ पर चर्चा एवं प्रकाश डाला जाना चाहिए। समाचार-पत्र को शान्ति परिप्रेक्ष्य में निकालने की तरफ

प्रयास करना चाहिए जिसमें इन विषयों पर लेख हों - सांस्कृतिक मुद्दे, द्वन्दों एवं उनकी समाधान कौशल, सकारात्मक दृष्टिकोण, सम्प्रेषण कौशल, पूर्वाग्रह, लड़ाई-झगड़े से सम्बन्धित किस्से (एनकडोटस), शारीरिक दण्ड एवं इसका प्रभाव, बाल-अधिकार एवं मानव-अधिकार, पर्यावरणीय मुद्दे, जैंडर - भूमिका का द्वन्द और बहुत से इस प्रकार के मुद्दे। इस प्रकार के प्रयासों से विद्यार्थियों के द्वारा इन मुद्दों के बारे में अधिक चिन्तन-मनन की संभावना हो सकती है।

पुस्तकालय में शांति से सम्बन्धित पुस्तकों एवं सामग्री के लिए एक स्थान निर्धारित होना चाहिए। इस स्थान को सभी छात्रों के लिए प्रदर्शित एवं सबके लिये सुगम करना चाहिए और शांति के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित सामग्री एकत्रित होनी चाहिए जिसका पाठ्य पुस्तकों की विषय वस्तु से संबंध भी होना चाहिए। उदाहरणार्थ कक्षा XI एवं XII के विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए - तेजाबी वर्षा पर सामग्री, ग्रीन हाऊस प्रभाव, ओजोन की परत, हिमखण्डों का पिघलना आदि उन्हें जीवन एवं पर्यावरण के बीच सम्बन्ध जोड़ने में मदद करेंगे। इसी प्रकार से, विभिन्न देशों के बीच संघर्ष के इतिहास को समझने एवं इनके संयोजन को XI एवं XII के इतिहास के विद्यार्थियों के लिए संकलित किया जा सकता है। छोटे बच्चों के लिए कहानी की पुस्तक, जीवनी और शांति के महान विचारकों के जीवन से संबंधित उपाख्यानों को सम्मिलित किया जा सकता है। इनसे संबंधित चर्चा को सभी विषयों- भाषा, राजनीति विज्ञान, भूगोल आदि के अधिगम के समय प्रयुक्त किया जा सकता है।

शांति-निर्माण में बच्चों को शामिल करना

'बच्चों में बच्चा का सम्प्रेषणद', वास्तव में अधिकाधिक विद्यार्थियों तक पहुँच बढ़ाने एवं समान विचारधारा वाले विद्यार्थियों एवं शिक्षिकों का एक समूह बनाने का एक तरीका है। विद्यार्थियों के ये साथी समूह अथवा शिक्षक हमारे सम्प्रेषण चैनल हैं जिनसे शांति-विरोधी तत्वों एवं संघर्षों के बारे में सूचनाएँ एकत्रित की जा सकती हैं। इस रणनीति के तहत विद्यार्थियों को शांति-निर्माण हेतु स्वयंसेवक के रूप में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है और परिवर्तनकारी के रूप में काम करने के लिए तैयार किया जा सकता है जो शांति-शिक्षक के प्रयासों को फैलाने में सहायता करेगा। शिक्षक को ऐसे विद्यार्थियों का चुनाव करना चाहिए जिनका शांति की तरफ झुकाव हो एवं शांति से सम्बंधित मुद्दों के प्रति सजग हों। विद्यार्थियों को सम्प्रेषण एवं मध्यस्थता कौशलों के लिए प्रशिक्षण दिया जा सकता है। शांति, पारस्परिक-निर्भरता, सांस्कृतिक विविधता, मानवाअधिकार, रिश्तों एवं सभी तरह के लोगों एवं प्रकृति का आदर, जैसे मुद्दों की समझ का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार के विद्यार्थियों का एक समूह जिन्हें मध्यस्थता एवं विवाद-समाधान में प्रशिक्षित किया गया है, विवाद में हस्तक्षेप कर सकता है और विद्यार्थियों के नकारात्मक रूझानों को बदलने में मदद करता है। बच्चो को उनकी विवाद-मध्यस्थ एवं बातचीत की भूमिका हेतु अच्छे तरीके से तैयार करना चाहिए। उनको सावधान करना चाहिए कि वे समकक्ष मध्यस्थ की अपनी

भूमिका से ज़्यादा आगे न बढ़े। इन बच्चों को शांति-शिक्षक के साथ तालमेल से काम करना चाहिए ताकि वे विद्यालय में प्रचलित आचार में बदलाव लाने के लिए अच्छी तरह से मार्गदर्शित किए जा सकें।

घर-विद्यालय अन्तरापृष्ठ, अन्तरसंबंध/अन्तरसहयोग

व्यक्ति को प्रभावित करने वाले बहुत सारे प्रभावों में घर एवं परिवार का प्रभाव बहुत सशक्त होता है। घर एवं विद्यालय में होने वाले सभी शैक्षिक प्रयासों में माता-पिता का जुड़ाव वांछनीय है। घर एवं विद्यालय दोनों ही अभीष्ट बदलाव हेतु पहल करने एवं उसे संरक्षित रखने के लिए आवश्यक है। यद्यपि वर्तमान समय की आपा-धापी में माता-पिता की भूमिका गौण हो गई है। शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वारा प्राय: कम सहयोग एवं कम जुड़ाव के साथ कार्य करने की शिकायत रहती है। यह सत्य है कि माता-पिता एवं परिवार को विद्यालय के प्रयासों में सहयोग देने चाहिए।

इस प्रक्रिया का पहला चरण माता-पिता को विद्यालय में लाना है जो कि कठिन है। जो अभिभावक विद्यालय में आते भी हैं वे शायद ही अच्छा अनुभव करते हों, या तो शिक्षक या फिर वे शिकायत करते रहते है। एक शांति शिक्षक की भूमिका, शिक्षकों को इस बिंदु पर विचार करने के लिए प्रेरित करना है कि शिक्षक-अभिभावक संघ की मीटिंग में अथवा जब कक्षा अध्यापक उनसे विचार-विमर्श करना चाहता है तब अभिभावक क्यों नहीं आते? अभिभावकों के साथ संवाद करने के लिए आवश्यक सम्प्रेषण कौशल, अभिभावकों के साथ प्रत्येक मुलाकात के समय उनके बच्चों की आलोचना एवं शिकायत करने के स्थान पर राय देना, अभिभावकों की शिकायत के आधार पर अध्यापकों द्वारा किए गए प्रयास के बारे में जानकारी देना, उनकी अपेक्षाओं को आगे ले जाना आदि शिक्षक एवं अभिभावक के बीच स्वस्थ संबंधों के लिए निर्णायक सिद्ध होते हैं। ऐसे आक्रामक अभिभावक जो अपने बच्चों की सारी समस्याओं को शिक्षकों की ओर स्थानान्तरित करना चाहते हैं, के साथ व्यवहार करने के लिए महत्वपूर्ण कौशल हैं - धैर्य से बातों को सुनना एवं उनसे पूछना कि वे अपने बच्चे के विकास के लिए क्या सहयोग कर सकते हैं?

परिवार अपनी प्रकृति, अन्त:क्रिया की शैली एवं संबद्धता के द्वारा स्वास्थ्य, आत्म-अवधारणा, पहचान, अभिक्षमता, विश्वास एवं पूर्वाग्रहों में बदलाव ला सकता है जो बदले में एक व्यक्ति को शांति की तरफ अभिमुख, आक्रामक या हिंसक बना सकते हैं। परिवार में बच्चे के लिए उपलब्ध सुरक्षा की भावना, गर्मजोशी, प्रेम एवं देख-रेख से उनमें शांति के अनुकूल अभिक्षमताओं एवं मूल्यों के निर्माण की संभावना होती है जबकि आक्रामकता, विद्वेष या तिरस्कार उन्हें हिंसक रास्ते पर डाल देता है। करियर के प्रति अत्यधिक लगाव रखने वाले अभिभावक घर में एक ऐसा परिवेश बना देते हैं जहाँ सिर्फ शैक्षिक उपलब्धियों को ही महत्व दिया जाता है। जो अभिभावक की आंकाक्षाओं के अनुरूप प्राप्तांक नहीं हासिल कर पाते हैं उन्हें अयोग्य समझा जाता है। उसी परिवार में, अलग-अलग बच्चों को अपने करियर

एवं उपलब्धयों के माध्यम से अपने माता पिता का स्वप्न पूरा करने में मिली सफलता एवं असफलता के कारण बिल्कुल अलग तरह का वातावरण अनुभव करने को मिलता है। एक बच्चा जो असफल हो जाता है उसे अपने उन भाई-बहनों की तुलना में जो सफल रहते हैं विद्वेष, बहिष्कार, तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।

शिक्षक के रूप में हमें उन तरीकों के प्रति सावधान रहना है जिनके द्वारा अभिभावक, परिवार के अन्य व्यस्क सदस्य एवं पास-पड़ोस हिंसा को बढ़ावा देते हैं एवं उसे कायम रखते हैं। विद्यालय एवं परिवार के द्वारा किया गया हिंसक व्यवहार शाब्दिक एवं अशाब्दिक दोनों हो सकता है। शाब्दिक हिंसा गाली-गलोच, प्रशंसा के स्थान पर आलोचना, प्रशंसा के योग्य होने पर भी प्रशंसा न करना, असभ्य व्यवहार आदि के द्वारा हो सकती है। अशाब्दिक हिंसा तिरस्कृत करने की मनोवृत्ति, अलगाव एवं पिटाई, शारीरिक रूप से अन्य व्यक्ति को चोट पहुँचाना होता है। यह वास्तव में शारीरिक हिंसा हो सकती है। किन्तु प्रशंसा एवं गर्मजोशी में कमी व अन्य लोगों के भी साथ तुलना भी बच्चे के भावात्मक एवं सामाजिक हितों के प्रति हिंसा है तथा यह बच्चें को दूसरों से विमुख कर देती है और उसे उस सामाजिक सुरक्षा से वंचित कर देता है जो उसे परिवार से मिलना चाहिए। हमने हिंसा के प्रकरण में चर्चा की है कि किस प्रकार से परिवार के वातावरण एवं रिश्तों में अन्तर्निहित प्रत्यक्ष एवं संरचनात्मक हिंसा आक्रामक एवं तुनक मिजाज समस्याओं का कारण बनते हैं। परिवार में प्राय: महिलाओं एवं बच्चों के प्रति विद्वेष एवं अलगाव के रूप में हिंसा व्यक्त की जाती है। यद्यपि हम प्रत्यक्ष रूप से अपने (विद्यार्थिया) बच्चें के परिवार को प्रभावित नहीं कर सकते लेकिन हमारे अपने परिवार के वातावरण की समझ एवं इसका हमारे ऊपर प्रभावों के प्रति जागरूकता एवं विद्यालय के बच्चों के व्यवहार को उनके पारिवारिक वातावरण के सह-उत्पाद के रूप में समझने से यह शिक्षक-छात्र रिश्तों के विकास में सहायक होगा। परिवार के प्रभाव के बारे में जानकारी आवश्यक है जिससे उनकी आवश्यकताओं और उन क्षेत्रों के बारे में पता लगाया जा सके जिसमें हस्तक्षेप और समृद्ध बनाने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ - एक शिक्षक प्राय: यह जानता है कि बच्चे उच्च अपेक्षाओं या अभिभावकों की करियर संबंधी चिन्ता के कारण तनाव अनुभव कर रहे हैं। कुछ अभिभावक तो बच्चों को सामान्य खेलों एवं हल्के-फुल्के मनोरंजन अथवा विषय के अतिरिक्त पढ़ने से भी वंचित कर देते हैं। दूसरी तरफ कुछ परिवार जीविकोपार्जन के दबाव के कारण बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य को बिल्कुल महत्व नहीं देते हैं। कभी-कभी, अभिभावक बहुत आक्रामक होते हैं और वे हावी हो जाते है यहाँ तक कि शारिरिक दण्ड का प्रयोग करते हैं अथवा बच्चों को तिरस्कृत करते हैं। इस प्रकार की असामान्यताओं की पहचान करनी है एवं उनसे मुकाबला करना है। इस तरह के मामलों में शांति-शिक्षक कम से कम अभिभावकों के लिए जागरूकता अभियान आयोजित कर सकते हैं।

एक शांति-शिक्षक को केवल अपनी कक्षा के ही अभिभावकों के साथ संपर्क की जिम्मेदारी न लेकर, जहाँ भी आवश्यकता हो वहाँ हस्तक्षेप एवं मध्यस्थता की कोशिश करनी चाहिए।

शिक्षक-अभिभावक संघ मीटिंग, जो विद्यालयों में पहले से ही प्रचलित है अथवा अपनी कक्षा के बच्चों के लिए विशेष रूप से आयोजित बैठक, वह अवसर हो सकता है जहाँ पर अन्याय, बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन जैसे मुद्दों पर चर्चा की जा सकती है। इसे विद्यालय की नीतियों जैसे पुरस्कार एवं दण्ड, जो कुछ के लिए लाभदायक एवं कुछ के लिए अन्यायपूर्ण हो सकती है, के विषय में जागरूकता विकसित करने से संबंधित हो सकती है यह हिंसा रोकने, अथवा शारीरिक दण्ड या कोई अन्य प्रथा जिससे बच्चे अपने प्रति भेदभाव महसूस करते हों से संबंधित हो सकता है।

हिंसा के अतिरिक्त अनुशासन, घरेलू हिंसा, लड़की-लड़के के रिश्ते, टेलीविज़न देखना, जेब खर्च, जंक फूड एवं नशे से संबंधित मुद्दे हैं जो अभिभावक एवं शिक्षक दोनों के लिए समस्या पैदा करते हैं। इसका उस स्थति में ज्यादा बेहतर ढंग से सामना किया जा सकता है जब शिक्षकों एवं अभिभावकों के बीच सम्प्रेषण हो और दोनों समस्या के समाधान की कोशिश करें, न कि अपनी जिम्मेदारी को एक दूसरे पर थोपने की। एक शांति-शिक्षक अपने शांत एवं व्यस्थित ढंग से धैर्यपूर्वक सुनने की कला का प्रदर्शन, समस्याओं पर विचार करके उसके रचनात्मक समाधान के द्वारा आश्चर्यजनक परिणाम ला सकता है न कि जल्दी से राय देने की कोशिश करना अथवा मुद्दों की अनदेखी कर और अभिभावकों को वापस भेज देने से हैं।

परिवार में सम्प्रेषण शैली पर कुछ विचारों को नीचे दिया जा रहा है। अभिभावकों के साथ इन विचारों को साझा करना उपयोगी हो सकता हैं, जिससे वे अपने घर में शांतिपूर्ण परिवेश बनाने में समर्थ हो सकें।

परिवार की सम्प्रेषण शैली की जानकारी हमें स्वस्थ पारिवारिक सम्प्रेषण परिवार के सदस्यों के व्यवहार, को समझने और प्रभावशाली सम्प्रेषण के द्वारा परिवार के वातावरण को सुधारने में मदद करेगी। जीवन की तेज गति ने परिवार के सदस्यों के बीच अन्योन्यक्रिया एवं सम्प्रेषण को कम कर दिया है। हम इन विचारों का अभिभावकों के साथ साझा कर सकते हैं और उन्हें उनके पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में विचार करने के प्रेरित कर सकते हैं। जब घर पर बहुत कम समय बिताया जाता है तो परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे के लिए बहुत कम समय होता है। बहु-कार्य प्रणाली सम्प्रेषण की क्षमता को कम करती है। उदाहरण हेतु एक मॉ खाना बना रही है और बच्चे से बात कर रही है या एक अभिभावक ऑफिस के कार्य में व्यस्त है और बच्चे के प्रश्नों का उत्तर दे रहा है। इस प्रकार की स्थितियों में, कौशलों एवं सम्प्रेषण की शैली का महत्व अधिक हो जाता है। एक प्रभावपूर्ण पारिवारिक पर्यावरण को सुनिश्चित करने, जिसमें सुरक्षा की भावना, गर्मजोशी, और वैयक्तिक स्वास्थ्य की ओर उन्मुखीकरण पोषित हो, के लिए यह महत्वपूर्ण है कि अभिभावक अपने सम्प्रेषण कौशल को समझें एवं उसमें सुधार करें। शैक्षणिक उपलब्धियाँ, करियर एवं वैयक्तिक संबंध बच्चे के द्वारा अनुभव किए पारिवारिक पर्यावरण से बहुत

अधिक प्रभावित होते हैं। लोग भावनाओं का सम्प्रेषण शाब्दिक माध्यम साथ ही साथ अशाब्दिक माध्यमों जैसे - इशारों, शारीरिक भाषा एवं आवाज के उतार चढ़ाव द्वारा करते हैं। शाब्दिक संदेश अशाब्दिक संदेशों के द्वारा या तो समर्पित होते हैं या मिथ्या होते हैं। आवाज के द्वारा वक्तांक के क्रोध, दु:ख, प्रसन्नता, हताशा, थकावट की भावना अथवा बोलने उत्साहित मानसिक अवस्था का पता चलता है। उदाहरण हेतु एक अभिभावक वास्तव में अपने बच्चे की बात नहीं सुन रही होती है लेकिन विश्वास दिलाती है कि उस पर ध्यान दे रही है। इस प्रकार अशाब्दिक अभिव्यक्ति रूचि के स्तर, शक्ति उत्साह या ऊब के बारे में बहुत कुछ सम्प्रेषित कर देता है। सम्प्रेषण के समय सामान्य तौर से लोग केवल शाब्दिक संदेशों पर ध्यान देते हैं जबकि अशब्दिक संप्रेषण काफी अधिक मात्रा में होता है।

परिवार में बोलने की अधिकारपूर्ण एवं आक्रामक शैली में बोलना पारिवारिक सम्प्रेषण की बड़ी बाधा है। सम्प्रेषण को प्रत्यक्ष एवं केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है। जिसमें अतीत के बारे में ज्यादा न उलझ कर वर्तमान पर ध्यान देना होता है। हमें अभिभावकों को यह समझने में सहायता करनी है कि जब बच्चा अपने बारे में बात कर रहे हों तो वे अतीत के उदाहरण न दें। उदाहरणार्थ - "हम बचपन में कभी टेलीविज़न नहीं देखा करते थे अथवा हम यह सब नहीं करते थे।" अभिभावकों को अपने साथ भाई-बहनों के साथ या किसी और के साथ बच्चों की तुलना बन्द कर देनी चाहिए। चर्चा केवल उस बच्चे, लड़का/लड़की के बारे में प्रत्यक्षत: होनी चाहिए जिसके साथ संवाद हो रहा है और यही नियम पति-पत्नी को आपसी सम्प्रेषण के समय लागू करना चाहिए। क्रोध, कठोर शब्दों, एक दूसरे पर आरोप - प्रत्यारोप के प्रयोग से बचना चाहिए। एक बहस को गुस्से से जारी रखने के बजाय यह अच्छा होगा कि बहस को किसी और अवसर पर संवाद करने केलिए फिलहाल स्थगित कर दिया जाये। सम्प्रेषण के दौरान बोलने से ज्यादा सुनना लाभदायक होता है। निश्चय ही, इसके लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है। सुनी गई बातों को स्पष्ट करना, स्वीकारना और पुष्ट करना बहुत महत्वपूर्ण होता है। सुने गए पर स्पष्टीकरण तलाश करना और इसका पुष्टिकरण परिवार के लिए समय देना एवं रचनात्मक- संवाद की स्थितियाँ बनाना एक स्वस्थ परम्परा है। उदाहरणार्थ - सोने जाने से पहले परिवार के सदस्य एक दूसरे के साथ समय बिता सकते हैं या रात्रिकालीन भोजन के समय साथ रह सकते हैं या जब अभिभावक इन मामलों को सुनने के लिए खाली हों एवं आराम कर रहे हों। कुछ प्रभावशाली अभिभावक - बच्चा सम्प्रेषण निम्न प्रकार से हैं : -

- लगातार सम्प्रेषण एवं बातचीत के प्रत्येक अवसर को सार्थक बनाना। उदाहरण के लिए **-** यदि एक बच्चा कहता है**,** **"**मैं अपना गृह-कार्य नहीं करना चाहता हूँ। अभिभावक प्राय: नाराज हो जाते हैं। नाराज होने के बजाए उन्हें पूछना चाहिए**,"**तो आप क्या करना चाहते हो ?**"** **"**आप अपना गृह-कार्य क्यों नहीं करना चाहते हो ? **"** और उनका जवाब ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। उन्हें बच्चों की

समस्याओं की पहचान करनी चाहिए एवं प्रेम एवं गर्मजोशी के साथ उसके समाधान में सहायता करनी चाहिए।

- विचारों एवं भावनाओं को प्रत्यक्ष रूप से एवं स्पष्ट ढंग से बताना चाहिए। उदाहरण हेतु - यदि वे देखते है कि उनका बच्चा पढ़ाई के प्रति गंभीर नही है तब वे कह सकते हैं "मैं तुम्हारी पढ़ाई को लेकर बहुत चिन्तित हूँ ", और उनके प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करनी चाहिए। यह बहुत जरूरी है कि समस्या को जितना जल्दी हो सके या अवसर मिलते ही समाप्त कर लेना चाहिए।
- उन समस्याओं जो पति-पत्नी, अभिभावकों, बच्चों एवं उनके भाई-बहनों के बीच उत्पन्न होती हैं को समाप्त करना। इन समस्याओं को प्रत्यक्ष संवाद के द्वारा तत्काल हल किया जा सकता है। धैर्य एवं उपयुक्त समय का चुनाव करना भी निर्णायक होता है।
- प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट संवाद हमेशा व्यंगात्मक, संकेतात्मक या अप्रत्यक्ष आरोप से बेहतर होता है। इस प्रकार की बातचीत जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों की गलतियों की तरफ इशारा होता है, सम्प्रेषण को समाप्त करता है। यह दूसरे को अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की आज्ञा नहीं देता और एक दूसरे के लिए अपमानजनक स्थितियाँ पैदा कर देता है, और इस तरह से समस्याओं को समाप्त करने का अवसर खो जाता है। किसी को भी आपसी बातचीत कभी बन्द नहीं करनी चाहिए।

सम्प्रेषण के लिए ध्यानपूर्वक 'सुनना' एक महत्वपूर्ण पहलू है। अभिभावकों को निश्चित रूप से न केवल शाब्दिक सम्प्रेषण बल्कि अशाब्दिक संकेतों, हाव-भावों, आवाज की गति द्वारा व्यक्त भावनाओं को ध्यानपूर्वक सुनने के कौशल का विकास करना चाहिए। 80 प्रतिशत संप्रेषण अशाब्दिक एवं सांकेतिक होता है। संकेतों एवं भाव-भंगिमा को (ठीक से) सही ढंग से समझना एक महत्वपूर्ण कौशल है। ध्यानपूर्वक सुनने में अवलोकन, ठीक से समझने और जानने के लिए स्पष्टीकरण मांगना सम्मिलित है। किन्तु हम इसके बजाए प्राय: ‘ चयनित सुनना’ करते है, ताकि अपनी धारणाओं और निर्णयों को सही सिद्ध कर सकें। जब लोग सुन रहे होते हैं, उस समय वे उन शब्दों एसं तर्कों को तलाश कर रहे होते हैं, जो उनकी अपनी राय को स्थापित करें। दूसरा व्यक्ति अपनी बात को अच्छी तरह से न सुने जाने की हताशा की वजह से अपनी बात बीच में ही समाप्त कर देता है।

बच्चे प्राय: बहुत सुस्पष्ट तरीके से विचार नहीं रख पाते हैं और उनकी बात पर शीघ्रता से निष्कर्ष निकालना प्राय: खतरनाक होता है क्योंकि उनके परिप्रेक्ष्य सीमित होते हैं। हमें बच्चों की अवस्था, उनकी परिपक्वता स्तर एवं अपने विचारों को ठीक प्रकार से व्यक्त करने हेतु शब्दावली की कमी का ध्यान रखना चाहिये। हमें उनकी बात सुनते समय उन बातों का स्पष्ट अर्थ जानने का प्रयास करने के लिए प्रश्न पूछना चाहिए।

सकारात्मकता एवं आशावाद वे मुख्य शब्द हैं जिनसे सभी प्रभावशाली सम्प्रेषण को निदेशित किया जा सकता है। वैवाहिक एवं पारिवारिक विच्छेद प्रकट करते हैं कि अप्रसन्न पारिवारिक परिस्थितियाँ किसी वास्तविक समस्या के बजाय आलोचनात्मक, अविश्वास एवं तिरस्कारपूर्ण व्यवहार की वजह से होते हैं। दम्पत्तियों को अपने सम्प्रेषण की संभावनाओं को सदैव खुला रखना चाहिए। उन्हें आपस में एक दूसरे की प्रशंसा एवं प्रोत्साहन देना चाहिए।

एक संसाधन के रूप में घर एवं परिवार का महत्व

अभिभावकों के आवेष्टन में कमी के कारण यह सामान्य रूप से समाप्त हो चुका है। अभिभावकों की उदासीनता के कई कारण हैं जो हमारे द्वारा ठीक किए जा सकते हैं। हमें अभिभावकों को एक सहायक के रूप में देखना चाहिए न कि ऐसे व्यक्ति के रूप में जिन्हें हम आरोपित कर सकते हैं। अभिभावकों की शिक्षा, समय, संवेदना आदि की कमी से हमें असहाय नही होना चाहिए। हम जागरूक एवं संवेदनशील अभिभावक समुदाय की मदद से अभिभावकत्व उन्हें परिवारिक जीवन एवं अभिभावक के कार्यों के बारे में शिक्षित कर सकते हैं। शांति-शिक्षक के रूप में हम अभिभावक दिवस, परिवार-दिवस या बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ के द्वारा विशेष व्याख्यान, पोस्टर प्रदर्शनी, अभिभावकों के लिए विचार-विमर्श सत्र, अभिभावक बच्चे पारस्परिक क्रिया सत्र आदि आयोजित कर सकते हैं। अभिभावकों का उपयोग विद्यार्थियों में सही दृष्टिकोण के प्रेषित करने, मूल्य एवं व्यवहार आदि को सिखाने हेतु एक संसाधन के रूप में किया जा सकता है, इसका प्रभाव सकारात्मक रूप में होने की संभावना है। यह कार्य अभिभावकों को शांति-प्रक्रिया में शामिल करके, स्वयं के बारे में प्रश्न पूछकर प्रारम्भ किया जा सकता हैं, उदाहरणार्थ – मैं अभिभावकों को उनके बच्चों में शांति के मूल्यों को पोषित करने हेतु कैसे शामिल कर सकता हूँ?" "अभिभावकों के साथ मेरा सम्प्रेषण कितना प्रभावशाली है?" "क्या मैंने अपने विद्यार्थियों के अभिभावकों को शांति के अनुकूल अभिक्षमताओं एवं मूल्यों को आगे बढ़ाने हेतु अपने विचारों की जानकारी दी है?"मैं विद्यार्थियों में शान्ति उन्मुखता के पोषण के प्रति अभिभावकों का सहयोग व समर्थन प्राप्त करके बेहतर कार्य कर सकता हूँ?

समुदाय की भागीदारी

शांति-शिक्षक के रूप में हमें यह जरूर समझना चाहिए कि प्राय: हमारे उद्देश्यों की उपलब्धियाँ हितधारकों के सहयोग से बहुत अच्छी तरह से आगे बढ़ सकती है। अभिभावकों का स्थानीय समुदाय ऐसे रूझान रखने वाला एक साझा समूह है जिसका विद्यालय के बहुत से कल्याणकारी कार्यक्रमों में उपयोग किया जा सकता है। हम अपने चारों तरफ उपलब्ध संसाधनों की पहचान के लिए प्रयास कर सकते हैं जो विभिन्न प्रकार के विशिष्ट कार्य करते हैं - व्यावसायिकों के रूप में हैं यथा-डॉक्टर, मनोवैज्ञानिक, अभियन्ता जिन्हें स्वास्थ्य, सम्प्रेषण, संबंध-निर्माण, बच्चों के पालन-पोषण एवं कैरियर से संबंधित मुद्दों पर

अभिभावकों, छात्रों एवं शिक्षकों को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। विद्यालय परिसर में सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए अभिकरण उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ - विद्यालय में अभिभावक-शिक्षक संघ होते है जो विद्यालय में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को आयोजित करने में मदद कर सकते है। हमें सिर्फ यह जानने की आवश्यकता है कि किस प्रकार से इन संस्थानों का पता प्राप्त करें। इनमें से ज्यादातर का पता एक फोन करके प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन हमें उसे खोजने के लिए अपने साथियों से बात करके करनी होगी कि हम क्या चाहते हैं और इस प्रकार की सहायता कहाँ पर उपलब्ध है? शांन्ति शिक्षक को सूचना स्त्रोतों की तलाश, तथा अन्य लोगों सहकर्मियों, अभिभावकों, शिक्षकों, प्रोफेशनल व्यक्तियों और पुराने विद्यार्थियों को जोड़ने की प्रक्रिया के लिए पहल करनी होगी और इस बारे में चिंतन करना होगा। इन समूहों एवं विद्यालय के बीच सहयोग हमारे अकेले के लिए बहुत दुष्कर प्रतीत हो रहे कार्यों को भी संभव कर देगा। सूचना एकत्रित करना शांति-शिक्षकों के लिए एक वांछनीय गुण है।

मीडिया

मीडिया में प्रिंट, श्रवण एवं दृश्य साधन शामिल हैं जो हमें सूचना उपलब्ध कराते हैं। सामान्य तौर से हम मीडिया को समाचार पत्रों एवं समाचार - चैनलों के साथ समानार्थक रूप में देखते हैं। लेकिन ये सब मीडिया का एक हिस्सा हैं। मीडिया में विज्ञापन, टेलीविज़न सीरियल, फिल्म, पुस्तकें, टॉक शो आदि शामिल हैं। मीडिया हमारी जीवन-शैली का अविभाज्य अंग बन चुका है। इसकी व्यापक उपस्थित, प्रभाव एवं बढ़ते आकार को सीमित नहीं किया जा सकता। यह प्राय: कहा जाता है कि भारत में ग्रामीण परिवेश के बच्चों को टेलीविज़न के प्रति ज्यादा पहुँच है बजाय पीने के साफ पानी के प्रति।

वर्तमान समय में व्यक्तियों पर जो सशक्त प्रभाव है उनमें से एक मीडिया है, विशेषकर बढ़ते हुए बच्चों एवं युवाओं में इसका ज्यादा असर है। हम किसी न किसी प्रकार के मीडिया से परिचित होते हैं जो अनेक सूचनाऐं हम तक पहुँचाते हैं। यह विशेष रूप से उस समय भी हमारा ध्यान आकर्षित करता है जब हम आलोचनात्मक चिंतन करने की स्थिति में नहीं होते हैं, उदाहरणार्थ - रेडियो सुनना; जब हम कार से यात्रा करते हैं या फिल्म देखते समय, जहाँ खाना, कपड़ा, भाषा एवं व्यवहार के बारे में राय या विचार प्रस्तुत किए जाते हैं। ये प्रतिरूप, प्रतीक, कहानियाँ और उनमें अपरोक्ष रूप से जुडे हुए संदेश हमारे विचार, मूल्यों, अर्थ, सक्रिय शब्दावली, कपड़े पहनने का ढंग, खाने की आदत आदि को प्रभावित करते हैं। यह प्रभाव अथवा परिवर्तन इतना सूक्षम एवं धीरे-धीरे होता है कि हमें इसके बारे में पता ही नहीं चल पाता जब तक कि हम इस पर गंभीर रूप से विचार नहीं करते हैं। उदाहरणार्थ वह खास बोली जो लोग प्रयोग करते हैं, समय के साथ-साथ परिवर्तित होती रहती है। पहले, लोग एक दूसरे के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए अपने सिर को झुकाकर 'नमस्ते' कहते थे जो कि अब अधिक समकालीन 'हाय/हैलो' में बदल चुका है। यद्यपि यह सत्य है

कि किशोर/किशोरी एवं युवा व्यस्क मीडिया से बहुत ज्यादा प्रभावित हैं क्योंकि यह वह अवस्था है जब व्यक्ति की एक पहचान बननी शुरू होती है, यहाँ तक कि वृद्ध व्यक्ति भी इससे बचे नहीं हैं। धीरे-धीरे हम सभी मीडिया के द्वारा स्थापित प्रचलनों का अनुसरण करते हैं। ऐसा क्यों होता हैं, यह समझने के लिए हमें मीडिया की सक्रियता को देखने की आवश्यकता है।

संदेश-निर्मित किए जाते हैं

मीडिया में प्रस्तुत किए गए बहुविध रूझानों एवं विचारों को अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग प्रकार से व्याख्या प्रस्तुत की जाती है और उनके द्वारा समझे गए विचार एक दूसरे से बहुत ज्यादा भिन्न होते हैं। फिर भी सूचना देने वाले (प्रस्तोता) का प्रदर्शन एवं प्रभाव, उसकी उम्र, चरित्र, ज्ञान एवं शैली आदि, उसके द्वारा दी गई सूचना के साथ ही उसकी शैली, व्यवहार एवं प्रयोजित किए गए मूल्यों को अचेतन रूप से बच्चों एवं व्यस्कों को अपनाने को बाध्य करती है। दूसरे कारक भी हैं जो मीडिया द्वारा दिए गए सूचनाओं की स्वीकारोक्ति को बदल देते हैं लेकिन यह चेतन रूप में ग्रहण नहीं किया जाता है। इसका प्रभाव निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता हैं -

- जब सूचना देने वाला व्यक्ति आकर्षक प्रतीत होता है अथवा देखने वाले के क्षेत्र, धर्म या भाषा आदि की पसंद का होता है उसकी विश्वसनीयता बहुत बढ़ जाती है।
- हमारी पहचान एवं जीवन की दृष्टि। वह सूचना जो हमारे विचारों एवं दृष्टिकोणों से मिलती है हमारे द्वारा आसानी से स्वीकार कर ली जाती है जबकि अन्य सूचना आलोचनात्मक प्रक्रिया से गुजरती है फिर हम उन्हें अपनाते हैं। बहुत ज्यादा सूचना बच्चों को अचेतन रूप से जो कुछ भी दिखाया जा रहा हैं, उसे बिना आलोचनात्मक मूल्यांकन के स्वीकार करने की ओर ले जाती हैं, क्योंकि हमें सूचना के प्रति निर्णय लेने के लिए मूल्यांकित करने व एक संतुलित निर्णय के लिए अवसर नहीं मिल पाते हैं।

सन्निहित मूल्य एवं दृष्टिकोण

मीडिया का समस्त कार्य कुछ लोगों अथवा समूह की अवधारणा पर आधारित होता है। मीडिया के बहुत सारे विभिन्न स्वरूप है और उनमें से प्रत्येक का स्वामित्व अलग होता है एवं विद्यार्थियों के लिए उस दृष्टिकोण का सीमित प्रदर्शन एक पक्षपातपूर्ण रूझान लाता है। इसलिए यह खोज करना बहुत आवश्यक होता है कि किस प्रकार से मीडिया एक सीमित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो उसके मालिक के स्वनिर्णय पर आधारित होता है।

उदाहरणार्थ - निम्नलिखितिबिन्दुओं पर विचार कीजिए -

- अलग-अलग भाषाओं में बहुत अधिक समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं। इनमें से प्रत्येक की अलग-अलग लेखन शैली है एवं इनका किसी न किसी विशेष विचारधारा, मत एवं भाषा के प्रति निष्ठा, विश्वास, व्यवस्था आदि की ओर झुकाव होता है।
- टेलीविज़न एवं समाचार चैनलों का कार्यक्षेत्र भी कुछ विशेष क्षेत्रों तक ही सीमित होता है। कुछ केवल अपराध जगत से जुड़ी खबरों को बताते हैं, दूसरे शहरी क्षेत्र को केन्द्र बिन्दु बनाते हैं और कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवन शैली को, लेकिन ये सब हमारी संस्कृति या देश की एक संतुलित एवं वास्तविक झलक नही उपलब्ध करा पाते हैं। जब खान-पान एवं वेश-भूषा का संदर्भ आता है तो फैशन व बेतुकी बातों पर केन्द्रित होता है। वास्तविक भारतीय संस्कृति, खान-पान की वरीयता, वेश-भूषा एवं देश के विषय में अन्य विवरण नहीं बताए जाते हैं। यह संस्कृति के अपूर्ण ज्ञान एवं असंतुलित तस्वीर की तरफ ले जाता है।
- अलग-अलग मीडिया के माध्यम कुछ विशेष समूहों जैसे युवाओं, शहरी परिवेश, ग्रामीण परिवेश आदि को लक्ष्य बनाते हैं। यहाँ तक कि उसी भाषा के समाचार पत्रों के अन्दर बोधगम्यता में बहुत अन्तर होता है। वास्तव में मीडिया के ये माध्यम चेतन रूप से किसी एक समूह को आकर्षित एवं प्रभावित करने के लिए आयोजित किए जाते हैं। लक्ष्य किए गए समूह की रूचि के अनुसार ही मुद्दे एवं सूचनाएं मीडिया द्वारा प्रतिदर्श के रूप में प्रस्तुत की जाती है।

मीडिया का मूल उद्देश्य अपने पर्यावरण की विविध सूचनाएं उपलब्ध कराना एवं लोगों को कल्याण एवं समृद्धि के कार्यों में सक्रिय हिस्सेदार बनाना है। लेकिन अब, मीडिया के असंख्य रूपों के कारण प्रतियोगिता बहुत ज्यादा है जिसमें मीडिया का महान प्रयोजन एवं उद्देश्य खो गया है। परिमाण की अधिकता ने गुणवता के स्तर को काफी नीचे कर दिया है।

लाभ एवं अधिकार प्रयोजन

मीडिया अपने लाभ-वृद्धि के लिए अपने देखने एवं सुनने वालों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रेरित है। इसलिए ऐसे शब्दों का प्रयोग, स्वरूप, राय एवं विचार जो ज्यादा से ज्यादा लोगों को आकर्षित करते हैं, उन्हें प्रयोजित किया जाता है, इस बात से निरपेक्ष होकर कि उनमें मूल्यों की मात्रा, भाषा का स्तर या सांस्कृतिक आचार अनुकूल हैं या नहीं।

वर्तमान समय में बौद्धिक समाज में शक्ति से संबंधित रिश्तों को समझने हेतु मीडिया के प्रभाव की एक मुख्य अस्त्र के रूप में अनदेखी नहीं की जा सकती है। शांति-शिक्षकों के रूप में हमें यह समझने की आवश्यकता है कि यह किस प्रकार से हमारे व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करता है एवं विद्यार्थियों के व्यवहार एवं विश्वास को खास तरह का झुकाव देता है। यहाँ तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी जहाँ मूलभूत सुविधाओं का अभाव है वहाँ भी मीडिया की उपलब्धता से हर प्रकार के समाचार संगीत, एवं विविध कार्यक्रम

आदि के कारण दृष्टिकोण प्रभावित होते हैं। हिंसक एवं आक्रामक व्यवहारों को पर्याप्त रूप से प्रदर्शित किया जाता है एवं विशेष समूहों के प्रति घृणा फैलाई जाती है। संभवत: वह असावधानी वश हो रहा हो। हमें यह निश्चित रूप से समझना चाहिए कि मीडिया द्वारा प्रसारित सूचना के आधार पर बच्चों में उसी प्रकार के व्यवहार विकसित हो जाते हैं। मीडिया का हमारे संबंधों एवं दैनिक व्यवहार पर प्रभाव को हम कपड़ों, भाषा आदि के द्वारा देखकर अन्दाज लगा सकते हैं अपने परिवार के साथ बातचीत के लिए समय निकालना भी इसके द्वारा प्रभावित हुआ है सकारात्मक रूप से मीडिया को देखने का यह एक महत्वपूर्ण पहलू है कि उसके प्रभाव के प्रति स्वयं चैतन्य रहें और विद्यार्थियों को भी चैतन्य होने के लिए प्रेरित करते रहे।

जागरूक अध्यापकों के हाथ में मीडिया एक दुधारी तलवार की तरह हो सकती है यदि वे अपने विद्यार्थियों की मदद उन कार्यक्रमों पर चर्चा, स्पष्टीकरण और स्पष्ट मत बनाने में करें जो उन्हें देखने चाहिए। चर्चा इस बात पर होनी चाहिए कि कार्यक्रमों को देखने के क्या लाभ अथवा हानि हैं? विद्यार्थियों में कार्यक्रमों के पश्च प्रभावों पर चैतंन्यता और समझदारी विकसित करना, उनमें एक असंबद्धता का बोध विकसित करने में मदद करेगा। अभिभावकों, शिक्षकों एवं परिवार के अन्य बुजुर्गों को भी शिक्षित करना है कि वे किस प्रकार से टेलीविजन देखते समय एवं मीडिया के अन्य साधनों जैसे पत्रिका या रेडियो कार्यक्रम से प्रभावित होकर गलत उदाहरण अपने आपको प्रस्तुत करते हैं। शांति-शिक्षक इन मुद्दों पर चर्चा की पहल प्रात:कालीन सभा, स्टॉफरूम, शिक्षक-अभिभावक संघ मीटिंग आदि में करके अभिभावकों को मीडिया की भूमिका के बारे में शिक्षित कर सकते हैं, मीडिया के विषय में उन्हें बता सकते हैं कि यह किस प्रकार से हमारे युवाओं को हमारे परम्परागत मूल्यों में दोष दर्शिता एवं हिंसा फैलाने की तरफ अभिमुख कर रहा है। यह समस्याओं के समाधान के लिए हिंसा, आक्रामकता एवं असमाजिक तरीकों को अपनाने के लिए स्वच्छन्द बना रहा है।

मीडिया से संबंधित एक और बात जिसे शिक्षक विद्यार्थियो के ध्यान में ला सकता है, वह है, अनेक प्रकार के पूर्वाग्रह पक्षपात एवं मिथ जो मीडिया के द्वारा जान बूझकर या अनजाने में प्रचारित किए जाते हैं। यह प्रस्तुत की जा रही सूचना के साथ इसके विषय वस्तु एवं इसके साथ संभावित संयोजन का प्रयोग कर सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को बता सकते है किस प्रकार से समाचार-पत्रों, टेलीविजन, रेडियो या मीडिया के किसी और माध्यम से दी जा रही सूचना को पकड़ कर उसका विश्लेषण करना है ताकि हम पूर्वाग्रह एवं हिंसा एवं गलत सूचना को स्थायी बनने से रोक सके/ कर सके। यह विद्यार्थियों को अपने विषय को बेहतर ढंग से समझने एवं याद करने के लिए आलोचनात्मक विचार कौशल को विकसित करने में सहायक होगा। शिक्षक विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित कर सकते है। "यह संदेश क्यों भेजा गया है?" "वह किस प्रकार के मूल्य, जीवन शैली एवं दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं" या प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं, ऐसे संदेशों के द्वारा जो किसी कार्यक्रम, विज्ञापन या एक लेख के माध्यम से दिया जा रहा है। मीडिया के द्वारा प्रदर्शित विभिन्न प्रकार के संदेश

जो उनकी रिपोटों, चित्रों, कहानियों, फोटो या समाचार की विषय-वस्तु आदि में होते हैं के संबंध में प्रश्न विद्यार्थियों के समक्ष रखे जा सकते हैं। वे छोटे-छोटे समूहों में इस बात की खोज कर सकते हैं कि किस द्वारा प्रकार से मीडिया ने उनके विचारो, धारणाओं, दृष्टिकोण, जीवन-शैली, परिवार के लिए प्रदत्त समय, अध्ययन, मित्रता आदि को प्रभावित किया है। शिक्षक उन्हें मीडिया के छिपे हुए चरित्र के बारे में खोजने हेतु मदद कर सकता है। इस संदर्भ में कुछ आलोचनात्मक मुद्दे, जो विषय क्षेत्र से संबंधित हैं जैसे - राजनीति, इतिहास, विज्ञान आदि, को शिक्षण के समय मीडिया की विश्वसनीयता पर चर्चा एवं मूल्यांकन के लिए उठाया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षण रोचक हो जाता है, जीवन की घटनाओं सं संबद्ध हो जाता है एवं मीडिया के प्रति एक जागरूकता भी उत्पन्न होती है।

शिक्षक के रूप में हमें विद्यार्थियों को मीडिया की वास्तविकता के बारे में विद्यार्थियों को बताना है और उन्हें आलोचनात्मक चिन्तन एवं मीडिया के प्रभाव एवं उससे लाभ के बारे में चर्चा करने में सक्षम बनाना है। उन्हें उनके अपने विचारों पर प्रभाव की खोज में सहायता करना है, इस बात का ध्यान रखते हुए कि अपने विचारों में उनको न डालें। प्रभाव के बारे में जागरूक होने से वे न केवल मीडिया के विभिन्न माध्यमों से मिल रही सूचना एवं संदेशों का आलोचनात्मक मूल्यांकन में वे बुद्धिमान हो जाएंगे बल्कि अपने जीवन पर पड़ने वाले मीडिया के नकारात्मक प्रभावों का विरोध भी करेंगे। यह चर्चा एवं संवाद के द्वारा अनवरत समझने की प्रक्रिया है कि किस प्रकार मीडिया के विभिन्न माध्यम विश्वसनीय हो सकते हैं।

एक शिक्षक के रूप में, हमें संकोच नही करना चाहिए, बल्कि कुछ निश्चित समाचारों पर रेडियो, टेलीविज़न कार्यक्रमों या फिल्म पर चर्चा करने का अवसर बनाने चाहिए और जब-जब ऐसे मौके आएं, विद्यार्थियों को उस विषय पर अपने विचारों को सुस्पष्ट तरीके से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस प्रकार की चर्चा एवं आलोचनात्मक परीक्षण के द्वारा उन्हें सशक्त बनाएं जिससे अपने विचारों एवं व्यवहार पर मीडिया के नकारात्मक प्रभाव को सीमित कर सकें।

एक शांति-शिक्षक अपने परिवेश में रहने वाले लोगों के विचार को प्रभावित एवं बदलकर शांति-शिक्षा को आगे ले जाता है। यह कार्य उन्हें उपदेश देकर नहीं बल्कि उनमें विद्यमान अभिक्षमताओं, गतिविधियों एवं प्रथाओं के लिए एक विकल्प के रूप में दृष्टिकोण देकर करती है। जहाँ कहीं भी संभव होता है वह प्रश्नों को सामने करती है, बिना इस पर बहस किए कि क्या सही क्या गलत लेकिन अन्य संभावित तरीकों से जो कम हिंसक एवं तनावयुक्त और इस तरह विद्यमान समस्याओं के लिए ज़्यादा आशावादी समाधान के प्रति प्रेरित करते है। वह समस्याओं के लिए एक सहज, सकारात्मक एवं आशावादी आदर्श विन्यास प्रस्तुत करती है बिना किसी आरोपण के कि उनको किस प्रकार समाप्त करें एवं उससे संबंधित सभी लोगों के सहयोग के लिए अनुरोध करती है। वह अपनी सभी गतिविधियों

एवं संबंधों में सदैव शांति की तरफ कदम बढ़ाती है। केवल जिम्मेदार बनकर, सहयोगात्मक एवं उत्तरदायित्वपूर्ण शैली एवं मनोवृत्ति अपनाकर एक शांति-शिक्षका परिवर्तन ला सकती है। यह छोटी बूँद के समान लग सकती है परन्तु हमेशा छोटी बूंद छोटी नहीं रहती एवं समय एवं धैर्य के साथ धीरे-धीरे बढ़ती ही जाती हैं।

शांति-प्रक्रिया का मूल्यांकन

" बिना कसौटी पर कसा जीवन, जीने योग्य नही होता। "

सुकरात मूल्यांकन एवं आकंलन किसी भी सोच-समझकर आयोजित प्रयास का महत्वपूर्ण भाग है जो प्रक्रिया और परिणाम की सार्थकता को भी प्रकट करते हैं लेकिन योजना को पहले उदाहरण के रूप में लागू करना चाहिए। मूल्यांकन क्रियान्वयन की प्रक्रिया का आधार तत्व है यह स्व-मूल्यांकन, स्व-प्रतिबिम्बन एवं स्व-शिक्षा में योगदान देगा। यह हमें जानने में मदद करेगा कि क्या सही है, क्या बदलना चाहिए एवं अब और क्या-क्या करने की आवश्यकता है। शांति-शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य इन संदर्भो में बहुत सपष्ट है जैसे - आन्तरिक शांति, विरोध विवाद को कम करना, एवं अच्छे संबंध जो विभिन्न वर्गों, जाति, लिंग एवं पर्यावरण के प्रति समानता, न्याय, अंत: निर्भरता एवं सकारात्मक रूझानों पर आधारित हो। लेकिन शांति शिक्षा के उपक्रमण का मूल्यांकन सीधा (प्रत्यक्ष) एवं सामान्य नहीं है। शांति की अवधारणा ही इतनी विशाल है कि? इसका परिणाम दुर्ग्राहय लगता है। इस वजह से शांति-प्रक्रिया का मूल्यांकन जटिल है। उदाहरणार्थ- हम आंतरिक शांति या सकारात्मक अभिक्षमता दृष्टिकोण का परीक्षण कैसे कर सकते हैं? ये स्थायी गुण नहीं हैं, इनमें लगातार परिवर्तन होते रहते हैं। इसलिए परिवर्तन की प्रक्रिया का मूल्यांकन आसान नहीं होता है। यह भाग सफलता एवं असफलता के रास्ते की खोज करने पर केन्द्रित होता है। कि क्या पक्ष में है और क्या विपक्ष में है और ऐसा क्यों है? क्या काम करेगा और क्या नहीं और क्यों?

शांति-निर्माण एक सहयोगात्मक प्रयास है जिसमें बहुत से स्तरों पर व्यवहार में परिवर्तन सम्मिलित होता है। यह एक अनवरत प्रक्रिया है और हम यह नहीं कह सकते कि शांति अपने अंतिम चरण में पहुँच चुकी है और इसके लिए अब अधिक प्रयास की आवश्यकता नहीं है। इसलिए शांति-शिक्षकों के रूप में हमें समय-समय पर कुछ फीड बैक की आवश्यकता होती है कि क्या हमारे प्रयासों से वास्तविक परिवर्तन हो रहा है। यह हमें केन्द्रित रहने में मदद करेगा और हम यह जानने के लिए प्रेरित होंगे कि हमारा कौन सा प्रयास लाभदायक है और परिणाम ला रहा है और हमें कहाँ पर सुधार की आवश्यकता है।

शांति-प्रक्रिया के मूल्यांकन की जटिलता का एक अन्य कारण भी है। यदि हम न्याय, समानता, विविधता, स्वतंत्रता, पूर्वाग्रह एवं संघर्ष को समाप्त करने से संबंधित ज्ञान की वैचारिक समझ का मूल्यांकन करने में समर्थ हो भी जाते हैं, तो भी (परिस्त्रवण)

अनुभवात्मक एवं व्यवहारिक क्षेत्रों में यह दिख भी सकता है और नहीं भी दिख सकता है। कोई भी व्यक्ति जो प्रजातंत्र, मानव-अधिकार, सामाजिक, भावनात्मक या जैंडर न्याय से जुड़े मुद्दों को समझता है वह उस प्रकार का आचारण नहीं भी कर सकता है। ऐसे ही, जिन लोगों का मूल्यांकन किया जाना है वे भी शान्ति प्रियता के एक ही स्तर पर नहीं होते। हमें अपने मूल्यांकन का लक्ष्य कहाँ बनाना है? शांति ज्ञान एवं कौशल प्राप्ति करने हेतु एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें आन्तरिक शांति कायम रखना, संघर्षों को समाप्त करना, सकारात्मक व्यवहार अर्जित करना एवं शांतिप्रिय व्यवहार प्रदर्शित करना शामिल है। हम अपने वैयक्तिक प्रयासों के प्रभाव को किस प्रकार से मूल्यांकित करते हैं? शांति-प्रक्रिया की प्रगति और परिणाम का मूल्यांकन करने में यह कुछ मुख्य चुनौतियाँ हैं।

सबसे पहले हमें यह बताने की आवश्यकता है कि हम क्या अपेक्षा करते हैं और हम क्या मूल्यांकन कर रहे हैं? हम उन सकारात्मक व्यवहार एवं व्यवहारिक परिवर्तनों का मूल्यांकन कर रहे हैं जो कि हम में, हमारे छात्रों एवं अध्यापकों में एवं अन्य लोगों में हो सकता है और उन तरीकों का जिससे ये शांति लाने के लिए घर, विद्यालय एवं अन्य स्थानों पर हमारे संबंधों में बदलाव ला रहे हैं। यह अभिवृति एवं व्यवहार में परिवर्तन है जो शांति-निर्माण के लिए पहल करने की सफलता के महत्व को दर्शाता है। यह परिवर्तन विभिन्न स्तरों पर हो सकता है जैसे - छात्रों, शिक्षकों एवं स्टॉफ के साथ ही साथ प्रधानाचार्य में भी। व्यवहार में हो रहे परिवर्तन हो सकता है कि दिखाई न देते हो लेकिन उन्हें मूल्यांकन करने के क्रम में हमें बदलाव के संकेत एवं क्षेत्र की पहचान करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए - बदलाव निम्नलिखित क्षेत्रों में हो सकते हैं - स्वास्थ्य एवं स्वच्छता भौतिक पर्यावरण, उत्तरदायित्व का स्तर, कार्यक्षेत्र में व संघर्ष की घटना में, हिंसा को कम करने में, शिक्षा-शास्त्री व्यवहारों को सुधारने में, पर्यावरण के बारे में जागरूकता आदि। परिवर्तन के संकेत इन क्षेत्रों के आधार पर निर्धारित होते हैं। उदाहरणार्थ - क्या विद्यार्थी अपने स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रति अधिक सचेत हैं?, क्या वे जंक फूड खा रहे है या स्वास्थ्यवर्धक खाना खाते हैं? पर्यावरण के बारे में उनकी जानकारी के मूल्यांकन के लिए अलग प्रकार के संकेतक होंगे।

प्रत्येक कदम पर चौकस रहने एवं प्रक्रिया के दौरान चिन्तन के महत्व पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है। प्रत्येक स्तर पर मूल्यांकन अनिवार्य है विशेष रूप से शांति हेतु शिक्षा के संदर्भ में क्योंकि शांति एवं शिक्षा का यह परिप्रेक्ष्य बताता है कि बिना विचार का कार्य एक प्रतिक्रिया है और इस प्रकार यह एक जीवन के प्रति सोचा-समझा रिसपॉस नहीं है। अब, हमें उस पर ध्यान देना है जो हम बदलना चाहते हैं। पहले स्तर का परिवर्तन जिसे हम लक्ष्य कर रहे हैं, इस संदर्भ में समझा जा सकता है - (अ) विद्यालय के भौतिक पर्यावरण में परिवर्तन, (ब) एक व्यक्ति का रूपान्तर या किसी का अपने तौर तरीके, शैली और उपक्रम में परिवर्तन, एवं (स) लोगों के बीच संबंध।

शांति-प्रक्रिया भौतिक पर्यावरण में भी दिखाई देती है। भौतिक पर्यावरण का निरीक्षण करना अधिक आसान होता है। विद्यालय में व्यक्ति अपने तत्कालीन पर्यावरण, संसाधन एवं कार्यों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास कर लेता है। यह सबसे पहले उनके तत्कालीन पर्यावरण में दिखाई देता है और वहाँ अव्यवस्थित कूड़ा-कचरा कम होगा। बच्चे ध्यान देते हैं और कागज को इधर-उधर नहीं डालते है एवं खाने के बचे हुए सामान को कूड़ेदान में डालते हैं। पानी एवं बिजली जैसे संसाधनों का संरक्षण किया जाता है। विद्यार्थी अपने कक्षा से बाहर जाते समय बिजली का स्विच बंद करते हुए देखे जा सकते हैं या वे नल को कभी बहता हुआ नहीं छोड़ते हैं। वे न केवल स्वयं ऐसा करते हैं बल्कि दूसरों को भी संसाधनों का उपयोग संयम के साथ करने के लिए विनम्रतापूर्वक सावधान करते हैं। वे विद्यालय में फूल नहीं तोड़ते हैं या पौधों अथवा अन्य संपति का नुकसान नहीं करते हैं। वे विद्यालय के प्रति जिम्मेदारी से कार्य करते हैं। वहाँ गलियारों में बहुत कम शोर होता है। वे दीवारों को विकृत नहीं करते हैं। वे अपने कार्य में लीन रहते हैं और वे अपने उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य को समझते हैं। कक्षाएँ स्वच्छ रहती हैं। हम देख सकते हैं कि उपस्थित संसाधनों का उचित प्रयोग दिखाई देता है एवं शांति के विषय में ज्ञान बढ़ रहा है।

वैयक्तिक रूपान्तरण का एक मुख्य संकेतक बाह्य चिन्ताओं एवं दबावों के प्रति कम प्रतिक्रिया करना और अधिक विचार ज़्यादा करना है। व्यक्ति के दृष्टिकोण में हो रहे परिवर्तन जैसे घटती प्रतिक्रियाशीलता और अधिक विचारशीलता या तनावों के प्रति सकारात्मक क्रिया आदि तत्काल दिखाई नहीं पड़ते हैं। दिखाई देने वाले परिवर्तनों के आने से पहले दृष्टिकोण के स्तर पर परिवर्तन हो रहे होते हैं। इन परिवर्तनों के प्रमाणों का अभिलेखन करना जरूरी होता है ताकि हम अपने प्रयासों की सफलता के विषय में जागरूक हो सकें और साथ ही साथ इन परिवर्तनों की गति भी देख सकें। यह एक धीमी प्रक्रिया है। व्यवहारिक परिवर्तन की दिशा बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि एक छोटा बदलाव भी समय के साथ एक बड़े हिमखण्ड में बदल जाता है। व्यवहारिक परिवर्तन सचेतन भी नहीं होते हैं। शांति के विषय में संबंधित सूचना एवं अनुभवों से परिचित होने पर सूक्ष्म रूप से विचारों में परिवर्तन आता है जो धीरे-धीरे समय के साथ व्यवहार में बदल जाता है। उदाहरणार्थ - जब हम सामाजिक न्याय के मुद्दे पर पढ़ते हैं और गंभीरता से विचार करते हैं तब हम न्याय के मुद्दे पर दूसरों के साथ अपने संबंधों एवं अनुभवों के प्रति अधिक सचेत हो जाते हैं। हालांकि, ये सब बहुत जटिल मुद्दे हैं।

अभिक्षमताओं एवं मूल्यों, तथा आन्तरिक सदभाव एवं शांतिप्रिय व्यवहार में परिवर्तन के संकेतकों को आत्म-चिंतन एवं स्व-आख्या के द्वारा बहुत अच्छे से मूल्यांकन किया जा सकता है। ये दोनों उपकरण व्यक्ति के अन्दर हो रहे बहुत सूक्ष्म एवं लघु परिवर्तनों को भी प्रकट करते हैं एवं परिवर्तन की प्रक्रिया में मदद भी करते हैं। शांति एवं सदभाव से संबंधित विषयों एवं मुद्दों के बारे में व्यक्ति की आत्म-आख्या या अभिव्यक्ति उन परिवर्तनों को प्रकट करती है जो हो चुके हैं एवं उन क्षेत्रों को भी जिसमें आगे सुधार करने की आवश्यकता

है। जब भी हम शांति-हस्तक्षेप सामान्य या विशेष उद्देश्य के लिए लागू करते हैं आत्म-आख्या नियमित आधार पर ली जा सकती है। उदाहरण के लिए हम विरोध को समाप्त करने का कौशल या सम्प्रेषण कौशल को लक्ष्य बना सकते है एवं अपने अनुभवों को दर्ज करते हैं। आत्म-चिंतन दैनिक आधार पर होने वाले परिवर्तनों को दर्ज करने की प्रक्रिया है। 'विमर्श का लेखन' 'विमर्श जरनल' वह उपकरण है जो निरन्तर प्रयोग किया जाता है।

'विमर्श का लेखन' दैनिक घटनाओं के प्रतिबिम्बन की एक तकनीक है। चिंतन/विचारों का लेखन अपने संदर्भ में दिन भर घटने वाली घटनाओं का विश्लेषण कर समझने के योग्य बनाती है। वह अनुभव, जो हमारे सामान्य सोच एवं व्यवहार में नहीं होता है, हमें पुन: सोचने एवं प्राप्त अनुभवों के अलग-अलग तरीके से विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है और इस प्रकार हमारी जागरूकता को विस्तृत करता है। वे अनुभव जो हमारे विचारों से मेल खाते हैं वे हमारे विश्वास की अभिपुष्टि एवं मजबूत करते हैं। विमर्श की प्रक्रिया हमारे विचारों को निर्देशित करती है और भविष्य में हमारे दृष्टिकोण एवं व्यवहार में परिवर्तन ला सकती है। उदाहरणार्थ - विवाद की स्थिति में अपना आपा खो देना, उस स्थिति के दौरान जो विचार मन में आ रहे थे उन पर फिर से सोचते है। और महसूस करते हैं कि क्रोध करना शायद एक अच्छी प्रतिक्रिया नहीं थी क्यों इससे किसी भी प्रकार की सहायता नही मिली। यह हमें ऐसी परिस्थितियों में प्रतिक्रिया देने के किसी और विकल्प को खोजने की तरफ ले जा सकता है और भविष्य में दूसरे लोगों के साथ अन्त:क्रिया करते समय सावधान करता है। इस प्रकार अपने अनुभवों का लेखा-जोखा भी हमें चिंतन की आदत विकसित करने में समर्थ बनाता है और अनेक तथ्यों व विषयों को परिभाषित करने के लिए नई शब्दावली के प्रयोग को प्रेरित करता है।

आत्म - मूल्यांकन

(व्यवहार, भावनाएँ एवं कार्य)

क्रम सं.	व्यवहार कार्य इत्यादि
1	बेवकूफ, मूर्ख आदि निणार्यात्मक शब्दों का प्रयोग रोक सकते हैं।
2	दूसरोंके दृष्टिकोण को ध्यानपूर्वक सुनना प्रारम्भ कर दिया है।
3	मैं अब अधिक खुला एवं लचीला हूँ।
4	मैं क्रोध को नियंत्रित करने में अधिक अच्छा हूँ।
5	अभी सुधार करना है।

इसमें एक डायरी या कॉपी का प्रयोग दिन भर की उन घटनाओं को लिखने के लिए किया जाता है जो किसी व्यक्ति के अनुभवों के द्वारा उसके स्वरूप में हो रहे हैं। हम लिख सकते

हैं कि किस प्रकार से किसी विशेष गतिविधि के अनुभव हमारे विचारों को परिवर्तित कर रहे हैं। एक शिक्षक द्‌वारा चिंतन डायरी की एक प्रवृष्टि, जो उसने शिक्षकों के लिए शांति-शिक्षा के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान की थी, इस बिन्दु को स्पष्ट करती है।

एक शिक्षक ने लिखा :-

"शुरूआत में अपने आपको बदलना बहुत कठिन प्रतीत हुआ लेकिन मैं अपने क्रोध को कम कर सका। मैं पूर्णतया शांतिपूर्ण नहीं हूँ लेकिन इसमें अन्तर आया है।शांति सोचने का विषय नही है बल्कि महसूस करने का है। एक शिक्षक के रूप में मैंने बिना भय के बोलना सीख लिया है। लेकिन मुझे ऐसा ही वातावरण अपनी कक्षा में बनाना है जहॉ पर बच्चे बिना डरे हुए बात कर सकें। "

एक दूसरा तरीका एक विस्तृत एवं व्याख्यात्मक (चैक लिस्ट) का प्रयोग अथवा ऐसी प्रश्नावली, जिसमें शांतिपूर्ण व्यवहार, मूल्यों एवं कौशलों के व्यवहारिक संकेतकों का समावेश हो और जो शांति के अभिमुखीकरण के प्रति हमारी उन्नति के मूल्यांकन हेतु एक साधन के रूप में प्रयोग है। इन मिलान सूचियों को शांतिपूर्ण व्यवहार के प्रति जागरूकता विकसित करने एवं अपनी उन्नति का निरीक्षण करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिन्हें मिलान-सूची या प्रश्नावली में शामिल किया जा सकता है -

- क्या मेरी मनोदशा का विकास हो रहा है?
- क्या हिंसा की तरफ मेरे झुकाव में परिवर्तन हो रहा है?
- क्या मैं अन्य लोगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो रही हूँ?
- क्या मैं पर्यावरण के प्रति ज्यादा दयालु एवं संरक्षक हो गई हूँ?
- क्या संघर्ष में मध्यस्थता समाप्त करने का मेरा रूझान ज्यादा मजबूत हो गया है?

हमारे प्रयासों की सफलता कुछ मात्रा में विद्यालय में विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं अन्य कर्मचारियों के प्रति हमारे प्रयासों के द्वारा मापी जा सकती है। ये संबंध जिस ढंग से निधार्रित किए जाते हैं वहीं हमारी शांति-शिक्षा के साहसिक कार्य की सफलता के संकेतक हैं। लेकिन संबंधों में परिवर्तन के मूल्यांकन हेतु संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। नौसिखिया के रूप में हम सोच सकते हैं कि सभी संघर्ष समाप्त हो जाएंगे एवं शांति स्थापित हो जाएगी। वास्तव में, शांति के प्रयासों से सफलता का तात्पर्य है कि चारों तरफ आपस में अधिक संवाद स्थापित हो रहा होगा। पारस्परिक क्रियाएं व वार्तालाप बढ़ जाएंगें। विचारों के गंभीर मतभेद व्यक्त किए जाएंगे एवं उनका सामना किया जाएगा न कि नीचे दबा दिया जाएगा। विद्यार्थियों में इन परिवर्तनों को कक्षाओं में शारीरिक हिंसा में कमी, छात्रों के बीच हिंसा रोकने में हस्तक्षेप में शामिल होना, कम प्रतिक्रियाएं करना एवं उत्तेजक कथनों के प्रति अधिक सहनशीलता के रूप में देखे जा सकते हैं। बच्चे परस्पर एक दूसरे के विषय में कितना जानते हैं, यह उनके पारस्परिक साझा करने की आदत के विकास का

संकेतक है। संवेदना, सहयोग कम हो पक्षपात एवं पूर्वाग्रहों का मूल्यांकन विद्यार्थियों के बीच के विवादों को स्वयं या शिक्षकों के सहयोग से सुलझाने व अपने सहयोगियों का समर्थन करने के आधार पर किया जा सकता है।

आगे बढ़ने हेतु अपने प्रयासों पर निर्भर होने से हम विभिन्न स्तरों पर सकारात्मक परिणामों का अवलोकन कर सकते हैं। शिक्षकों के स्तर पर रिश्तों में सुधार को ज्यादा सहनशीलता एवं संयुक्त कार्यों में सहयोग, विवाद समाधान के प्रयास, कम से कम आक्रामक बातचीत एवं तदानुभूतिपूर्वक सम्प्रेषण के संदर्भों में देखा जा सकता है। ऐसी स्थिति में ज्यादा बातचीत एवं अनवरत सम्प्रेषण होगा तथा तनाव के स्थान पर प्रसन्नता होगी। यहॉ पर मिल बॉटकर काम करने की इच्छा, आलोचना के बजाय सहयोग, इच्छापूर्वक दूसरों से मिलने जाना, दोषरोपण के स्थान पर गलतियों की अनदेखी एवं क्षमा करना एवं असहायता के बजाय मदद के लिए तैयार रहना इत्यादि देखने को मिलेगी। शिक्षक हस्तक्षेप एवं एक दूसरे की मदद करते हुए एवं अपने स्तर पर ज्यादातर मुद्दों का समाधान करते हुए अथवा रचनात्मक रूप से राय देते हुए एवं विद्यालय के लाभ एवं कल्याण में लगे हुए देखे जा सकते हैं।

प्रधानाचार्य के स्तर पर विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं स्टॉफ की समस्याओं को सुनने में अधिक (पहुँच) अभिगम्यता एवं उपलब्धता होगी। विद्यार्थी प्रधानाचार्य से मिलते हुए देखे जा सकते हैं एवं शिक्षक उनसे मिलने एवं बात करने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं। मीटिंग अधिक उत्पादक एवं खुशनमा होती है। बातचीत का प्रसंग एवं केन्द्र एक साथ मिलकर समस्या का समाधान खोजने के लिए होता है। स्टॉफ का आपसी संबंध अधिक खुशनमा एवं सम्मानप्रिय होता है, जाति-वर्ग एवं क्षेत्र की परवाह किए बिना। शिक्षक एवं अभिभावकों के मध्य संबंधों में सुधार दिखाई देता है जो अभिभावक-शिक्षक बैठक में उनकी अधिक उपस्थित के रूप में दिखाई देता है एवं अभिभावकों द्वारा बार-बार विद्यालय में आना भी इसकी पुष्टि करता है। अभिभावकों के विद्यालय में आने के प्रभाव स्वरुप आगे चलकर विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति अधिक लगाव, घर में उनके व्यवहार में सुधार एवं उत्तरदायित्व के प्रति बढ़ी हुई भावना के रूप में दिखाई देता है। संबंधों में आए समस्त इन परिवर्तनों का आत्म-आख्या, डायरी की प्रविष्टियों एवं विद्यार्थियों के द्वारा भरी गई मिलान-सूचियों के द्वारा मूल्यांकन किया जा सकता है।

एक समय सीमा में शांति-शिक्षा कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव विद्यार्थियों के मध्य पारस्परिक एवं कर्मचारियों के सभी समूहों के बीच, शारीरिक हिंसा की घटनाओं में वास्तविक कमी के रूप में दृष्टिगोचर होता है। एक दूसरे को मारने की घटना, गाली-गलौच का प्रयोग एवं सबसे महत्वपूर्ण बदला लेने के लिए गाली के प्रयोग में धीरे-धीरे कमी आती है। शांति-शिक्षक को लगातार निगरानी एवं पहचान करना जरूरी है कि यह कहॉ पर अधिक मात्रा में कम हो पाया है और कहाँ पर इसे रोका नहीं जा सका है।

विवादों की वास्तविक संख्या के प्रमाण के अतिरिक्त शिक्षकों और विद्यार्थियों की स्व-आख्या, जो विवादों के संबंध में उनकी अपनी जागरूकता और उनके द्वारा किए गए कार्यों को बताती है, भी इस संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हैं। विमर्श-जनरल ऐसे विवादों के प्रमाणों को दर्ज करने का एक साधन हैं जिन्हें उपेक्षित कर दिया गया या जिनका सफलतापूर्वक समाधान किया गया।

विद्यालय की नीतियाँ, प्रक्रियाओं एवं पर्यावरण के इन सभी परिवर्तनों को संकलित करने, लिखने एवं विद्यार्थियों, साथियों एवं अभिभावकों के साथ साझा करने की आवश्यकता है। मिलान-सूची समय-समय पर प्रयोग में लाई जा सकती है अथवा विद्यार्थियों की आत्म-मूल्यांकन एवं पुनर्निवेशन (फीडबैक) हेतु दी जा सकती है। शांति-शिक्षा कार्यक्रम में रचनात्मक सुधार इस पुनर्निवेशन के आधार पर हो सकता है।

संक्षेप में, शान्ति शिक्षा के ऊर्ध्ववीकरण के कार्य में सतत आत्म चिंतन की प्रक्रिया, स्व-आकलन, स्व-विकास और इस प्रक्रिया को उत्प्रेरित कर तीव्र करने के संबंध में अधिकाधिक अध्ययन करना, साथियों के साथ परिचर्चा करना और इनका प्रयोग करना सम्मिलित हैं। वर्तमान एवं भावी शांति-शिक्षक के रूप में, हम दूसरे लोगों के व्यवहार एवं अभिक्षमता को मूर्तरूप देते हैं जो परिवर्तन लाते हैं। हमारा संकल्पित प्रयास इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगा। प्रक्रिया का मूल्यांकन हमे परिवर्तन को मापने के लिए उपकरण उपलब्ध कराएगा तथा साथ ही प्रयासों को सही दिशा की ओर अग्रसर करेगा।

उपसंहार

शांति हेतु शिक्षा में विकास एवं परिवर्तन की प्रक्रिया को गतिशील करने की क्षमता निहित है- मनोदशा में परिवर्तन जिसे सकारात्मक दृष्टिकोण अभिक्षमता एवं संशोधित व्यवहारों, रूझानों एवं कौशल स्वयं एवं अन्य लोगों के साथ समन्वय पूर्वक रहने आदि में परिणित होने की संभावना है। यह अतिश्योक्ति प्रतीत हो सकती है लेकिन शिक्षकों के लिए शांति-शिक्षा कार्यक्रम आयोजित करने से, हम इसे मूर्त रूप में देख चुके हैं। हमने उदासीन एवं ऊबे हुए शिक्षक प्रशिक्षुओं को शांति-शिक्षा के अधिगम के द्वारा नए दृष्टिकोण का खोज कर पुन: ऊर्जावान होते हुए देखा है। हमने प्रशिक्षुओं को अपनी ताकत की पहचान करते हुए एवं अपनी समस्याओं से जूझते समय आशा, सकारात्मकता एवं उत्साह का इस्तेमाल करते देख चुके हैं। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति के परिपेक्ष्य में परिवर्तन भिन्न-भिन्न से होता है। कुछ लोगों के लिए, परिवर्तन सुरक्षा, बचाव एवं स्थायित्व के लिए खतरा है। दूसरों के लिए, यह नवीनीकरण एवं पुनरूत्पादन की एक रोमांचक प्रक्रिया है। शान्ति शिक्षा के विषय में सीखना हमारे व हमारे विद्यार्थियों में परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए सकारात्मरक ऊर्जा, दृष्टिकोणों व परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए रोमांचक संभावना उपलब्ध कराता है।

हम जानते हैं कि केवल शिक्षा से ही ज्यादातर मूलभूत एवं सामाजिक समस्याओं - गरीबी, न्याय, हिंसा, सांस्कृतिक विविधता और पहचान का समाधान नही कर सकती है जो शांति-शिक्षा को चुनौती देते हैं लेकिन यह निश्चित रूप से हमें स्वयं के, दूसरों के एवं विश्व को समझने के बारे प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसका शांति के रास्ते में आने वाली बड़ी व्यैक्तिक-सामाजिक समस्याओं का सामना करने में सकारात्मक प्रभाव है। शिक्षा निश्चित रूप से हमारी अभिक्षताओं एवं मूल्यों को सुधारती है। हालांकि शिक्षा के बारे में हमारी समझ को व्यापक बनाने की आवश्यकता है। केवल तब, हम अपने पुनर्मूल्यांकन एवं पुन:आकलन के द्वारा अनवरत बेहतर बनने की अपनी यात्रा पर आगे बढ़ सकते हैं। यह भी समझना अपरिहार्य है कि शांति-शिक्षा के मुद्दे वही हैं जो शिक्षा के हैं और दोनों का उद्देश्य अपने छात्रों में अभिक्षमता, मूल्य एवं शांतिपूर्ण जीवन के लिए आवश्यक गुणों का पोषण करना है।

यह सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चेतना में शांति लाने के लिए निश्चित रूप से जिम्मेदारी लेनी चाहिए। स्वयं की आन्तरिक शांति के बिना, परिवार, समाज एवं विश्व में शांति लाने की संभावना समाप्त हो जाती है। समाज अपने व्यक्तियों से बनता है। हममें से प्रत्येक एक समूची व्यवस्था को बदलने या आगे बढ़ाने की स्थिति में नहीं हो सकता है लेकिन हमारे पास निर्णय लेने की शक्ति होती है - अपने प्रभाव के क्षेत्र में सचेतन रूप से हिंसा को अस्वीकार करने का निर्णय, विवादों को रचनात्मक रूप से समाप्त करना एवं हर प्रकार के जीवन को सम्मान देना। इसमें सभी के लिए शान्ति के मार्ग में आने वाली प्रत्येक वस्तु को पहचानने, परित्याग करने, प्रतिरोध करने और हटाने की सहनशीलता/धैर्य भी सम्मिलित है। शांति के रास्ते में अवरोध उत्पन्न करने वाले नियमों एवं कानूनों के साथ व्यर्थ समय नष्ट करना, आत्म-केन्द्रित होने में लीन रहना, असीमित लालसा, दूसरों के प्रति उदासीनता, विशेषकर वंचितों के प्रति एवं स्वार्थपरक जीवन शैली शांति की संस्कृति के अनुरूप नही हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि शांति के प्रति वचनबद्धता को सक्रियता की आवश्यकता है न कि निष्क्रियता की, ताकि हम वास्तव में शांति के लिए कार्य कर रहे हों और केवल शांति के नाम पर विलाप न कर रहे हों बल्कि अन्तरमन में शान्ति बना रहे हों। यदि हम आन्तरिक शांति चाहते हैं तो इसे न केवल व्यक्तिक स्तर पर तलाश करना है बल्कि अपने कार्य के द्वारा अन्त: वैयक्तिक स्तर पर भी बढ़ाना है। हम अलग-थलग पड़े द्वीप नहीं हैं। आन्तरिक एवं व्यक्तिक सामाजिकता एवं संरचना के साथ परस्पर संबंधित होते हैं। शांति के लिए सामाजिक व्यवहार आन्तरिक शांति की गहराइयों से निकलकर आता है और इसी प्रकार से व्यैक्तिक शांति भी। आन्तरिक शांति, सामूहिक शांति का सार है। अशांति की उपस्थिति में ही शांति की क्षमता का परीक्षण होता है। शांति निश्चित रूप से ही सांसारिक संबंधों एवं वास्तविकताओं में प्राप्त करनी चाहिए।

हमें अपने व्यवहार एवं आदतों के बारे में सावधान रहना है कि यह किस प्रकार से दूसरों के प्रति प्रकट होती हैं। दूसरों के अधिकार को स्वीकारना और उनके प्रति हो रहे अन्याय दृढ़तापूर्वक विरोध करना तथा सहमति, संवाद एवं आपसी समझौता कराने की इच्छा विवादयुक्त संबंधों में परिवर्तन लाने के प्रमुख तत्व हैं। विवाद, शक्ति को नष्ट कर देता है। संवाद एवं सम्मान से कड़वाहट एवं अविश्वास के समाधान एवं उपचार की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। शांति के लिए शिक्षित करने का उद्देश्य पूरा हो सकता है यदि हम अपने दिल एवं दिमाग को विविधता की प्रशंसा, अपने दृष्टिकोण को अनुभूतिमूलक साक्ष्यों के आधार पर एवं अपने आपको पक्षपातों एवं कट्टरतापूर्ण सिद्धान्तों से स्वतंत्र होकर निष्कपट रखने में सक्षम होते हैं। शिक्षा के प्रति शांति- दृष्टिकोण तभी कार्य करेगा जब हम सचेतन रूप में सभी के लिए समानता सभी को सम्मान एवं सभी स्तरों पर जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर असमानता को कम से कम करने के मूल्यों का प्रचार करते हैं।

शिक्षक, शिक्षा के स्वरसंगीत को संचालित करता है। किसी भी और कारक से अधिक, शांति हेतु शिक्षा, शिक्षक के उत्तरदायित्व, उसके व्यक्तिगत स्वभाव, उसके दृष्टिकोण, जागरूकता, प्रेरणा, मूल्यों एवं कौशलों पर निर्भर होती है। शिक्षक, अभिभावक एवं समुदाय के सदस्य भी हैं। इन सभी क्षमताओं में, वे बच्चों में शांति के बीज बो सकते हैं। हमें अपने विद्यार्थियों को शांति का रास्ता चुनने के लिए सशक्त करने की आवश्यकता है। सशक्तीकरण हिस्सेदारी एवं अन्तर्वेशन से आता है, सभी बच्चों का समावेश, विशेषरूप से जो भिन्न प्रकार की क्षमता रखते हैं और (विकलांग), सुविधाविहीन, हाशिये पर रहने वाले, प्रवासी, शरणार्थियों आदि। हमें सावधानीपूर्वक सही प्रकार के व्यवहार, रूझान एवं मूल्यों को निर्धारित प्रदर्शित करना है। हमें आशा है कि हमारी युवा पीढ़ी शांति की तरफ यात्रा में सम्मिलित होगी एवं जिम्मेदार एवं विश्वसनीय नागरिक बनना सीखेगी। जैसा कि जेम्स बाल्डविन ने कहा था, "बच्चे अपने बड़ों की बात सुनने में अच्छे नहीं होते हैं लेकिन वे उनका अनुकरण करने में कभी भी असफल नहीं होते हैं। "

यह पुस्तक हमें अपने अन्तर्निहित विश्वासों एवं मूल्यों, चयनित प्राथमिकताओं और कार्यों पर विचार करने के असीम अवसर उपलब्ध कराती है। यह विद्यालय एवं कक्षाओं में शांति-दृष्टिकोण के प्रसंगों को सावधानीपूर्वक अपनाने या न अपनाने के बारे में है। हमारी यात्रा अभी शुरू हुई है। यह आत्म-खोज की यात्रा है जिसमें गहन विचार सम्मिलित हैं जो हमें पूर्वधारणा को चुनौती देने में हमारी मदद करेंगे एवं शिक्षा के उद्दश्यों के बारे में पुनर्विचार करेंगे तथा एक उत्प्रेरक के रूप में अपनी भूमिका देखेंगे। यह हमें अपनी व्यवहारिक प्रथाओं के साथ अपनी अभिक्षमताओं एवं मूल्यों के सामंजस्य की योग्यता अपने अन्दर विकसित करेंगे।

शांति एक जटिल, बहु-आयामी अवधारणा है। और इसकी विषय वस्तु आदेशात्मक नही है बल्कि इसे सामान्य दिशानिर्देशों के तौर पर देखा गया है। इन्हें आपको अपनी परिस्थिति

एवं समस्या के आधार पर अपनाना है। ये महत्वपूर्ण सुझाव तरीके उसके अपने परिवेश के विशेष घटकों के सीमित प्रसंगों पर विमर्श शुरू करने से संबंधित हैं जो आपकी व्यावसायिक सामर्थ्य को चुनौती देते हैं एवं इन सीमित करने वाली परिस्थितियों से उठ कर एक आन्दोलन शुरू करने की चेष्टा हैं। इसलिए प्रस्तावों के कार्यान्वयन से पहले और बाद में भी विमर्श होना चाहिए बजाय इसके की कोई महत्वपूर्ण सुझाव आपेक्षित फलदायी न हो तो भी शीघ्रता में इनकार कर देना सही नही है। बहुत से अवसरों पर प्रस्तावित योजना उस प्रकार से कार्य नहीं कर सकती जैसा कि बताया गया है या परिणाम, अपेक्षाओं के विपरीत होते हैं। हम योजनाओं एवं कौशलों के सीमित एवं धीरे-धीरे परीक्षण का प्रस्ताव करते हैं क्योंकि ये विपरीत कार्य भी कर सकती हैं यदि इन्हें बिना समझ या सही अन्तदृष्टि के बिना प्रयोग में लाया जाता है। कुछ योजनाओं के साथ बार-बार सफलता में कमी, पुन: अवलोकन की आवश्यकता का संकेत है एवं पुनर्विचार करने को इंगित करता है। फिर से सही रास्ते पर आने के लिए लचीलापन बहुत आवश्यक होता है। यह परिस्थिति के आलोचनात्मक मूल्यांकन एवं विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ते रहने के लिए एवं आत्मविश्वास को भी विकसित करने में सहायक होता है। शांति की तरफ का रास्ता केवल एक संकीर्ण एवं सीधी सड़क नही है, इसमें बहुत सारे मोड़ हैं। शांति हेतु शिक्षा के पथ पर लगातार वचनबद्ध होकर चलने के लिए हमें इच्छा एवं साहस की आवश्यकता है,। हमारा प्रयास छोटा एवं महत्वहीन प्रतीत हो सकता है लेकिन शायद प्रसिद्ध धर्मप्रचारक मदर टेरेसा ने इसे बहुत सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है, "हम महसूस करते हैं कि जो कार्य हम कर रहे हैं, वह समुद्र में एक बूँद के सामान है लेकिन उस बूँद की कमी से समुद्र में उसकी रिक्तता हो जाएगी।"